राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक 11] चतुर्थ विधान सभा के ग्यारहवें सत्र का सातवां दिवस [संख्या 6

मंगलवार,

दिनांक 16 नवम्बर, 1971

विधान सभा की बैठक म॰ पू॰ 11.02 बजे विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई।

(श्री निरंजननाथ आचार्य, अध्यक्ष, पदासीन)

संविधान के अनुच्छेद 192 के अन्तर्गत अध्यक्षीय व्यवस्था

श्री अध्यक्ष : इसके पहले कि अविश्वास का प्रस्ताव लिया जाये मैं सदन की अनुमति से रूलिंग जो कभी से देनी अवशेष रही है वह दे देता हूं जो श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल ने मुद्दा उठाया था उस प्रश्न पर। चूंकि मैंने इसको साइक्लोस्टाइल करा लिया है इसलिए भी सहमति हो तो मैं इसमें आपरेटिव पोरशन्स पढ़ दूं। थोड़ा बड़ा है इसलिए समय से बचाव कर दूं।

दिनांक 10 नवम्बर, 1971 को विधान सभा में विधायी कार्य प्रारम्भ होने से तुरन्त पूर्व श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल ने श्री रामप्रसाद लड्ढा के सम्बन्ध में फिर एक प्रश्न उठाया जो कि पूर्व में उनके विरुद्ध लगाये गये भ्रष्टाचार के गंभीर आरोपों से सम्बन्धित था। श्री अग्रवाल ने कहा कि जहां तक उन आरोपों का प्रश्न है वे सदन की 24 मई, 1971 को समाप्त होने वाली बैठक में लगाये जा चुके थे। इस बार उन्होंने केवल प्रश्न के संवैधानिक पहलू पर ही जोर दिया। श्री अग्रवाल ने स्मरण दिलाया कि आसन ने प्रश्न की महत्ता स्वीकार करते हुये और उस पर अध्ययन की आवश्यकता पर बल देते हुए अपना निर्णय सुरक्षित रखा था परन्तु सदन की बैठक स्थगित हो जाने पर प्रश्न वहीं पर रह गया। अत: श्री अग्रवाल ने प्रश्न के संवैधानिक पहलू पर फिर प्रकाश डाला। उनके विचारानुसार तत्कालीन

(श्री अध्यक्ष)

सिंचाई मन्त्री श्री रामप्रसाद लड्ढ़ा एवं उनके पुत्र के नाम से एक संयुक्त हिन्दू परिवार का व्यापार चलता है और उस व्यापारिक फर्म ने राजस्थान सरकार से कुछ माल सप्लाई करने के लिये संविदा (Contract) की थी। जिस विभाग के मन्त्री श्री लड्ढ़ा थे उसी विभाग की ओर से उक्त फर्म से माल क्रय किया गया आदि2-इस प्रकार श्री अग्रवाल के अनुसार श्री लड्ढ़ा सरकार के जिस विभाग के मन्त्री थे उसी के अन्तर्गत उन्होंने लाभ का पद स्वीकार करने की स्थिति स्वीकार की। अतः वे संविधान के अनुच्छेद 191 (1) में वर्णित अनर्हता (Disqualification) प्राप्त कर चुके हैं और अब वे इस सदन के सदस्य नहीं बने रह सकते। इस प्रकार अब मामला इस स्थिति में पहुंच गया है जब कि इस विषय में प्रश्न उठा लिये जाने पर और श्री लड्ढ़ा के सदस्य बने रहने पर, इस मामले को राज्यपाल महोदय को निर्देशित कर दिया जाना चाहिये जिसका कि उपबन्ध संविधान के अनुच्छेद 192 में किया गया है।

श्री अग्रवाल ने अपने पक्ष की पुष्टि में उच्च न्यायालय एवं उच्चतम् न्यायालय के कतिपय निर्णयों का उल्लेख भी किया। मैंने इन निर्णयों का अध्ययन किया। इनमें से दो निर्णय ए.आई.आर 1953 सुप्रीमकोर्ट 210 चुनाव आयोग विरुद्ध साकाबेंकटराव एवं ए.आई.आर. 1958 बम्बई 314 डाक्टर देवराज विरुद्ध केशव लक्ष्मण बोरकट से प्रस्तुत मामले के तथ्यों से कोई सम्बन्ध नहीं रखते। प्रथम निर्णय में सम्बन्धित सदस्य को फौजदारी मुकद्दमे में 7 साल की सजा हो चुकी थी जो कि चुनाव से पूर्व समाप्त हो चुकी थी। अतः माननीय न्यायालय ने यह निर्णय लिया कि उक्त मामले पर अनुच्छेद 192 लागू नहीं होता। इसी प्रकार दूसरे मामले में भी जो कि लाभ के पद के विषय में था तथाकथित अनर्हता चुनाव से पूर्व विद्यमान थी अतः माननीय न्यायालय ने यही निर्णय दिया कि अनुच्छेद 192 के अन्तर्गत निर्देश करने के लिये समुचित परिस्थितियां विद्यमान नहीं थीं।

तीसरा निर्णय जो माननीय सदस्य ने पढ़ कर सुनाया वह ए. आई. आर. 1968 मद्रास 234 शिवशंकर मेहता विरुद्ध चुनाव आयोग का था जिसमें कि तथाकथित अनर्हता सम्बन्धित सदस्य के दिवालियापन के कारण उत्पन्न हुई थी। इसमें केवल यही निर्देशित किया गया है कि जहां अनुच्छेद 192 के अन्तर्गत कोई निर्देश किया जावे तो उसमें निर्णय देने का अधिकार राज्यपाल को है न कि न्यायालयों को और राज्यपाल भी जो कुछ भी कार्यवाही करता है वह चुनाव आयोग के मत के अनुसार ही कर सकता है, अन्यथा नहीं। अगला निर्णय ए. आई. आर. 1965 सुप्रीम कोर्ट 1892 वृन्दावन नायक विरुद्ध चुनाव आयोग था। इसमें मामला इस सीमा तक पहुंच गया था कि अनुच्छेद 192 के अन्तर्गत राज्यपाल को निर्देश किये जाने के पश्चात् चुनाव आयोग ने जांच तक प्रारंभ कर दी और सम्बन्धित सदस्य ने उसमें सहयोग देने के स्थान पर न्यायालय की शरण ली। यह निर्णय अत्यन्त महत्वपूर्ण है परन्तु इनमें जो प्रश्न निर्णीत किये गये हैं इनमें से किसी पर भी मेरे मन में कोई शंका नहीं है। दूसरे शब्दों में जैसा कि इसमें निर्णय बताया गया है कि इन बातों के लिये शंका अथवा संदेह का कोई स्थान नहीं है कि

Page No 3

(श्री अध्यक्ष)

अनुच्छेद 192 के अन्तर्गत निर्देश राज्यपाल को किये जाने चाहिये, राज्यपाल को चुनाव आयोग की सम्मति जाननी चाहिए, चुनाव आयोग को ही सारे प्रश्नों का विनिश्चय करना चाहिये, राज्यपाल को चुनाव आयोग के विनिश्चय के अनुसार ही कार्यवाही करनी चाहिये; इस प्रकार का प्रश्न केवल विधान सभा प्रांगण में ही उठाया जाना आवश्यक नहीं है और कोई भी नागरिक अथवा मतदाता ऐसे प्रश्न उठा सकते हैं। मेरी समझ में माननीय सदस्यगण भी इस विषय में एक मत हैं कि इस प्रकार का प्रश्न अनुच्छेद 192 के अन्तर्गत राज्यपाल को निर्देशित किया जा सकता है।

उपरोक्त स्थिति की वास्तविकता को स्वीकार करते हुए भी मैं समझता हूं कि मैं माननीय सदस्य श्री अग्रवाल के इस मत से सहमत नहीं हूं कि मुझे केवल इस सदन के प्रांगण में किसी मन्त्री अथवा भूतपूर्व मन्त्री के विरुद्ध आरोप लगा देने मात्र से ही राज्यपाल को निर्देश करने के लिए बाध्य किया जा सकता है। यहां यह प्रश्न नहीं है कि श्री लड्ढा के विरुद्ध लगाये गये आरोप वास्तविकता पर आधारित हैं अथवा नहीं। स्वयं उच्चतम् न्यायालय ने यह माना है कि अनुच्छेद 192 के अन्तर्गत निर्देश करने से पूर्व इस बात पर निर्णय होना आवश्यक नहीं है कि तथाकथित आरोप थोथे और कल्पना प्रसूत (frivolous and fantastic) मात्र नहीं है। आरोपों के गुण दोषों के विषय में जांच करने का अधिकार केवल चुनाव आयोग को है स्वयं राज्यपाल को भी नहीं। इसी प्रकार सदन के अध्यक्ष के लिये भी यह आवश्यक नहीं है कि वह इस प्रकार के आरोपों की सत्यता अथवा असत्यता के विषय में कोई जांच कर सके। उच्चतम् न्यायालय ने तो 1965 वाले उपरोक्त निर्णय में यहां तक स्वीकार किया है कि अनुच्छेद 192 के निर्देश के उपरान्त की जाने वाली जांच में स्वय चुनाव आयोग को भी अपेक्षित एव वांछित शक्तियां प्राप्त नहीं हैं जैसे कि साक्ष्य एवं दस्तावेजों को बुलवाने अथवा मंगवा सकने की शक्तियां।

मामला यहीं तक सीमित नहीं है। इस से भी आधार भूत प्रश्न यह है कि क्या सदन के प्रांगण में किसी सदस्य के विरुद्ध उसकी अनर्हता के विषय में आरोप लगा देने मात्र से सदन के अध्यक्ष के लिए यह अनिवार्य है कि वह राज्यपाल को सम्बन्धित मामला निर्देशित कर दे चाहे अध्यक्ष उस आरोप के सही अथवा गलत होने के विषय में अपना कुछ भी विचार रखता हो। मैं समझता हूं कि संविधान के अनुच्छेद 192 का ऐसा अर्थ नहीं निकाला जा सकता। 1965 वाले उच्चतम न्यायालय के निर्णय के परिच्छेद 12 में यह समझाया गया है कि यह महत्वपूर्ण नहीं है कि प्रश्न कैसे उत्पन्न हुआ है, किस के द्वारा उठाया जाता है और किन परिस्थितियों में उठाया जाता है। जो वस्तु वांछित है वह यही है कि प्रश्न उठाया जाना चाहिए। इसी निर्णय के अगले परिच्छेद में यह भी बताया गया है कि इस प्रकार के प्रश्नों का विधान सभा में सर्वप्रथम उठाया जाना भी आवश्यक नहीं है और न विधान सभा अध्यक्ष के लिये यह आवश्यक है कि इस प्रकार उठाये गये प्रश्न के विषय में प्रत्यक्षदर्शी जाँच ही करे। उच्चतम न्यायालय का यह निश्चित मत है कि कोई भी नागरिक इस प्रकार के आरोपों के विषय में परिवाद (complaint) राज्यपाल

(श्रीअध्यक्ष)

को सीधे कर सकता है और आगे की कार्यवाही राज्यपाल चुनाव आयोग की सम्मति से करेगा।

इसके अतिरिक्त इसी सदन में दिनांक 17-9-1963 को इसी प्रकार के एक प्रश्न पर निम्नांकित व्यवस्था दी जा चुकी है: —

" राज्य विधान मण्डल का कोई सदस्य संविधान के अनुच्छेद 191 के अधीन डिस्क्वालिफाईड हो गया है या नहीं, यह प्रश्न कोई व्यक्ति उस सम्बन्ध में राज्य के राज्यपाल को याचिका प्रस्तुत कर उठा सकता है और सदन के किसी सदस्य के लिये यह सम्भव है कि यदि वे चाहें तो राज्यपाल महोदय को इस विषय में सीधी याचिका प्रस्तुत करें।"

ऐसी स्थिति में मैं इस प्रकार का परिवाद राज्यपाल महोदय को निर्देशित करने में अपने आपको असमर्थ पाता हूं।

मन्त्रि परिषद् में अविश्वास प्रस्ताव

श्री मनोहर सिंह मेहता।

श्री मनोहर सिंह मेहता (मांडलगढ़): अध्यक्ष महोदय''''

श्री अध्यक्ष : समय के निर्धारण के सम्बन्ध में, मैं निवेदन कर दूं। पार्टीज के चीफ व्हिप्स की जो कल मीटिंग हुई थी, उसमें एक मत से जो समय निर्धारित किया गया है और जिस पर मैंने मान्यता दी है, उसके सम्बन्ध में मैं माननीय सदस्यों को अवगत कराता हूं। कांग्रेस को तीन घन्टे, जिसमें मन्त्रियों द्वारा उत्तर का समय भी शामिल है, स्वतन्त्र पार्टी को 1.30 घन्टा, जनसंघ को 1.15 घन्टा, भारतीय क्रांति दल को 45 मिनट, संसोपा को 45 मिनट, साम्यवादी पार्टी को 15 मिनट और निर्दलीय 30 मिनट। मैं अपेक्षा करता हूं कि माननीय सदस्य इसमें अपना सहयोग प्रदान करेंगे।

एक और आवेदन मेरे पास आया है कांग्रेस (ओ) का। उनको भी मैं समय देने का प्रयास करूंगा। मैं आशा करता हूं कि माननीय सदस्य इस समय के अनुसार 7 बजे सायंकाल तक यह डिबेट समाप्त कर देंगे। इस तरह से समय की पालना की जाये, यह मैं आशा करता हूं।

श्री मनोहर सिंह मेहता : अध्यक्ष महोदय, जब सुखाड़िया साहब ने मुख्य मंत्री पद से त्याग पत्र दिया तो मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। प्रसन्नता इसलिये कि जब लम्बे समय तक कोई आदमी शासन में रहता है तो उसका डाउनफाल प्रारम्भ हो जाता है। सुखाड़िया साहब ने इस बात को महसूस किया और उन्होंने स्वयं पद छोड़ दिया, यह बहुत खुशी की बात है। उसके बाद बरकत साहब मुख्य मन्त्री बने जिन्होंने घोषणा की कि या तो भ्रष्टाचार को मिटा दूंगा या स्वयं मिट जाऊंगा। मुझे बहुत खुशी हुई, आनन्द आया। मैंने उनको चिट्ठी भेजी और उसमें लिखा कि सब से पहले जो आप काम करेंगे, वह यह करेंगे कि आपके जो दागी मन्त्री और बेदागी मन्त्री हैं, उनके पास आजादी के पहले कितनी सम्पति थी और आज क्या है, उसकी जांच करवायेंगे, ताकि इसका असर अधिकारियों पर भी पड़े-यह भ्रष्टाचार निरोध के सम्बन्ध में बहुत बड़ा काम होगा लेकिन यह करना तो दूर रहा, आपने कुछ

(श्री मनोहरसिंह मेहता)

दिन बाद श्री शिवचरण माथुर जैसे आदमी को मन्त्रिमण्डल में ले लिया । मुझे बहुत धक्का लगा, क्योंकि वैसे तो ये समाजवादी है और बेदाग भी अपने आप को कहते हैं, और ये अन्तरात्मावादी भी हैं, लेकिन वास्तविकता कुछ और है । तो जब इनको मन्त्रिमण्डल में लिया तो मैंने कहा कि बेदाग का मतलब शायद यह है कि और मन्त्री तो दाग वाले होंगे लेकिन ये इतने काले हैं कि दाग का सवाल ही नहीं रहता । ये पूरे ही काले हैं ।

मुझे आश्चर्य इस बात का है कि माननीय भैरोंसिहजी ने इन पर दो बीघा जमीन का मामला उठाया था । और जब मामला उठा तो सुखाड़िया साहब तो बड़े चतुर हैं, उन्होंने कहा कि आप त्याग पत्र दो नहीं तो फंस जाओगे । त्यागपत्र के बाद दो बीघा जमीन तो कहीं गई, उनके त्याग की सराहना होने लग गई । अध्यक्ष महोदय, वह केवल दो बीघा जमीन का ही मामला नहीं है, वह फ्राड का भी मामला है । इन्होंने जो दो बीघा जमीन हासिल की है उसका पट्टा पुरानी तारीख का करवाया । जब उसके बही खाते राज्य में चले गये, तब कराया । कोई इन्दराज नहीं, फिर दस साल के बाद आपने अपने नाम पर कराया और लगान दिया और यह भी कहा कि वापस करता हूं । तो जमीन वापस दें या न दें यह मामला नहीं है, मामला यह है कि आपने फ्राड किया, पाप किया, पुरानी तारीख का पट्टा लिखवाया । इससे बढ़कर कोई पाप नहीं हो सकता । लेकिन ज्यों ज्यों मामला आगे बढ़ा, मुझे मालूम हुआ कि इनका तो पूरा परिवार ही इन मामलों में माहिर है । आपके भाई श्री छैलबिहारी ने महिला विद्यालय का एक कंकर भी नहीं लगवाया और पांच लाख रुपये का सर्टीफिकेट दे दिया ।

अभी अभी एक माह पहले माननीय सुखाड़िया साहब के समय बैरच नदी, जो कि बदजियावास और बरोनी के बीच पड़ती है और जिसकी वजह से 6 माह तक रास्ता बन्द रहता है, उस पर नवाब लोहारू साहब ने मेहरबानी करके रास्ता बनवाया । वहां पर, श्रीमन्, आप मौजूद नहीं थे लेकिन जो शिलालेख लगाया गया है उसमें यह लिखा गया है कि पत्थर श्रीमान् सुखाड़िया ने रखा और वह श्रीमान् माथुर साहब की अध्यक्षता में लगा जब कि ये वहां पर थे ही नहीं । तो मैंने कहा कि मामला पूरा का पूरा फर्जी है । और फिर जब मैंने सुना कि श्री छैलबिहारी ने 5 लाख रुपये का फर्जी सर्टीफिकेट दे दिया, और जिनको जेल मिलनी चाहिए थी, वह केनाडा में सरकारी खर्चे पर गए हुए हैं, तो मैंने कहा कि यह कैसा राज्य है । इस राज्य में सांच तो आंच बन गया है । जो सांच बोलता है वह सब को बुरा लगता है ।

सांचा की हो री देवल्यां (कब्र)
झूंठा उड़ारया गुलछर्रा
लापर अर लापस्यां की,
दुधिया हणागी है ।

आपने बिजली मन्त्री बनते ही अपने लड़के प्रदीप कुमार को सीमेंस की ऐजेन्सी दिलवाई और उसमें आपके सबसे छोटे भ्राता हैं, उनकी पत्नी को पार्टनर बनवाया । उसके बाद क्या हुआ ? जिन जिन लोगों ने कहा कि हम आपके यहां से सीमेन्स की मोटर खरीदते हैं, उनके यहां पहले बिजली पहुंच

Page No 6

(श्री मनोहरसिंह मेहता)

गई, कुओं पर कनेक्शन लगा दिये गये। और ज्यों ही सुखाड़िया साहब ने आपको बिजली विभाग से हटा दिया, वह सीमेन्स की ऐजेन्सी खत्म हो गई। फिर क्या हुआ ? आपने अपने लड़के को ट्यूब्स का कारखाना दिलवाया। समाजवादी का मतलब तो, श्रीमन्, यह होता है कि वह मां का तरह होता है, जो पहले सबका फिक्र करके अपना फिक्र बाद में करती है। लेकिन आपने सब से पहले अपने सुपुत्र को मिनरल डेवलपमेंट कारपोरेशन से ढाई लाख दिलवा कर ट्यूब्स का कारखाना खुलवाया। वह इन्जनियर है, बड़ी खुशी की बात है, लेकिन क्या दूसरे इंजिनियर्स नहीं हैं ? आज सैकड़ों की तादाद में इन्जीनियर्स सड़कों पर डोल रहे हैं, जिन्होंने बड़ी मुश्किल से पढ़ाई की है, उनकी आपको फिक्र नहीं, और आपने दिलवाया अपने लड़के को, और उसकी ऐजेन्सी दिलवाई आकड़ कम्पनी को जो कि आपके विद्युत मण्डल का ठेकेदार है। आप इससे अन्दाज लगा सकते हैं कि इसमें क्या हो सकता है।

श्री विजयसिंह (मकराना) : शेम।

श्री मनोहरसिंह मेहता : अगर भीलवाड़ा जिले में कोई ऐसा आदमी है जिसने कि हरिजन और आदिवासी जो कि भूमिहीन थे, उनको भूमि अलाट होने से वञ्चित रखा, तो वह श्री माथुर साहब हैं। बीज लसौड़ा और केशव विलास में 600 बीघा और 224 बीघा जमीन थी, वह आपने अपने मामी ससुर जो पहले एम० एल० ए० थी, और श्री भंवर लाल जोशी को दिलवाने की कोशिश की। आपने पहले तो उस जमीन को वन विभाग से राजस्व में निकलवाने की कार्यवाही चलाई लेकिन राजस्व में आई नहीं उससे पहले ही आपने जिन लोगों से 40 हजार प्राप्त किये थे, उन ठाकुरों की एक सोसाइटी बनवा दी, जो कि पहले से ही साधन सम्पन्न थे। श्री बृजसुन्दर जी से जब कि वह राजस्व मन्त्री थे, यह आशा की गई थी कि उस सोसायटी के नाम से जमीन आयेगी और 15-15 बीघा जमीन एक एक आदमी को अलाट करेंगे। वहां पर आज भूमिहीन भूमि के लिए तरस रहे हैं। बिजौलिया और माण्डलगढ़ में ऐसी स्थिति है कि वहां एक एक सदस्य एक एक इन्च जमीन के लिए तरस रहा है, लेकिन आपने बृजसुन्दर जी से मिल कर किसी तरह से यह करा लिया, मैं नहीं समझता। डाक्टरों के मामले में तो वह समान रुख अपनाते थे, वह सबको समान समझते थे कि बिना लिए किसी का ट्रान्सफर नहीं करते लेकिन इस मामले में क्या किया, शायद उनकी मिलीभगत होगी और इसलिये दोनों मिल कर इधर उधर करते होंगे। यह मामला बाद में राजस्व मन्त्री श्री रामकिशोरजी व्यास के सामने उठाया गया तो उनकी समझ में भी नहीं आया कि इस तरह के झगड़े की जमीन को कैसे अलाट कर दिया, मुझे यह तो बता दें। क्या गलती रही है इसमें। अलाटमेंट कमेटी जमीन अलाट करेगी लेकिन गंगारामजी ने फिर स्टे कर दिया। पांच पौने पांच साल तक चिल्लाते रहे, कूकते रहे लेकिन क्या हुआ ? आखिर परसरामजी मदेरणा और कलेक्टर रमाकान्तजी को मैं धन्यवाद दिए बिना नहीं रह सकता जिन्होंने इस चीज को माना कि जमीन मिलनी चाहिए और अब जाकर वह जमीन जरूर निकली है। लेकिन इन्होंने अपनी तरफ से अपने परिवार के चक्कर में पड़ कर वह जमीन उनको अलाट करा दी।

(श्री मनोहरसिंह मेहता)

अब आगे चलिए। एक त्रिवेणी संगम है जहां पर कुछ जमीन चरागाह में थी। वहां पर भी बृजसुन्दरजी ने, उप प्रधान ने और वहां के नेताओं ने मिलकर इस बारे में क्या किया, यह बताता हूं। पहले वह जमीन कन्वर्ट होनी चाहिए थी, चरागाह से जमीन निकाल कर खेती में आनी चाहिए थी। आपने क्या किया कि अपने मामी ससुर को 25 बीघा जमीन नहरी अलाट कर दी। वे मामी ससुर हैं श्री सुगनचन्दजी जैन। जैसे पहले राजाओं के समय हुकुम राज के निकला करते थे वैसे ही हुकुम माननीय बृजसुन्दरजी ने निकाल दिये, हुकुम फरमा दिए। 15 बीघा जमीन उन श्री सुगनचन्दजी को दिलवा दी और 10 बीघा राधाकिशनजी खाती को दिलवा दी और 15 बीघा भंवरलालजी कोठारी को दिलवा दी। और वहां, अध्यक्ष महोदय, यह हालत है कि एक खटीक का जवान लड़का मोटर के नीचे दब कर मर गया और एक चमार का लड़का कुआ खोद रहा था तब ऊपर से ढाण़ी गिरने से मर गया। तब कलेक्टर साहब के सामने सुझाव रखा गया कि इनको दो दो बीघा जमीन तो दिलवा दें। कलेक्टर साहब ने भी कोशिश की, वे भी दिल से चाहते थे कि इनको जमीन मिलें लेकिन जो हरिजनों को जमीन रिजर्व की गई वह उबड खाबड और बिल्कुल बेकार थी उसमें से भी आज तक उनको कोई जमीन नहीं मिल सकी। कलेक्टर साहब वगैरह का अभी भी प्रयास है लेकिन दूसरी तरफ जो अच्छी 2 जमीन है उस पर ये कब्जा कर बैठे हैं।

यही नहीं, अध्यक्ष महोदय, आपको भी शायद मालूम हो कि आपके एक बड़े साढू हैं श्री हरिशचन्द्रजी प्रवासी। उन्होंने राज्य से बीस हजार रुपये लिये। और राज्य के बीस हजार रुपये लेकर दस पन्द्रह साल से चले गए हैं प्रवास में। मैं उनको तो दोष नहीं देता क्योंकि वे तो प्रवासी थे इसलिए प्रवास पर चले गए और राज का रुपया भी ले गए, लेकिन इन समाजवादियों को मालूम नहीं है कि राज का रुपया लोहे के चने हैं जो चबाए नहीं जा सकते। तुम्हारी जायदाद से वसूल होंगे। वह तो राज के रुपये ले गए लेकिन आपने क्या किया। आपके सालाजी हैं श्री दीनबन्धुजी

श्री अध्यक्ष : आरम्भ रखिए

श्री मनोहरसिंह मेहता:-और आपके मामी ससुर के लड़के हैं, आप खुद गये शिवचरण जी साहब और जाकर के कहा कि इनको जमीन अलाट करो। अब अलाटमेंट करते हैं तो कायदे में नहीं आता, तो भी आपने कहा कि यह तो करना पड़ेगा। इन सबको आपने जमीन अलाट कराई चित्तौड़ की व नहरी जमीन अलाट कराई पता नहीं चित्तौड़गढ़ के एम. एल. एज की नींद क्यों नहीं खुलती। आपको तो कम से कम इस दृष्टि से देखना चाहिए कि हम लोग लोगों का नमक खा रहे हैं। कैसे हो सकेगा कि एक तरफ से भूमिहीन भूमि के लिए तरस रहे हैं, भूमि से वंचित रहते हैं लेकिन इस तरफ से दूसरोंको जमीन मिल जाती है। लेकिन आपतो बड़े उदार हृदय ठहरे। आप हरियाणा के चुनाव में गए। आप भंवरलालजी, मांडलगढ से बहुत खुश हो गए और उनको 25 बीघा जमीन दिला दी। बृजसुन्दरजी हथियार मिले हुए थे, करा दिया पट्टा। जैसे पहले महाराणा सहाब हुकुम फरमाते थे कि थाने दीदी है, थे बोओ और भोगो। फिर सिंघोली का एक ढोली है एक लड़का, उसके आपकी तारीफ में गाने गाए

(श्री मनोहरसिंह मेहता)

तो उससे आप खुश हो गए और उसको भी 15 बीघा जमीन दे दी। तो अध्यक्ष महोदय, जमीन के मामलों में इस कदर घोटाले किए गए हैं।

अब मैं आपसे और निवेदन करूं कि आप कितने समाजवादी हैं। इनके पुत्र पुत्री की शादी हुई। शिवचरणजी की पुत्र पुत्री, हमारी भी पुत्र पुत्री हैं, उनकी शादी खूब ठाठ बाट से होनी चाहिए शादी में राजा महाराजाओं की तरह लाईटिंग हो तो इसमें कोई एतराज की बात नहीं है, क्योंकि आज के राजामहाराजा तो यही लोग हैं मैं अपनी विश्वसनीय जानकारी के आधार पर कहता हूं कि इन्होंने डायरेक्ट कनेक्शन लिया और इस लाईटिंग का पैसा बचाया।

श्री शिवचरण माथुर (विद्युत मंत्री) : अध्यक्ष जी•••••••

(व्यवधान) (अश्रव्य)

श्री मनोहरसिंह मेहता : आप जब शिक्षा मंत्री थे••• •…

श्री शिवचरण माथुर : माननीय अध्यक्षजी, जो आपने अभी बातें कहीं हैं मैं समझता हूं कि उनका कहींकोई आधार नहीं हैं और इन आधार के बगैर इतनी सारी बातें कही जाती हैं तो मैं समझता हूं कि हम लोगों को कोई संरक्षण नहीं मिल रहा है। किसी भी मंत्री के खिलाफ या मेरे खिलाफ कोई चार्जेज हों, कोई निश्चित आरोप हों तो मैं तो खुला जांच में विश्वास करता हूं, लेकिन किसी प्रकार से सरप्राईज तौर पर यहां अचानक कोई बात रखी जाय तो वह किसी भी प्रकार उचित नहीं होगा।

श्री विजयसिंह (मकराना) : यह अविश्वास के प्रस्ताव पर बहस हो रही है, यहां पर कोई भी बात रखी जा सकती है।

श्री बालसिंह सोढा (जैसलमेर) : शिवचरणजी साहब, यह तो बिल्कुल स्पष्ट है आज इस सदन में कुछ एलीगेशन्स मिनिस्टर्स पर लगेंगे। आप अगर चाहें तो हाउस की कमेटी कांस्टीट्यूट कर ली जाय तो उनकी जांच कर लें।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, देखिये जैसा आप कह रहे हैं कि डाइरेक्ट कनेक्शन की बात मैंने सुनी है तो यह तो एक तरह का वेग चार्जेज हैं आपके पास कोई डेफिनेट प्रूफ हो तो उनको रखिए। जिनका कोई बेस हो वह बातें यहां रखिए।

श्री मनोहरसिंह मेहता :-आप सुनिए तो सही अध्यक्ष महोदय, आप कितने समाजवादी हैं यह मैं बता रहा हूं। आपके प्राईवेट सैक्रट्री हैं श्री चेलानीजी। जब उनके नई फियेट कार आ गई तो मैं समझ गया कि आप कितने समाजवादी हैं। जब मेरे पास बंगला है तो तुम्हारे पास बंगला क्यों नहीं हो, जब मेरे पास फियेट कार है तो तुम्हारे पास फियेट कार क्यों नहीं हो यह तो समानता चाहते हैं। अध्यक्ष महोदय, जब मेरे पीछे चार-चार नौकर चलते थे और यह हाथ से रोटी पकाते थे, किराये के मकान में रहते थे और आज जितने भाई है उतने ही बंगले हैं। जितने भाई हैं उतने ही फियेट कारें हैं, जितने भाई हैं उतनी ही नहरी जमीनें हैं, जितने भाई हैं सबके पास अलग 2 बैंक बैलेंस है। यह सब कहां से आया ? क्या दिवाली के दिन में किवाड़ खुले रह गए और इनके ही घर में लक्ष्मी प्रवेश कर गई और हमारे घर खाली रह गए ? आप बड़े समाजवादी

(श्री मनोहरसिंह मेहता)

बनते हैं और समाजवाद की बातें करते हैं। मैं सदन के सामने श्री वंशीलालजी राठी का यह पत्र, सदन की मेज पर रखता हूं ...

श्री अध्यक्ष:- मैं किसी पत्र को सदन में रखने की इजाजत नहीं देता ।

श्री मनोहरसिंह मेहता: इजाजत नहीं देता तो नहीं रखता हूं । लेकिन मैं आप से पूछता हूं कि चेलानीजी ने यह पैसा कहां से बनाया । आप इसकी जांच करवाइए । आप जानते हैं कि शिक्षा विभाग के एक एक मास्टर कितने दुःखी थे कि बिना पैसे लिए किसी का ट्रांसफर नहीं होता । क्यों फोर्ड फाउण्डेशन का साढे सात लाख रुपया एक साल तक चेलानीजी के खाते पड़ा रहा, आखिर कहां से आया यह, किसके आदेश से पड़ा रहा ।

अब मैं आपको बताऊं कि किस तरह से रेप करने वालों का भी आप पक्ष लेते हैं। हमारे वहां पाछोला के सब-इन्स्पेक्टर भँवरलाल जी हैं। इनके खिलाफ भ्रष्टाचार की शिकायत आई। जांच की कार्यवाही एस० पी० ने की और एस० पी० ने उनको मुअत्तिल किया। अब श्रीमान् समाजवादी जी ने खूब जोर लगाया कि इसको बहाल तो करो ही और वहां का वहां ही रखो। इसके लिए यदि, माननीय अध्यक्ष महोदय, यदि एक आर्डिनेंस निकाल दिया जाता कि कोई भी अधिकारी या कर्मचारी जो कांग्रेस को सपोर्ट करता होगा तो अगर वह बलात्कार भी करे तो भी क्षम्य है। अगर ऐसा हो जाता तो भी बात समझ में आ जाती। एस० पी० ने कहा कि मैं जीती मक्खी को कैसे निगलूं। मैं ऐसा नहीं कर सकता। तो आखिर एस० पी० को ही जाना पड़ा लेकिन मुअत्तिली के आर्डर अभी तक चल रहे हैं। तो जो रेप करता है उनके लिये आप जोर लगाते हैं कि आर्डर वापिस लो क्योंकि वह आपकी पार्टी को सपोर्ट करता है। आपने मांडलगढ़ के सब-इंस्पेक्टर के बारे में निवेदन किया जिनको डी० आई० जी० ने तब्दील कर दिया....

श्री अध्यक्ष : यह तो बड़ी छोटी छोटी बातें हैं।

श्री मनोहरसिंह मेहता : आगे सुनिए अध्यक्ष महोदय, वह सब-इंस्पेक्टर क्या करते थे। केवल रिश्वत की शिकायतें होती तो भी कुछ नहीं था। पलासिया में बलाई का कत्ल हुआ तो उन्होंने कत्ल के मामले में और किसी को नहीं पकड़ा, बलाई के बाप को पकड़ा और उस बलाई के बाप को इतना पीटा कि उसके गुप्त अंगों के पत्थर बांधे। उस श्री भरतप्रकाश जी के तबादले की सिफारिश की गई। डी० आई० जी० ने तीन तीन बार तबादला किया लेकिन इन्होंने उसका तबादला मुल्तवी कराया। अब आप अन्दाजा लगाइए कि आई० जी० और डी० आई० जी० तबादला करें और उसको इस तरह से कैंसिल करायें तो कौन करेगा इनका काम ... .

मैं आपको और निवेदन करना चाहता हूं कि माण्डलगढ़ एस० डी० एम० जो सुरेश जैन हैं, उसने वहां पर जो एक नये जंगल की कटाई हो रही थी उसको रोका और हजारों रुपयों की लकड़ी और कोयले को जब्त किया। इसी तरह से वहां पर एक ग्राम सेवक राज्य की जमीन पर अपनी खेती कर रहा था। पंचायत समिति में तबादले नहीं होते हैं और इस तरह से कर्मचारियों को इन्टरेस्ट क्रियेट हो जाते हैं। वह वहां

(श्री मनोहरसिंह मेहता)

पर अपनी खेती कर रहा था। क्यों कर रहा है यह किसी ने नहीं देखा। यह इस एस० डी० एम० ने देखा और उसका तबादला किया। श्रीमान् जो कर्मचारी ईमानदार होते हैं, उनका तो ये तबादला कराते हैं और जो इनके इशारे पर चलते हैं उनका तबादला रुकवा देते हैं। इसी प्रकार से इस ग्राम सेवक का तबादला रुकवाया गया श्रीमान् शिवचरण जी माथुर के द्वारा।

मैं आप से इस बारे में और भी कुछ बातें निवेदन करना चाहता हूं। आदमी जैसा हो वैसा सब के सामने आ जाता है तो कोई दिक्कत नहीं होती है। नारा लगावें समाजवाद का और काम करें सर्वनाश का। तो फिर आप बताइये कैसे होगा ? इनको अपशुकने भी मानते हैं और सुखाड़िया साहब के सेठों का इन्होंने अन्त करवाया है। जैसे मोहता, ये मोहता के यहां पर रहे तो मोहता खतम। बाद में सुखाड़ियाजी ने राजगढ़िया के यहां पर रखवाया तो राजगढ़िया खतम ? जब सोने से शास्त्रीजी को तुलवाने के लिये काम किया तो शास्त्रीजी भी खतम और जब सुखाड़ियाजी इनको अपने मन्त्रिमंडल में लाये तो आप अन्दाज लगा लीजिये सुखाड़िया साहब का कैसा हाल हुआ। इसलिए मैं बरकत साहब से निवेदन करना चाहता हूं कि आप इनकी हरकतों को सहन न करें। और समाजवाद की आड़ में आप इनको शह देंगे तो आपका अन्त भी दूर नहीं है लेकिन हम चाहते हैं कि आपको सहयोग दें क्योंकि आपके मन में निष्ठा है, तड़प है, भावना है। इसलिये यह निवेदन करना चाहता हूं। आप बड़ी बुराई करते थे कहा करते थे पी० डब्ल्यू० डी० के इन्चार्ज दुर्गाप्रसाद जैन निकम्मे आदमी हैं। क्या अब वे समाजवादी बन गये हैं। विद्युत बोर्ड के भट्ट, चीफ इन्जीनियर का एक्सटेन्शन चल रहा है, हुआ नहीं हो गया है। क्या वे भी समाजवादी हैं। आप कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं। बात यह है कि यह जो मूर्ति है, यह मूर्ति हैं तांबे की और ऊपर चढ़ रहा है सोने का मुलम्मा। बाहर तो है कुछ और भीतर है कुछ और आखिर कितने दिन यह ताम्बे पर सोने का झोर चढ़ा रहेगा। यह तांबे पर चढ़ा हुआ झोर है जो समाप्त हो रहा है। आप किस हद तक नीचे जा सकते हैं, वह भी देख लीजिये। यहां से आपने हर मिडिल स्कूल को तीन हजार रुपये स्वीकार किये उसमें एक सवाई प्रताप मिडिल स्कूल था, जिसकी तीन हजार की सेंक्शन की फहरिस्त चली गई लेकिन आपके पास कोई प्रधान आया कि यह वह गांव है जहां से आपको वोट नहीं मिले हैं। आपने आर्डर दिया और तुरन्त उसके तीन हजार रुपये रोक दिये गये। मेरे पास वहां का सरपंच आया, उसके बाद मैंने आपको चिट्ठी लिखी कि आपने यह तीन हजार रुपया कम कर दिया है। आप वापिस मन्जूर करो वरना मैं रोज विधान सभा में स्थगन प्रस्ताव रखूंगा चाहे अध्यक्ष महोदय, उसको मंजूर करें या ना करें। दूसरे दिन आपने कहा कि तीन हजार रुपये वापिस मन्जूर कर दिये गये हैं। तो अध्यक्ष महोदय, सीधी उंगली से घी नहीं निकलता है। ये बदला लेने में माहिर हैं। छोटी से छोटी हरकत करने में माहिर हैं। एक नाई को शिड्यूल कास्ट का बनाया और शिड्यूल कास्ट का बनवा कर नौकरी

(श्री मनोहरसिंह मेहता)

दिलवाई और फिर बाद में उसका एक स्कूल में पोस्टिंग करवाया और शायद यह अब आपके यहां पर काम कर रहा है। पहले आपने अस्थायी नियुक्ति करवाई और स्थायी करवाया। लेकिन मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं, आप बड़ी भावना के साथ मुख्य मन्त्री बन कर आये हैं। यह आपका मूल्यवान समय है। भविष्य में बनेंगे या नहीं बनेंगे लेकिन जो दागी है और जो बेदागी हैं उन सब के लिए इन्क्वायरी करवायें। उनके टेलिफोन के खर्च को देखें तो आश्चर्य होता है। जसराज जी के टी. ए. डी. ए. को देखें। ये कितने हजार के हैं। मेरा मुख्य मन्त्रीजी से निवेदन है कि आप इसकी जांच करवायें।

एक बात और कहूंगा। मद्रास वगैरह सब जगह शराबबन्दी खुल रही है और हजरत मोहम्मद के आप अनुयायी हैं सैनिकों को शराब दी जा रही है इसके लिये मैं नहीं कहना चाहता। वह हमारा प्राण है। ठंड में काम कर रहे हैं, दवाई के रूप में आप उनको यह दें इस पर मुझे आपत्ति नहीं है, परन्तु इन अधिकारियों से बचिये। ये शैम्पन की बोतल के पीछे रिश्वत खाते हैं। इसको आप रोकिये। इसके लिये जांच कमेटी बिठाइये।

एक बात और मुख्य मन्त्रीजी से कहूंगा। ये आत्मवादी के रूप में अनुशासनहीन हैं। जिस सुखाड़िया ने इनको बनाया उस सुखाड़िया के भी ये सगे नहीं रहे तो आप के सगे कब हो सकते हैं। ये तो इस इरादे में हैं कि मैं मुख्य मन्त्री कैसे बनूं। मैं अब अध्यक्ष महोदय के हुकम की अवहेलना नहीं करना चाहता। पांच साल तक इन्होंने कृपा रखी है, उनका आभारी हूं और इज्जत के साथ प्रणाम करता हूं।

श्री अध्यक्ष: आपने तो यह मोशन मूव नहीं किया। मैं इसको मूव किया हुआ मान लेता हूं।

श्री मनोहरसिंह मेहता: माफ कीजिये मैं भूल गया। मैं इसको मूव कर देता हूं। "यह सदन राजस्थान के वर्तमान मन्त्री परिषद् में अपना अविश्वास प्रकट करता है।"

श्री विजयसिंह: अध्यक्ष महोदय,

श्री अध्यक्ष: पहले आपके लीडर को बोल लेने दीजिये।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह (डूंगरपुर): अध्यक्ष महोदय, बोलूंगा तो अवश्य लेकिन अभी नहीं। विशेष समय नहीं लूंगा परन्तु कुछ न कुछ समय अवश्य लूंगा।

श्री आदित्येन्द्र (डीग): अध्यक्ष महोदय, मेरे लिये भी समय देने की कृपा करें।

श्री अध्यक्ष: अवश्य। श्री सोनी।

श्री गोरधन सोनी (मेड़ता): अध्यक्ष महोदय, आज हम राजस्थान सरकार के खिलाफ अविश्वास के प्रस्ताव पर विचार कर रहे हैं। अध्यक्ष महोदय, जिस समय पुरानी सरकार भंग हुई थी और माननीय बरकत साहब नये मुख्य मन्त्री बनाये गये तब सभी को यह लगा कि यह कल्पनातीत हुआ है। कुछ नया चेन्ज आया है और सभी को यह नया

(श्री गोरधन सोनी)

चेन्ज अच्छा लगा और यह लगने लगा कि राज्य में कुछ सुधार होगा। बरकत साहब ने घोषणा की कि मैं भ्रष्टाचार को खतम करूंगा। इससे सभी को प्रसन्नता हुई। भ्रष्टाचार सभी बुराइयों की जड़ है और जो इतनी बुराइयां व्याप्त हैं उनमें सब से प्रमुख हाथ भ्रष्टाचार का है। नये मुख्य मन्त्रीजी ने कहा मैं भ्रष्टाचार को खतम करूंगा उससे आम जनता को खुशी हुई लेकिन कुछ दिनों तक शासन करने के बाद ऐसा लग रहा है अध्यक्ष महोदय, कि भ्रष्टाचार के खतम होने का कोई नाम नहीं है और इसमें इनकी भी कोई सहानुभूति नहीं है, दिलचस्पी नहीं है। अध्यक्ष महोदय, आप स्वयं जानते हैं, और सब बात जानते हैं और उनसे अवगत भी हैं। इन दिनों में बेईमानी के खिलाफ, भ्रष्टाचार के खिलाफ कोई कार्यवाही होती तो हमें सन्तोष होता और हम समझते कि भ्रष्टाचारियों के खिलाफ कार्यवाही हुई है। लेकिन अध्यक्ष महोदय, ऐसा कुछ नहीं हुआ। जब भी बात होती है, दागी आदमियों को मन्त्रिमण्डल से निकाल दिया जाये, मुख्य मन्त्री यह दलील देते हैं कि मेरा मन्त्रिमण्डल बहुत ही छोटा है। इस तरह से ऐसा लगता है कि चेन्ज तो जरूर आया है परन्तु उस चेन्ज का जनता को लाभ नहीं मिला है और न भविष्य में मिलने वाला है।

इसके अलावा, अध्यक्ष महोदय, मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि आज जिन लोगों को शासन में महत्व मिलता है या मन्त्रिमण्डल में जगह मिलती है उनमें से कुछ लोग ऐसे हैं जिन्होंने राष्ट्रपति के चुनाव में अनुशासन को भंग किया और अनुशासन को भंग करने के बाद में आज वे मन्त्रिमण्डल में स्थान पाने के हकदार हो गये। अध्यक्ष महोदय, यह विचारणीय बात है कि कोई आदमी गलत काम करे और उसको महत्व दें तो उसको जनता क्या समझेगी? मेड़ता में जो वोटिंग का काण्ड हुआ उसमें जो लोग जिम्मेदार रहे उनके खिलाफ कुछ न हो और उलटा उनको सम्मान दिया गया तो इसमें जनता पर बुरा प्रभाव पड़ता है। जो लोग देश के लिए काम करते हैं उनको सरकार सम्मान देती है, उनका सार्वजनिक सम्मान किया जाता है, उनको ऊंचे ओहदे दिये जाते हैं, लेकिन, अध्यक्ष महोदय, जो लोग गलत काम करें, देश के हित के विपरीत और देश में गलत परम्पराओं का निर्माण करें और उनको सम्मान दिया जाता है, तो इससे देश का कल्याण नहीं होने वाला है।

अध्यक्ष महोदय, मैं यह कहना चाहता था कि सरकार का यह कर्तव्य है और वह हमारी सुरक्षा और व्यवस्था के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार है। हमने स्वराज्य की लड़ाई लड़ी और जब सरकार बनी तो हमारे आदमी पावर में आये, लेकिन, अध्यक्ष महोदय, आज 20 वर्ष से देश में जिस ढंग की सुरक्षा व्यवस्था है वह आप से छिपी नहीं है। जब से हमने अपने देश को सम्हाला है उसके बाद हमने देश का बड़ा नुकसान किया। काश्मीर का कुछ हिस्सा अलग हो गया, अक्षयचीन गया। हमने अपनी जमीन खो दी जिसकी सुरक्षा की जिम्मेदारी सरकार की थी। सीमा की सुरक्षा उसे दृढ़ता के साथ करनी चाहिए और किसी कदर दूसरे को कब्जा नहीं दिया

(श्री गोरधन सोनी)

जाना चाहिए, लेकिन सरकार के द्वारा ऐसा नहीं हुआ। इसलिए यह गैर जिम्मेदार सरकार है, अध्यक्ष महोदय।

उसके साथ में, अध्यक्ष महोदय, जो पुलिस की व्यवस्था पहले से चली आ रही थी वह गलत थी, लेकिन उस व्यवस्था को आपने स्वयं देखा है। व्यवस्था का मुख्य काम पुलिस के हाथ में होता है। आज इस देश में और राज्य में पुलिस से ज्यादा भ्रष्ट कोई महकमा नहीं है। लोगों की जान माल सुरक्षित नहीं है। भले आदमियों के साथ में तरह तरह के अत्याचार और अनाचार होते हैं। गुण्डे लोग उनके आश्रय में पलते हैं, तो इस तरह की व्यवस्था की क्या तारीफ की जानी चाहिए? यह सूक्ष्म में मैं इतना ही कहना चाहता हूं।

इसके सिवाय एक बहुत बड़ी समस्या बंगला देश को सामने आ रही है। इसके लिए गत सत्र में एक प्रस्ताव भी हमने पास किया कि बंगला देश को मान्यता दी जाय, लेकिन, अध्यक्ष महोदय, हमारी केन्द्रीय सरकार के पास से यह नहीं करा सके कि बंगला देश को मान्यता दी जाय। उस गलत स्टेप के कारण आज देश बहुत दुविधा में पड़ा हुआ है। एक करोड़ शरणार्थी हमारे यहां आये हुए हैं जिनके खर्चे का व्यय भार 2–3 करोड़ का बताते हैं लेकिन उनकी संख्या 1 करोड़ है और 5 रुपये से कम एक व्यक्ति पर खर्चा नहीं आता है तो 5 करोड़ यह और 5 करोड़ और दूसरे इस तरह से 10 करोड़ प्रतिदिन का भार देश को उठाना पड़ रहा है।

श्री अध्यक्ष : House to order please (सरकारी पक्ष की ओर देखते हुए) माननीय सदस्य Don't talk please.

श्री विजयसिंह : यह कांग्रेस के मुख्य सचेतक केवल 1200 रुपये महीना···

श्री अध्यक्ष : ऑर्डर प्लीज।

श्री गोरधन सोनी : इस तरह से देश की आर्थिक स्थिति का प्रश्न है और उसके बोझ से हमारी कमर टूट रही है, लेकिन सरकार उसका कोई समाधान नहीं कर रही है।

अध्यक्ष महोदय, इस देश का विभाजन हुआ और इस पार्टी ने विभाजन स्वीकार किया। जो पार्टी पॉवर में आई है यह उसकी जिम्मेवारी थी कि जो लोग अपने देश के दूसरे हिस्से में चले गये हैं उनकी सुरक्षा का ध्यान रखे, उनकी सुख-सुविधा का ध्यान रखे, लेकिन उनको उनके भाग्य पर छोड़ दिया गया। पाकिस्तान ने जो अनाचार और अत्याचार किये हैं वे अवर्णनीय हैं। सब लोग उनको जानते हैं। वे सीमा लांघकर आते रहे फिर भी हम मौन रहे। करोड़ों के साथ में अनाचार और अत्याचार हुआ फिर भी हम मौन रहे, सिर्फ बातें ही बातें हो रही हैं, लेकिन उनकी समस्याओं का सीधा हल नहीं निकाल सके। इस देश की जो परम्परा रही है उसको मैं बताऊं कि सती सीता के लिए राम-रावण का युद्ध हुआ, द्रौपदी के अपमान के लिए महाभारत की लड़ाई हुई। पूर्वी पाकिस्तान में लाखों ललनाओं के साथ में अनाचार और अत्याचार हुए, लेकिन सरकार मौन है। न मालूम किस समस्या में विलीन है। हमारी गरदनें शर्म से नीची हो गई। क्या ऐसी

(श्री गोरधन सोनी)

सरकार रहने के लायक है ? मैं समझता हूं नहीं।

श्री अध्यक्ष : केन्द्रीय सरकार के प्रश्नों को आप यहां ले रहे हैं। कई बार इन पर डिबेट हो चुकी है। आरम्भ रखें।

श्री गोरधन सोनी : 'अध्यक्ष महोदय, दूसरी बात मैं न्याय के सम्बन्ध में कहना चाहता हूं। अध्यक्ष महोदय, बहुत से झगड़े होते हैं। कई तरह के मामले आते हैं जमीनों के, लेन-देन के, कई तरह के झगड़े होते हैं। आज न्यायालयों की यह हालत है कि वहां पर 3–4–5 वर्ष तक फैसले का पता नहीं। सुप्रीम कोर्ट में जाना पड़ा तो 15-20 वर्ष तक न्याय नहीं मिलता है। अध्यक्ष महोदय, यह न्याय नहीं है, क्योंकि कई आदमी तो न्याय मिलने के पहले ही खत्म हो जाते हैं, तो क्या सुविधा हुई ? इतना मंहगा न्याय, अध्यक्ष महोदय, यह जनता बर्दाश्त कर रही है, लेकिन बरदाश्त करने के अलावा कोई चारा नहीं है।

(समय-समाप्ति-सूचक घन्टी)

इसके बाद मैं, अध्यक्ष महोदय, यह कहना चाहता हूं कि जिस ढंग से हम चल रहे हैं कि हर आदमी की पक्षपात से नियुक्ति की जाती है जो हकदार होता है वह नियुक्त नहीं हो सकता है, लेकिन जिसकी सिफारिश होती है वह, अध्यक्ष महोदय, हो जाता है। यह बहुत बुरी बात है। जिसका हक होता है वह मारा जाता है, लेकिन जिसके पास सिफारिश होती है वह सब काम अपना करा लेता है। इतना बड़ा अनाचार और अत्याचार, अध्यक्ष महोदय, हो रहा है।

ऐसा लगता है कि शासन की जिस तरह व्यवस्था है वह यह है कि हर जिले का बंटवारा कर लिया है और बंटवारे में यह कह दिया है कि नागौर जिला नाथूरामजी के हाथ में कर दिया है। उनको प्रशासन में दिलचस्पी नहीं है, उनको लोगों की तकलीफें दूर करने में दिलचस्पी नहीं है, उनको दिलचस्पी इस बात में है कि उनका आदमी लगे। जिसको चाहें उसको लगायें....

श्री अध्यक्ष : ही इज ए स्ट्रेन्जर इन दी हाउस। उन पर एलिगेशन लगाते हैं, तो मदद वाली बात नहीं होगी।

श्री गोरधन सोनी : सरकार इस ढंग से वहां पर लोगों की नियुक्तियां करती है, अफसरों को नियुक्त करते हैं इस कारण से गड़बड़ होती है। जो आदमी वे वहां लगाते हैं उनसे वाहवाही लेते हैं। उनके कहने से उलटा सीधा काम करते हैं। यह आपसे छिपा नहीं है। आप स्वयं जानते हैं कि कितनी गलत परम्परा है। इसलिए लोगों पर अनाचार और अत्याचार होता है और उनकी सुनवाई नहीं होती है और वे परेशान हैं इसलिए यह कहना पड़ा।

इसके सिवाय, अध्यक्ष महोदय, मैं यह भी कहना चाहता हूं कि जो जीवन के लिए परम आवश्यकताएं हैं वे पानी और हवा हैं। हवा के लिए तो परमात्मा की कृपा है, लेकिन पेय जल की समस्या यह सरकार हल नहीं कर सकी है आज जगह-जगह पेय जल की तकलीफ है। इन 25 वर्षों में इस राज्य सरकार ने अनाप-शनाप टैक्स लगाये हैं और विकास का थोथा ढिंढोरा पीटा जाता है। यह सरकार पेय-जल की समस्या हल नहीं कर सकी तो इस सरकार को रहने का

Page No 15

(श्री गोरधन सोनी)

कोई हक नहीं है। कई जगहों पर तो इस कदर पानी की कमी है कि 2-2, 3-3 मील से लोग पानी लाते हैं, और गरमी के दिनों में तो 3-3, 4-4 मील से पानी लाना पड़ता है, लेकिन पेय-जल की समस्या को यह सरकार 25 वर्षों में भी हल नहीं कर सकी, और वह सरकार विकास का दावा करे तो विचारणीय प्रश्न है। क्या उन्होंने विकास किया ?

इसके बाद में मैं और भी असुविधाओं की ओर इशारा करना चाहता हूं, वह है अस्पताल और डॉक्टर ''

श्री अध्यक्ष : आप बिलकुल बजट सेशन की तरह बात कर रहे हैं। यह प्रश्न कई बार आ चुका है प्रश्नों के द्वारा। बहुत समय जा रहा है।

श्री गोरधन सोनी : अध्यक्ष महोदय, मैं संक्षेप में कहता हूं कि जो सुविधाएं जनता को मिलनी चाहिए वे, अध्यक्ष महोदय, नहीं मिली और लोग इस सरकार के कार-कामों से परेशान हैं। अध्यक्ष महोदय, मैं एक बात कहना चहता हूं कि जो टैक्स लेते हैं उनका सदुपयोग होना चाहिए, लेकिन यह सरकार टैक्स का दुरुपयोग करती है। गैर सरकारी संस्थाओं में, अस्पतालों में, राजकीय उद्योगों में, जहां पैसा लगता है तो उसका क्या उपयोग है ? पैसा लगता है और कोई उपयोग नहीं होता है। उनमें घाटा होता है। इसी तरह से कृषि फार्म्स में घाटा होता है, इसी तरह से कोआपरेटिव सोसाइटीज हैं इनमें बड़ा भारी घोटाला है। किसी का नाम है और कोई ऋण लेता है''''

श्री अध्यक्ष : अब समाप्त करें। जनरेलाइजेशन को समाप्त करें, माननीय सदस्य।

श्री गोरधन सोनी : इसीलिए, अध्यक्ष महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं कि यह तरीका बहुत गलत है।

इसके साथ में एक समस्या और है जिसके बारे में निवेदन करूंगा कि जो लोग शिड्यूल्ड कास्ट के लोगों को जमीनें एलॉट कराने में दिलचस्पी रखते हैं सुनें कि बहुत मुश्किल से तो जमीनें एलॉट होती हैं, और जमीनें एलॉट होती हैं तो बड़ी मुश्किल से वे खेती कर पाते हैं, या खेती भी कर लेते हैं तो उनकी फसल दूसरे लोग काट ले जाते हैं। इस सिलसिले में अनेक केसेज अलग-अलग जिलों में बने हुए हैं कि इस प्रकार से उन लोगों पर अनाचार होता है, अत्याचार होता है और आपकी सरकार का ध्यान आकर्षित किया, लेकिन सरकार कुछ नहीं कर रही है। मुझे दुःख होता है। शिड्यूल्ड कास्ट के लिए कहना चाहता हूं। हम कहते हैं कि नागौर जिले में आये दिन कितने ही जुल्म होते हैं। खाटू काण्ड आपके सामने है। वह रोज होता है, लेकिन कोई सुनवाई नहीं होती है। शक्तिशाली लोग हैं। पुलिस वाले उनसे पैसा लेकर गरीबों पर जुल्म करते हैं। इसलिए मैं यह महसूस करता हूं कि इस सरकार को इस तरह से बैठने का और राज्य करने का कोई हक नहीं है चाहे सत्ता की राजनीति से राज्य करते हों और अगर ये इस्तीफा दे देते तो यह अविश्वास का प्रस्ताव नहीं लाना पड़ता।

श्री अध्यक्ष : समाप्त करें। श्री भैरों सिंह।

श्री भैरोंसिंह (किशनपोल, जयपुर) : अध्यक्ष महोदय······

श्री अध्यक्ष : पार्टी का समय 1 घण्टा 15 मिनट है।

श्री भैरोंसिंह : ठीक है।

अध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन करना चाहता हूं कि मुझे इस बात भी दुःख है कि इस संकटकालीन स्थिति में राजस्थान के विरोधी दल को प्रस्तुत अविश्वास प्रस्ताव का समर्थन करना पड़ा। साथ ही मुझे इस बात का भी दुःख है कि यह सत्र विधान सभा का अन्तिम सत्र है। और, इसी कारण विदाई के अवसर पर किसी प्रकार का अविश्वास, यह उचित नहीं ठहराया जा सकता है। इन दो तथ्यों के होते हुए भी आज की जिस प्रकार की परिस्थितियां हैं, उनका तुलनात्मक अध्ययन किया जाये तो निष्कर्ष यह निकलेगा कि इस सरकार के विरुद्ध अविश्वास के प्रस्ताव का समर्थन किया जाये। और, इसी आधार पर यह सब कुछ हो रहा है।

अध्यक्ष महोदय, राजस्थान के भूतपूर्व मुख्य मन्त्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया ने जिस समय अपने त्याग-पत्र की घोषणा की, उस समय लोगों में इस बात का विश्वास नहीं हो रहा था कि सुखाड़िया जी वास्तव में त्याग पत्र दे रहे हैं। कई दिनों तक इस बात के अनुमान लगते रहे, और आखिर में जब यह बात स्पष्ट हुई कि सुखाड़िया जी निश्चितरूप से त्याग पत्र दे रहे हैं। नई सरकार का गठन होने वाला है तो लोगों में निश्चित रूप से खुशी हुई थी, और वह अनुमान लगा कर बैठे थे कि नई सरकार पुरानी सरकार से भिन्न होगी। जन समस्याओं का हल होगा। राजस्थान का और राजस्थान की जनता का विकास होगा। जनता की आर्थिक स्थिति सुधरेगी। कई अनुमान लगे। कई व्यक्तियों ने मुख्य मन्त्री बनने का स्वप्न लिया। जिन्होंने स्वप्न लिया, उनको तो सम्भवतया निराश होना पड़ा। लेकिन जो देश में नहीं थे, हिन्दुस्तान के बाहर बंगला देश का रुख प्रस्तुत करने के लिए बाहर गये हुए थे, उन्होंने शायद कभी कल्पना भी नहीं की होगी इस बात के लिए कि मेरा भी कभी नम्बर आ सकता है। उनके गले में राजस्थान के मुख्य मन्त्री पद का हार आ पड़ा। मेरा न किसी का समर्थन है, न किसी का विरोध है।

जिस समय श्री बरकतुल्लाखां ने शपथ ग्रहण की तो लोगों में नई आशाओं का संचार हुआ। लोग यह समझने लगे कि राजस्थान में भ्रष्टाचार का अन्त होगा। इसकी भूमिका में जब राजस्थान के नये मन्त्रिमण्डल के गठन का प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ तो अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महा मन्त्री श्री शंकरदयाल शर्मा ने जनता में यह कह कर उत्सुकता पैदा कर दी कि नया मन्त्रि मण्डल ऐसा होगा, जिसमें ऐसे किसी व्यक्ति को शामिल नहीं किया जायेगा जिस पर किसी प्रकार के आरोप हैं। इस भूमिका के आधार पर जब राजस्थान का नया मन्त्रिमण्डल बना तो आप अनुमान करेंगे कि जो शंकर दयाल शर्मा के वक्तव्य के कारण लोगों में यह विश्वास पैदा हुआ था, वह 5 दिन के बाद ही मन्त्रिमण्डल के गठन के बाद समाप्त हो गया। अब उस समाप्ति का कारण कुछ लोग यह समझ कर चल रहे थे कि यह राजनैतिक मजबूरियां हैं, जिनके कारण, जिन व्यक्तियों को नहीं लिया जाना चाहिए था, उन लोगों को लेने के लिए मुख्य मन्त्री को विवश होना पड़ा।

(श्री भैरोंसिंह)

अध्यक्ष महोदय, राजनैतिक क्षेत्र में राजनैतिक मजबूरियां होती हैं। लेकिन नये मुख्य मन्त्री के सामने ऐसी मजबूरियां नहीं थीं। इसके कारण स्पष्ट हैं। मुख्य मन्त्री कांग्रेस के बहुमत से, आज यह कहना कि प्रत्यक्ष रूप से कांग्रेस सदस्यों की इच्छा से वह मुख्य मंत्रीजी चुने गए, टैक्निकली यह बात कह सकते हैं लेकिन वास्तव में यह बात नहीं थी। प्रधान मन्त्री की इच्छा थी और, सुखाड़िया जी यह समझ कर चलते थे कि राजस्थान में आने वाला मुख्य मन्त्री ऐसे व्यक्ति को बनाया जाना चाहिए कि जो अपने मुख्य मन्त्रित्वकाल में कुछ कर नहीं सके। सुखाड़िया जी को याद करने लगे। इस आधार पर श्री बरकतुल्लाखां को लिया गया है। बरकत साहब से जिस प्रकार के सम्बन्ध थे उस आधार पर मेरा यह विश्वास था कि बरकत साहब के हाथ में हुकूमत आयेगी तो राजस्थान का निश्चित ही नक्शा बदलेगा। इस आधार पर मैं कहता हूं कि कुछ राजनैतिक कारणों से लोगों को मजबूरन लेना पड़ गया, वह मजबूरी बरकत साहब के सामने नहीं थी। जिसको लेना चाहते, ले सकते थे। हटाने की इच्छा थी तो हटा सकते थे। नये व्यक्तियों को ले सकते थे। जैसा कि उन्होंने स्वयं किया कि राजस्थान विधान सभा में कांग्रेस के शिड्यूल्ड-कास्ट और शिड्यूल्ड ट्राइब्स के लोग थे, उनमें से किसी को प्रतिनिधित्व न देकर, श्री ओंकारलालजी को उन्होंने मन्त्रिमण्डल में शामिल किया। इस बात से स्पष्ट होता है कि श्री बरकतुल्लाखां के सामने ये राजनैतिक मजबूरियां नहीं थीं। तो जिस प्रकार की घोषणा शंकरदयाल शर्मा ने की थी और जैसा कि कालांतर में मुख्य मन्त्री कहते रहे हैं। यह मैं सदन के माननीय सदस्यों पर थोड़ी देर के लिए छोड़ कर चलता हूं कि राजस्थान का मन्त्रि मण्डल कैसा है। कितने दागी हैं। कितने बेदागी हैं? वह आपस में इस पर चर्चा कर लें कि किस प्रकार का मन्त्रिमण्डल राजस्थान में बना है। मैं इस प्रकार की बात के लिए अवश्य बधाई देता हूं कि 37 मन्त्रियों और उपमन्त्रियों की फौज को घटा कर 10 पर ले आये हैं। इसके लिए आज भी बधाई देता हूं।

अब प्रश्न आकर यह खड़ा हुआ कि बरकत साहब मुख्य मन्त्री बने, बरकत साहब को कोई बरकत साहब के नाम से सम्बोधित करने लगे, कोई बरकतुल्ला के नाम से सम्बोधित करने लगे, कोई प्यारे मियां का राज बताने लगे, कोई बरकतुल्ला खां का राज बताने लगे और स्थिति यह बनी, जनता स्वयं यह महसूस करके चलती थी, बरकत जी मुख्य मन्त्री बने हैं, जैसे कोई जनता का प्रतिनिधि मुख्य मन्त्री बना है जो जनता की आकांक्षाओं को पूरा करेगा। अब आकांक्षाओं की पूर्ति का सवाल आता है और उसमें पहले किसी प्रकार का कोई अनुभव करता है तो कोई मायने नहीं, अध्यक्ष महोदय, कि सरकार के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव प्रस्तुत किया जाय। अब स्वयं सदन अन्दाज लगा ले कि जिस समय बरकत साहब के मन्त्रिमण्डल का गठन हुआ, उस समय किस प्रकार की घोषणायें की गई। वैसे तो 1967 के बाद जब सुखाड़िया जी ने अपना मन्त्रिमण्डल बनाया तो सदन जानता है कि 7 मार्च, 1967 को जयपुर शहर में गोली चलाकर, गोली के आधार पर उन्होंने सत्ता प्राप्त की थी। मुझे ऐसा लगता है कि बरकत साहब ने भी उसी परम्परा को निभाया है। जब

(श्री भैरोंसिंह)

ये गद्दीनशीन हुए, उदयपुर के अन्दर स्कूटर काण्ड में दस आदमियों का बलिदान हुआ। हमारे राजा-महाराजाओं की उसी परम्परा को निभाया है कि जैसे कोई नया-राजा के राज-तिलक के अन्दर होता था, खून से तिलक किया जाता था। तो मैं समझता हूं कि सुखाड़िया साहब ने सात को मारकर अपना राज्य प्राप्त किया, बरकत साहब ने राज्य प्राप्त किया तो दस आदमियों की हत्या स्कूटर काण्ड में हुई और उनके खून से राज-तिलक कराया। वैसे मुख्य मन्त्री ने कह दिया था, इस सदन को भ्रम में रहने की आवश्यकता नहीं है, मैं समझता हूं कि सदन के कई माननीय सदस्यों को और जनता को निराशा हुई होगी जिस दिन बरकत साहब ने कहा कि पुराने मन्त्रिमण्डल ने, सुखाड़िया जी के मन्त्रिमण्डल ने मार्ग प्रशस्त किया था उसी आधार के ऊपर मैं चलूंगा। उस समय लगा कि यह तो मजबूरियों के कारण से परिवर्तन हुआ है, बाकी सरकार नई आने से प्रशासन में नया परिवर्तन आ जाय-इसकी आशा करना फालतू है। अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले आपने चार बातों को घोषणा की-मैं राजस्थान में रेड टेपिज्म समाप्त कर दूंगा, लालफीताशाही मेरे जमाने में बिल्कुल नहीं होगी। दूसरे आपने इस बात की घोषणा की, राजस्थान में जितनी जमीन पड़त है, जो जमीन सीलिंग के उपरान्त राजस्थान सरकार के हाथ में आयेगी, उसको तुरन्त आवंटित कर दिया जायगा। मुख्य मन्त्री जी ने यह घोषणा की कि जिस मन्त्री के विरुद्ध चाहे वर्तमान मन्त्रिमण्डल के सदस्य हों, चाहे भूतपूर्व मन्त्रिमण्डल के मन्त्री हों—जिसके खिलाफ भी प्राइमाफेसी एवीडेन्स इस बात की होगी, मैं मन्त्री महोदय को यहां तक कहूंगा कि वह कमीशन को फेस करें या त्याग पत्र दें। मुख्य मन्त्री ने यह घोषणा की, मैं राजस्थान में भ्रष्टाचार को मिटा दूंगा। मुख्य मन्त्री जी ने यह भी घोषणा की, मैं जनता की समस्याओं का समाधान करने के लिए कई एक अच्छी व्यवस्था करके चला हूं। मुख्य मन्त्री ने यह भी घोषणा की, मैं राजस्थान में औद्योगिक विकास करूंगा, उसके लिए राजस्थान के कई भागों में औद्योगिक संस्थान कायम कराऊंगा, भारत सरकार से सार्वजनिक क्षेत्र में उद्योग स्थापित कराऊंगा और राजस्थान में औद्योगिक जाल फैले-इस प्रश्न की मैं चेष्टा करूंगा। मुख्य मन्त्री जी ने इस बात की भी घोषणा की, राजस्थान में बेकारी और बेरोजगारी के कारण जिस प्रकार की समस्या बढ़ रही है, उस समस्या के निदान के लिए मैं कुछ चेष्टा करूंगा। मैं सदन को जानकारी देना चाहूंगा, एक एक प्रश्न के ऊपर। सबसे पहले प्रश्न आता है, माननीय मुख्य मन्त्री जी ने कहा कि मैं रेड टेपिज्म को खत्म करूंगा। अध्यक्ष महोदय, आपने पढ़ा होगा, राजस्थान के मुख्य मन्त्री ने यह कहा कि कोई कागज सात दिन से ज्यादा एक टेबल पर नहीं रहेगा। यदि सात दिन से अधिक उसमें विलम्ब होता है····

एक माननीय सदस्य : टेबल के नीचे रख देंगे।

श्री भैरोंसिंह : तो सचिव या हैड आफ दी डिपार्टमेंट उसके लिए रेस्पान्सिबल हैं उसके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्यवाही की जायगी। यह प्रश्न हैड आफ डिपार्टमेंट

(श्री भैरों सिंह)

या सचिव का है लेकिन मैंने तो डाइरेक्ट मुख्य मन्त्रीजी को पत्र लिखे उन पत्रों के उत्तर में कितना विलम्ब हुआ–यह सदन स्वयं अनुमान लगा ले कि बाकी के अधिकारियों से या सचिव से इस प्रकार की अपेक्षा करना कहां तक न्यायसंगत होगा। मैंने अध्यक्ष महोदय, मुख्य मन्त्री जी को करीब 19 पत्र लिखे। वह पत्र कोई स्थानान्तरण से सम्बन्धित नहीं हैं, किसी को कांट्रेक्ट दिया जाय-इसके सम्बन्ध में नहीं थे, किसी के खिलाफ, किसी अधिकारी को कोई चार्जशीट करके भेजा हो–इस प्रकार की स्थिति नहीं है। मैंने कुछ अहम मुद्दों की ओर माननीय मुख्य मन्त्री का ध्यान आकर्षित किया था। अध्यक्ष महोदय, 17 जुलाई को मैंने राजस्थान के मुख्य मन्त्री जी को चिट्ठी लिखी कि विधान सभा के गत सत्र में श्री रामप्रसाद लड्ढा, श्री मनफूलसिंह श्री अमृतलाल यादव, और श्री मथुरादास माथुर–इन चार के विरुद्ध विधान सभा में प्रमाण सहित आरोप लगाये गये थे। आपने मन्त्रियों के सम्बन्ध में इस प्रकार का वक्तव्य दिया है। मैं आपसे यह उम्मीद करता हूं कि आप इन लोगों के विरुद्ध कोई इन्क्वायरी कमीशन नियुक्त करेंगे और यदि इन्क्वायरी कमीशन नियुक्त नहीं करते हैं तो जैसे लोकपाल और लोकआयुक्त की व्यवस्था के सम्बन्ध में भारत सरकार ने माडेल कानून हमारे पास भेज रखा है, उसी प्रकार के कानून को आर्डिनेंस के जरिये जारी करके हम लोगों को इस बात का अवसर देंगे कि लोकपाल के समक्ष जाकर हम भूतपूर्व मन्त्रियों के आचरण की जांच करा सकें। इस सदन को सुनकर ताज्जुब होगा, 17 जुलाई के लैटर का जवाब देने में एक महीना लगा, वह उत्तर 17 अगस्त को मिला। उसमें कोई हां नहीं, कोई ना नहीं। आपने पत्र में केवल इतना लिख दिया, आपका पत्र प्राप्त हुआ। आपने मन्त्रियों की जांच के सम्बन्ध में इस पत्र में उल्लेख किया है। इससे सदन अन्दाज लगा ले, जिस भ्रष्टाचार को खत्म करने की घोषणा मुख्य मन्त्री ने की थी, उसके सम्बन्ध में पत्र में कितना उत्तर है। मैं समझता हूं, उसके बाद आज तक किसी प्रकार का उत्तर नहीं है। अध्यक्ष महोदय, इसी प्रकार से मैंने 23 जुलाई, 1971 को जोधपुर में जो पानी की चोरी का मामला था, उस पानी के चोरी के सम्बन्ध में कलेक्टर की रिपोर्ट सहित विधान सभा में जो कार्यवाही हुई, उसकी प्रोसीडिंग्स सहित, जो भूतपूर्व मन्त्री भीखाभाई को चिट्ठी लिखी उनके सहित, और उनका उत्तर प्राप्त हुआ, उसको साथ कर मुख्य मन्त्री को लिखा, चोरी का मामला है, कई बार विधान सभा में इसकी चर्चा हो गई है, रिपोर्ट आज तक राज्य सरकार छिपाये हुए थी, सम्भवतः आपको रिपोर्ट तलाश करने में समय लगे, इसलिए मैं रिपोर्ट सहित पत्र लिख रहा हूं। अध्यक्ष महोदय, उस पत्र का जवाब मुझे 13 सितम्बर, 1971 को, दो महीने के बाद में प्राप्त हुआ जिसमें यह लिखा हुआ था कि आपने इस सम्बन्ध में विस्तार से जांच की मांग की, आपका पत्र प्राप्त हुआ। अध्यक्ष महोदय, इसी प्रकार विधायकों के बंगलों के सामने जो वक्फ की जमीन का मसला चल रहा है, जिसका उल्लेख आगे करना चाहूंगा, उसके सम्बन्ध में 9 जुलाई को मैंने मुख्य मन्त्री को पत्र लिखा, जिसका जवाब 17

(श्री भैरोंसिंह)

अगस्त को मिला। उसमें भी यह लिखा हुआ था, नवीनतम स्थिति की जानकारी कर रहा हूं। इसी प्रकार चैनाराम के मुकदमे के सम्बन्ध में, जिसका पिछले सैशन में बहुत जिक्र हुआ था, उसके बाद जो लोगों के साथ उसने ज्यादती की, उसके पूरे विवरण और लोगों की दरख्वास्त के सम्बन्ध में दो पत्र जुलाई के महीने में लिखे। उसका 17 जुलाई 1971 को उत्तर प्राप्त हुआ। इसी प्रकार से, अध्यक्ष महोदय, देवीदत्त जी ने एक पत्र लिखा, श्री रामचरण और कन्हैया-लाल पटेल, भूतपूर्व उप मंत्री जो थे, उनके ऊपर गम्भीर आरोप लगाकर, उस पत्र को अपनी जानकारी के साथ मुख्य मंत्री को 19-7-71 को भेजा, उसका आज तक जवाब नहीं मिला। इसी प्रकार से, अध्यक्ष महोदय, एस. डी. ओ. शाहपुरा, जिसने दुनियां भर की बी. डी. ओ. की हैसियत से पंचायत समिति में गड़बड़ी की थी, अनियमितता की थी, उनके प्रमाण और जानकारी मिली, उन सम्बन्ध में मैंने 22 अगस्त को लिखा पत्र। उसका आज तक जवाब नहीं है। बस्सी सीताराम पुरा में, अध्यक्ष महोदय, लाखों रुपयों की गड़बड़ी आज के पांच वर्ष के पहले प्लाट-एलाटमेंट को लेकर पकड़ी गई थी और इस सदन में उसकी चर्चा हुई थी, उसके बाद में बस्सी के नागरिकों के द्वारा एक याचिका प्रस्तुत की गई, उस याचिका को याचिका समिति में भेजा गया, उसमें प्रमाण देकर कहा गया कि यह एलाटमेंट बिल्कुल गलत एलाटमेंट है, यह रामकिशोर व्यास जी जिस समय यू. आई. टी. के चेअरमैन थे, उस समय हुए हैं और गम्भीर हैं। उसके बाद राज्य सरकार ने राजस्व मण्डल के सदस्य हूजा को जांच के लिए लिखा। उन्होंने छः महीने में अपनी जांच करके लिख दिया कि उस समय के सचिव को सस्पेण्ड किया जाय और जो एलाटमेंट अवैध है उनको कैंसिल किया जाय। मैंने उस सम्बन्ध में मुख्य मंत्री जी को चिट्ठी लिखी 23 अगस्त को, उसका उत्तर मुझे 5 सितम्बर को मिला और उसमें लिखा हुआ था कि जानकारी प्राप्त कर रहा हूं। अध्यक्ष महोदय, उसके बाद में मुझे और कोई भी जवाब किसी प्रकार का नहीं मिला। इसी प्रकार मैंने 18-8-71 को एक पत्र लिखा था कि जोधपुर में पुलिस विभाग के सम्बन्ध में हुई नियुक्तियों के बारे में और अध्यक्ष महोदय, उस पत्र के साथ मूल प्रति भी संलग्न कर दी थी। यह पत्र मैंने मुख्य मंत्री जी को भेजा उन्होंने कई दिन बाद मुझे जवाब दिया कि इस बारे में आपका पत्र प्राप्त हुआ और मैंने इसके लिये गृह आयुक्त को लिख दिया है। तो इससे सदन के माननीय सदस्य सोच लें कि किस प्रकार की स्थिति है। मैं, अध्यक्ष महोदय, इस सदन को ज्यादा उदाहरण तो देना नहीं चाहता लेकिन इतना जरूर कहूंगा कि जिन मुख्य मन्त्री जी ने रेड टेपिज्म के बारे में इतनी बड़ी घोषणायें की इसे खत्म करने के लिये, पर वह आज तक खत्म नहीं हो सका है। अध्यक्ष महोदय, जब यह हाल रेड टेपिज्म का विधायकों के साथ है तो मैं समझता हूं कि दूसरे लोगों की स्थिति तो क्या होगी! अध्यक्ष महोदय, जब अहम मसलों पर सरकार का यह रवैया है तो फिर दूसरे मसलों पर क्या स्थिति होगी। यह तो स्थिति है, अध्यक्ष महोदय, आज मुख्य मन्त्री जी के यहां की। तो मैं समझता हूं कि बाकी सभी विभागों में भी ऐसी ही हालत होगी। अध्यक्ष महोदय, मैं यह निवे-

(श्री भैरोंसिंह)

दन करना चाहूंगा कि आखिर यह स्थिति क्यों है इसका कारण यह है कि प्रशासनिक बड़े बड़े अधिकारी कोई भी काम अपने इनीसियेटिव से नहीं करना चाहते हैं। चाहे अध्यक्ष महोदय, इस बात को मुख्य मन्त्री जी स्वीकार करें या नहीं करें मैं आपको सही स्थिति बता दूं कि कई विभागों में राजस्थान के बड़े बड़े प्रशासनिक अधिकारी हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हैं। आज वहां जिस प्रकार फैक्ट्रीज में वर्क टू रूल की प्रथा होती है उस प्रकार की स्थिति राजस्थान सरकार के दफ्तरों में हो गई है। कोई भी हैड आफ डिपार्टमेंट या सैक्रेट्री अपना इनीसियेटिव लेकर काम नहीं करता, कोई भी अधिकारी आज रिस्क लेना नहीं चाहता। इसका कारण मैं, अध्यक्ष महोदय, आपसे निवेदन करदूं यह है कि आज राजस्थान के प्रशासन में बड़ी बड़ी खामियां आ गयी हैं और उसका कारण यह है कि आज राजस्थान के मुख्य मन्त्री व राजस्थान के उच्च प्रशासनिक अधिकारियों में खाई पड़ी हुई है। और जब तक इसका निदान नहीं होगा तब तक यह समस्या हमेशा खड़ी रहेगी। मैं माननीय सदस्यों का इस ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि वह खाई क्या है। उसका जवाब यह है कि राजस्थान में पहले श्री जोरावरसिंह झाला मुख्य सचिव थे। माननीय सदस्यों को उनके बारे में पूरी जानकारी भी होगी। मैं यह नहीं कहता कि झाला के खिलाफ कोई चार्ज नहीं या और अगर होगा तो मुझे इस बारे में पता नहीं पर मैं इतना जरूर कहना चाहूंगा कि उनकी इन्टीग्रिटी के बारे में कोई डाउट नहीं कर सकते। पर राजस्थान के मुख्य मन्त्रीजी ने अपना पद सम्भालते ही उन्हें मुख्य सचिव नहीं रखा तो मैं समझता हूं कि ऐसी कौनसी बात थी, कौनसा उनके विरुद्ध चार्ज था कि उन्हें मुख्य सचिव पद से हटाया गया।

श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर): काफी चार्ज थे उनके खिलाफ।

श्री भैरोंसिंह: वो आप बतायें। आप भी बोलेंगे पर मैं तो इतना कहना चाहता हूं उनके इन्टीग्रिटी में कोई भी डाउट नहीं था। मेरे पास ऐसा कोई मामला नहीं आया कि श्री झाला ने अपने पद का दुरुपयोग किया हो। मैं समझता हूं कि कोई भी व्यक्ति उनके खिलाफ कोई चार्ज लगाता हो...

श्री रामानन्द अग्रवाल: चार्ज तो आये थे। एक महिला के परिवार का माल हड़प लिया था।

श्री भैरोंसिंह: यह गलत चार्ज है। वह हमारे ही परिवार की थी हम उसे जानते हैं।

श्री विजयसिंह (मकराना): यह गलत है। श्री झाला ने किसी महिला के परिवार का माल नहीं हड़पा।

श्री भैरोंसिंह: तो, अध्यक्ष महोदय, यह जो आरोप लगाते हैं वे गलत हैं मैं नहीं कहता। तो मैं यह निवेदन कर रहा था कि श्री जोरावरसिंह झाला को मुख्य सचिव पद से हटाया गया। यह बात तो मैं मान सकता हूं, अध्यक्ष महोदय, कि मुख्य सचिव वही होना चाहिए जिसमें मुख्य मन्त्री का विश्वास हो। मुख्य सचिव और मुख्य मन्त्री जी के बीच में अगर अविश्वास की खायी है तो राज्य का प्रशासन कैसे सुचारू रूप से चल सकता है? तो श्री झाला को मुख्य

(श्री भैरोंसिंह)

सचिव पद से हटाया गया तब तक तो कोई बात नहीं। लेकिन अध्यक्ष महोदय, श्री झाला के स्थान पर जिनकी नियुक्ति हुई है वह कौन है और किस प्रकार से आये हैं इसमें तो मैं नहीं जाना चाहता पर इतना मैं जरूर निवेदन करूंगा कि, अध्यक्ष महोदय, उन्होंने कई बड़े सरकारी प्रशासनिक अधिकारियों को सुपरसीड किया है जैसे राजस्व मण्डल के श्री हूजा, फूड एण्ड फेमिन कमिश्नर श्री चन्द्र शेखर गुप्ता। श्री गोवर्धनसिंह चौधरी, मेम्बर रेवेन्यू बोर्ड, को सुपरसीड किया, श्री गोकुल मेहता जो कि सेक्रेट्री हैं उन्हें सुपरसीड किया, श्री मधोक को सुपरसीड किया जो कि गवर्नमेंट आफ इन्डिया में जोइन्ट सेक्रेट्री हैं और इसके अलावा श्री सूद को भी सुपरसीड किया। तो, अध्यक्ष महोदय, अगर एक आदमी को सुपरसीड करे तब तक तो कोई बात नहीं, श्री झाला को ही नहीं रखा परन्तु इतने बड़े बड़े अधिकारियों को सुपरसीड कर दिया तो क्या आप यह नहीं समझते की उनके मन में कोई फ्रसटेशन पैदा नहीं होगा ...

श्री रामानन्द अग्रवाल : श्री झाला ने भी तो सुपरसीड किया था।

श्री भैरोंसिंह : वह तो ठीक है, एक को किया था श्री मधोक को।

श्री रामानन्द अग्रवाल : किया तो था। चाहे एक ही था।

श्री भैरोंसिंह : यह आप बोलें जब कोई आपको आपत्ति हो तो कह देना। मैं तो मेरी जानकारी के अनुसार ही कहूंगा। तो अध्यक्ष महोदय, मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि अगर पाच पांच बड़े प्रशासनिक अधिकारियों को सुपरसीड करें जो कि राजस्थान के रेवेन्यू बोर्ड के चेअरमेन के स्तर के हों, फेमिन और फूड कमिश्नर के स्तर के हों, जो रेवेन्यू बोर्ड के मेम्बर हों, गवर्नमेंट के सचिव हों, तो क्या हम यह मानकर चलें कि इन लोगों में एफिशियेन्सी नहीं थी या ये लोग इन्टेलीजेन्ट नहीं थे इसलिये इन पांचों को सुपरसीड किया गया ? तो, अध्यक्ष महोदय, ऐसी बड़ी पोस्टस् पर काम करने वाले लोग इनएफिसियेन्ट तो हो नहीं सकते, न इनके खिलाफ कोई चार्ज ही था। तो फिर क्या कारण थे कि श्री खुराणा साहब को, जो कि इनसे पांच नम्बर नीचे हैं, उन्हें मुख्य सचिव पद पर नियुक्त किया गया ? क्या श्री हूजा रेवेन्यू बोर्ड के चेअरमैन इनएफिसियेन्ट थे या फेमिन और फूड कमिश्नर श्री चन्द्रशेखर गुप्ता इनएफिसियेन्ट थे या श्री हूजा और श्री गोकुललाल मेहता इनएफिसियेन्ट थे ? इनके खिलाफ ऐसा क्या चार्ज था जिसके लिये इन्हे मुख्य सचिव पद की नियुक्त पर सुशोभित नहीं किया गया ? इसका मतलब यह है कि मुख्य मंत्री जी को उनकी इन्ट्रीगिटी में डाउट था या वह उन्हें एफिसियेन्ट नहीं मानते हैं। तो अध्यक्ष महोदय, राज्य के इतने बड़े बड़े पद पर काम करने वालों के प्रति जब अविश्वास हो तो फिर शर्म से सर झुक जाता है क्योंकि जिन लोगों को सुपरसीड किया गया है उनके खिलाफ में कोई चार्ज इन्टीग्रिटी का या इनएफिसियेन्सी का नहीं होते हुए भी उन्हे मुख्य सचिव नहीं बनाया गया। तो माननीय सदस्यों को मैं निवेदन करना चाहता हूं कि इन बड़े बड़े सरकारी अधिकारियों के मन में फ्रसट्रेशन होना जरूरी है। उनके मन में फ्रस्ट्रेशन पैदा हो गया है और इसी कारण से कोई भी बड़ा सरकारी अधिकारी अपना इनीसियेटिव लेकर काम

(श्री भैरोंसिंह)

नहीं करना चाहता है । तो इससे स्पष्ट मतलब निकलता है कि मुख्य मन्त्री को इन अधिकारियों में विश्वास नहीं था । ये तो सही है कि मुख्य मन्त्रीजी और मुख्य सचिव के बीच अविश्वास की खाई नहीं होनी चाहिये । हो सकता है झाला से उनकी नहीं बनती होगी पर क्या इन सभी अधिकारियों से इनकी नहीं बनी । तो जहां फस्ट्रेशन होता है वहां कोई भी अपना इनीशियेटिव लेकर काम नहीं करना चाहता और फिर धीरे धीरे प्रशासन में प्रशासनिक अधिकारियों की एफसियेन्सी का लोप होता जाता है । दूसरी बात मैं अध्यक्ष महोदय, निवेदन करना चाहता हूं वह सभी माननीय सदस्य भी जानते है कि राजस्थान के प्रशासनिक अधिकारियों की पदोन्नति जो सन् 66 में हुई थी जिसमें कई आर०ए०एस० अधिकारियों को वरिष्ठ शृंखला दी गई । कई राजस्थान प्रशासनिक अधिकारियों को सलेक्शन ग्रेड दिया गया उसमें कई बार इस सदन में भी चर्चायें हुई थीं और जिन लोगों को नुकसान हुआ वह विवाद आज तक नहीं सुलझ पाया है । उस वक्त जो पदोन्नतियां हुई थीं उसमें कई नये फार्मूले व वक्तन व फमवक्तन चेन्ज होते रहते थे । कभी पदोन्नतियां सीनियोरिटी से की गयी कभी सीनियोरिटी-कम-मेरिट से की गयी कभी मेरिट-कम-सीनियोरिटी से की गयी । इससे कई अनियमिततायें हुई । लोगों के चान्सेज प्रमोशन्स के लिये मारे गये कई सीनियर थे वो जूनियर हो गये कई जूनियर लोग काफी सीनियर हो गये हैं इसमें काफी लोगों ने रिप्रेजेन्टेशन्स भी किये तो अमुक व्यक्ति को फायदा देने के लिये ये कोई परटीक्यूलर डेट से वह सरक्यूलर लागू कर देते और बाद में इसका नतीजा यह हुआ कि राजस्थान प्रशासनिक अधिकारियों को अपनी एसोसियेशन बनानी पड़ी और फिर उनको हाई कोर्ट तक में जाना पड़ा । हाई कोर्ट में गये उससे भी हाई कोर्ट ने उनके फेवर में फैसले किये उससे उन्हें थोड़ा लाभ मिला पर फिर भी उनमें डिस सेटिसफैक्सन अधिक था उनमें वो सुप्रीम कोर्ट में गये वहां पर जो फैसला हुआ उससे ऐसा हुआ कि राजस्थान सरकार ने जो मेरिट फारमूले से प्रोमोशन दिये थे उन्हें रद्द कर दिया और जो सन् 66 में एक सरक्यूलर निकला था उसे रद्द कर दिया गया और उस फैसले से जो भी प्रमोशन्स प्रमोशन कमेटी द्वारा किये गये थे वे सभी अवैध घोषित किये गये तो प्रश्न केवल अब हमारे सामने यह रह जाता है कि क्या वह फैसला जो सुप्रीम कोर्ट ने राजस्थान सरकार के खिलाफ में दिया हुआ फैसला श्री गुमानसिंह जिन्होंने की रिट की थी उनके लिये ही लागू होगी या जो जो राजस्थान प्रशासनिक अधिकारी एफेक्टेड थे उन सभी पर लागू होगा या सिर्फ वह गुमानसिंह और श्री मुन्नालाल गोयल के बीच में ही इफेक्टिव रहेगा । तो अध्यक्ष महोदय, हालांकि हिन्दुस्तान की सुप्रीमकोर्ट ने फैसला दे दिया पर राजस्थान सरकार ने उसके अनुसार अभी तक कोई कार्यवाही नहीं की है अध्यक्ष महोदय, तो यह सभी चीजें करना अनिवार्य था । सुप्रीम कोर्ट के फैसले को अध्यक्ष महोदय, राज्य सरकार ने लॉ डिपार्टमेंट को रेफर कर दिया और दोनों ने उसे सही मान लिया पर अभी तक स्थिति वो की वो ही बनी हुई है । लोगों को जो लाभ मिलना चाहिये था अभी नहीं मिला है और इसका मतलब यह हुआ कि वह फैसला जो कि सुप्रीम कोर्ट ने किया उसे अभी तक क्रियान्वित नहीं किया

(श्री भैरोंसिंह)

और मैं समझता हूं कि वह सरकार का अन्याय है। कुछ इन्ट्रेस्टेड व्यक्ति चाहते थे कि यह मामला राजस्थान सरकार अपने हाथ में न ले और इस मामले को लीगल काम्पलीकेशन्स में फंसा दिया जाय, कई सीनियर एडवोकेट्स की ओपिनियन ली जाय, कई दिनों तक इस बात का वादविवाद चलता रहा कि दफ्तरी और कुमारमंगलम् से ओपिनियन ली जाय। लेकिन जिन अधिकारियों पर चोट पड़ने वाली थी उन्होंने कहा कि इसको निरेन डे के पास भेजा जाय और आज तक उसका उत्तर नहीं आया और जो अधिकारी कोर्ट में गये उनको रिलीफ मिलने वाला नहीं है।

राजस्थान के मुख्य मंत्री को पत्र लिखा और यह सब उल्लेख किया उसमें। राजस्थान सरकार के हाथ किसी ने बांधे नहीं। पिछले दस वर्षों में राजस्थान के अधिकारियों के साथ जो अन्याय हुए हैं उनसे पीड़ित होकर वे लोग कोर्ट में गये और कोर्ट ने रिलीज किया और अब उसको इम्पलीमेंट करना था। बरकत साहब, आप से निवेदन करना चाहता हूं कि जब आप मुख्य मंत्री बने थे तो राजस्थान के प्रशासनिक अधिकारी यह मानकर चले थे कि नये मुख्य मंत्री आये हैं, नया मंत्रिमंडल आया है, नये मंत्री आये हैं अब तक प्रशासन में जो गड़बड़ियां हुई है वे दुरुस्त होंगी और बिना हक के जो ऊपर चढ़े थे वे नीचे आवेंगे। लेकिन आपने सरकारी अधिकारियों की आशाओं पर पानी फेर दिया और वे अपना कर्म ठोक कर बैठ गये कि चाहे सुप्रीम कोर्ट में जाओ लेकिन उनके साथ जो अन्याय हुआ है उसका निराकरण करने वाला कोई नहीं है।

ट्रान्सफर्स और विक्टीमाइजेशन। ट्रान्सफर्स के नाम पर विक्टीमाइजेशन होता है। मुख्य मंत्रीजी ने कहा कि ट्रान्सफर्स बड़े सोच समझ कर किये जायें एक बार ट्रान्सफर ऑर्डर निकालने के बाद ट्रान्सफर केन्सल नहीं होने चाहिये। सिद्धान्त बहुत अच्छा है। दो तीन दिन पहले ही हाउस में कहा था सुपरिडेन्टेन्ट आफ पुलिस के ट्रान्सफर्स हुए लेकिन दो तीन को छोड़ कर सब के केन्सल हो गये और इसी प्रकार से आर० ए०एस० और आई०ए०एस० में भी है इस प्रकार की गड़बड़ी।

मुख्य मंत्रीजी आपसे मैं और सदन के माननीय सदस्य जानना चाहेंगे कि आपको कांग्रेस पार्टी ने रोक लगा दी हो कि आपको ट्रान्सफर्स में ऐसा नहीं करना चाहिये ट्रान्सफर ऑर्डर्स के बाद लगातार वे केन्सल होते रहे और उनका केन्सेलेशन होता रहा और सरकारी अधिकारी उसके शिकार होकर बैठ गये।

यह सदन जानता है कि सुखाड़ियाजी का मंत्रि-मंडल था तब राजस्थान कर्मचारी संघ ने मांगे लेकर हड़ताल की, भूख हड़ताल की और हजारों की तादाद में गिरफ्तार हुए और ऐसी स्थिति आयी कि राजस्थान सरकार और कर्मचारियों के बीच समझौता हुआ उसके परिणामस्वरूप कुछ बातों को लेकर सरकार ने आश्वासन दिया। वह सरकार चली गयी। उसने आश्वासन कुछ पूरे किये और कुछ नहीं किये। नयी सरकार से ऐसी आशा बन्धी कि पुरानी सरकार ने आश्वासन दिये उनको पूरा करेगी लेकिन दुर्भाग्य यह है कि इन्होंने भी केवल मात्र आश्वासन दे दिया और उनको आज तक पूरा नहीं किया गया और उन्हें पूरा न

(श्री भैरोंसिंह)

करने के परिणामस्वरूप राजस्थान के बीमा विभाग के कर्मचारी आन्दोलन कर रहे हैं, राजस्थान के शिक्षक आन्दोलन कर रहे हैं, राजस्थान के चतुर्थश्रेणी कर्मचारी, राजस्थान सक्रेटेरियेट के कर्मचारी और विभिन्न विभागों में काम करने वाले कर्मचारी दो मास से आन्दोलन कर रहे हैं, कहीं प्रदर्शन चल रहे हैं, कहीं भूख हड़ताल चल रही हैं और कहीं गिरफ्तारियां हो रही हैं और जो आश्वासन दिये उनको पूरा नहीं किया जा रहा है।

इतना ही नहीं, अध्यक्ष महोदय, खासतौर से शिक्षा विभाग में यह आश्वासन दिया गया था कि बीकानेर की मीटिंग के बाद चालीस हजार शिक्षकों को स्थायी किया जावेगा। 66 की दूसरी वरिष्ठता सूची शीघ्र जारी करदी जावेगी और सूची जारी करने के आदेश दे दिये और 40 हजार को स्थायी किया जावेगा यह राजस्थान सरकार ने निर्णय लिया। लेकिन यह निर्णय लागू नहीं हो रहा है और पहले लोगों ने माला पहनाई, मांगे रखीं और आश्वासन दिये और इम्पलीमेन्टेशन का सवाल आया तो सरकार नहीं कर पायी इस कारण आन्दोलन हो रहे हैं।

ऊपर की श्रेणी में जहां मुख्य सचिव और ओफिसर्स होते हैं वहां फ्रस्ट्रेशन, उससे नीचे की श्रेणी आई. ए. एस, उसमें नियमों को लेकर फ्रस्ट्रेशन, उससे नीचे की श्रेणी आर. ए. एस, उसमें प्रमोशन्स आदि को लेकर फ्रस्ट्रेशन। उससे नीचे की श्रेणी के कर्मचारी, शिक्षक इनमें फ्रस्ट्रेशन और उससे नीचे की श्रेणी चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी उसमें फ्रस्ट्रेशन। सब आन्दोलन कर रहे हैं। और अपने अपने एसोशिएशन्स से प्रस्ताव रखवाये जा रहे हैं। इससे यह अच्छी तरह से पता चल गया है कि यह प्रशासनिक ढांचा चल रहा है। इसी आधार पर मैं कह रहा हूं कि सरकार का प्रशासनिक ढांचा असंतुलित हो गया है और इस ढांचे से राजस्थान की यह सरकार विकास नहीं कर सकती। यह स्थिति बिलकुल स्पष्ट सामने आ गयी है। इस कारण यह आवश्यकता थी कि सरकार में अविश्वास प्रस्ताव रखा जाय और यह बताया जाय कि किस प्रकार से आपके प्रशासन का ढांचा चल रहा है।

अब अध्यक्ष महोदय, सवाल यह आता है जिन समस्याओं का जैसा मुख्य मंत्रीजी ने —……

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, आप बहुत विस्तृत हो रहे हैं। 40 मिनिट हो चुके हैं।

श्री भैरोंसिंह : 40 मिनिट नहीं हुए, 30 मिनिट भी नहीं हुए बल्कि 25 मिनिट हुए हैं।

श्री अध्यक्ष : पाँच दस मिनिट और ले लें। विस्तृत न करें।

श्री भैरोंसिंह : मैं पूरा टाईम लूंगा। कोई चिन्ता की बात नहीं है।

श्री दौलत राम सारण (डूंगरगढ़): यह तो पसीना देख कर राहत देने की बात है।

श्री भैरोंसिंह : पहले मैंने आपको प्रमोशन्स का बताया दूसरा मैंने आपको प्रशासनिक ढांचे का बताया और तीसरी

(श्री भैरोंसिंह)

मुख्य मन्त्रीजी ने घोषणा की कि वे पब्लिक ग्रिवीन्सेज को मीट करेंगे । उन्होंने आदेश दिये हैं कि जिलाधीशों के कार्यालय में दरबार लगेगा । कहां लग रहा है ? यह मुझे नहीं दिखाई देता । दूसरी बात बतायी कि पब्लिक ग्रिवीन्सेज कमिश्नर की नियुक्ति करेंगे । आपने नियुक्ति की? आपने आफिसर्स और कर्मचारियों की ग्रिवीन्सेज के साथ कैसा व्यवहार किया वह हमने देखा उसी प्रकार पब्लिक कमिश्नर से देखें वह कार्यवाही कोई कम है ?

जनता पुलिस के लिये प्रदर्शन करने गयी केकड़ी में प्रदर्शन किया पुलिस ने लाठियों से मारा, गोली चलाई और एक आदमी के शरीर में छर्रे निकले । आरम्भ में सरकार ने मना कर दिया कि पुलिस ने गोली नहीं चलाई, यह असत्य है और पुलिस की गोली किसी को नहीं लगी । जनता को सरकार ने इस प्रकार से गुमराह किया । इससे जनता में यह आस्था बनी है कि सरकार लाठी भी चलायेगी और गोली भी चलायेगी और राजस्थान की यह सरकार मना कर देगी । उदयपुर में स्कूटर कांड हुआ । जांच के आदेश किये । जांच के आदेश इस प्रकार से भूतपूर्व मंत्रिमंडल भी करता आया था उसके लिये भी हमेशा मांग आती रही है कि सरकार अपने पक्ष को रखने के लिये एडवोकेट की सुविधा लेती है उसी प्रकार से जनता को भी बेस्ट एडवोकेट की सर्विसेज उपलब्ध करायी जाय । जनता को भी इस प्रकार की सुविधा दी जाय और जिसके कारण यह सारा काण्ड हुआ उसको वहां से हटाया जाय यह इस जांच कमीशन के सम्बन्ध में जनता की मांग आयी मैं समझता हूं कि दोनों बातों को मंजूर नहीं करते हैं तो आपकी सरकार में और पुरानी सरकार में जनता किसी प्रकार चेन्ज नहीं अनुभव करती है । अलवर में लाठी चार्ज किया, पुलिस ने कहा नहीं किया । मुख्य मंत्रीजी के निवास स्थान के सामने आयुर्वेद के कर्मचारियों ने मांगों को लेकर प्रदर्शन किया उन पर लाठी चार्ज किया गया और जब सरकार से पूछा गया तो कहा गया कि उन पर कोई लाठी चार्ज नहीं किया । विधान सभा के सामने धोबियों ने प्रदर्शन किया उन पर लाठी चार्ज किया तो कहा कि थोड़ा लाठी चार्ज किया । थोड़ा माना । जब छात्रों पर, जो अपनी मांगों को लेकर यहां विधान सभा के सामने प्रदर्शन कर रहे थे तो उन पर भीषण लाठी चार्ज किया गया और जब सरकार से पूछा तो कहा कि लाठी चार्ज नहीं किया । साफ मना कर दिया ।

इस सरकार ने फैसला कर लिया है कि लाठी चार्ज कहीं हों, पुलिस लाठी चलाये, गोली चलाये जब सरकार से पूछा जाय तो यही कहेंगी न लाठी चार्ज किया और न गोली चलाई, उस प्रक्रिया में लाठी चार्ज होता है तो सरकार साफ मना कर देती है । आप अन्दाज लगा कर चलें कि विधान सभा के माननीय सदस्य जो जनता की समस्याओं को लेकर आते हैं, किसी भी मन्त्री को पत्र लिखें तो उत्तर नहीं मिलता और किसी प्रकार समस्याओं का समाधान नहीं होता । मेरे निवेदन करने का मतलब यह है कि समस्याओं के बारे में राजस्थान सरकार सचेष्ट होकर समाधान पूर्वक काम करे इसमें किसी को कोई भी आपत्ति नहीं है लेकिन यह सरकार करना नहीं चाहती ।

(श्री भैरोंसिंह)

जोधपुर का विश्वविद्यालय बन्द है। चार माह से झगड़ा चल रहा है और राजस्थान सरकार उससे निपट नहीं पायी है। यह किस बात का प्रमाण है? यह इस बात का प्रमाण है कि राजस्थान सरकार कई समस्याओं को निपटने के लिये ठीक प्रकार से काम नहीं करती है। ऐसी स्थिति में राजस्थान सरकार में रेड टेपिज्म कायम है। न प्रशासन में शुद्धता है और न यह कोई इनिशियेटिव ही ले सकती है और न कर्मचारियों का समाधान कर सकती है और न जनता की समस्याओं का समाधान कर सकती है।

अब सबसे मोटा प्रश्न आता है कि प्रशासन करता क्या है? मैं निवेदन करना चाहूंगा कि राजस्थान में थोड़ा इस प्रश्न पर विचार कर लें कि राजस्थान का औद्योगीकरण कितना और किस आधार पर हुआ हैं। मैं अपनी जानकारी के आधार पर कहना चाहता हूं कि राजस्थान में पिछले एक दो वर्षों में किसी भी नये उद्योग को लाइसेंस नहीं मिला। मैं यह विश्वास करके चलता था कि जिस पर इन्दिराजी की कृपा हो और बिना किसी से पूछे जिनको वह मुख्य मंत्री बना सकती है तो निश्चित रूप से राजस्थान में उद्योगों का बड़ा जाल हो जावेगा। राजस्थान में 133, बड़े और छोटे उद्योगों के लाइसेन्स जिनको लेटर ओफ इन्टेन्ट देना है भारत सरकार के विचाराधीन पड़े हैं। मैं यह समझता था कि दिल्ली में इस सरकार का ज्यादा एप्रोच है और एप्रोच होने के कारण इन उद्योगों के मामले में लाइसेन्स और लेटर आफ इन्टेन्ट प्राप्त कर लेगी और उद्योगों का विकास होगा।

दुनिया भर का फर्टीलाइजर बन रहा है। राजस्थान सरकार पहले घोषणा कर चुकी है कि प्रायोरिटी के आधार पर यह फरटीलाइजर कम्पलैक्स बन सकेगा। उस समय अन्तिम निर्णय नहीं कर सके। राजस्थान सरकार तेल का कारखाना कहां लगे उसमें अपने प्रभाव का उपयोग नहीं कर सकती। चौथी पंचवर्षीय योजना में 3 हजार करोड़ का इन्वेस्टमेन्ट उद्योगों में होने वाला है राजस्थान सरकार को तीन परसेन्ट मिला है, एक प्रकार से 114 करोड़ रुपया मिला और जन संख्या के मुकाबले तुलना करके चलें तो राजस्थान सबसे नीचे आता है। इस मंत्रिमंडल से राजस्थान के विकास की आशा बंधती हो मैं ऐसा मान कर नहीं चलता।

किसी ने कहा कि भारत सरकार को राजस्थान के वित्तीय संकट के सम्बन्ध में सरकार एक ज्ञापन प्रस्तुत करेगी। लेकिन अकाल के खाते 33 करोड़ रुपया स्वीकार करना चाहिये था वह राजस्थान सरकार ने स्वीकार नही किये। यह भी मुझे खेद के साथ कहना पड़ता है कि वर्तमान मुख्य मंत्रीजी ने यह घोषणा की थी मैं तुरन्त, ही राजस्थान में से ओवरड्राफ्ट की पोजीशन खतम कर दूंगा।

श्री अध्यक्ष : यह प्रश्न बार बार सदन में उठाया गया है और सरकार की ओर से इसका निराकरण भी हुआ है। इसलिये इसे पुन: कहना पुनरावृत्ति होगी। ड्यूज के और औद्योगिक स्थिति के प्रश्न भी कई बार आ चुके हैं।

श्री विजयसिंह : सदन में यह सदस्य भी बार बार आ चुके हैं।

श्री अध्यक्ष : उत्तर भी दिये जा चुके हैं।

श्री भैरोंसिंह : अविश्वास प्रस्ताव में तो सरकार की तस्वीर ही तो बताई जा सकती है।

श्री अध्यक्ष : उसकी ओर फिर संकेत ही पर्याप्त हो सकता है।

श्री भैरोंसिंह : केवल मात्र संकेत ही मैं करना चाह रहा हूं। उसी संकेत के आधार पर निवेदन करना चाहता हूं। भारत सरकार ने जोर देकर कहा है कि वित्तीय संकट से अगर निकलना चाहते हो तो इस ओवरड्राफ्ट से निकलो।

अब प्रश्न आता है राजस्थान केनाल का। इसमें जितना खर्चा होने वाला है उसमें 200 करोड़ का खर्चा हुआ। 74 करोड़ का खर्चा कर चुके। 125 का अब करना है। पहले वाले मुख्यमन्त्री के बारे में सन्देह है कि जमीन के अलाटमेंट में मनमानी करने के लालच में इसे वे भारत सरकार को देना नहीं चाहते थे। पर वर्तमान मुख्यमन्त्री को तो अपनी आर्थिक स्थिति को देख कर चलना चाहिये था। पर वे भी उसी लीक पर चलना चाहते हैं ऐसा लगता है। जब इसका राष्ट्रीय महत्व स्वीकार सभी के द्वारा किया जा रहा है तो फिर राजस्थान सरकार इसे भारत सरकार को क्यों नहीं सौंपना चाहती? राजस्थान सरकार के पास एक साथ लगाने को पैसा नहीं। ओवरड्राफ्ट से छुटकारा भी पाना चाहते हैं। फिर यह होगा क्या? होगा यह कि समय के भीतर भीतर राजस्थान नहर पूरी होगी नहीं और 74 में जो पोंग डेम तैयार होकर पानी हमें मिलने वाला है वह पानी हम ले नहीं पावेंगे। परिणाम यह होगा कि वह पानी पंजाब और हरियाणा में चला जावेगा। राजस्थान फिर उस पानी को वापिस नहीं ले पावेगा।

इसी तरह का मसला है कडाना डेम का, पिछले मन्त्री महोदय ने घोषणा की कि 419 फीट की ऊंचाई से 410 करने के मामले में गुजरात सरकार और राजस्थान सरकार के बीच समझौता हो गया है। हमने पूछा उस समय कि क्या सरकारी स्तर पर इसके लिये बात हुई तो कहा गया कि अधिकारी स्तर पर हुई। कल माननीय मन्त्री महोदय ने कहा और मेरी भी जानकारी है कि गुजरात सरकार ने स्पष्ट मना कर दिया कि अधिकारियों के समझौते पर वह सरकार मोहर लगाने के लिये तैयार नहीं है।

कडाना डेम से बांसवाडा जिले के गांवों को जबर्दस्त हानि उठानी पड़ेगी। उनके पुनर्संस्थापन की व्यवस्था नहीं होगी।

भूतपूर्व मुख्यमन्त्री ने जयपुर शहर के लिये बनास योजना के लिये घोषणा की. दुर्भाग्य के साथ कहना पड़ता है कि इस योजना को इस सरकार ने खटाई में डाल दिया यह कह कर कि चौथी योजना में दस करोड़ की कमी हो जावेगी इस कारण इस योजना के लिये जो राशि निर्धारित करना चाहती थी सरकार, वह नहीं कर सकी।

इस सरकार की शराब बिक्री के बारे में गारन्टी सिस्टम को लेकर लोग हाई कोर्ट में गये। मुकदमें की पैरवी जैसी होनी चाहिये थी, सरकार की ओर से नहीं हो पाई। फल यह निकला कि ठेकेदार जीत गये। राज्य सरकार को लाखों रुपयों की आय हो सकती थी गारन्टी सिस्टम से वह नहीं हो पाई। आपने अपील की। पर मैं यह जानना चाहता

(श्री भैरोंसिह)

हूं कि क्या सरकार ने यह जांच कराई कि यह मुकदमा राजस्थान सरकार के विपक्ष में कैसे फैसल हुआ ?

इसी तरह से एक नरबलि का काण्ड हुआ नोहर में नर बलि हो गई। सरकार ने ठीक पैरवी नहीं कराई।

राजस्थान सरकार ने 15,600 टन बाजरा 52 के भाव से खरीदा। जहां इसका भाव उस समय बाजार में 48 रुपया था सरकार ने 52 दिया। यह 76 लाख के करीब खरीद हुई। आज उस बाजरे को कोई लेने वाला नहीं है। अगर आज के भाव से भी बेचा जाय तो 40 लाख के करीब सरकार को नुकसान होगा। क्योंकि जो बाजरे की क्वालिटी निर्धारित की थी, उसके अनुसार बाजरा नहीं खरीदा गया।

इस आधार पर निवेदन करना चाहूंगा कि राजस्थान में अध्यक्ष महोदय, आज उपभोक्ता वस्तुओं के दाम बढ़ते जा रहे हैं। उनको घटाने के लिये सरकार ने कोई कार्यवाही नहीं की। इस तरह से जो जन समस्याएं हैं उनको पूरा करने में उनका निराकरण करने में यह सरकार पूर्णतया फेल रही है। राजस्थान सरकार भावी नीतियों को निर्धारित नहीं कर सकी और राजस्थान की आय कैसे हो सकती है, उन साधनों के अनुसार आय राजस्थान सरकार ने नहीं की। अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले झमराकोटा का मामला लेता हूं। यह उदयपुर के पास है और इसमें फास्फेट का अतुल भन्डार है। सर्वे के हिसाब से लगभग 100 मिलियन टन है, इस प्रकार की वहां स्थिति है। अब इसका कान्ट्रेक्ट जिस समय किया उस समय भी मैंने विरोध किया था लेकिन इस बीकानेर जिप्सम का कान्ट्रेक्ट 46 रु० प्रति टन के हिसाब से किया जाता है। इस बीकानेर जिप्सम में लगभग 50 प्रतिशत शेयर राजस्थान सरकार के हैं। आज हिन्दुस्तान में कोई फर्टीलाईजर ऐसा नहीं हैं जिसमें मेजोरिटी शेयर जिसके हों और उसके हाथ में मैनेजमेंट न हो। बीकानेर जिप्सम में 50 प्रतिशत शेयर और मैनेजमेंट हमारे हाथ में नहीं हो और हमारे हाथ में न होकर एक प्राइवेट आदमी के हाथ में हो। नतीजा क्या निकलता है यह सदन सुनकर ताज्जुब करेगा-

"The working contractors will commence work within 15 days of signing the agreement.

The working contractors will use five hundred tons within two months and one thousand within a period of six months.

The working contractors will further increase the production to two thousand tons per day by the end of June, 71 and to four thousand five hundred tons per day by the end of 72.

The working contractors will arrange the grinding operation... within 12 months from the execution of the agreement.

The working contractors will start simultaneously the work of Phosphate rock -"

(श्री भैरोंसिंह)

अब अध्यक्ष महोदय, इसका परिणाम मैं बताना चाहता हूं न तो बीकानेर जिप्सम ने प्लान्ट लगाया। आज से तीन महीने पहले तक वेज मील नहीं लगाई गई थी। बीकानेर मील का आज का प्रोडक्शन कह नहीं सकता लेकिन 20 दिन पहले जो चार हजार टन पर जाना चाहिए वह नहीं था। एक बार 800 टन पर चला गया था अब घटते घटते 400 टन पर आ गया और जो मलबा है उसका इतना बड़ा अक्युमुलेशन हो गया कि उसका काम कुछ दिनों के बाद चलना मुश्किल हो जायगा। अब मैं राजस्थान की सरकार से पूछना चाहता हूं कि राजस्थान सरकार जो नेशनलाईजेशन की बात करती है, राजस्थान की सरकार जो समाजवाद की बात करती है, मैं उस राजस्थान की सरकार को कई बार कह चुका हूं बीकानेर जिप्सम का काम राजस्थान सरकार अपने हाथ में ले। अगर डायरेक्टली नहीं लेना चाहती है तो बीकानेर जिप्सम का मैनेजमेंट अपने हाथ में ले। अध्यक्ष महोदय, जो 46 रु० प्रतिटन का इनवाइट किया गया है वह भी टेन्डर इन्वाइट करके नहीं किया गया कई लोगों की आफर थी 42 रु० प्रति टन की, कई लोगों की 40 प्रति टन की और एक की 36 रु० प्रति टन। हमने यह कह कर हमारी कम्पनी है और हमारी ही पूंजी है, मैं इस बात को थोड़ी देर के लिये मान लूं कि इस कन्सीडरेशन के आधार पर उस कम्पनी को दे दिया लेकिन जहां ट्रान्सपोर्टेशन का काम आयेगा वह सब कान्ट्रेक्टर नियुक्त करेगी और ग्राइडिंग जहां का काम आयेगा वह ट्रान्सपोर्ट और एक्सप्लाईटेशन की तीनों कन्डीशन्स है उनके आधार पर यह सब कन्ट्राक्टर लिये जाते हैं। जैसे उदाहरण के रूप में मैं बताना चाहता हूं ट्रान्सपोर्ट का जिस समय मामला आया और कान्ट्रेक्ट दिया गया था उस समय 24 रु० प्रतिटन के हिसाब से यह कान्ट्रेक्ट बीकानेर जिप्सम दूसरों को दे देती है और दूसरों के देने के बाद यह कान्ट्रेक्ट एक कम्पनी को मिलता है जिसका नाम है युनिवर्सल दोनों दूसरे को देते हैं और दूसरों को दे देते देते वह फिर तीसरी ट्रान्सपोर्ट कम्पनी को देते हैं तो 24 रु० का कान्ट्रेक्ट 13 रु० कांट्रेक्ट का वर्किंग होता है। अब मैंने लोगों से पूछा यह सारी गड़बड़ क्यों हो रही है तो मुझे जवाब मिला कि इसमें कुछ राज है। राज किस प्रकार का एक हरिश्चन्द्र ट्रान्सपोर्ट कम्पनी है आर.जे.वाई. 372, सुरेश कम्पनी आर.आर.एल. 449, फूलचन्द एन्ड कम्पनी 2355, सुरेश जोशी एन्ड कम्पनी आर. आर. एल. 1661 और एक है 4811 है... मुझे बताया गया अध्यक्ष महोदय, और लोगों को 13 रु० प्रति टन से मिलता था लेकिन इसमें 22 रु० प्रति टन का हिसाब लिखा हुआ है। अगर किसी आदमी को 22 रु० प्रति टन मिलता है तो वह कोई छोटा कान्ट्रेक्टर नहीं हो सकता है, कोई मामूली कान्ट्रेक्टर नहीं हो सकता है तो कहते हैं एक मंत्री का इसमें हिस्सा है और जो इन्कम होती है वह एक मंत्री महोदय को मिलती है। अध्यक्ष महोदय, इतना ही नहीं ग्राइंडिंग के काम में टेन्डर इन्वाइट किये गये। जो लोएस्ट टेन्डर था उसको स्वीकार किया जाना चाहिये था लेकिन लोएस्ट टेन्डर को स्वीकार नहीं किया गया। जब फाइल मंत्री महोदय के पास आई तो मंत्री महोदय लिखते हैं।

"As recommended by the department of Mines and Geo-

(श्री भैरोंसिंह)

logy the tender of Bharat Dealers is accepted at the rate of 3.48....." अब यह रिकमन्डेशन लिखी है उस पर डाईरेक्टोरेट ने लिखा हमने कोई सिफारिश नहीं की। उन्होंने लिखा है–

"Your attention is drawn to the operative list of tenders according to which the rate of Bharat Dealers is neither lowest nor. ."

यह मिनिस्टर के आर्डर्स के बाद डाइरेक्टोरेट ने लिखा। अब उसके बाद मिनिस्टर फिर लिखते हैं—

"Considering the report about the grinding capacity, it is ordered that the tender of Bharat Dealers who are the associates of Metal Udyog and whose work was satisfactory last year, is accepted."

और दूसरी जो फर्म्स है जिनके पास ग्राइन्डिग प्लान्ट लगी हुई है, उनको टेन्डर नहीं दिया जिसके पास स्वयं की ग्राइन्डिग मशीन नहीं हों, स्वय की ग्राइन्डिग केपेसिटि नहीं हो, जो थोड़ा बहुत माल नहीं निकाल सकती है, दूसरे के सहयोग से निकालती है उसको राजस्थान की सरकार ने अनुमति दी है। इस आधार पर मैं कहना चाहता हूं मेरे मैथेमेटिकल केलक्यूलेशन्स को देख लें और तसल्ली कर लें। अगर कान्ट्रेक्ट ईमानदारी से चलता है तो उसमें दो हजार टन पर डे जिसकी कीमत भारत सरकार हमें देती है एक हजार रुपया प्रति टन उसकी यदि 365 से गुना किया जाय तो 10 करोड़ 85 लाख की इन्कम होगी। अब 46 रु० प्रति टन का खर्चा निकाल दें तो तीन कराड़ माइनस करने पड़ते हैं तो उसके बाद 7 करोड़ 49 लाख 20 हजार की राजस्थान की सरकार को इन्कम होगी। अब राजस्थान की सरकार के पास केवल रह जाता है कि उसमें दो करोड़ का इन्वेस्टमेंट करना है। मैं समझता हूं राजस्थान का बजट 200 करोड़ पर चला गया अगर अपने खाते में दो करोड़ का इन्वेस्टमेंट करके उसको ऐडजस्ट करती रहे तो जो राक फास्फेट आयेगा उसका ऐडजस्टमेंट दो करोड़ का जायगा। उस पर न इन्कम टेक्स लगेगा और न भारत सरकार कब्जा करने वाली है। तीन वर्ष में 15 करोड़ की इन्कम कर सकते थे वह 15 करोड़ की इन्कम न करके हमने राजस्थान की जनता पर टेक्स लगाये। इस आधार पर मैं कहना चाहता हूं राजस्थान की सरकार अपने आय बढ़ाने के साधन नहीं करती है, राजस्थान की सरकार को अपनी आय बढ़ाने की चिन्ता नहीं है। राजस्थान की सरकार को चिन्ता इस बात की है कि किस प्रकार अधिक से अधिक पूंजी से हमारे मंत्रियों के पेट भरने चाहिये।

अध्यक्ष महोदय, अब दूसरी बात कहना चाहता हूं।

एक माननीय सदस्य : इसमें दोषी कौन है ? आप कृपया नाम बता दीजिये।

श्री भैरोंसिंह : दोषी सब जानते हैं।

अध्यक्ष महोदय, अब दूसरा प्रश्न मैं निवेदन करना चाहता हूं राजस्थान में नगरपालिकायें। जयपुर नगर में नगरपरिषद्

(श्री भैरोंसिंह)

में जनसंघ का बहुमत है। इस बहुमत से बहुत चिढ़े हुये है और इस चिढ़ के कारण हमेशा इस बात की कोशिश करते हैं कि यह बहुमत किसी न किसी प्रकार खतम हो जाय अध्यक्ष महोदय, बहुमत तो बहुमत के हिसाब से रहेगा–खतम होगा, अपने आप चला जायगा लेकिन मैं कहना चाहता हूं राजस्थान की सरकार से कि अपना वहां कमिश्नर नियुक्त किया, आप जानते है कमिश्नर इसलिये नियुक्त किया कि वह जनसंघ की नगर परिषद् को काम नहीं करने दे लेकिन मैं इस सदन को बताना चाहता हूं वह नियुक्ति इस लिये नहीं की कि जनसंघ को काम नहीं करने दें लेकिन एक मंत्री के बेटे की 6 फर्म्स चलती हैं, अन रजिस्टर्ड चलती है। न सेल्स टेक्स में रजिस्ट्रेशन, न कान्ट्रेक्टर के नाते पी. डब्लू. डी. में रजिस्ट्रेशन, न इनकम टेक्स में किसी तरह का रजिस्ट्रेशन और ये 6 फर्म्स लगातार जयपुर म्युनिसिपेलिटी में कभी सीमेन्ट सप्लाई करती हैं, कभी पाइप सप्लाई करती हैं और कभी किसी प्रकार की चीज सप्लाई करती हैं। उस सारे बिजनेस को प्रोटेक्ट करने के लिए एक आदमी को वहां नियुक्त कर दिया तो आप इस सारी बात को समझकर चल कि वह व्यक्ति किसी प्रकार से जनसंघ के काम को नहीं चलने देगा। अध्यक्ष महोदय, मैं इसी सन्दर्भ में निवेदन करना चाहूंगा लेकिन एक बात की ओर इस सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा कि माननीय दौलतरामजी सारण ने गत सत्र में एक प्रश्न पूछा और वह प्रश्न इस बात का था कि चौमू तहसील में एक वैद्य ने एक जमीन पर इन्क्रोंचमेन्ट कर लिया और उसको राजस्थान सरकार ने रेगुलेराइज कर दिया और उसका उत्तर आया है अध्यक्ष महोदय, कि राजस्थान सरकार मानती है कि जो इन्क्रोचमेंट है वह इन्क्रोचमेंट सही है। उत्तर यह था "जी हां, इस नियमन में नियम विरूद्ध होने के कारण इसको निरस्त करने हेतु नियमानुसार कार्यवाही प्रारम्भ क दी गयी है" यह जबाव तत्कालीन राजस्व मंत्री श्री रामकिशोरजी व्यास का था। सरकार ने यह मान लिया कि अलाटमेंट गलत है, यह भूमिहीन नहीं है इसको मान लिया, इसे अतिक्रमण मान लिया और इसको सही नहीं माना और उसके आधार पर अध्यक्ष महोदय, जब नये मंत्री मण्डल की हवा बनने लगी, स्वयं राजस्व मंत्री को जाने का आभास होने लगा इसी जमीन के अलाटमेंट को उन्होंने रेगुलेराइज कर दिया। मैं कहना चाहता हूं कि आज हम किस लिमिट तक पहुंच गये इसके ऊपर भी विचार करना पड़ेगा।

अध्यक्ष महोदय, मैं इस प्रश्न पर नहीं जाकर एक निवेदन करना चाहूंगा कि आज लोग कहते है कि हमें जमीनों के मामलों में किस किस प्रकार की कार्यवाही करनी चाहिए। श्री मोतीलालजी चौधरी हैं उन्होंने 150 बीघा जमीन एक कोआपरेटिव सोसाइटी के नाम से अलाट कराई और कब्जा करके बैठ गये। सरकार की जगह में कोआपरेटिव सोसाइटी–उसके बाद में सेटलमेंट हुआ सेटलमेंट में को-आपरेटिव सोसाइटी के नाम से जमान का रजिस्ट्रेशन। को-आपरेटिव सोसाइटी बन जाये, यह को-आपरेटिव सोसाइटी के नियमों के विपरीत राजस्थान सरकार ने 150 बीघा जमीन अलाट की। जमीन के अलाटमेंन्ट के साथ ही साथ ज्योंही उन्होंने उस जमीन का दुरुपयोग करना प्रारम्भ किया राजस्थान सरकार ने नोटिस दिया। नोटिस की वाइट

(श्री भैरोंसिंह)

में उन्होंने कांग्रेस ज्वाइन की और उसके बाद में धीरे धीरे 150 बीघा जमीन में प्लाट्स एलाट करके लाखों रुपयों में उस जमीन को बेच दिया और हमारी राजस्थान सरकार आज भी मौन बैठी है ।

अध्यक्ष महोदय, अंत में मैं इन प्रश्नों को छोड़कर इस विषय की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि जिसका संबंध आज पाकिस्तान से और हमारे हिन्दुस्तान के बीच में जिस प्रकार का संघर्ष चल रहा है, उससे है। अध्यक्ष महोदय, मेरी जानकारी के अनुसार आज के तीन दिन पहले सुलताना गांव से जो कि बोर्डर से लगभग 25-30 मील अन्दर है पाकिस्तान के लोग काफी संख्या में आये और लगभग 300 सांडियां पकड़कर ले गए। हमारी इतनी सीमा चौकियां, इतनी सुरक्षा का प्रबन्ध इसके बाद भी यह स्थिति हो तो मुझे भय लगता है कि कहीं आज प्रशासनिक अव्यवस्था के कारण कोई देश के सामने बड़ा संकट न आ जाये । इस आधार पर मैं सरकार से निवेदन करना चाहूंगा कि सरकार ने वहां लोगों के पास से चाहे हथियार छीनने की सब कार्यवाही कर दी हो, आज चाहे वे जाति विशेष को हथियार नहीं देते हों लेकिन इतना निवेदन करना चाहूंगा कि उस जाति विशेष में कोई जागीरदार नहीं हैं और अगर हैं भी तो जागीरदारी गयी और आज काश्त के लिए उनके पास जमीन नहीं है । लेकिन एक जाति विशेष होने के कारण आप लोगों के हथियार छीन रहे हैं और पाकिस्तान हमारी सीमा में इतने अन्दर घुसकर हमारे पशुधन को पकड़कर ले जा रहा है यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है ।

अध्यक्ष महोदय, आपसे मैंने निवेदन किया कि मुख्य मंत्रीजी ने कल्लनखां के बाग के संबंध में जिस प्रकार से स्थिति पैदा की वह जानकारी में लाना चाहूंगा । मैंने इस संबन्ध में 29 जुलाई, 71 को एक पत्र लिखा कि एम. एल. ए. क्वार्टर के सामने की भूमि है जयपुर स्टेट के जमाने में जयपुर की सरकार ने उसको एक्वायर की और उसके बाद में उसका कम्पेन्सेशन तय नहीं हुआ और हाईकोर्ट में जाकर यह कहा कि जमीन के एक्वायर करने के साथ ही साथ कम्पन्सेशन डिटरमिन करना चाहिए और उस समय असली आदमी मर गया और मामला कोर्ट में गया । वहां पर मरने वाले व्यक्ति की कब्र बना दी और वक्फ बीच में आया । पहले इसको वक्फ की प्रॉपर्टी डिक्लेयर किया और सारी जमीन को वक्फ की प्रॉपर्टी डिक्लेयर करदी । अध्यक्ष महोदय, यह सदन जानता है कि आसपास की जमीन 300 रुपया प्रति वर्ग गज के हिसाब से बिकती है और वह जमीन कम से कम एक करोड़ की है । वहां विधायकों के बंगले हैं । उस बीच में सरकार ने नोटीफिकेशन इश्यू कर दिया और उस नोटीफिकेशन को राजस्थान सरकार ने चेलेन्ज नहीं किया जिसके कारण से जिस जमीन के ऊपर बंगले बन गये वे वक्फ की प्रॉपर्टी हो गई । यह अन्तिम चीज नहीं है । इसके ऊपर राजस्थान सरकार का कब्जा हो जाना चाहिए वह जमीन आज वक्फ में पड़ी है लेकिन इसी बीच में वर्तमान मुख्य मंत्रीजी जो कि उस समय विधि मंत्री थे, कोर्ट का फैसला हो गया कि जमीन हमारी है और

(श्री भैरोंसिंह)

इसके ऊपर कब्जा किया जा सकता है, इनकी सलाह से मामला कोर्ट में पेश कर दिया गया सिविल सूट में पजेशन लेने के लिए और उसी का परिणाम है अध्यक्ष महोदय, कि आज उस जमीन के ऊपर हमारा कब्जा नहीं हो रहा है। मैंने मुख्य मंत्रीजी से कहा कि जो दावा गलती से पेश किया वह वापिस लिया जाये ताकि एक करोड़ रुपये की भूमि के ऊपर राजस्थान सरकार का कब्जा हो जाये। दुर्भाग्य से उस जमीन के ऊपर आज तक किसी प्रकार का कब्जा नहीं हुआ।

अध्यक्ष महोदय, यहां मैं यह भी निवेदन करना चाहूंगा कि मुख्य मंत्रीजी साम्प्रदायिकता से बचने की बात हमेशा करते हैं। दूसरे लोगों के ऊपर इल्जाम लगाते हैं। जहां जाते हैं हमारे ऊपर इल्जाम लगाते हैं.........

श्री बरकतुल्ला खां (मुख्य मंत्री) : मैंने आज तक कभी चार्ज नहीं लगाया।

श्री भैरोंसिंह : दिल्ली में लगाया कि भारतीय जनसंघ साम्प्रदायिक है।

श्री गिरधारी लाल व्यास (आसीन्द) : आर. एस. एस. के लिए कहा था।

श्री भैरोंसिंह : लेकिन मैं इतना निवेदन करना चाहता हूं कि यह कहने के पहले यह देखें कि ये किस प्रकार से व्यवहार करते हैं...

श्री रामानन्द अग्रवाल : आप यह मानते हैं कि जनसंघ साम्प्रदायिक नहीं है। दिल्ली में तो प्राइम मिनिस्टर ने इतनी बड़ी रैली में कहा था।

श्री बरकतुल्ला खां : मैंने नहीं कहा। आर्गेनाइजेशन को तो आज भी कहता हूं लेकिन पर्सनल किसी के ऊपर मैं आरोप नहीं लगाता हूं।

श्री भैरोंसिंह : पर्सनल तो मैंने भी नहीं कहा।

एक तो सदन इस बात से अन्दाजा लगाये कि यह सम्पत्ति हमारे कब्जे में क्यों नहीं आ रही है। राजस्थान के भूतपूर्व मुख्य मंत्री, राजस्थान के भूतपूर्व राजस्व मंत्री और राजस्थान के भूतपूर्व गृह मंत्री और मेरी अगर इनफर्मेशन गलत नहीं है तो राजस्थान सरकार के वर्तमान विद्युत मंत्री इन सब की एक सब कमेटी बनाई गई थी जो कि इस मामले की जांच करे। इसकी जांच हुई और फैसला यह हुआ कि यह सम्पत्ति सरकार की है और सरकार को इसे अपने कब्जे में लेना चाहिए और अध्यक्ष महोदय, उस समय ही मुख्य सचिव और मुख्य मंत्री के बीच झगड़ा हुआ और राजस्थान सरकार ने मुख्य सचिव को इसके लिए नियुक्त किया और उसका परिणाम यह निकला कि उस जमीन के विवाद को लेकर मुख्य सचिव को जाना पड़ा बाकी किसी अविश्वास के प्रस्ताव का सवाल नहीं है। अब मैं इसलिए निवेदन करना चाहता हूं कि किसी पर साम्प्रदायिकता का आरोप लगाने के पहले मुख्य मंत्रीजी स्वयं अपने आपको देखें कि मैं किस प्रकार से बर्ताव कर रहा हूं।

अध्यक्ष महोदय, अब मैं आपको एक गवर्नमेंट एडवोकेट की नियुक्ति की बात बताता हूं। श्री गयूरअहमद एडवोकेट हैं जो पहले बालोतरा में पी.पी. थे। पी.पी. होने के नाते

(श्री भैरोंसिंह)

कलेक्टर बाड़मेर ने यह शिकायत की कि ये महाशय गवर्नमेंट फोरनर्स एक्ट के मामले में एक्यूज्ड को मदद करते हैं इसलिए इस आदमी को पी पी. के पद से हटाया जाय। फिर एप्लीकेशन आई कि गवर्नमेंट एडवोकेट बनाया जाय। उस समय के मुख्य मंत्रीजी ने इस मामले में उस समय गवर्नमेंट एड-वोकेट श्री चटर्जी से ओपिनियन मंगाई तो श्री चटर्जी ने यह ओपिनियन दी कि इनको फोरनर्स एक्ट के केसेस नहीं दिए जायं, बाकी के मामलों में इनको गवर्नमेंट एड-वोकेट नियुक्त कर दिया जाय। उस समय मुख्य मंत्रीजी ने इस कण्डीशनल ओपिनियन होने के कारण उनको गवर्नमेंट एडवोकेट नियुक्त नहीं किया लेकिन अब उनको गवर्नमेंट एडवोकेट नियुक्त किया गया है। मैं मुख्य मंत्रीजी आपसे कहना चाहता हूं कि अगर आप में हिम्मत हो तो जो कलेक्टर की रिपोर्ट है और चटर्जी का नोट है, यह दोनों जिस फाइल में है उसको पेश कर दें उस फाइल को ही गायब कर दिया गया है। सबूत नहीं रहा है उनके खिलाफ। अगर आपके पास मौजूद हो तो आप उस फाइल को सदन की मेज पर रख दें।

अध्यक्ष महोदय, इसी प्रकार का एक केस और निवेदन करना चाहूंगा। जयपुर में एक केस था 307 का कुछ लोगों के खिलाफ। अब्दुल शमीम के खिलाफ केस चला। लोअर कोर्ट से फैसला होने के बाद हाई कोर्ट में अपील पेश कर दी गई। और अपील पेश करने के बाद अध्यक्ष महोदय, इसी 20-9-71 को यह कह कर केस वापिस ले लिया कि गवर्नमेंट इस केस को परस्यू नहीं करना चाहती। मैं आज पूछना चाहता हूं माननीय मुख्य मंत्रीजी कि कोई भी ऐसा क्रिमिनल केस है जिसमें अपील दायर करने के बाद वापिस ली गई हो। आज तक के इतिहास में कोई ऐसा केस बता दें। गवर्नमेंट एडवोकेट अपील दायर करे, अपील में अपील के ग्राउण्ड देता है, सजा की मांग करता है और वही गवर्नमेंट एडवोकेट केस वापिस लेने की मांग करता है। इस प्रकार की स्थिति, अध्यक्ष महोदय, मैंने आज तक नहीं देखी मेरी जानकारी में यह पहला क्रिमिनल केस है जिसमें इस प्रकार से अपील वापिस ली गई हो।

अध्यक्ष महोदय, इतना ही नहीं मैं एक और मामले की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा ...

श्री गिरधारीलाल व्यास : इसमें तो डिपार्टमेंट की एफिशियेंसी है कि एक दफा जब बरी हो गया तो उसको आगे परस्यू नहीं करना चाहते।

श्री भैरोंसिंह शेखावत : इसमें मुझे आपत्ति नहीं है कि बरी हो गया......

श्री दुर्गालाल बादहार (हवामहल, जयपुर) : बरी होने के बाद भी राइट आफ अपील रहता है।

श्री गिरधारीलाल व्यास : बरी हो गया तो उसके बाद में अपील करने की क्या जरूरत थी ?

श्री हरिवल्लभ शर्मा (सवाई माधोपुर) : जब उसमें ग्राउण्ड थे तभी तो अपील दायर की गई।

श्री भैरोंसिंह शेखावत : बरी हो गया तो उसके बरी होने के बाद जजमेंट ला

Page No 36

(श्री भैरोंसिंह)

डिपार्टमेंट का रहता है कि अपील की जाय या नहीं। उसके खिलाफ अपील करने की अनुमति ली जाती है, हाई कोर्ट से अपील करने की अनुमति भी हो गई। अपील पेश हो गई, फिर अपील वापिस क्यों ली गई ? अपील नहीं करते तो बात समझ में आ सकती थी।

अब अध्यक्ष महोदय, एक और मामले की ओर मैं सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा। अध्यक्ष महोदय, सन् 1964 में चार आदमियों को इसलिए बरखास्त किया गया क्योंकि वे जमायते इस्लामी के सदस्य हैं और उनकी एक्टीविटीज एण्टी नेशनल है। इस बात के लिए 1964 में संविधान की धारा 311 (2) (सी) के अन्दर राज्यपाल महोदय की आज्ञा से उनकी सर्विसेज टरमिनेट की गई। अब इस टर्मीनेशन के पहले राजस्थान के भूतपूर्व शिक्षा मंत्री श्री हरिभाऊ उपाध्याय और राजस्थान के भूतपूर्व मुख्य मंत्री श्री मोहनलालजी सुखाड़िया और राजस्थान के मुख्य सचिव श्री भगवतसिंह मेहता, इन सब के नोट्स यदि आप चाहें तो मैं सदन में पढ़ कर सुना दूं जिससे किसी को किसी प्रकार का संदेह नहीं रहे। यह श्री भगवतसिंहजी मेहता का नोट है :

"I have read the correspondence. The activities of Shri Md. Ismail and Shri Saleemudin teachers of Government High School in Sawai Madhopur District are far from satisfactory. They are anti national. Even the Union Home Minister very recently spoke in this connection in the Parliament. I would therefore submit that action be taken against these officials as suggested by the D.I.G. Police C.I.D."

अब उसके ऊपर हरिभाऊजी लिखते हैं :—

"अराष्ट्रीय तत्वों के सम्बन्ध में कड़ा रुख अपनाना जरूरी हैं। अपराधियों के बचाव के लिए यदि रिपोर्ट सही है तो और प्रयोग करना उचित नहीं होगा। फिर भी मुख्य मंत्रीजी .... जैसी की उनको आदत है कि अपने ऊपर जिम्मेदारी नहीं लेना, उन्होंने मुख्य मंत्रीजी को लिख दिया।

"फिर भी मुख्य मंत्रीजी स्वयं सब स्थितियों पर विचार कर निर्णय करने की कृपा करें।"

अब उसके बाद वर्तमान मुख्य मंत्री और उस समय के शिक्षा मंत्री की आज्ञा से हाई कोर्ट में एक रिट पेश की गई। उन चार आदमियों की तरफ से रिट पेश की गई। आप उस सारी फाइल को देख लें तो कम से कम आप ईमानदारी से इस चीज को स्वीकार करेंगे कि इस मामले की पैरवी ठीक से नहीं हुई। अब इस मामले में शिक्षा मंत्रीजी ने राजस्थान के तत्कालीन मुख्य मंत्री श्री मोहनलालजी सुखाड़िया को तीन पेज का एक नोट भेजा और वे उस नोट में लिखते है कि इन तीन चार आदमियों को री-इंस्टेट किया जाय। उस नोट में आज के मुख्य मंत्री और तात्कालीन शिक्षा मंत्री लिखते हैं कि जमायते इस्लामी जिसको कि आर.एस.एस. के साथ जोड़ कर साम्प्रदायिक

(श्री भैरोंसिह)

कहा जाता है, वह जमायते इस्लामी साम्प्रदायिक नहीं है। उस नोट में लिखा जाता है कि जमायते इस्लामी मौलाना मदूदी से सम्बन्धित नहीं है। जिस संस्था के बारे में भारत के गृह मंत्री यह कहते हैं कि यह साम्प्रदायिक संस्था है उसके बारे में आप लिखते हैं कि यह साम्प्रदायिक संस्था नहीं है, इसकी एक्टीविटीज केवल धार्मिक प्रचार करने की है, धर्म का प्रचार करने में कोई आपत्ति नहीं है। आप अपने मन में इस बात को मानते हों तो और बात है लेकिन इस प्रकार का नोट लिखा गया और उस पर माननीय मोहनलालजी सुखाड़िया आज्ञा करते हैं कि राज्यपाल महोदय रिव्यू को एक्सेप्ट करें। इस पर राज्यपाल महोदय ने चार पेज का नोट लिख कर उस रिव्यू एप्लीकेशन को खारिज कर दिया। जो कुछ भी मेरे पास जानकारी है, जो फाइल आई है उस फाइल के आधार पर मैं रिव्यू एप्लीकेशन को मंजूर नहीं कर सकता हूं। रिव्यू मंजूर नहीं हुई। इस बीच में हाई कोर्ट में रिट हुई। रिट आई। बाद में गवर्नमेंट एडवोकेट जनरल ने उस रिट के ऊपर लिखा कि इसमें इतने स्ट्रोंग ग्राऊण्ड हैं अपील करने के कि इसमें अपील दायर की जानी चाहिए। बावजूद इच्छा न होने के, अपील पेश कर दी गई। अपील पेश करने के बाद चाहिए तो यह था कि राजस्थान गवर्नमेंट उसको कण्टेस्ट करती, लेकिन सदन को यह सुनकर ताज्जुब होगा कि अपील कण्टेस्ट नहीं की गई और सोचा यह गया कि अगर इनको पहले से ही री-इंस्टेट कर देंगे तो अपील इन्फेक्चुअस हो जाएगी। टर्मिनेशन आर्डर को विथड्रा करने के लिए फाइल हुकुमसिंहजी के पास गई। उस पर राज्यपाल सरदार हुकुमसिंहजी ने क्या लिखा वह मैं इस सदन के अन्दर पढ़ कर सुनाना चाहूंगा जिससे सदन को पूरी जानकारी हो जाय :

"I have considered the case. At this stage of the case, there is now no option before me too except to agree to the opening sentence of para 6/N. As regards the portion marked 'A' at para 6/N, it would be advisable to re-examine the position in the light of the decision of the court.

It is clear from the Advocate General's opinion that it was a very fit case for appeal and involved important constitutional issues, but it was not done and the time limit has also expired. It appears that in view of this decision, the constitutional power vesting with the Governor under provision (c) to Article 311 (2) of the Constitution (as has been analysed by the Advocate General) has been circumscribed. If the State Government does not disagree with these views of the Advocate General, the Government may like to consider as to how this position can be retrieved.

The State Government may perhaps also like to look to

(श्री भैरोंसिंह)

lapses pointed out in the case by the Advocate General at the portion marked X at page 289/C and the Administrative Department's letter at page 249/C for considering the desirability of taking appropriate action.

Sd. Hukam Singh"
21-10-1970

अब उसके बाद कोई कार्यवाही नहीं होती है। मेरा निवेदन करने का मतलब यही है कि हमें यहां इस तरह से नहीं सोचना है कि क्या कहा और क्या नहीं कहा। मेरा निवेदन करने का तात्पर्य इतना ही है कि दूसरे दल के ऊपर, किसी पर इल्जाम लगाने से पहले अपना मुंह लोगों को तस्वीर में देखना चाहिए। अपना मुंह देखने के बाद तसल्ली हो जाय कि मैं जो बात कह रहा हूं वह बात किस सीमा तक सही है। तो मैं निश्चित-रूप से कहना चाहता हूं कि देश में भिन्न 2 राजनैतिक दल हैं, कांग्रेस पार्टी है, जनसंघ भी एक पार्टी है, कम्युनिस्ट और सोशलिस्ट भी एक पार्टी है। एक दूसरे की अलग अलग नीतियां हैं। अगर अलग 2 नीतियां न हों तो फिर अलग 2 पार्टियों में क्यों बैठेंगे, सब एक साथ ही मिलकर नहीं बैठेंगे? अपनी अपनी आइडियोलोजी को परश्यू करने के लिए किसी दूसरे दल को अब्यूज करने की चेष्टा करे तो, अध्यक्ष महोदय, मैं इसको किसी प्रकार से उचित नहीं कह सकता। यह किसी प्रकार से उचित नहीं होगा।

अध्यक्ष महोदय, अन्त में एक बात कहूंगा......

श्री अध्यक्ष : आपके दल का सारा समय समाप्त हो गया है।

श्री भैरोंसिंह शेखावत : अभी पांच मिनिट बाकी हैं। मैं बिल्कुल टाइम से चल रहा हूं।

मैं यह निवेदन कर रहा था अन्त में, अध्यक्ष महोदय, जो कुछ भी मैंने सदन में निवेदन किया, उस सारी स्थिति से स्पष्ट होगा कि इस प्रकार का प्रशासन रहा इस प्रकार का मन्त्रि मण्डल रहा तो जिस संकट के अवसर पर हम सीमावर्ती क्षेत्रों में इस बात की चेष्टा लेकर चल रहे हैं कि सीमावर्ती क्षेत्रों में ईमानदार, प्रशासनिक दृष्टि से योग्य, मेहनती, इस प्रकार के अधिकारी रहने चाहिये, वहां इस बात की कल्पना लेकर चलते हैं कि राजस्थान में इस प्रकार के प्रशासनिक ढांचे पर इस रूप में चलना चाहिये। दुर्भाग्य से कहना पड़ेगा कि राजस्थान में इस प्रकार का ढांचा नहीं है। आज यहां पर असन्तोष बढ़ता जा रहा है। बेकारी है। इन्जीनियर्स आन्दोलन कर रहे हैं। राज्य के कर्मचारी आन्दोलन कर रहे हैं। पाली में मजदूरों का आन्दोलन हो रहा हैं, भरतपुर में मजदूरों का आन्दोलन हो रहा है। सीमको फैक्टरी के अन्दर आन्दोलन, एडवर्ड मिल के अन्दर मजदूरों का आन्दोलन सब जगह मजदूरों का आन्दोलन चल रहा है। विद्यार्थियों का आन्दोलन चल रहा है। कर्मचारियों का आन्दोलन चल रहा है। प्रशासनिक स्तर पर एक तरह से फ्रसट्रेशन चल रहा है और राजस्थान की वित्तीय स्थिति संकट में है और ऐसी स्थिति में वर्तमान सरकार चलती है तो उसके खतरे हमारे सामने हैं और इसके लिये मैं अपील करूंगा कि जो अविश्वास का प्रस्ताव प्रस्तुत

Page No 39

(श्री भैरोंसिंह)

किया गया है वह इस आधार पर है कि वर्तमान संकट का मुकाबला करना है तो इस सरकार को सुधारें और नहीं सुधारें तो जितनी भी रेस्पांसीबिलिटी है, राजस्थान की और हिन्दुस्तान की वह हम सब की है, यह हम मानकर चलें। यह मैंने मेलाफाइड इन्टेन्शन से नहीं कहा है। यह कोई व्यक्तिगत दुर्भावना, वैमनस्य से नहीं कहा है और कोई कहा है तो क्षमा चाहता हूं। जो कुछ भी मैंने यहां पर कहा है वह प्रमाणिकता के आधार पर कहा है और उसको चुनौती कोई भी देता तो उसको मैं स्वीकार करने के लिये तैयार हूं। जिस प्रकार से मुख्य मंत्री चाहें उस प्रकार से मुख्य मन्त्री में विश्वास रख कर चलना चाहते हैं जो राजस्थान के हित में हो।

इस अविश्वास के प्रस्ताव का समर्थन करते हुए मैं अपना भाषण समाप्त करता हूं।

श्री अध्यक्ष : श्री शंकरलाल।

श्री शंकरलाल (जैतारण) : अध्यक्ष महोदय, इस प्रस्ताव में एक आश्चर्य की बात रही है। कुछ ही दिन पहले, 12 नवम्बर को इस सदन के अन्दर हमारी सीमाओं के बारे में चर्चा हुई थी तब विरोधी दल ने सरकार के साथ एक जूट होकर सहयोग देने की बात कही थी। आज हमारे सामने विरोधी दल की ओर से अविश्वास का प्रस्ताव आया है। इसके बारे में इसको लाने वाले माननीय सदस्य और उसका समर्थन करने वाले जनसंघ दल के नेता के भाषण हुए। यह अविश्वास का प्रस्ताव किन इरादों के साथ लाया गया है और इस अविश्वास के प्रस्ताव के पीछे कोई जन भावना है या कोई व्यक्तिगत भावना या अपने दल के हित की भावना है और सरकार को बदनाम करने की भावना है। इन्हीं बातों को सुनने के बाद यह स्पष्टतया ज्ञात हो जाता है। मैं यह बताना चाहता हूं कि सर्वप्रथम प्रस्तावक महोदय ने अपने भाषण में जो बातें कही हैं उसमें उन्होंने केवल मंत्रिमण्डल के माननीय सदस्य के खिलाफ कुछ बातें कही हैं। उनके ऊपर व्यक्तिगत आरोप लगाये हैं। हमारे सदन की जो प्रक्रिया है, जो नियम है 273, उसके अन्दर यह है कि किसी व्यक्ति के खिलाफ अगर आप कोई आरोप लगावें, तो उसकी पूर्व सूचना दी जानी चाहिये जिससे कि वह व्यक्ति उत्तर देने में सक्षम हो सके। परन्तु यह कोई बात नहीं हुई है। मैं नहीं कहता कि ये आरोप कितने सही हैं और किस नाते से लगाये हैं उसका जवाब तो मन्त्री महोदय देंगे। लेकिन प्रश्न तो यह है कि इन्होंने अविश्वास का प्रस्ताव तो रखा मन्त्रिमण्डल के खिलाफ और इन्होंने जो बातें कहीं, या आरोप लगाये, वे लगाये एक मन्त्री के खिलाफ। इतना ही नहीं मन्त्री के खिलाफ कहने के साथ साथ माननीय मुख्य मन्त्री की इन्होंने तारीफ भी की और इन्होंने मुख्य मंत्री के लिये कहा कि मैं इनको दाद देता हूं और साथ ही यह भी कह दिया कि इनकी इन्क्वायरी करवाइये। इसका मतलब है, दूसरे शब्दों में कि सदन के नेता के प्रति, जो कि मुख्य मंत्री है, उनकी तारीफ कर उनमें इन्होने विश्वास प्रकट किया है। इनके शब्दों को देखिये। प्रस्तावक महोदय की भाषा और भाषण को देखिये तो यह समझ में नहीं आता है कि इन्होंने मंत्रि मण्डल के प्रति अविश्वास का प्रस्ताव रखा है या विश्वास का ? इनका जो भी प्रस्ताव है, उस पर इनके भाषण से

(श्री शंकरलाल)

यह स्पष्ट है और आंका जाय तो यह स्पष्ट होगा कि मंत्रि-मण्डल के एक व्यक्ति के विरुद्ध में है और इस मन्त्रि मंडल से इनका कोई विरोध नहीं है तो इसको मैं अविश्वास का प्रस्ताव नहीं कह सकता हूं। प्रस्तावक महोदय बोल गये और अविश्वास के प्रस्ताव को मूव नहीं कर सके और अध्यक्ष महोदय को कहना पड़ा कि इसे मूव किया हुआ मान लिया जाये। तो यह अविश्वास का प्रस्ताव कैसे पेश हुआ ? जबकि प्रस्तावक महोदय उसको पेश नहीं करते हैं और अपने भाषण में मंत्रिमण्डल के प्रति विश्वास प्रकट किया है और कहते हैं कि एक व्यक्ति की जांच हो तो मंत्रिमण्डल के प्रति अविश्वास नहीं है नेता के प्रति विश्वास प्रगट किया है तो इसे अविश्वास का प्रस्ताव नहीं कहा जा सकता है और इसका समर्थन कोई योग्य, बुद्धिमान व्यक्ति नहीं कर सकता है। उन्होंने जो कुछ भी बातें कही हैं मैं उनको यहां पर दोहराना नहीं चाहता हूं। भारतीय जनसंघ के नेता ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया है हमने सोचा कि वे भी ऐसी बात कहेंगे जो नीति विषयक होगी और इन चार महीनों के अन्दर इस मंत्रिमण्डल ने क्या तो जनता के विरोध का कार्य किया है? क्या तो जनता के साथ विश्वासघात किया है ? जिससे कि इनको अविश्वास प्रगट करने के लिये इस अविश्वास का प्रस्ताव लाना पड़ा और उसके समर्थन की जरूरत उनको हुई। उनके भाषण से एक बात साफ हुई और वह यह कि उनके पत्रों का जवाब उनको समय पर नहीं मिला है। जवाब समय पर मिलना चाहिये यह मैं भी निवेदन करना चाहूंगा। परन्तु वह समय पर न मिला इसलिये इसको अविश्वास का मुद्दा बनाया जायें ? जितना छोटा मन्त्रि-मण्डल है और जब सीमाओं के ऊपर इस प्रकार की स्थिति खड़ी हो गई है, उसके लिये उनको किस प्रकार के दौरे करने पड़े हैं यह सभी जानते हैं। हमारे मुख्य मंत्री जितना परिश्रम कर सकते थे, किया है वह और मुख्य मंत्री बनने के बाद रात दिन उन्होंने एक किया है। सीमाओं का दौरा कर जवानों का हौंसला बढ़ाया, जनता का मनोबल ऊंचा किया है। इन परिस्थितियों में आपके पत्रों का उत्तर देना ज्यादा जरूरी था ? आपको अविश्वास इसलिये है कि आपके पत्रों का जवाब समय पर नहीं मिला।

1-15 म. प.

(श्री रामनारायण चौधरी, उपाध्यक्ष, पदासीन)

उपाध्यक्ष महोदय, और आप देखिये। भारतीय जनसंघ के नेता की बात हमारे समझ में आती है उनके दिल में दर्द है। मुख्य मंत्री ने भारतीय जनसंघ को एक साम्प्रदायिक संस्था बताया है यह उनके दिल में टीस है। मुख्य मन्त्री उन्हें साम्प्रदायिक बताते हैं। अविश्वास इसलिये नहीं है कि मुख्य मन्त्री ने कोई जनता के साथ विश्वासघात किया हैं। तो इस प्रकार से दलगत राजनीति के लिए यह अविश्वास का प्रस्ताव लाया गया है। भारत की प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने स्पष्ट कर दिया है और जनता जानती है लेकिन इनको टीस है और इस तरह से वे मुख्य मन्त्री को दबाना चाहते हैं। चूंकि आपने जनसंघ को साम्प्रदायिक संस्था बताया है इसलिये हम अविश्वास करते हैं। यह इनकी राजनीतिक चाल है और इसलिये इसका समर्थन करते हैं। इन्होंने यह प्रश्न भी उठाया कि जोरावरसिंह झाला के स्थान पर

(श्री शंकरलाल)

खुराना को मुख्य सचिव क्यों बनाया ? मुख्य मन्त्री बनाने के बाद आप उन्हें छूट दें कि किसको वे मुख्य सचिव बनावें । लेकिन आप चाहते हैं कि सेवाओं के अन्दर एक असन्तोष भड़काया जावे । आगे आने वाले चुनावों के अन्दर सेवाओं को भड़का कर प्रशासन और मन्त्रिमण्डल में दरार डालने की कोशिश करते हैं और इस आधार पर वे अविश्वास के प्रस्ताव का समर्थन करते हैं । परन्तु यहां उनकी यह चाल सफल नहीं होगी ।

ट्रान्सफर के बारे में आप कहते हैं अब इसमें विधायकों का इन्टरफियर कम हो गया है लेकिन फिर भी तबादले किये जा रहे हैं। आपको ये ट्रान्सफर नागवार लगे इसलिये यह भी अविश्वास का कारण बना । यह तो आपको ठीक समझ में आ गया और आपने मन्जूर भी कर लिया कि कांग्रेस दल का इसमें कोई दखल नहीं है । मुख्य मन्त्री जो ट्रान्सफर कर रहे हैं वह उचित नहीं है, क्यों उचित नहीं है ? इसलिए उचित नहीं है कि जिन अधिकारियों के ट्रान्सफर्स हुए हैं चाहे करप्शन के कारण हों, चाहे अन्य प्रशासनिक कारणों से हुए हों उन ट्रान्सफर्स को लेकर अपनी राजनैतिक चाल को सफल बनाना चाहते हैं । जनसंघ के…

श्री विजयसिंह : माननीय सदस्य माफ करें, इस सम्बन्ध में इन्टरफियरेन्स तो आपका ज्यादा होता है । यह जो आप फर्मा रहे हैं ….

श्री अध्यक्ष : ऑर्डर, ऑर्डर प्लीज ।

श्री विजयसिंह : (अश्रव्य)

श्री शंकरलाल : यह आपकी चाल सफल नहीं होने वाली है ।

श्री गिरधारी लाल व्यास : आपकी हालत तो मैं कहूंगा ।

श्री शंकरलाल : अध्यक्ष महोदय, प्रोमोशन के सवाल हैं, ट्रान्सफर्स के सवाल हैं, ये इनके अविश्वास के कारण हैं । यह समझ में आ सकता है कि राजस्थान की जिन समस्याओं को लेकर आप अविश्वास का प्रस्ताव पेश करना चाहते हैं वह आपने कह दिया कि राज्य-कर्मचारियों में, चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों में असन्तोष है । कोई बात नहीं है, कोई मुद्दा नहीं है । कोई मुद्दे का बात कहे, भ्रष्टाचार, लाठी–चार्ज, उदयपुर में लाठी–चार्ज, विद्यार्थियों पर लाठी चार्ज यह आपने अविश्वास के प्रस्ताव के मुद्दे बनाने की कोशिश की दूसरे मुद्दों के मुकाबले में क्या ये मुद्दे ऐसे हैं कि जिनको जनहित का कह सकते हैं ? लेकिन कभी आपने सोचा, कभी आपने इस बात को मन्जूर किया कि लाठी–चार्ज कराने में,…लाठी-चार्ज हुआ या नहीं आज इसकी एन्क्वायरी हो रही है उस एन्क्वायरी को प्रेज्युडिस करने के लिए है—लड़कों को भड़काने में और इस तरह का वातावरण पैदा करने के पीछे कौन है । मैं, अध्यक्ष महोदय, यह कहना नहीं चाहता, लेकिन जो उदयपुर के अन्दर स्कूटर के बारे में, जनता की भीड़ हो गई, भीड़ के अन्दर मारपीट हो गई उसके लिए रेस्पॉन्सिबल कौन है ? मुख्य मन्त्री जी आज भ्रष्टाचार की बात करना चाहते हैं, लेकिन आप यह नहीं कह सकते हैं कि आज राजस्थान में इस मंत्रि–मण्डल के आने के बाद यह रिक्शाचालकों का बिल पास हुआ है। रिक्शा चलाने का लाइसेन्स केवल उन्हीं

(श्री शंकर लाल)

लोगों को दिया जायगा जो कि रिक्शा चलाते हैं और जो लोग बैठे हुए थे रिक्शा लिये और उन गरीब आदमियों की कमाई लेकर और लाइसेन्स लेकर कमाते थे आज उनके लाइसेन्स समाप्त हो गए । आज रिक्शा-चालकों की बात आप नहीं कर सकते कि सरकार ने रिक्शा-चालकों के लिए क्या किया ? ये आपके सामने मुद्दे हैं जिनको आपको उठाना चाहिए था । लेकिन मैं निवेदन करना चाहूंगा कि जो भी अविश्वास का प्रस्ताव लाये हैं और यहां पर जिस प्रकार के शब्दों में लाये हैं, उसके लिए मैं तो एक तरह से आपको धन्यवाद देना चाहूंगा, और इसलिए धन्यवाद देना चाहूंगा कि आज राजस्थान की जनता को पता लगा कि आज इस चतुर्थ विधान सभा का सत्र समाप्त होने वाला है तो कौन से मुद्दे आपके सामने हैं जो सरकार के खिलाफ आप अविश्वास व्यक्त करें ? आपका खोखलापन आज साबित हो जायगा यही नहीं आज जनता को मालूम हो जायगा कि आज विधान सभा में ताकत कितनी कांग्रेस पार्टी की है और कितनी विरोधियों की है । आज यह स्पष्ट हो गया कि विरोधी दल····

श्री विजयसिंह : यह तो मैं बोलूंगा तब मालूम हो जायगा ।

श्री शंकरलाल : जो कांग्रेस में दरार डालने की कोशिश करते थे और जब यह मन्त्रिमण्डल में परिवर्तन हुआ उसके बाद में इस तरह से कहा विरोधी दल के नेता ने कि वह भ्रष्ट था मन्त्रि मण्डल इसलिए मन्त्रि मण्डल में परिवर्तन आया, लेकिन मुझे इस बात की खुशी है कि जो प्रस्ताव माननीय मनोहरसिंह जी द्वारा रखा गया है उसमें उन्होंने इस बात को मन्जूर किया कि सुखाड़ियाजी ने स्वत: अपनी इच्छा से पद-त्याग किया । प्रस्ताव के पेश करने वालों ने इस बात को मन्जूर किया । वह नहीं कहते कि भ्रष्टाचार के कारण कोई परिवर्तन आया है, लेकिन यह बात स्पष्ट हो गई कम से कम इस प्रस्ताव के आने से ।

श्री विजयसिंह : शंकरलाल जी आप कह रहे है ··

श्री शंकरलाल : आज तो परिवर्तन आया है वह कांग्रेस की स्वेच्छा से परिवर्तन आया है वह कांग्रेस का भीतरी अरेन्जमेंट है इसमें किसी प्रकार की भ्रष्टाचार की बात नहीं है । विरोधी दल इस बात को लाने का श्रेय लेना चाहता था आज वह श्रेय भी समाप्त हो गया है । वह कह रहे थे कि परिवर्तन लाने वाले हैं । कम से कम जनता को मालूम हो गया कि परिवर्तन लाने वाले विरोधी दल के लोग नहीं थे, वह परिवर्तन लाने वाले कांग्रेस के स्वयं के नेता लोग थे जिन्होंने परिवर्तन लाने के लिए अपना इन्टेरिम अरेन्जमेंट किया है । विरोधी दल को उसका कोई श्रेय नहीं है । इसलिए मैं इस प्रस्ताव के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं कि थोड़ी बहुत दरार करने की जो कोशिश की गई थी कम से कम आज उसके नाम से कांग्रेस के लोग संगठित तो पहले से ही थे, लेकिन और ज्यादा संगठित होकर अपनी एकता को प्रदर्शित करने का उनको मौका मिला और लोगों का और जनता का भ्रम दूर हो गया कि कांग्रेस के लोगों में दरार नहीं है, कोई फूट नहीं है और कांग्रेस के जो विधायक है वे एकता के बारे में विरोधी

(श्री शंकरलाल)

दल के झूठे प्रचार का सामना करने में सक्षम है। आज यह भी अवसर मिला इसलिए धन्यवाद देना चाहता हूं। इसलिए भी धन्यवाद देना चाहता हूं कि कम से कम मन्त्रिमण्डल में बैठने वाले जो लोग हैं, जो हमारे माननीय सदस्य हैं उनका भी भ्रम दूर हो गया कि विरोधी दल के विधायकों की गलत बातों को भी सही मानने का प्रयास करते हैं कि विरोधी दल के विधायक कहते हैं उस बात को मान लें, तो आज कम से कम उनका वह भ्रम दूर हो जायगा। मैं मन्त्रि मण्डल के नेता और सदस्यों से कहना चाहूंगा कि आप कितनी विरोधी दल के विधायकों की बातें मानें लेकिन कभी भी उनसे समर्थन नहीं मिलने वाला है। उनका विरोध कांग्रेस से है। हमारा उनका सैद्धान्तिक मतभेद है और हम में फूट डालने के लिए उनके नेता कोई भी चमचागिरी करके यह बात कहे कि पुराने मन्त्री तो इस तरह के थे और आपने बहुत अच्छा कर दिया और छोटा सा काम मेरा यह भी कर दीजिये।

श्री रामचन्द्र आर्य (नोहर) : लेकिन आपकी पार्टी में फूट लग गई है।

श्री शंकरलाल : आज इस तरह की चीज है उससे सावधान रहें। मैं प्रस्ताव करने वाले लोगों को धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन्होंने इस बात को सामने रखने का मौका दिया।

माननीय मनोहरसिंह जी मेहता, मन्त्रि-मण्डल के आने के बाद में आपने तो प्रसन्नता प्रकट की थी कि छोटा मन्त्रिमण्डल बना अच्छा हुआ। आपने कहा कि छोटी कारें काम में लाई जायं। मन्त्रिमण्डल में परिवर्तन की आप बात कर रहे थे। माननीय मनोहरसिंह जी, आप गांधीवादी हैं। मुझे आप से यह उम्मीद नहीं थी कि आपको शिवचरण जी पसन्द नहीं हैं तो आप शिवचरणजी के ऊपर आरोप लगाते, मुझे उम्मीद नहीं थी कि आप मन्त्रि मण्डल के खिलाफ अविश्वास का प्रस्ताव लायेंगे। हमें यह ऐसी उम्मीद कतई नहीं थी कि आप चतुर्थ विधान सभा के आखरी दिन आप अविश्वास का प्रस्ताव ला सकते हैं केवल शिवचरणजी को बुरा दिखाने के लिए।

इसलिए मैं निवेदन करना चाहता हूं कि प्रोहिबिशन आपका अविश्वास का मुद्दा है तो कांग्रेस ने आज से कई वर्षों पहले ऐलान किया था कि हमारे देश के अन्दर प्रोहिबिशन होना चाहिए, शराबखोरी बन्द होनी चाहिए, लेकिन जिन हालात के अन्दर आप बैठे हुए हैं, और जिन हालात के अन्दर सीमा के ऊपर शराबखोरी को बन्द नहीं करने की बात की गई है उसको आपने मन्जूर किया तो फिर सारी बातों को लेकर केवल एक मुद्दे को लेकर अविश्वास प्रस्ताव का जरिया निकाला तो यह उचित नहीं है।

अध्यक्ष महोदय, अब मैं निवेदन करना चाहता हूं कि चार महीनों के अन्दर इस मन्त्रि मण्डल को जो कुछ करना चाहिए था वह कर दिया, ऐसा मैं नहीं कहता। इसका कारण भी है। पहले 40 मन्त्री थे और आज 10 है तो जितना काम करना है और जिस प्रकार का कार्य जितने आदमी कर सकते हैं— मैं मन्त्रिमण्डल को घटाने और बढ़ाने की बात नहीं करता हूं वह तो नेता के सोचने की बात है, लेकिन यह बात सही है कि जो 39 आदमी काम करते थे जब उस काम

Page No 44

(श्री शंकरलाल)

को 10 आदमी करेंगे तो इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता है— बढ़ाने और घटाने की बात में नहीं करता, लेकिन मैं यह निवेदन करना चाहूंगा कि चार महीनों के अन्दर उन्होंने जो कुछ किया है, जो कुछ घोषणाएं की हैं, जो कुछ भी इम्प्लीमेन्टेशन करने की कोशिशें की गई हैं उसकी अच्छाई से इन्कार नहीं किया जा सकता । मंत्रि-मण्डल के आने के बाद राजाओं की सम्पत्ति, भूमि को सीलिंग के अन्दर लेकर उसके बंटवारे की घोषणा की गई, उसके इम्प्लीमेन्टेशन की घोषणा की गई । मुझे पता नहीं कि इस बात का कहां कहां पर कितना कितना इम्पलीमेन्टेशन हुआ, लेकिन मैं यह निवेदन करना चाहूंगा कि कम से कम पाली जिले में 10 हजार बीघा भूमि, जागीरदारों से लेकर भूमिहीन किसानों को सीलिंग में दी है। बांटी गई है जिनके पास कोई जमीन नहीं थी । यह अधिकारियों पर निर्भर करता है, कार्यकर्ताओं पर निर्भर करता है इसका इम्प्लीमेन्टेशन मैं नहीं कहता कि सरकार ने बिल्कुल सही रूप में जितने कदम उठाने चाहिए थे वे उठा लिये । सरकार कुछ आगे बढ़ी हैं सीलिंग के बारे में मेरी शिकायत यही है कि अभी तक सीलिंग का इम्प्लीमेंटेशन जितना होना चाहिए था वह नहीं हुआ । मैं चाहता तो यह था कि मुख्य मन्त्री जी इस कानून को बनाने के या आर्डर बनाने की घोषणा करें । जिस प्रकार से भू० पू० मुख्य मन्त्री ने कहा था । जो सिंचाई के तालाव और बाध है । जिनको उन्होंने गलत तरीके से व्यक्तिगत सम्पत्ति में दर्ज करा रखा है । यह अभूतपूर्व मुख्यमन्त्री की घोषणा थी ।

श्री विजयसिंह (मकराना) : ये जिन लोगों ने गड़बड़ियां की हैं, उनको भी कान पकड़ कर निकाला जायेगा ?

श्री शंकरलाल : उपाध्यक्ष महोदय, मंत्रि-मण्डल ने शिड्यूलकास्ट और शिड्यूल्डट्राइब्स के लिए रोस्टर स्कीम लागू की है । उनको इस बात की गारण्टी दी है कि शिड्यूलकास्ट और शिड्यूलट्राइब्स के लोगों को नौकरियों में जो कोटा है, वह 28% होगा । आप ऐसे प्रस्ताव को नहीं कहेंगे । आपको पता है, चीनी आक्रमण के वक्त और पाक हमले के वक्त बोर्डर की जो हालत थी, आज उससे सुदृढ़ है । आज हमारी बॉर्डर की स्थिति मजबूत है । आपने तो केवल मन्त्रिमण्डल की हंसी उड़ाने की कोशिश की है । आपने कहा है कि उनको कमाण्डर नियुक्त कर दिया है । जिन्होंने रात दिन बॉर्डर की सीमाएं जाकर देखी हैं उनको आप अच्छा नहीं बता सकते हैं । आपको अविश्वास लाना है । केवल इसीलिए लाना है कि आगे आने वाले चुनाव में आप उपयोग कर सकें । लेकिन आप उनका उपयोग नहीं कर सकेंगे । आपने यह नहीं कहा कि जो डिग्री होल्डर्स में अन-एम्प्लायमेंट है, उनको स्टाइपेण्ड देना लागू किया है । यहां जो घोषणायें की गई थीं उनको पूरा किया जा रहा है । जो शिड्यूलकास्ट और शिड्यूल-ट्राइब्स के लोग हैं, उनको वजीफा दिया जा रहा है ।

ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगारी को मिटाने की मुद्दा है, इसको भी क्रश प्रोग्राम के तहत मिटाने का प्रयत्न किया जा रहा है । आप मन्त्रिमण्डल की कमियों की बात कहते तो कोई बात नहीं थी । वह शिकायत तो मुझे होनी चाहिए थी । आप को नहीं । क्योंकि

(श्री शंकरलाल)

मन्त्रिमण्डल ने कहा था । आप प्रापर्टी सीलिंग कानून पर कहते तो वह बात आप को याद नहीं आती है । केवल आप समाजवाद के मुद्दे के पीछे राजनैतिक मुद्दों को रखना चाहते हैं । मैं नहीं कहता हूं कि 4 महीने में मन्त्रिमण्डल ने जो काम किये हैं वह कुछ नहीं रहे हैं । लेकिन इस बात को कहने का कोई मुद्दा नहीं आता है जिससे आप ...

(समय समाप्ति सूचक घन्टी)

अविश्वास मन्त्रिमण्डल के खिलाफ लायें। आपने कांग्रेस वालों के लिए कहा है। इसकी भी हम को शिकायत होनी चाहिए। आपने कहा कि ब्यूरोक्रेसी में जनता की सुनवाई नहीं होती है । आपने जन असन्तोष को बताया है केवल इसलिए कि आपके पत्रों का जवाब नहीं दिया है ।

श्री विजयसिंह : (अश्रव्य)

श्री शंकरलाल : आपने जो कई उदाहरण प्रस्तुत किये हैं, वह उस वक्त के हैं जब ये सदन के नेता नहीं थे । ये एजूकेशन मिनिस्टर थे । जब इन्होंने दो आदमियों को बहाल करने के लिए लिख दिया था । इसलिए कि उनकी मजबूरी थी क्योंकि हाईकोर्ट का आॅर्डर था । ऐसे मुद्दे को आप उस वक्त नहीं कह सकते थे । जब ये एजूकेशन मिनिस्टर थे । लेकिन जब मुख्य मन्त्री हो गये हैं तब आप कह रहे हैं इसका क्या औचित्य था ? आप ऐसी कहां से औचित्य की बात कह सकते हैं ?

एक माननीय सदस्य : (अश्रव्य)

श्री शंकरलाल : जो प्रस्ताव रखा गया है, यह अविश्वास का प्रस्ताव किंचित्मात्र भी नहीं हो सकता है क्योंकि इन्होंने व्यक्तिगत नीतियों को खासतौर से कहा है जिससे कांग्रेस पार्टी में आक्रोश पैदा किया जाये। इसलिए यह रखा गया है । लेकिन वह सारे मंसूबे इनके खत्म होंगे । कांग्रेस विधायक एक दिल होकर इस बात की छाप देंगे। आप की पार्टी में कितने आदमी हैं ? कोई आदमी नहीं है । मैं तो यह कहूंगा, भैरोंसिंह जी आप की पार्टी को यह अविश्वास का प्रस्ताव विड्रा कर लेना चाहिए ।

श्री विजयसिंह : हमारे नेता महोदय ने जो आरोप लगाये हैं, उनकी जांच तो कराओ ।

श्री उपाध्यक्ष : आॅर्डर प्लीज ।

श्री विश्वम्भरनाथ जोशी : (बांदीकुई) : जांच का निर्णय अभी 7 बजे हो जायेगा । साथ साथ ।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह (डूंगरपुर): उपाध्यक्ष महोदय,.........

श्री गिरधारीलाल व्यास : बुढ़ापे में जोर दिखा रहे हैं ।

एक माननीय सदस्य : (अश्रव्य)

श्री उपाध्यक्ष : आर्डर प्लीज ।

श्री गिरधारीलाल व्यास : मुफ्त का माल बहुत खाया है ।

श्री उपाध्यक्ष : आर्डर, प्लीज ।

महारावल श्री लक्ष्मण सिंह : उपाध्यक्ष महोदय, जिस वातावरण में अविश्वास का प्रस्ताव लाया गया है, उस सम्बन्ध में मैं इतना अवश्य निवेदन करना चाहता हूं कि हमको सोच समझकर बात कहनी चाहिए। सबसे पहले मैं यह निवेदन करना चाहूंगा कि जो वर्तमान मन्त्रिमण्डल बना, उसको 5 महीने से भी कम समय हुआ है। उसके आचरण के सम्बन्ध में अभी से अनुमान लगाया जाये, यह शायद सम्भावना अपरिपक्व स्थिति में होगी।

एक माननीय सदस्य : यह सही है।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : विपक्षी दल के दोस्त अभी मेज थपथपाते हैं तो थोड़ी सी देर बाद मेरे से रुष्ट भी हो सकते हैं। मैं यह निवेदन करना चाह रहा हूं कि पहले का मन्त्रिमण्डल था उसका एक तरह का पुनर्विस्तार है....

श्री रामकिशन (बैर) : पुनर्जन्म।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : उस मन्त्रिमण्डल और इस मन्त्रिमण्डल में विशेष कोई अन्तर नहीं है। अगर यह कहा जाय कि वर्तमान मन्त्रिमण्डल "ओल्ड वाइन इन ए न्यू बोटल" है, तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। यह कहा गया है, और माननीय मनोहर सिंह मेहता ने भी यह कहा है कि भूतपूर्व मुख्य मन्त्री माननीय श्री मोहनलाल जी सुखाड़िया ने स्वेच्छा से अपना पद त्याग किया....

श्री भगवानदास शास्त्री (अजमेर पश्चिम) : छीना गया है। धकेला गया है।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : मैं बहुत अदब के साथ यह निवेदन करना चाहूंगा, मैं इस अभिमत का नहीं हूं। मेरी यह निश्चित धारणा है कि सुखाड़ियाजी के लिए मैं व्यक्तिगत कोई आरोप नहीं लगाना चाहता लेकिन जनतन्त्र की स्वस्थ परम्पराओं को ध्यान में रखते हुए मैं निश्चित रूप से यह अवश्य कहूंगा कि एक व्यक्ति चाहे जितना भी योग्य हो, चाहे जितना भी अनुभवी हो, लगातार सत्रह साल तक एक पद पर रहे— यह जनतन्त्र के लिए शोभनीय नहीं है, एक अशोभनीय और अधिनायकवादी प्रक्रिया है। मेरा यह निश्चित अभिमत है कि उन्होंने स्वेच्छा से मुख्य मन्त्री पद त्याग नहीं किया। एक तो सबसे पहले यह स्पष्ट है कि सुखाड़िया जी और उनके समर्थकों ने अधिकांशतः राष्ट्रपति के चुनाव में गिरी साहब को वोट नहीं देकर रेड्डी साहब को वोट दिया ..

श्री रामानन्द अग्रवाल : आप लोगों के साथ।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : हम लोगों ने भी वोट दिया। हां मैं भी साथ था। उस वक्त माननीय मुख्य मन्त्री ने यह कहा कि चलो, अपन दोनों जाकर वोट दें रेड्डी साहब को...

श्री रामानन्द अग्रवाल : आप, मुख्य मन्त्री और भैरोंसिंह जी एक जगह ही रेडियो सुन रहे थे।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : वह जमाना और था

श्री विजयसिंह : अब यह इन्दिराजी के साथ हो गये हैं।

श्री दुर्गालाल बादूदार : इसलिये ही पक्ष करने की कोशिश कर रहे हैं।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : खैर, सब दिन समान नहीं होते हैं।

मैं कहने जा रहा था कि मुख्य मन्त्री जी ने किन्हीं कारणों के साथ, मजबूरियों को, अनुभव करते हुए त्याग पत्र दिया, भ्रष्टाचार भी एक हद तक इतना बढ़ गया था मन्त्रिमण्डल में, इसके और अधिक विस्तार में नहीं जाना चाहता, परन्तु यह कहे बिना नहीं रह सकता, धीरे धीरे मात्रा भ्रष्टाचार की इतने हद तक बढ़ चुकी है कि मेरे ख्याल से एक दिन इसका भयंकर परिणाम कांग्रेसजनों को ही नहीं भुगतना पड़ेगा बल्कि सारे देश के लिए एक दुश्वार और दुर्भाग्यपूर्ण व्यस्था हो जायगी। जितना भ्रष्टाचार बढ़ता है उतनी अवसरवादिता बढ़ती है, और अनियमितता बढ़ती है। आज हम देख रहे हैं दिन ब दिन भ्रष्टाचार बढ़ रहा है, अनियमितता बढ़ रही है और मन्त्रिमण्डल और प्रशासन के अन्दर एक नहीं, कई एक कमी बढ़ती जा रही हैं....

श्री प्रेमसिंह सिंघवी (छबड़ा) : (श्री लक्ष्मी कुमारी चूण्डावत के सदन में आने पर) बा अदब, बा मुलाहिजा....

श्री विजयसिंह : होशियार, अध्यक्षा पधार रही हैं।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : पहले मन्त्रिमण्डल में पैंतीस-छत्तीस मन्त्री और उप मन्त्री थे, उस समय में जो भ्रष्टाचार व्याप्त था उसको सम्भवतः केन्द्र के द्वारा कम करने के लिये मन्त्रिमण्डल को छोटा किया गया। मन्त्रिमण्डल छोटा हुआ – यह एक स्वस्थ परम्परा है। इसका मैं हामी हूं और मैं समझता हूं कि इसका मैं समर्थन किये बिना नहीं रह सकता। लेकिन दो व्यक्तियों के अतिरिक्त दूसरे जितने भी मन्त्रि हैं, यह वही पुराने श्री सुखाड़िया मन्त्रिमण्डल के सदस्य थे। यदि वर्तमान मंत्रिमंडल के मापदंड का अनुमान किया जाय तो सबसे पहले मैं यह कहूंगा, बरकत साहब आये, उनका आना कांग्रेस दल का इन्टरनल अफेअर है, आन्तरिक मसला है। इससे हमको कोई लेना देना नहीं है लेकिन हमको दिलचस्पी अवश्य है, वर्तमान मन्त्रिमण्डल क्या करता है, क्या नहीं करता है। मुख्य मंत्री ने कई ऐलान किये मैं समझता हूं, बाज बाज उन्होंने ऐलान किये, वह अवास्तविक हैं। भ्रष्टाचार में कमी की जा सकती है, भ्रष्टाचार का बिलकुल उन्मूलन किया जा सकता। भ्रष्टाचार तो अनादिकाल से शासन का अविभाज्य अंग रहा है। भ्रष्टाचार एक हद तक यदि कम किया जाता और भ्रष्टाचार को कम होते हुए हम देखते तो हम इस मन्त्रिमण्डल की प्रशंसा करते, एडमिनिस्ट्रेशन के अन्दर एफीसियेन्सी आती– तो हम मन्त्रिमण्डल की प्रशंसा करते। किन्तु दुर्भाग्यवश क्या हम देखते हैं कि दिन ब दिन भ्रष्टाचार की सीमा उतनी ही नहीं बल्कि बढ़ती जा रही है। दिन ब दिन प्रशासन के सम्बन्ध में रेड टेपिज्म बढ़ता जा रहा है। रेड टेपिज्म की तो, उपाध्यक्ष महोदय, इस हद तक अभिवृद्धि हो गई है कि पता नहीं, इस सरकार के पास कितनी पेंडिंग फाइल हों,इस सरकार को डिस्पोजल की शक्ति, मिसलों को फैसल करने की शक्ति बिलकुल शून्य सी हो गई है-ऐसा मुझे लगता है। और पत्र लिखे जाते हैं मन्त्रियों को केवल मात्र यह

(महारावल श्री लक्ष्मणसिंह)

लिख दिया जाता है कि आपका पत्र प्राप्त हुआ। उसके ऊपर उचित कार्यवाही की जायगी। तो उपाध्यक्ष महोदय, पहले ब्रिटिश शासन भी था, राजाओं का भी शासन था, उन शासनों के अन्दर बहुत सी अन्य खामियां थी लेकिन यह सामान्य जो एलमेंट्री प्रिन्सिपल आफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन है, आखिरकार मंत्री महोदय को यह भी संकेत करना चाहिए कि फलां फलां फाइल इतने दिन के अन्दर डिस्पोज आफ, फैसल नही होती है तो कम से कम अमुक कर्मचारी को जिम्मेदार करार दिया जायगा। यहां तो है किसी कर्मचारी को भी दोषी नहीं ठहराना, न मिसल का फैसला करना, रेड टेपिज्म का दिन ब दिन बढ़ना, और मुझे तो यह आंशका हैं कि आज कांग्रेस जनों के लिए कोई कानून लागू नहीं हो सकता हैं। जो कोई भी आरोप विपक्ष की तरफ से लगाया जाता है उस पर लीपा पोती की जाती है, बाज बाज समय, मेरा यह अनुभव हो गया है, मंत्रियों के कान पर जूं तक नहीं रेंगती है, और जो भी शिकायत हो, वह रद्दी की टोकरी में वेस्ट पेपर बास्केट में जाती है या कहां जाती है। यह भी नहीं कह सकते। मैं समझता हूं, यह अन्धाधुन्धी की माया और घटाटोप का राज्य है। इस सदन में नाना प्रकार के आक्षेप मंत्रियों के के ऊपर लगाये गये, कम से कम स्वस्थ परम्परा के अनुसार मंत्री महोदय को उनकी जांच तो करनी चाहिए। खैर, माननीय मोहनलाल सुखाड़िया तो नहीं हैं यहां पर, मैं उनकी इज्जत करता हूं, वह मेरे पड़ोस में रहने वाले हैं, उनको एक दफा मैंने किंग आफ करप्शन तक कहा किन्तु जो नाना प्रकार के आरोप लगाये तो उन्होंने यह तक भी नहीं कहा कि इस सम्बन्ध में मैं जांच कराऊंगा निष्पक्ष जांच कराऊंगा। तो क्या फायदा है विधान सभा के रहने का और विधान सभा बुलाने का क्या कारण है, विधान सभा क्यों बुलाई जाय। यह भी मेरी समझ के बाहर है। मैं भी आशा करता हूं कि ऐसा चरित्र वर्तमान मंत्रिमंडल का नहीं होगा, और आगे बढ़कर कोई न कोई निष्पक्षता के रूप में जांच कराने के सम्बन्ध में, आरोपों के सम्बन्ध में शंका समाधान करने के प्रश्न पर गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे। नहीं तो म यह का यही आरोप दोहराऊंगा, 'बोटल इज न्यू बट द वाइन इज ओल्ड'।

इस सदन के अन्दर, उपाध्यक्ष महोदय, दुष्कालों के सम्बन्ध में कम से कम तीन चार दफा मैंने कहा। इसके अन्दर बड़े भारी घोटले हैं और एक दो करोड़ का सवाल नहीं यह डेढ़ सौ करोड़ का सवाल है, 158 करोड़ का सवाल है। यह जन हित का सवाल है। इसके सम्बन्ध में कोई निष्पक्ष जांच करायें, एडमिनिस्ट्रेटिव जांच कराई जाय। मैंने इस हद तक कहा अगर आप स्कैण्डलाइजेशन से डरते हैं, बदनामी से डरते हैं तो कम से कम एडमिनिस्ट्रेटिव जांच करायें। मैंने व्यक्तिगत रूप से, उपाध्यक्ष महोदय, देखा है, हजारों रुपये के मस्टर रोल फर्जी हैं, लाखों रुपये का पेमेंट है, वह भी इधर का उधर हुआ है, लाखों रुपये एक एक कर्मचारी ने घर में भर कर रखे, जिन लोगों की महिलाओं के पास कुछ नहीं था, आज वहां सोने के जेवर से लदी हुई हैं इससे एक उदाहरण याद आता है, यथा राजा तथा प्रजा। बहुत इज्जत के साथ मैं यह निवेदन करना चाहूंगा कि हमारे माननीय मन्त्री बीस वर्ष के पहले क्या थे और आज उनकी स्थिति क्या है। उनके पास बंगले, तगले, जमीन और क्या नहीं है, अंगूर और सब कुछ लग गया है।

श्री प्रेमसिंह सिंघवी : खेत में पसीना बहाया है।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : और आरोप हम लोगों पर लगायें, हम जमीन दबा रहे हैं, हमारे पास जमीन है। जो कुछ भी है वह है। लेकिन मैं कह सकता हूं, मेरे बाप दादाओं के पास आठ सौ वर्ष तक धन इकट्ठा करने के बाद इतना नहीं मिलेगा जितना अमुक मन्त्री ने दस वर्ष, बीस वर्ष के अन्दर इकट्ठा किया है। उपाध्यक्ष महोदय, मैं इन सबके साथ साथ यह भी निवेदन करूंगा कि माननीय सदस्य श्री शंकरलालजी ने जो सीलिंग का कानून लागू करने के लिये बार बार कहा है तो मैं तो यह कहता हूं कि वह तुरन्त लागू होनी चाहिये। मैं तो उसका स्वागत करता हूं कि सीलिंग कानून राजस्थान में जल्दी से जल्दी लावे। लेकिन अगर मेरी भूमि को लेकर आप किसी भूमिहीन को देते हैं तो कोई बात नहीं आप भूमिहीनों को भूमि दीजिये। मैं एक बात आपको स्पष्ट कर दूं कि मैने अपनी लाखों रुपये की भूमि भूमिहीन लोगों को दी है। इसको मै अपनी वाह वाही नहीं कहता हूं। इसलिये अगर राजस्थान में सीलिंग कानून की क्रियान्विति होती है तो मैं उसका स्वागत करता हूं। दूसरे उपाध्यक्ष महोदय, गान्धी शताब्दि के अवसर पर कितने ही भूमिहीनों को जमीनें दी गयीं। मैंने उपाध्यक्ष महोदय, इस विधान सभा के अन्दर प्रश्नोत्तर काल में एक सप्लीमेन्ट्री भी किया था कि गान्धी शताब्दि के वर्ष में कितने भूमि-हीनों को जमीन अलोट की गयी थी तथा वह कितनी जमीन थी कुल ? पर राजस्थान सरकार इस प्रश्न का जवाब देने में असमर्थ पायी गयी और राज्य सरकार यह नहीं बता सकी कि कितने भूमिहीनों को भूमि दी गयी।

श्री रामानन्द अग्रवाल : माननीय सदस्य मैं आपसे जानकारी करना चाहता हूं आपसे कितनी भूमि सीलिंग के तहत ली गयी। क्योंकि राजाओं में सबसे ज्यादा जमीन आपके पास है। आपके पास से जमीन ले ली गयी क्या, आपने जमीन सीलिंग के तहत दी है क्या ?

महारावल लक्ष्मणसिंह : मैंने तो भूमिहीनों को जमीन दी है, कितनी दी वह भी मेरे पास है और अभी मैं अविश्वास के प्रस्ताव पर बोलना चाहता हूं और विषयान्तर नहीं होना चाहता माननीय सदस्य रामानन्दजी...

श्री विजयसिंह : सेठजी आपने कितने लोगों को पेट्रोल मुफ्त में दिया है।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : आपने जो कहा कि मेरे पास राजाओं में सबसे ज्यादा जमीन है वह सही है भूमि तो मेरे पास राजाओं में सबसे अधिक है इसमें कोई शक नहीं परन्तु मेरे पास जो जमीन है उसमें पहाड़ अधिक है बंजड़ भूमि अधिक है और काफी मात्रा में जो जमीन है वह बेकार है।

श्री रामानन्द अग्रवाल : मैं तो आप से यह पूछना चाहता हूं कि आप अपनी जमीन सीलिंग के तहत सरकार लेगी जब देंगे या अपनी मरजी से ही देदेंगे।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : सरकार ने घोषणा तो करदी पर ले नहीं रहे हैं। मैं तो तैयार हूं। मेरे पास पहाड़ हैं ज्यादा तो...

श्री रामानन्द अग्रवाल : तो फिर आप अभी तक कितनी भूमि दे चुके हैं····

श्री विजयसिंह : पत्थर लेकर ये अपना सिर फोड़ेंगे।

श्री दुर्गालाल बाढ़दार : इनके पास जो जमीन है वह मन्त्रियों के पास जो जमीन है उससे कम है। मन्त्रियों के पास इतने बंगले हैं जमीनें है····

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : माननीय उपाध्यक्ष महोदय, रामानन्दजी ने जो सवाल किया है उसमें उसका जवाब देना मेरा कर्तव्य हो जाता है कि मैं सदन को वस्तु-स्थिति से अवगत कराऊं कि उन्होंने कह दिया कि मेरे पास सबसे अधिक जमीन है पर मैं तो निवेदन कर चुका हूं कि है मेरे पास हैं सबसे अधिक पर वो तो पहाड़ हैं, बन्जर भूमि है और उसके अलावा भी मैं तो यह कह रहा हूं कि सीलिंग कानून के तहत जो जमीन मेरे से ली जाये तो मैं देने को तैयार हूं पर राजस्थान सरकार जमीन लेना नहीं चाहती है क्योंकि राजस्थान हाई कोर्ट से इनजक्शन इश्यू हो गया है कि राजस्थान सरकार हमारे पास से जमीनें अभी ले नहीं सकती और हम उन्हें बेच नहीं सकते। तो मेरी स्थिति तो अभी ऐसी है कि न तो मरे न मांचो छोड़े।

श्री रामानन्द अग्रवाल : हाई कोर्ट में इन्जेक्शन लेने आप गये थे या कोई और। आपने कितनी भूमि सरेन्डर की ?

श्री देवीदत्त गाड़िया (बारां) : पाली सोड़ा में अभी तक भी धन्धा चल रहा है माननीय रामानन्दजी उनके बारे में ···

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : मैं तो देने को तैयार हूं और अगर सभी जमीन चली जायगी तो झोंपड़ी में भी रह जाऊंगा मुझे फिकर नहीं है।

(शोरगुल)

श्री उपाध्यक्ष : ऑर्डर प्लीज, आर्डर प्लीज। विरोधी पक्ष का नेता अपना भाषण जारी रखें।

श्री महेन्द्र कुमार (पाड़वा) : आप गलत कह रहे है कि मैंने भूमि मुफ्त में दी आपने भूमि बेची है, रुपया लेकर दी है दो सौ दो सौ रुपये लिये हैं। फिर दी है।

श्री दिग्विजयसिंह (उनियारा): आईन्दा इनका ख्याल रख दीजिये ये भी हैं।

श्री विजयसिंह : दान दाता तो सबका ध्यान रखता है।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : माननीय सदस्य ने कहा है कि रुपये लेकर दी वो भी ठीक है रुपये लेकर भी दी है और मुफ्त में भी दी है। लेकिन मेरा स्केलेटन कब्र में भी दोषी नहीं पाया जायेगा। लेकिन दूसरे जो लोग हैं उनका स्केलेटन कब्र में भी नहीं बचेगा। दूसरी बात यह है कि अगर मैं झूठ कहता हूं तो इसकी जांच करा ली जाय कि मैंने भूमि हीनों को जमीनें मुफ्त में नहीं बांटी है नहीं तो उन्हें दण्ड दिया जाय और अगर जांच में दोषी पाया जाऊं तो मुझे आप चाहें जो सजा दें। मैं भुगतने को तैयार हूं।

श्री दुर्गालाल बाढ़दार : इन्होंने अलाटमेंट के अन्दर दो दो हजार रुपये रिश्वत के लेकर नहीं अलोट किए हैं।

श्री गिरधारीलाल व्यास : कितने करोड़ रुपये लिए हैं।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : उपाध्यक्ष महोदय, मैं विषयान्तर नहीं होना चाहता हूं और अभी अविश्वास के मसले पर कई माननीय सदस्य बोलेंगे इसलिए दूसरी चर्चाओं पर मैं नहीं जाऊंगा। इसके अलावा मैं इस बात की भी चर्चा नहीं करूंगा कि किस आफिसर को ट्रान्सफर कैसे कहां और क्यों हुई है। ये तो मेरी राय में सरकार का आन्तरिक मामला है वो चाहे जिसे कहीं पर भी एडमिनिस्ट्रेटिव ग्राउन्ड पर कभी भी ट्रान्सफर कहीं पर भी करदे। लेकिन अगर सरकार को किसी अधिकारी को बावजूद शिकायतों के जगह पर कायम रखती है तो मैं इसे बुरा मानता हूं। सरकारी अधिकारियों के अगर एडमिनिस्ट्रेटिव ग्राउन्ड पर कभी भी ट्रान्सफर हुए हैं उनकी मैंने कभी भी आलोचना नहीं की। मेरा आलोचना करने का अधिकार है लेकिन मैं आलोचना किसी खास मुद्दे पर ही करता हूं। और अभी भी माननीय सदस्यों के सामने कहूंगा कि आलोचना करने का मुझे अधिकार है। उपाध्यक्ष महोदय, जबकि अविश्वास प्रस्ताव पर बहस हो रही है तो मेरा परम कर्तव्य हो जाता है कि जो नीतियां सरकार घोषित करती है और बाद में अगर वो उन्हें क्रियान्वित नहीं करती है तो मेरा हक है कि मैं आलोचना उसके लिये सरकार की करूं। आलोचना के लिए मैं कोई सरकार का अशुभचिन्तक हूं वो बात नहीं मैं तो सरकार का शुभचिन्तक हूं और मेरा फर्ज होता है शुभचिन्तक के नाते कि मैं सरकार को उनकी भूलों के लिये आगाह करूं ताकि वो अपनी भूलों को सुधार कर, अपनी घोषणाओं पर अमल करे। इसे सही मानता हूं।

श्री बालसिंह सोढ़ा : भैंस के आगे बीण बजाओ और भैंस पड़ी पगराय।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : तो माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं कि उपाध्यक्ष महोदय, पिछले सेशन में चार मन्त्रियों के खिलाफ चार्जेज इस सदन में लगाये गये थे। क्या आपने उन लोगों के विरुद्ध कोई कार्यवाही की? कोई जांच कमेटी बैठायी? मेरे ख्याल से नहीं बैठायी। उपाध्यक्ष महोदय, जब नये मन्त्रि मण्डल ने शपथ ली तो हमारे मुख्य मन्त्रीजी ने काफी भ्रष्टाचार के खिलाफ भाषण दिये पर आज तक उन भ्रष्ट मन्त्रियों के खिलाफ में कोई जांच नहीं की गई। यहां पर ओम्बुड्समेन की अभी तक कोई व्यवस्था नहीं है। अगर ओम्बुड्समेन प्रणाली हो तो उसके अनुसार कार्यवाही की जावे। इसका मतलब यह है कि वही स्थिति है जो कि भूतपूर्व मन्त्रियों की है वह अब इन नये मन्त्रिमण्डल का हाल है और आज लोगों में इस नये मन्त्रिमण्डल के लिए भी वही धारणा बन गई जो पहले मन्त्रिमण्डल के बारे में थी। तो मुझे इस बात की आशंका इसके साथ यह हो जाती है कि ये तो सरकार अवसरवादियों की है। इनका स्वार्थ है हकूमत के चिपके रहना। उपाध्यक्ष महोदय, इसके लिए आपको एक उदाहरण दूंगा कि इन्होंने अपनी कुर्सी रखने के लिए पंचायतों के चुनाव के लिए आज कितने अरसे से अवधि बढ़ा रहे हैं। जो कि नियमों के विपरीत है पर इस राज्य सरकार में नियमों की अवहेलना करना साधारण सी बात है। कर्मचारियों के प्रमोशन्स वगैरहा

(महारावल श्री लक्ष्मणसिंह)

में नियमों की अवहेलना की जाती है। अगर आपके पक्ष की कोई म्यूनिसिपैलिटी नहीं है तो आप उसे खतम कराने की कोशिश करते हैं और अगर उसका कार्य-काल समाप्त हो जाता है तो तुरन्त भंग करा देते हैं। ये तो म्यूनिसिपैलिटि की बात क्यों अगर इनके लोकसभा में अगर जरूरत पड़ी तो उसको भी भंग करा दिया और विधान सभाओं में अगर इनकी मेजोरिटी नहीं बनती है तो आप वहां विधान सभाएं भंग करा देते हैं राष्ट्रपति शासन लागू करा देते हैं तो इसका मतलब यह हुआ कि अगर इनकी स्वार्थ सिद्धि होती है, पंचायतों का कार्यकाल बढ़ने से तो उसको बढ़ा देंगे। तो इस तरह से ये नियमों की अवहेलना करना कोई खास बात नहीं समझते हैं और इस प्रकार से ये डेमोक्रेसी का गला घोंट रहे हैं और इस कारण से यह धारणा आज जनता में बनी हुई है कि आज की सरकार अवसरवादियों की है और हुकूमत चाहती है। ये योग सिर्फ अपने घर को भरना चाहते हैं और कुर्सियों के चिपके रहना चाहते हैं।

अलाटमेंट के सम्बन्ध में, मैं निवेदन कर चुका हूं और अलाटमेंट के साथ साथ यह भी कहूंगा कि एक तरफ हमारी भूमि देखी जाय और दूसरी तरफ गरीबों की भूमि देखी जाय और जो भूमिहीन मिनिस्टर, मंत्री महोदय थे आज उन्होंने कैसी कैसी भूमि अवाप्त की, सोने के माफिक अवाप्त की। सबसे अच्छी जमीन है उनके पास आज। एक तरफ भूमिहीनों को भूमि न वितरण करना और दूसरी तरफ अच्छी अच्छी भूमि अपने कब्जे में रखना यह समाजवाद नहीं है, यह जनतन्त्र नहीं है, न यह जनतन्त्रवाद है, और न ही यह समाजवाद है। यह तो अवसरवाद है और अवसरवाद की भी पराकाष्ठा है।

इसके साथ साथ मुझे यह भी निवेदन करना पड़ेगा कि मंत्रियों के आचरण भी शुद्ध होने चाहिये। रहनसहन की शैली ऐसी होनी चाहिए कि जो समाजवादी हो। समाजवाद, रहन सहन की शैली और एक परम्परा है। शादी में दस तरह की मिठाइयां बनायें, तरह तरह के पकवान बनायें और उसमें एक एक हजार आदमियों को बुलायें और उसमें नजराने और न्योछावरें हों। मैं राजा भी रहा हूं। दस वर्ष तक राज भी किया मैंने। बेटियों की शादियां करायीं। मैंने खुद ने भी शादी की लेकिन उनमें हाथी घोड़े हो सकते थे लेकिन ये तो हाथी के हाथी बन चुके हैं और हजारों आदमियों को खाना खिलाना मैंने अखबार में देखा कि महाराष्ट्र में एक मंत्री थे न मालूम उन्होंने कितने हजार आदमियों को बुलाया।

कई माननीय सदस्य : दो लाख।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : दो लाख तो अतिशयोक्ति होगी। मैं समझता हूं कि जयपुर, जोधपुर, उदयपुर के महाराजा भी दस हजार आदमियों को खाना नहीं खिलाते थे। यह तो समाजवाद का ढोंग है। यह न समाजवाद है और न जनतन्त्रवाद है, यह तो अवास्तविक वाद है।

श्री गिरधारीलाल व्यास : राजा महा-राजा तो भूखों मारते थे, खिलाते थोड़े थे।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता (बानसूर) : राजाओं के जमाने में दस हजार आदमी तो इन्तजाम करने वाले थे।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : माननीय बद्रीप्रसादजी कह रहे हैं मैं उसकी ताईद करता हूं। दस हजार होंगे।

यह मीठे मसखरे समाजवादी हैं।

दल बदलुओं के लिये निवेदन करना चाहता हूं।

एक माननीय सदस्य : जसराजजी।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : जसराज जी हैं दल बदलू। माननीय सदस्य की मैं इज्जत करता हूं। उनसे हाथ मिलाता हूं। दलबदलू हो गये तो हो गये। लेकिन दल बदल की नीति पर मैं प्रकाश डालना चाहूंगा।

श्री गिरधारीलाल व्यास : उसका तो आपको बहुत ज्ञान है।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : सुनिये तो सही मुख्य सचेतकजी।

श्री दुर्गालाल बादद्‌दार : जो व्यक्तियों की चोरी को रोक नहीं सकते वह क्या जनता को प्रोपर्टी की चोरी को रोक सकेंगे।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : मुख्य सचेतकजी, सर्दी भी बढ़ रही है। मैं दुशाले में लपेट लपेट कर कह रहा हूं उसको तो मुझे कहने दें।

(एक माननीय सदस्य के व्यवधान पैदा करने पर) मेरी बात पर कभी कोई कुछ कहता है और कभी कोई कुछ इससे आपको क्या मिलेगा। मेरी बात सुन सकते हैं तो सुन लें और खत्म होगा मामला।

डिफेक्शन के सम्बन्ध में, मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि विधान सभा के चुनाव आ रहे हैं। घोषणा लोक सभा में भी की थी वित्त मंत्री श्री चव्हान ने। माननीय केन्द्रीय गृह मंत्री ने भी कहा है कि यह परम्परा अच्छी नहीं है। इसमें अवसरवादिता झलकती है। इसके लिए कोई न कोई कानून होना चाहिये और उस कानून की रूपरेखा यह होनी चाहिए कि अगर दल बदलाव की किसी की इच्छा है तो वह त्यागपत्र दे पहले और फिर जहां से चाहे वहां से चुनाव लड़े।

तो मैं समझता हूं कि इस दोष से शासनारूढ़ दल को ही सब से अधिक लाभ मिलने की सम्भावना है। इसलिये इस बारे में वे कोई कानून नहीं बनाना चाहते भले ही वे कहते कुछ भी रहें। यह भी आम तौर से भावना लोगों की हो गई है। तो उनके कथन पर लोगों को विश्वास कैसे होगा। जब वे स्वयं समझते हैं कि यह अच्छा नहीं हैं, कानून इस तरह से बनना चाहिये तो फिर कानून बनाने से उनको कौन रोकता है? पर नीयत नहीं है। और नीयत जब नहीं है तो बरकत कहां से होगी।

बरकत जब मुख्यमन्त्री बनकर आये तो लोगों ने कहा कि डूंगरपुर जिले में तो पिछले सालों से अच्छी वारिश ही नहीं हो रही थी, अब के तो अच्छी वारिश हुई और अच्छा साल हुआ। बरकत साहब आये तो बरकत आई। बरकत आये यह तो मुबारक है। पर इसके साथ दिवालियापन भी आ गया। बरकत नहीं आई। कल अपने वित्त मन्त्री ने कहा कि इस सरकार पर 46 करोड़ का ओवर ड्राफ्ट हो गया है। मैं तो समझता हूं कि यह 46 करोड़ का ओवर ड्राफ्ट तो आज होगा। 20/25 दिनों में

(महारावल श्री लक्ष्मणसिंह)

50/60 करोड़ और पी बारह पचीस। यह तो ओवर ड्राफ्ट ही है। करोड़ों भी सैकड़ों करोड़ों तक पहुंच गये। 550 करोड़ का हमारे पर कर्जा है। चारों ओर अव्यवस्था मच रही है ओवर ड्राफ्ट की अव्यवस्था, करने की अव्यवस्था, कीमतें आसमान छू रही हैं सभी चीजों की वह अव्यवस्था। आज गरीब गरीब हो रहा है गरीबी की पराकाष्ठा है। भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी की दूसरी ओर पराकाष्ठा है। आपकी शासन व्यवस्था में रेड टेपिज्म की भी पराकाष्ठा है। तो यह सब क्या है? बरकत कहां है इसमें, यह तो दिवालियापन की निशानी है।

आखिरकार मन्त्रियों को चाहिये कि यह मुश्किल समस्या है। इसका हिम्मत करके ईमानदारी और मेहनत से हल निकाले। खुद भ्रष्टाचरण में न डूबें। आज तो यह स्थिति है कि खुद गांधीजी भी पुनर्जन्म लेकर आ जावें तो इस देश की शासन व्यवस्था इन बीस वर्षों में जिस स्थिति में पहुंच गई है और जो बदतर से बदतर हालत में पड़ी हुई है उसको भी वे नहीं उबार सकते। यही करणी किनकी है? निश्चय ही आपकी है। कांग्रेस के इन मन्त्रियों के ये कारनामे हैं। गांधीजी को तो आप लोग कभी का भूल गये हैं, उनके सिद्धान्तों से तो आप सौ कोस परे चले गये हैं। कहां है गांधीजी के सिद्धान्त और कहां है वह समाजवाद का सिद्धान्त। नकली नाराबाजी और सौदा बाजी।

आज शिक्षक लोग हजारों की तादाद में बेकार हैं, शिक्षित लोग बेकार हैं। एक मध्यम श्रेणी के मां बाप कर्जा करके किसी तरह से दस पन्द्रह हजार रुपया जुटाकर बच्चे को इन्जीनियर, डॉक्टर बनाते हैं। पास होने पर आशा लगाये बैठते हैं कि नौकरी मिलेगी उसे कहीं। उसको कहा जाता है तू जा बीकानेर इसके बाद कहा जाता है कोटा जा। इसके बाद कहा जाता है उदयपुर जा। सारी दुनियां में उसको भटका कर बाद में कह दिया जाता है नौकरी नहीं है।

आज ये योजनाएं हैं, अत्यन्त खर्चीली है, महत्वाकांक्षिणी है। इधर फिजूलखर्ची को सरकार बढ़ाती जा रही है, मितव्ययता पर कोई ध्यान नहीं है। तो मितव्ययता पर भी आपको ध्यान देना चाहिये।

राजस्थान कैनाल के बारे में मेरे पूर्व वक्ता ने प्रकाश डाला। मैं इतना ही निवेदन करना चाहूंगा कि यह इतना महंगा प्रोजेक्ट है कि इसको हम फाइनेन्स नहीं कर सकते। केन्द्र को हमें सौंप देना चाहिये। इसके बिना इसका जल्दी से निर्माण राज्य सरकार अपने साधनों से नहीं कर सकती। तो यह जितनी जल्दी बने उतना अच्छा। इससे हमारा दिवालियापन जल्दी दूर होगा। हम सारे देश की ग्रेनरी बन सकेंगे और जल्दी बन सकेंगे। अगर आप बाध्य करें केन्द्र को तो यह हो सकता है। पर यह आमतौर से भावना है लोगों की कि राजस्थान सरकार के कुछ वेस्टेड इन्टरेस्ट इसमें हैं। निहित स्वार्थ इसमें उनके हैं। इसलिये यह सरकार इसे अपने हाथ से नहीं छोड़ना चाहती। इसके अन्दर भयंकर भ्रष्टाचार और अनियमितताएं और लाखों करोड़ों के घोटाले निहित हैं। इसको धीरे धीरे चलाकर ये निहित स्वार्थ अपनी जेबें भरना

(महारावल श्री लक्ष्मणसिंह)

चाहते हैं और पैसा बनाना चाहते हैं । सम्भव है यह मेरी धारणा गलत हो । निर्मूल हो । पर यह धारणा लोगों के मन में घर करती जा रही है क्योंकि आप इसके लिये केन्द्र को सजग कर रहे हैं ।

कडाना डेम के सम्बन्ध में भी विशेष समय नहीं लूंगा । इतना ही निवेदन करूंगा कि यह एक समस्या मेरे जिले की है । डूंगरपुर और बांसवाड़ा के हजारों आदिवासियों की यह समस्या है । आखिरकार जमीन जो है वह लिमिटेड है, रबर की तरह उसको बढ़ाया नहीं जा सकता । फिर परिवार बढ़ते जा रहे हैं, आबादी बढ़ती जा रही है, इस पापुलेशन एक्सप्लोजिन में इनके पुनर्स्थापन की क्या व्यवस्था आप करेंगे । यह मेरी समझ से बाहर की बात है क्योंकि आप किंकर्तव्य विमूढ हैं । गुजरात अपनी मरजी माफिक व्यवस्था करना चाहता है । तो आपको इन विस्थापितों की व्यवस्था करनी चाहिये । लोगों में भयंकर असन्तोष है । आपको इस पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिये । यह डैम बहुत ऊंचा होता है तो इसे घटाने की चेष्टा करनी चाहिये और विस्थापितों की भी व्यवस्था करना चाहिये ।

मांडो में फलोराइड की खानें है । इस का जो माइनिंग का जो ढंग है यह गेम्बलिंग है । लाखों रु० आपने उस पर खर्च किया और अब कहा जाता है कि इसे अबण्डन किया जा रहा है । जब कि आपने बंगले बना दिये हैं वहां, बस्ती बसा दी, बगीचे लगा दिये, बिजली और पानी पहुंचा दिया । यह दुर्भाग्यपूर्ण है स्थिति । इससे भी बेकारी बढ़ेगी । इस कारण भी यह सरकार विश्वास के योग्य नहीं है ।

हमारी पश्चिमी सीमा पर तनाव है । इसके कारणों में नहीं जाऊंगा । सभी जानते हैं उसे । मैं समझता हूं कि सीमा के लोगों को आप सशस्त्र करें । आज सारा ट्रैफिक बन्द है । जितने भी शरणार्थी आ रहे हैं उधर से आ रहे हैं, इधर से कोई नहीं जा रहा है । इधर से उधर जाना असम्भव भी है, आपको उन लोगों पर विश्वास करना चाहिये । मैं तो सेकूलर एप्रोच करना चाहता हूं । मैं नहीं चाहता कि व्यक्ति विशेष या जाति विशेष में भेद करें । पर arming of border is elementary principle of self defence. आपका यह पुनीत कर्तव्य है कि आप उनको शस्त्र दें । 303 दें, यह नहीं हो तो 12 बोर ही दें । टोपीदार बन्दूक ही दें । और कुछ नहीं तो दिखने को तो कुछ दें ताकि दूर से देखकर भी भीड़ पर बड़ा भारी असर होता है । अगर आप यह भी नहीं करते तो मेरे ख्याल में आप अपना प्राथमिक कर्तव्य भी पूरा करने योग्य नहीं हैं ।

इन सब बातों को लेकर उपाध्यक्ष महोदय, मैं यह समझता हूं कि यह मन्त्रिमण्डल सुखाड़िया मन्त्रिमण्डल का एक चेला मन्त्रिमण्डल है । इन्हीं शब्दों के साथ में इस अविश्वास प्रस्ताव का समर्थन करता हूं ।

श्री उपाध्यक्ष : श्री हीरालाल देवपुरा ।

श्री हीरालाल देवपुरा (कुम्भलगढ़) : उपाध्यक्ष महोदय, इस अविश्वास प्रस्ताव के प्रस्तावक महोदय श्री मनोहरसिंह मेहता ने जब इस प्रस्ताव को रखा तो हमने समझा कि कोई महत्वपूर्ण बातें विरोधी पक्ष सदन के समक्ष रखेगा । प्रस्तावक महोदय को सुना तो ऐसा लगा कि उनके मनमें केवल एक बात थी कि किसी तरह से आरोप लगाये जावें ।

(श्री हीरालाल देवपुरा)

जनसंघ दल के नेता बोले। पर मैं नहीं समझता कि कोई नई बातें उन्होंने बताई। वे ही पुरानी बातें जो वे हमेशा कहते रहते हैं, दुहराई गई। कहा राजस्थान का इण्डस्ट्रियेलाइजेशन नहीं हुआ। यह नहीं हुआ वह नहीं हुआ।

मैं उपाध्यक्ष महोदय, कहना चाहता हूं कि आजादी के बाद राजस्थान का पूरा ही नक्शा बदल दिया गया है। आजादी के पहले राजा महाराजाओं और जागीरदारों के समय में राजस्थान की जो हालत थी, सर्व विदित है। आज बीस वर्षों के बाद तुलनात्मक दृष्टि से राजस्थान की हालत को देखा जाये तो अन्तर स्पष्ट नजर आवेगा।

श्री विजयसिंह : आप भी तो वही पुरानी ही बातें दोहरा रहे हैं।

श्री हीरालाल देवपुरा : उपाध्यक्ष महोदय, मैंने इनकी बातें शान्तिपूर्वक सुनीं, बीच में कोई व्यवधान नहीं किया गया हमारी ओर से फिर जब मैं बोल रहा हूं तो उनका भी फर्ज है कि वे शान्ति से मुझे सुनें।

पर अगर आप नहीं सुनना चाहते हैं तो मत सुनिये राजस्थान की जनता हमें सुनती है। सुनती रही है और आगे भी सुनती रहेगी। जब जब मौका आया है जनता ने इसका सबूत दिया है राजस्थान विधान सभा के चुनाव के मौकों पर और अभी अभी केन्द्र के मध्यावधि चुनाव आये तब। उन्होंने जनसंघ की और स्वतन्त्र पार्टी सब को करारा जवाब दिया है और कांग्रेस में विश्वास व्यक्त किया है। तो आपकी इन थोथी बातों का जनता पर कोई असर पड़ने वाला नहीं हैं।

जनता आज इन राजा महाराजाओं और जागीरदारों के नाना प्रकार के अत्याचारों से राहत अनुभव कर रही है। जनता जानती है कि आज कांग्रेस ही उसे सही रास्ते पर ले जा सकती है।

जिन कठिन परिस्थितियों से हम गुजर रहे हैं उनसे हम इन्कार नहीं करते। हमने यथाशक्ति उनका मुकाबला किया है। फिर भी हमने एक मंजिल पार करली हैं। अभी कई मंजिलें शेष हैं। फिर भी ईमानदारी की बात यह है कि कांग्रेस ने, कांग्रेस मन्त्रिमण्डल ने, चाहे पहले वाला हो, या यह हो राजस्थान को आगे बढाया है।

इस प्रस्ताव के लाने के पीछे एक मकसद यह लगता है कि अभी अभी मन्त्रिमण्डल बदला है तो सम्भव है कि कांग्रेस के लोगों में मतभेद हो और इस प्रस्ताव के द्वारा उनके मतभेदों को और बढ़ाया जाय और कांग्रेस में फूट डाली जाय। पुराने मन्त्रिमण्डल को बुरा बता दो, इसे अच्छा बता दो। फूट पड़ेगी। अगर यह इरादा है आपका तो मैं निश्चित रूप से कहना चाहता हूं कि कितने ही प्रयत्न आप करलो, राजस्थान की कांग्रेस में फूट पड़ने वाली नहीं है।

हम में मतभेद हो सकते हैं, और किसी भी जनतान्त्रिक संस्थाओं में इन मतभेदों से इन्कार नहीं किया जा सकता, पर हमारा कांग्रेस के सिद्धान्तों में अटूट विश्वास है और इस कारण हम अपने मतभेदों को भी आपस में बैठकर ठीक कर लेंगे और जहां प्रान्त का सवाल आवेगा वहां हम हर हालत में हर ताकत का मुकाबला करते हुए आगे बढ़ेंगे।

(श्री हीरालाल देवपुरा)

तो मैं उपाध्यक्ष महोदय, निवेदन कर रहा था अविश्वास प्रस्ताव को लेकर जो कुछ बातें कही जा रही हैं। मैं नहीं समझता हूं उसमें ऐसी कोई बातें हों, ऐसे कोई तथ्य हों जिसमें इस मंत्रिमंडल के प्रति अविश्वास की बात आई हो मैं सैद्धान्तिक बातों की बात कहना चाहता हूं व्यक्तिगत बात को मैं नहीं कहना चाहता हूं। जो अविश्वास का प्रस्ताव है उसमें कोई सैद्धान्तिक बात कहिये। अपने अपने उसूलों पर बात कहिये। हर राजनैतिक दल का अपना अपना सिद्धान्त होता है, उससे इन्कार नहीं किया जा सकता है। आप अपने सिद्धान्त के आधार पर कहिये कि क्या आप करना चाहते हैं और जो शासन दल आज बैठा हुआ है वह किन उसूलों पर आगे जा रहा है। साफ बताइये कि हम इन उसूलों पर चलना चाहते हैं। आप इस हद तक पहुंच सकते हैं, आप कह दीजिये। जिस लक्ष्य पर कहना चाहते हैं वहां नहीं पहुंचने का कारण यह है कि आज इस विधान सभा में बैठकर बातें करते हैं और कोई हमारी गलती होगी तो मंजूर करेंगे। हम राजस्थान को आगे ले जाना चाहते हैं इसमें कोई दो राय नहीं है। मैं निवेदन करूं 20 सालों में कांग्रेस को शासन में आने के बाद काफी तरक्की हुई है, इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता है। इसका मूल कारण यह है कि कांग्रेस ने शासन में आने के बाद जो भी विचारधारा शासन में आने से पूर्व दी थी, आजादी के पहले जो कांग्रेस की विचारधारा थी उसके आधार पर ही आगे बढ़ी है। मैं यह नहीं कहता भूमि आवंटन में कुछ गलतियां नहीं हुई हैं, गलतियां अवश्य हुई हैं। थोड़ी बहुत गलतियां हर काम में करने वालों की हो सकती है लेकिन आज भूमि आवंटन का काफी काम हुआ है। आज जमीन आदिवासियों के हाथों में गई है, अनुसूचित जातियों के हाथों में जमीन का हस्तान्तरण हुआ है। जिन लोगों को समाज में जगह नहीं थी उन्होंने समाज में स्थान पाया है। इससे इन्कार नहीं किया जा सकता है हो सकता है जितनी जल्दी गरीबी मिटानी चाहिये थी उतनी जल्दी नहीं मिटा पाये हों–यह मैं मानता हूं आज भी वे हमारे बराबर नहीं आये। लेकिन उसके पीछे सामाजिक परिस्थितियां और सारे राजस्थान के वातावरण को देखकर जितना ज्यादा से ज्यादा हो सकता था वह किया है। आज किसी भी दल के साथ इस प्रजातन्त्र में जादू का डन्डा नहीं है जो घुमाया और आम पैदा हो गया। देश और प्रान्त की जो स्थिति है, उसके आधार पर ही चलना होगा। अगर यह मानकर चलें कि दृष्टिकोण स्पष्ट हो तो मैं समझता हूं कोई परिणाम की बात कह सकता है और अगर परिणाम की बात कह सकते हैं तो केवल सदन में ही नहीं बाहर भी असर पड़ सकता है। इस तरह की कोई बात कही जाती और कोई कमी दिखाई देती तो कोई तथ्य की बात होती। रेड टेपिज्म की लम्बी चौड़ी बात कही गई। मैं नहीं मानता कोई रेड टेपिज्म रहा होगा। किसी काम में देरी लगी होगी तो कह दिया रेड टेपिज्म है। हमें उन देरी के कारणों पर जाना होगा, किस पर्टीक्यूलर काम में देरी हुई है उसमें फलां स्टेज पर और फलां काम में देरी हुई है अगर आप यह कहते हैं तो हर बात में रेड टेपिज्म कह देना मैं समझता हूं कत्तई उपयुक्त नहीं है और इसे कोई भी नहीं मान सकता कि यह रेड टेपिज्म है।

Page No 58

(श्री हीरालाल देवपुरा)

उस कमी को दूर करने के लिये कदम उठाना चाहिये लेकिन जनरली आमतौर पर यह कहकर रेड टेपिज्म आ गया मैं नहीं मानता। यहां पर यह कहें उपाध्यक्ष महोदय, कि मंत्रिमण्डल छोटा होने के बाद ऐडमिनिस्ट्रेशन में फ्रस्ट्रेशन आया है और ऐडमिनिस्ट्रेशन में फ्रस्ट्रेशन आने के बाद जो काम काज होना चाहिये वह नहीं हो रहा है यह केवल उकसाने के लिये बात कही गई है। मैं नहीं समझता मंत्रिमण्डल के परिवर्तन के बाद ऐडमिनिस्ट्रेशन में फ्रस्ट्रेशन आया हो। आज ऐडमिनिस्ट्रेशन के अन्दर सारे काम उसी तरह हो रहे हैं जो अब तक राजस्थान में होते चले आये हैं। सब अपनी जिम्मेदारी से पूरा काम करते हैं। जैसा यहां कहा गया है पहले मंत्रिमण्डल की संख्या ज्यादा थी और आज मंत्रिमण्डल की संख्या कम है और यह स्वागत योग्य है। हम भी नहीं चाहते बहुत बड़ा मंत्रिमण्डल बने। दूसरे प्रान्तों के अनुसार और देश की परिस्थिति के अनुसार राजस्थान का मन्त्रिमण्डल रहना चाहिये। यह सही है कि आज मन्त्रियों पर ज्यादा बरडन आया है और अधिकारियों को रेसपान्सिबिलिटी शेयर करना चाहिये लेकिन आमतौर पर यह कहना कि आर. ए. एस. आफिसर में फ्रस्ट्रेशन है इस वजह से कि इस पर्टीक्युलर आदमी को ऊंची जगह बिठा दिया जो दूसरों से जूनियर था और वह आदमी सीनियरटी, जूनियरटी के लिये हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में गया है और इस वजह से ही फ्रस्ट्रेशन आया है यह आज से नहीं चल रहा है-पहले के केसेज हैं। जहां एक अधिकारी है वही एक आम नागरिक भी है। हर एक को अपने अपने हकों का संरक्षण मिलता है और उसके लिये हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट के दरवाजे खुले रहते हैं। जहां से भी उसको कोई संरक्षण मिलना चाहिये वहां से उसको हांसिल करने का अधिकार है। सबको हाई कोर्ट तक जाने का अधिकार है, सबको सुप्रीम कोर्ट तक जाने का अधिकार है इस वजह से कोई फ्रस्ट्रेशन आ गया है, यह बात कह कर चलना मैं समझता हूं उपयुक्त नहीं है, ठीक नहीं है।

आज हमारे देश में एक प्रकार से संकट की स्थिति है और ऐसे समय में एक होकर देश की रक्षा के लिये काम करना चाहिये। किसी को भड़काने वाली जैसी स्थिति को प्रोत्साहित करते हैं तो वह देश हित की बात नहीं होगी, प्रान्त हित की बात नहीं होगी। मैं नहीं समझता कि सही बात नहीं आनी चाहिये लेकिन चर्चा करते वक्त समय का ख्याल रखना चाहिये, किसी बात का ख्याल रखना चाहिये। उपाध्यक्ष महोदय, मुझे कोई विशेष बात निवेदन नहीं करनी है जो कुछ विपक्ष की ओर से कहा जा रहा है और माननीय सदस्यों ने जो कुछ कहा है उस आधार पर मैं यह कहना चाहता हूं कि कोई भी तथ्य इस सदन के सामने नहीं है जिसमें वर्तमान मन्त्रिमण्डल के प्रति अविश्वास का प्रस्ताव हो। जो भी कांग्रेस का मन्त्रिमण्डल रहा है उसके विरुद्ध कोई तथ्य नहीं दिये गये हैं कि राजस्थान को पीछे रखा गया है, राजस्थान दूसरे प्रान्तों से पिछड़ गया हो, यह बात कत्तई नहीं है। राजस्थान को आगे बढ़ाने में कांग्रेस ने पूरी कोशिश की है। मैं सदन के माननीय सदस्यों से निवेदन करना चाहता हूं जो कुछ बातें कहनी थीं वह कह दीं लेकिन जो प्रस्ताव आया है

(श्री हीरालाल देवपुरा)

उसमें कितना बल रहेगा यह तो आप सब लोग जानते हैं इसलिये मेरा निवेदन है कि वे स्वयं ही इस प्रस्ताव को वापिस ले लें और नहीं लेना चाहते हैं तो इस प्रस्ताव को भारी बहुमत से गिरा दें।

श्री मनोहर सिंह मेहता : क्यों वापस ले लूं ? एक नहीं अनेक भ्रष्टाचार के मामले हैं। एक आध घन्टे का समय दिया उसमें मैं क्या क्या कह सकता हूं।

2.30 म. प.

(श्री निरंजननाथ आचार्य अध्यक्ष पदासीन)

वापिस लेने का तो प्रश्न ही नहीं है।

श्री अध्यक्ष: माननीय सदस्य। श्री राम चन्द्र आर्य।

श्री रामचन्द्र आर्य (नोहर) : अध्यक्ष महोदय, आज राजस्थान के मन्त्रिमण्डल के विरुद्ध यह अविश्वास का प्रस्ताव पेश किया है....

श्री अध्यक्ष: आज तो समय का ख्याल रखियेगा।

श्री रामचन्द्र आर्य : जो भी मेरा भाषण इस सदन में अविश्वास प्रस्ताव पर होगा वह इन पांच सालों का आखिरी होगा, अध्यक्ष महोदय।

अध्यक्ष महोदय, मंत्रिमंडल के खिलाफ अविश्वास का प्रस्ताव क्यों आया है ? कौन से कार्य ऐसे हैं जिनके कारण इस सरकार के खिलाफ अविश्वास का प्रस्ताव पेश किया गया है ? राजस्थान सरकार ने जितनी भी घोषणायें की हैं उन घोषणाओं के बारे में आज तक कभी भी अमल नहीं हुआ। सबसे प्रथम तो मैं गांधीजी के बताये हुए मार्ग के अनुसार इस कांग्रेस सरकार ने नशाबन्दी करने की घोषणा की थी लेकिन वह नशाबन्दी करना तो दूर रहा आज गली, गली और कूचों और हर सार्वजनिक स्थान पर शराब बेची जाती है। बार बार मांग करने पर भी इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता यह है गांधीजी की सरकार का प्रतीक।

इसके अलावा अध्यक्ष महोदय, जितने भी राजस्थान में घोटाले हुए हैं, जितने भी राजस्थान सरकार की छत्रछाया में लोगों ने धन इकट्ठा किया है उसके बारे में समय समय पर इस विधान सभा में और विधान सभा के बाहर गम्भीर आरोप लगाये गये हैं। लेकिन मैं चैलेन्ज के साथ कहता हूं कि आज तक इस राजस्थान सरकार ने एक भी मामले की सही तरीके से जांच नहीं करवाई। यह एक बड़ा गम्भीर आरोप है क्योंकि कोई भी सरकार इस प्रकार की प्रणाली को अपनाकर प्रजातंत्र को जिन्दा नहीं रख सकती। पहले भूतपूर्व मुख्यमंत्री जी के कार्यकाल में अनेक मंत्रियों के खिलाफ आरोप लगाये और अनेक सरकारी अधिकारियों के खिलाफ आरोप इस सदन में आये लेकिन एक भी उदाहरण इस सरकार की तरफ से जांच कराने का नहीं होगा। कोई माननीय सदस्य मुझे जानकारी दे कि फलां व्यक्ति के खिलाफ कोई आरोप लगाया और उसके अन्दर हमने सही तरीके से जांच करवाकर उसका चालान करवाया। फिर किस प्रकार से सरकार कह सकती है। आज प्रजातंत्र में कोई भी सरकार प्रजा का विश्वास

(श्री रामचन्द्र आर्य)

खोने के बाद नहीं रह सकती। पुराना मंत्रिमंडल समाप्त हुआ इसके पीछे भी यही कारण थे। उनके अनेक मंत्रियों के खिलाफ गम्भीर आरोप इस विधान सभा में आये और भूतपूर्व मुख्य मंत्री के पास इसका कोई उत्तर नहीं था। उत्तर नहीं होने के कारण उनको इस कुर्सी से हटाया गया लेकिन हटने के बाद भी क्या हुआ वही भ्रष्टाचार के प्रतीक नारा समाजवाद का लगाते हैं और काम करते हैं उन लोगों के से जो सामन्तशाही युग में भी नहीं करते थे। आज इस कांग्रेस सरकार का मुख्य मंत्री भी समाजवाद की बात करता है और कांग्रेस अध्यक्षा भी समाजवाद की बात करती है लेकिन मैं पूछना चाहता हूं कि क्या मुख्य मंत्री जी समाजवाद को ला सकेंगे? क्या इन्होंने कभी समाजवाद के तौर-तरीकों पर चलकर लोगों को बताया है? खुद जागीरदार के घर में पैदा हुए और ऐशोआराम में पले उनको क्या पता कि गरीबों को क्या तकलीफें हैं। राजस्थान कांग्रेस प्रदेश कांग्रेस की अध्यक्षा भी ......

श्री अध्यक्ष : आर्डर, आर्डर माननीय सदस्य।

श्री दौलतराम सारण (डूंगरगढ़) : राजनैतिक मामले तो उठाये ही जायेंगे अध्यक्ष महोदय।

श्री रामचन्द्र आर्य : मैं कोई भाषण नहीं दे रहा हूं कांग्रेस के खिलाफ बोल रहा हूं। इन भ्रष्टाचारियों के खिलाफ अविश्वास का प्रस्ताव आया है ......

श्री गिरधारी लाल व्यास : गलत।

श्री रामचन्द्र आर्य : कांग्रेस जो समाजवाद की बात करती है ......

श्री लाभचन्द वैद (सुजानगढ़) : इस हुड़त शब्द का क्या मतलब है यह तो बता दें।

श्री रामचन्द्र आर्य : मैं इन भ्रष्टाचारियों से निपट लूंगा।

श्री गिरधारी लाल व्यास : गलत है।

श्री रामचन्द्र आर्य : अध्यक्ष महोदय, रावतसर कस्बे में मेला लगता है और वहां पर दुकानें बनीं। मैं फोटो भी पेश कर सकता हूं कि किस तरह से इन्होंने इस कुर्सी पर बैठकर कुकर्म किये और लोगों के सामने ये कहते हैं कि समाजवाद को हम लाकर छोड़ेंगे। हम तो इस प्रकार का समाजवाद नहीं चाहते। हम तो जिन्दा रहना चाहते है और आप जिस प्रकार का समाजवाद लाना चाहते हैं वह आपको ही मुबारक। इसलिए मैं यह चैलेन्ज के साथ कहता हूं कि यदि मुख्य मंत्रीजी में जरा सी भी बुद्धि है तो इसको गम्भीरता से देखें। जो लक्ष्मी कुमारीजी चूण्डावत ने सार्वजनिक स्थान पर 4½ बीघा भूमि पर कब्जा करके वहां पर दुकानें बनवा दीं है। अगर ऐसा करते हैं तो हम कहते हैं आपका समाजवाद तो आ जायेगा लेकिन जो सच्चा समाजवाद है वह नहीं आयेगा। अभी एक माननीय सदस्य कह रहे थे कि हमने बहुत काम किये हैं, बहुत आगे बढ़े हैं। नाक तक आगये, पानी नाक तक आ गया अब कहां तक आप आगे जाना चाहते हैं, मैं नहीं समझता। आपने जो कुछ किया है वह किसी से छिपा हुआ नहीं है। आज भी आप कमीशन बैठाकर इन्क्वायरी करवायें तो एक एक

(श्री रामचन्द्र आर्य)

आदमी के खिलाफ इन्क्वायरी करावें और फिर हम देखते हैं कि कितने आदमी आपके साफ निकलते हैं। आपकी ईमानदारी का सबूत तो पिछले दिनों मिल गया। कितने ही एम० एल० ए० कांग्रेस पार्टी के होते हुए भी आपको बाहर से आदमी लाना पड़ा। जरा भी आपके अन्दर ईमानदारी होती और जरा भी आपके अन्दर स्वाभिमान होता तो कभी भी इस प्रकार की प्रक्रिया को नहीं अपनाया जाता लेकिन तमाम रद्दी की टोकरी में फेंकने काबिल हो गए। क्योंकि दोनों हाथों से जनता के खजाने को लूटा और लाखों करोड़ों रुपयों की सम्पत्ति बनाई जो कि आज भी मौजूद है। इसमें कोई कहने की बात नहीं है। जांच करवा लीजिए, अगर मैं गलत कहता हूं, कोई भी बात गलत हो आप जांच करावें, जांच में सबूत नहीं होता है तो मुझसे कह दें। लेकिन चोरी और सीना जोरी सरकार के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव आया है, यहां भी दलबदलू और खरीदे हुए आदमी बैठे हैं वे सरकार के खिलाफ वोट नहीं दे सकते लेकिन हमारा जो विचार है वह सरकार के खिलाफ जितनी भी सरकार ने गलतियां की हैं, जितने भी घोटाले हुए हैं उनको एक एक को हम सामने रखेंगे और इस सरकार को गिराने की कोशिश करेंगे। अगर नहीं गिरती है तो जनता के सामने कहेंगे कि हमने ये बातें सरकार के सामने अविश्वास के रूप में रखीं और आपको इस बारे में फैसला करना है। अगर जनता आपके पक्ष में फैसला करती है तो दुर्भाग्य है।

आप लोग इन कुर्सियों को छोड़कर राजस्थान में राष्ट्रपति शासन करवायें और फिर चुनाव लड़ो और फिर देखो कि कितने आते हो। सत्ता का दुरुपयोग किया जाता है, सरकारी साधनों का दुरुपयोग किया जाता है और सरकारी अधिकारी और कर्मचारियों से मदद ली जाती है। अधिकारियों से चन्दा लिया जाता है।

मैं कुछ मुद्दों की तरफ ध्यान दिलाना चाहता हूं कि किस प्रकार से इस हुकुमत के द्वारा गरीबों के हक मारे जाते हैं।.......

श्री गिरधारीलाल व्यास : गलत आरोप लगाकर भी आप फोटो पेश करना भूल गए।

श्री अध्यक्ष : फोटो की जगह यहां नहीं है।

श्री रामचन्द्र आर्य : राजस्थान केनाल एरिया में जो जमीन अलाट हो रही है वहां उन आदमियों को जमीन दी जा रही है जिनके पास आगे ही जमीन ज्यादा है या जो व्यापारी हैं या जो नौकरी पेशा हैं। यदि सही माने में जांच करवाई जाये तो हजारों की तादाद में ऐसे आदमी मिलेंगे और कॉलोनाईजेशन मंत्री बैठे हैं इनको मैंने कहा है लेकिन ये कहते हैं कि मैं तो कॉलोनाई–जेशन एक्ट का अध्ययन कर रहा हूं। अब कितने दिनों में वह अध्ययन पूरा होगा 72 में पूरा होगा या उससे पहले हो जायेगा। मैं नहीं कह सकता लेकिन वहां के तहसीलदार और असिस्टेन्ट कॉलोनाईजेशन कमिश्नर हैं वे दस दस हजार रुपया लेकर जमीन अलॉट करते हैं नाजायज तरीके से। परिवार में दो आदमी है तो दर्ज दस आदमी करवाते हैं। जमीनों को छुपाया जाता है। वहां के वाशिन्दा नहीं हैं लेकिन उनकी तस्दीक करवाई जाती है और पैसा लेकर जमीन

(श्री रामचन्द्र आर्य)

अलाट की जाती है। बाप के नाम दो सौ बीघा जमीन है लेकिन लड़के को भूमिहीन बता कर जमीन दी जाती है। इस प्रकार के हजारों के तादाद में कोलोनाईजेशन विभाग में, राजस्थान केनाल एरिया में इस प्रकार के हजारों मामले हमारे सामने आए हैं। यदि आप जांच करवायेंगे तो सारे मामले सामने आ जायेंगे। ' मैं किसी एक आदमी का नाम नहीं लेना चाहता क्योंकि एक आदमी तो क्या यहां तो हजारों आदमी इस प्रकार के हैं। इस बारे में आपको जांच करानी चाहिए। और समय समय पर आपके पास इस बारे में दरख्वास्तें आती हैं, मेरे पास भी उनकी कापी आती है। मैं आपके पास जान बूझ कर उनको नहीं भेजता हूं, क्योंकि मुझे विश्वास नहीं है कि आप कुछ करेंगे। आपके पास जो कापी भेजी जाती है मेरे पास भी उसकी कापी आती है। मैं ऐसा समझता हूं कि जो सरकार के पास चली गई तो उस पर कार्यवाही होगी, कार्यवाही तो क्या होगी, वह तो रद्दी की टोकरी में चली जाती है और कोई कार्यवाही नहीं होती है। क्योंकि इसका उदाहरण कल ही मैंने विधान सभा के सामने पेश किया था कि एक हजार भूमिहीनों के पट्टों को दबाया गया और उसके लिए भी यह कह दिया गया कि पन्द्रह दिन में जांच पूरी करा लेंगे। जांच क्या पूरी करानी है। आपको उसकी फाइल जब्त करनी चाहिए थी, तब तो मैं समझता कि कुछ होगा लेकिन इस प्रकार से बातों का बतौरा करने से काम नहीं चलने वाला है। क्योंकि वह आदमी यहां आता है, कुछ दे लेकर चला गया और अब इन्क्वायरी करा रहे हैं तो उसमें अब क्या रखा है। आप कहते हैं कि उसमें गवाह लेंगे, वह आदमी वहां बैठा है जो गवाहों को बिगाड़ेगा। इस मामले में तो गवाहों की भी जरूरत नहीं है, यह तो रिकार्ड पर है। वह तो यदि इस सरकार में नैतिकता हो तो वह इस प्रकार के काम कर सकती है। जिस सरकार का नैतिक दृष्टि से पतन हो जाता है, फिर वह किसी के भी खिलाफ कोई इन्क्वायरी नहीं करा सकती है। इसी बात को लेकर हम यहां अविश्वास प्रकट कर रहे हैं। क्योंकि आप में जनता का भरोसा नहीं रहा। सरकार सही तरीके से काम नहीं करती है और सही तरीके से काम नहीं करने के कारण लोगों को बड़ी कठिनाई होती है। अब मैं..........

श्री परसराम मदेरणा (राजस्व मंत्री): मैं माननीय सदस्य की जानकारी के लिए बता दूं कि जिस जगह की वे बात कर रहे हैं, वहां पर पूरे के पूरे कागजात कलेक्टर ने अपने कब्जे में ले लिए हैं। उसके पास में अब कोई कागजात नहीं हैं। जितनी भी फाइलें अलाटमेंट की थीं वे सब कब्जे में ले ली हैं। इसके अलावा जितनी भी फाइलें हरियाणा और पंजाब के बारे में माननीय सदस्य ने कही हैं, वे सब फाइलें भी कलेक्टर ने अपने कब्जे में ले ली हैं। जितनी भी इस प्रकार की फाइलें थीं वे सब कलेक्टर ने अपने कब्जे में ले ली हैं।

दूसरी बात आपने यह बताई कि जयपुर आकर किसी को दे लेकर चले गए। इस तरह के बेसलेस रिमार्क माननीय सदस्य लगावें कि किसी को ले देकर चले गए तो उनमें क्या किया जा सकता है। बिना डेफिनेट बात बताए किसके खिलाफ कार्यवाही की जा सकती है---

श्री रामचन्द्र आर्य : वह मैं आपको अलग से बता सकता हूं।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा (बीकानेर) : इन्होंने जो वहां पर गलत अलाटमेंट करवाए हैं उनको फाइल भी कब्जे में ली गई या नहीं।

(व्यवधान : अश्रव्य)

श्री रामचन्द्र आर्य : अगर मुझे संतोष हो जाय तो मैं धन्यवाद भी बहुत जल्दी देता हूं।

श्री परसराम मदेरणा : आपकी जानकारी के लिए मैं यह भी बता देना चाहता हूं कि जिस जांच के आदेश की बात वे कह रहे हैं वह आदेश सी. एस. को दे आए वह मिला नहीं। रेवेन्यू सेक्रेट्री, जो दूसरा अधिकारी है राजस्व विभाग में सबसे बड़ा, उससे वे मिले नहीं, मुझसे वे मिले नहीं, तो आखिर किससे मिल कर चले गए। मैंने डिप्टी सेक्रेट्री से पूछा कि आपसे मिले क्या तो उनसे भी नहीं मिले। अपने किसी प्राईवेट काम से आए और वैसे मिल कर चले गए।

श्री रामचन्द्र आर्य : अध्यक्ष महोदय मैं यह जानकारी चाहता हूं कि आपके पास में इतनी फोर्स है और मुख्य सचिव के चेम्बर में मैंने सारे कागजात दिए हैं तो तुरन्त उसके घर पर छापा मार कर कागजात कब्जे में लेने चाहिए थे। आपने कल ही अपने उत्तर में कहा कि एण्टी करप्शन के अधिकारी छुट्टी चले गए थे इसलिए जांच नहीं हो सकी तो क्या राजस्थान में एक ही अधिकारी है। आपके पास तो पूरी फोर्स है, यहां से किसी को भेजते। क्या रुकावट थी इसमें।

श्री परसराम मदेरणा : मैंने इस बारे में जानकारी दे दी है। लेकिन मैं एक और जानकारी, माननीय सदस्य को दे देना चाहता हूं कि 11 तारीख को कलेक्टर ने एस. डी. ओ. के दफ्तर को रात को 11 बजे खुलवाया है और 11 बजे रात को दफ्तर खुलवाने के बाद जितने भी कागजात थे इस सम्बन्धी, वे अपने कब्जे में ले लिए हैं।

श्री दौलतराम सारण : कब्जे में ले लिये तो क्या हुआ, अब तक कार्यवाही क्यों नहीं की गई ? इस तरह की बात कह कर आप हाउस को कन्वीन्स करना चाहते हैं लेकिन मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि आज से पांच पांच महीने तक जिस एस. डी. ओ. के पास में एक हजार और साठ पट्टे पड़े रहें...

श्री परसराम मदेरणा : इस तरह से कह कर आप असली बात से टालमटोल मत कीजिए।

(शोरगुल)

श्री दौलतराम सारण : इस तरह से सरकार को दस हजार रुपये के लैंड रेवेन्यू का नुकसान हो

श्री अध्यक्ष : आर्डर आर्डर, माननीय सदस्य।

(शोरगुल)

श्री अध्यक्ष : माननीय श्री सारण। श्री रामचन्द्र आर्य आरम्भ रखें।

श्री रामचन्द्र आर्य : आपको शर्म नहीं आती है।

श्री परसराम मदेरणा : हमें किस बात की शर्म आवे। शर्म तो आपको आनी चाहिये जो इस प्रकार की बातें करते हैं।

(श्री परसराम मदेरणा)

डूब कर मरना चाहिए आपको। हाऊस में मन चाहें जिस तरह से बोल देते हैं।

(शोरगुल)

श्री अध्यक्ष : श्री सारण, आर्डर प्लीज।

श्री परसराम मदेरणा : हर बात में कह देते हैं कि शर्म नहीं आती है। किस बात में शर्म आवे।

(भयंकर शोरगुल-अश्रव्य)

श्री अध्यक्ष : अंकित न हो।

कई माननीय सदस्य × × ×

(शोरगुल)

श्री देवीदत्त गाड़िया : यह किस बात की करतल ध्वनि हो रही है।

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज, आर्डर। श्री आर्य आरम्भ रखें।

श्री रामचन्द्र आर्य : मैं स्वीकार करता हूं कि जब उन्होंने कहा है कि कार्यवाही करेंगे तो मुझे पूरा भरोसा है कि कार्यवाही करेंगे। लेकिन अगर कोई कार्यवाही नहीं हुई तो मैं मान लूंगा कि यह आदमी भी असत्य बात कहने वाला है।

अब मैं नगर न्यास के बारे में भी सरकार का ध्यान दिला देना चाहता हूं। बीकानेर का जो नगर न्यास है और उसके जो अध्यक्ष हैं, उनके द्वारा करीब एक हजार पट्टे ऐसे दिए गए हैं तमाम अधिकारियों को और उनके रिश्तेदारों को, अपने मिलने वालों को और नाबालिग बच्चों के नाम से सस्ते भाव में जमीन देकर लाखों रुपये का नुकसान सरकार को पहुँचाया है। बीकानेर के पास शिवबाड़ी के नाम से एक कान्ताजी की कोलोनी बनी है, मुझे नहीं मालूम कि यह कान्ताजी की कोलोनी कब बन गई। वहां जमीन बड़ी मंहगी है। वहां पर जो कब्जे दिए गए हैं वे कब्जे उनके मिलने वालों को, भाई भतीजों को और नाबालिग लड़कों को दिए गए हैं। वहां पर दो सौ रुपये लेते हैं लेकिन हजार रुपया सरपंच खा जाता है। इस प्रकार की शिकायतें मिली हैं। इसी तरह से डूंगर कालेज के पास में जो दुकानें बेची गई हैं वह अपने रिश्तेदारों को और मिलने वालों को सस्ते भावों में वहां के लोगों को दी है। बीकानेर के नगर न्यास के बारे में मैं सरकार का ध्यान दिलाना चाहता हूं।

श्री अध्यक्ष : आप शीघ्र समाप्त करें।

श्री गोकुल प्रसाद शर्मा : माननीय सदस्य बीकानेर के बारे में जो बात कह रहे हैं वह बिल्कुल गलत है। इस तरह से गलत बातें कह कह कर सदन को गुमराह करते हैं यह उचित नहीं है।

श्री रामचन्द्र आर्य : मैं बिल्कुल सत्य कहता हूं।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा: यह सत्य नहीं है।

× × × अध्यक्षीय व्यवस्था के अनुसार अंकित नहीं किया गया।

श्री रामचन्द्र आर्य : मैं चैलेंज के साथ कहता हूं। जो कुछ मैं कहता हूं तथ्यों से कहता हूं, अध्यक्ष महोदय, मैं गलत बात नहीं कहता।

श्री भैरोंसिंह : यह बात तो गोकुल-प्रसादजी ने भी हाउस में कई बार कही है जो श्री आर्य ने कहीं है। बीकानेर व्यास के बारे में जो बातें गोकुलप्रसादजी कई बार हाउस में कह चुके हैं उन्हीं को आज गलत और असत्य बता रहे हैं।

श्री रामचन्द्र आर्य : अध्यक्ष महोदय, अब मैं अकाल राहत कार्यों में इस सरकार के जो घोटाले हुए हैं उनके बारे में भी जानकारी देना चाहता हूं। तहसील चूरू के अन्दर फर्जी मस्टररोल बनाए गए। इस बारे में राष्ट्रपतिजी को भी लिखा गया। उसकी मैं कापी भी आपको दे सकता हूं यदि कोई कार्यवाही करना चाहें तो। सैकड़ों के सैकड़ों मस्टररोल फर्जी बनाए गए हैं और वह पकड़े भी गए लेकिन वहां के प्रभावशाली आदमियों के दबाने के कारण उसमें कोई कार्यवाही नहीं हो सकी। और कार्यवाही भी क्या हो? करोड़ों रुपये जनता के खजाने से उठा लिए जावें और एक पैसा खर्चा न करें और घोटाले हों और जब कोई आदमी ईमानदारी से बात रखता है तो उसके कपड़े उतरवा लिए जावें। क्योंकि आज इस प्रकार से कुर्सी पर बैठ कर इतनी जिम्मेदारी को लेकर इस प्रकार की बात कह देना कि घोटाले नहीं हुए, आप कमीशन बैठाइए और फिर देखिए कितने आदमी पकड़े जाते हैं। कहां गया वह रुपया। डेढ करोड़ का खर्चा हुआ और एक पैसा वहां लगा नहीं। यह बड़ा गम्भीर आरोप है इसकी जांच कराई जानी चाहिए। चूंकि यह अकाल राहत कार्यों में फर्जी काम हुए हैं और जिन लोगों ने गडबड़ियां करके बंगले बनाए हैं, अधिकारियों ने बंगले बनाए हैं, जमीनें खरीदी हैं तो आखिर यह रुपया कहां से आया।

श्री अध्यक्ष : आप समाप्त करिए अब।

श्री रामचन्द्र आर्य : अभी तो अध्यक्ष महोदय, मैं और बोलूंगा।

श्री अध्यक्ष : देखिये मैं समय के माफिक चल रहा हूं।

श्री रामचन्द्र आर्य : रात के बारह बज जायं, मुझे तो जो बात कहनी है वह कहूंगा ही।

श्री अध्यक्ष : श्री आर्य, आप जल्दी से समाप्त करें।

श्री रामचन्द्र आर्य : एक घण्टा तो मेरी पार्टी का है और पन्द्रह मिनिट मैं और लूंगा। एक घण्टे के बाद।

श्री गिरधारीलाल व्यास : यह पन्द्रह मिनिट किस बात के लेंगे।

श्री अध्यक्ष : आप शीघ्र समाप्त करें।

श्री रामचन्द्र आर्य : एक घन्टा हो जाये तो कह देना आप।

अध्यक्ष महोदय, सादुलपुर तहसील में हुंसकोर हत्याकाण्ड के नाम से कत्ल हुई और एक बहुत बड़ा पोस्टर निकला था और इस सम्बन्ध में आज तक कोई कार्यवाही नहीं हुई है और प्रधान मन्त्री के नाम से एक खुली

(श्री रामचन्द्र आर्य)

चिट्ठी के नाम से यह पोस्टर छापा गया था और उस पोस्टर में साफ लिखा था लेकिन आज तक उस पर कोई कार्यवाही नहीं की गई है। इस सम्बन्ध में मैंने मुख्य मन्त्री महोदय को चिट्ठी लिखी थी। उन्होंने जवाब दिया है इस पर कार्यवाही हो रही है और कहना तो नहीं चाहिये था क्योंकि वे भी हमारे सदन के सदस्य थे, उस औरत को बंगले में मारा गया और आज तक इस मामले को छिपाने की चेष्टा में यह सरकार लगी हुई है। इस प्रकार के कुकृत्यों को नहीं छिपाना चाहिये। नहीं तो फिर आम आदमियों की सुरक्षा कैसे रह सकती है। एक तरह से इतना बड़ा पोस्टर निकले वह भी प्रधान मन्त्री के नाम से और फिर भी अपराध करने वाले को गिरफ्तार नहीं किया जाये। यह लज्जा की बात है। यह प्रधान मन्त्री, भारत सरकार के नाम पर हंसकोर हत्याकाण्ड के सम्बन्ध में खुला पत्र है। इस की जांच होनी चाहिये नहीं तो इस सरकार को हटा देना चाहिये क्योंकि इसने यह काम बुरा किया और इसीलिये यह अविश्वास का प्रस्ताव रखा गया है।

अध्यक्ष महोदय, अब कुछ दूसरे मुद्दों के सम्बन्ध में ध्यान दिलाना चाहूंगा सरकार इस विधान सभा के अंदर मनफूलसिंह के खिलाफ आरोप लगाये गये। राम प्रसाद लड्ढा और अन्य सदस्यों के खिलाफ आरोप लगाये गये थे परन्तु उनकी कोई जांच नहीं हुई। भारतीय क्रान्ति दल की ओर से प्रधान मन्त्री को एक ज्ञापन पेश किया गया था और उन तथ्यों की तरफ उनका ध्यान दिलाया भी है कि ये जो मन्त्री हैं इन्होंने किस तरह से सम्पत्ति अर्जित की है, किस तरह से पैसा कमाया है। लेकिन इन्दिराजी नारा तो समाजवाद का लगाती है और आज तक समाजवाद की कोई कार्यवाही नहीं हुई है और न इन भ्रष्टाचारियों के खिलाफ ही कार्यवाही की गई है। यह जीता जागता सबूत है कि ये क्या करना चाहते है। कोई भी मामला केन्द्रीय सरकार के सामने जाये तो उसे तत्काल कार्यवाही करना चाहिये। अगर इन्दिरागांधी समाजवाद को लाना चाहती है तो पहले इन भ्रष्टाचारियों के खिलाफ कोई कमीशन उन्होंने नियुक्त क्यों नहीं किया है? पंजाब के मन्त्रियों के खिलाफ आरोप लगाये गये तो वहां पर कमीशन बिठा दिया गया, वैसा ही कमीशन यहां पर क्यों नहीं बिठाया जाता है। ये तो यहां पर वैसे ही बैठे रहे और इनके खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं की जाती है तो फिर हम क्या समझें। तब तो यह भड़भूजे की दुकान से ज्यादा हैसियत सरकार की नहीं है और इससे बढ़कर लज्जा की बात क्या हो सकती है?

इसी तरह से राजस्थान के सरकारी अधिकारी सरकारी जीपों का दुरुपयोग करते हैं। जब मन्त्रियों के बच्चे घरों से कारों में बैठ कर स्कूल जाते हैं तो फिर उसके देखा देखी ये अधिकारी भी करते हैं और रोजाना हम देख रहे है कि सरकारी गाडियां बाजार में सब्जियां खरीद करने लाते हैं। सरकारी अधिकारियों की गाड़ियां घूम रही हैं और फिर उसके आधार पर टी० ए० डी० ए० बनाया जाता है। माइलेज के हिसाब से पेट्रोल खर्च करते हैं और दौरा दिखाते हैं फिर दौरे के हिसाब से सरकारी खजाने पर

(श्री रामचन्द्र आर्य)

डाका डालते हैं। यह निन्दनीय कार्य है। इस प्रकार की कार्यवाही होती रहती है और ये चुपचाप बैठे देखते रहते हैं। कम से कम इस कुर्सी पर बैठने लायक आपको तब ही कहा जा सकता है जब आपके अन्दर ईमानदारी हो। यह आपके बाप की गाड़ी नहीं है। यह जनता की गाड़ी है। सरकारी ड्यूटी पर जायें तो आप इसको काम में ले सकते हैं। आपके बच्चों के लिये, औरत के लिये यह गाड़ी नहीं है। पान ले जाने के लिए सरकारी गाड़ी का उपयोग किया जाता है।

आपने घोषणा की है कि शहरी सम्पत्ति की सीमा निश्चित करेंगे। शहरी सम्पत्ति पर सीलिंग लागू करेंगे। कोई कार्यवाही की है आपने ? आप देखिये आज आपके सौ 2 दुकानें, पांच पांच मकान, बंगले हैं तमाम मन्त्रियों के। रामकिशोर को ले लीजिये। सारे लड़कों के नाम बंगले बना रखे हैं। किसी ने औरत के नाम पर बंगला बना रखा है और ये बंगले आप सरकारी दफ्तरों को किराये पर देते हैं और खुद सरकारी बंगले में रहते हैं। इस प्रकार की जो धांधलाबाजी हैं इसी कारण से हम इस सरकार में अविश्वास प्रकट करते हैं और यह सरकार निन्दा करने के योग्य है क्योंकि इन्होंने जान बूझकर इस प्रशासन को मिट्टी में मिलाया है। आज 24 साल के शासन में इन लोगों में चरित्र नाम की कोई चीज नहीं है और सब को चोर बना दिया है और जो इनके हिस्से में शामिल नहीं हुआ उस अधिकारी और कार्यकर्ता को इन्होंने मिट्टी में मिलाया है। आदमी के अन्दर हर प्रकार की कमजोरियां होती हैं और उन कमजोरियों के कारण वे भी इनके पीछे चलना शुरू कर देते हैं। इस प्रकार ये लाखों रुपये डकार जाते हैं और दरख्वास्तें देते हैं तो कोई सुनाई नहीं होती है। जिस तरह से कि कांग्रेस के दफ्तर में एक्स एम.एल.ए. बैठा है जगनसिंह। क्यों नहीं उस अधिकारी को आप सस्पेन्ड कर देते हैं ? इसलिये कि वह प्रभावशील नहीं है। दूसरी तरह अधिकारी प्रभावशाली है और उसका कुछ नहीं कर सकते है। प्रदेश कांग्रेस कमेटी के द्वारा आज राजस्थान का राज्य चलता है और उस दफ्तर के अंदर उसका एक कार्यकर्ता हड़ताल पर बैठ कर रिश्वत का विरोध कर रहा है। उसको आप कोई महत्ता नहीं समझते। तो क्या यही इस सरकार का लक्ष्य है ? इस सरकार के अन्दर ईमानदारी होनी चाहिये। ईमानदार आदमी के सिवाय कोई भी आदमी कुर्सी पर बैठेगा वह गड़बड़ करेगा।

श्री हरिदेव जोशी के खिलाफ राजस्थान के एम० पीज० ने भारत के प्रधान मन्त्री को एक ज्ञापन दिया है। उस ज्ञापन में इसके खिलाफ 8 आरोप लगाये हैं। इसके बारे में जानकारी अध्यक्ष महोदय आप चाहते हैं ? क्या इसके अन्दर इंक्वायरी कराना चाहते हैं तो मैं सदन की मेज पर यह ज्ञापन रख सकता हूं नहीं तो कोई फायदा नहीं है। पन्नालाल बारूपाल और कई अन्य सदस्यों ने प्रधान मन्त्री को यह ज्ञापन दिया है। आप कहें तो यह पढ़कर सुना दूं ...

श्री अध्यक्ष : पढ़ कर सुनाने की आवश्यकता नहीं है।

श्री रामचन्द्र आर्य : एक आरोप तो नमक की जमीन के ठेके की मियाद बढ़ाने

(श्री रामचन्द्र आर्य)

के सम्बन्ध में है। एक फासफोरस फैक्टरी के बारे में है। इस तरह के आठ आरोप हैं, इस सम्बन्ध में यह ज्ञापन पांच पेज का है। आप कहें तो पढ़कर सुना दूं।

श्री अध्यक्ष: आवश्यकता नहीं है।

श्री रामचन्द्र आर्य: सुनने के लायक है यह।

श्री अध्यक्ष: आगे पढ़ने की आप कृपा न करें।

श्री रामचंद्र आर्य: उपरोक्त जगह ...

श्री अध्यक्ष: पढ़ने का नहीं है माननीय सदस्य।

श्री रामचन्द्र आर्य: जो भूतपूर्व मिनिस्टर थे बृजप्रकाश गोयल के बारे में एक अखबार की कटिंग पेश करता हूं। उसमें जमीन के बारे में इतना गम्भीर आरोप है कि उसके बारे में जांच हो। वह सरकार के पास है। सरकार ने क्या कभी कोई एन्क्वायरी कराई है? यह अखबार में निकला है। "आजाद संदेश" 21 मार्च, 71 में निकला है। यह जयपुर से निकलता है। इसने सारे तथ्य दिये हैं कि इस प्रकार से जमीन ली है। इतने आदमियों के नाम थी। इस तरह से सारी सम्पत्ति बनाई है। सत्ता का दुरुपयोग किया है। इसलिए यह जांच होने के लायक है। यदि इसकी जांच नहीं कराई जाती है तो फिर मैं यह समझूंगा कि राजस्थान में कांग्रेस भ्रष्टाचार को बढ़ावा देना चाहती है....

कई माननीय सदस्य: समय आगया है।

श्री रामचन्द्र आर्य: इसी तरह से झालावाड़ के एक इन्जीनियर के बारे में हमारे एक माननीय सदस्य श्री बोहराजी ने एक सूचना दी थी और माननीय मुख्य मंत्री जी और सिंचाई मंत्रीजी को लिखा कि बड़ा घोटाला उन्होंने किया। उन्होंने एक बांध बनवाया और उस बांध के निर्माण कार्य में लाखों रुपया उसने खाया है, और अन्य सिंचाई कार्यों में पैसा खाया है। इसके बारे में प्रमाण सहित उन्होंने लिख कर दिया है, लेकिन कोई एन्क्वारी नहीं हुई। आप क्या यह महसूस करते हैं कि इस प्रकार से आरोप लगाये जायं और आपको लिखकर हम देते

(समय समाप्ति सूचक घंटी)

यद्यपि माननीय सदस्य का यह कर्तव्य नहीं है कि लिखकर दें। हम विधान सभा में कह सकते हैं लेकिन फिर भी लिखकर देते हैं तो आपको जांच करवाना चाहिये। जांच नहीं करवाते हैं इसलिए आपके खिलाफ अविश्वास है।

इसी तरह से पुलिस ने गुण्डागर्दी कर रखी है। संगरिया और भादरा के गोली-काण्ड का मुख्य अभियुक्त डालचन्द जिसने 7 आदमियों को गोली से मारा था वह हनुमानगढ़ में बैठा है। जो विरोधी दल के कार्यकर्ता हैं उनके खिलाफ झूठे मुकदमें बनवाये जाते हैं। हनुमानगढ़ में इस चुनाव के दौरान एक कार्यकर्ता पर गोली चली और उसकी रिपोर्ट पुलिस थाना हनुमानगढ़ में दर्ज हुई, लेकिन डालचन्द जो आये दिन उलटे-सीधे कांग्रेस वालों से मिलकर धन्धे करता है तो क्या उसका ठेका है?

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा: आपका ठेका है?

श्री रामचन्द्र आर्य: मैंने पहले ही कह दिया है कि यह छंगानी कमीशन है

(श्री रामचन्द्र आर्य)

×××उसकी रिपोर्ट आज तक प्रकाशित नहीं की है। चूरू गोलीकाण्ड के बारे में यह सुना गया है कि पक्ष में फैसला हुआ है, लेकिन आज तक रिपोर्ट प्रकाशित नहीं की गई, उस गोली कांड की रिपोर्ट प्रकाशित क्यों नहीं की गई और डालचन्द को पद्मश्री देकर कहीं भेज देना चाहिए। डालचन्द को पद्मश्री या पद्म-विभूषण देकर दिल्ली भेज दें इन्दिराजी के पास लेकिन वहां से कम से कम उसको हटा देना चाहिए। मुकदमें खिलाफ हो रहे हैं। क्यों हो रहे हैं? जब×××तो न्याय नहीं मिल सकता है। हमने मुकद्में में सही तरीके से जितने भी सबूत हो सकते हैं दिये वे ऐसे थे कि हमारे पक्ष में फैसला होता।× ××

श्री अध्यक्ष: जज के खिलाफ एक्सपरशन न डालें। एक्सपन्ज।

श्री रामचन्द्र आर्य: गत सत्र में मरे हुओं के परिवारों को सहायता देने का वचन दिया गया था। एक पैसा भी नहीं दिया गया। जबान है या क्या है? आदमी मर गये और मुकद्में शुरू करवा दिये उनको सहायता मिलनी चाहिए थी वह आज तक नहीं दी गई।

इसी तरह से एग्रो-इन्डस्ट्रीज कार्पोरेशन के घोटाले सामने लाये गये। एक-एक आदमी को चार-चार ट्रैक्टर्स दिये गये हैं और जिन आदमियों को सही मायने में मिलने चाहियें उनको नहीं दिये गए और कहते हैं तो नियम ऐसे हैं कि पकड़ में नहीं आते हैं। फर्जी सारी कार्यवाही की जाय, फर्जी एलाटमेंट किया जाय और ट्रैक्टर सारे ब्लेक में बेचे जायं और उसके बाद में कोई एन्क्वायरी नहीं की जाय, क्योंकि शायद वह बरकतुल्लाखां साहब के महरबानों में से हैं। वह समझते हैं कि चन्दनमलजी की एन्क्वायरी करवायेंगे तो अच्छा नहीं है। लेकिन जो बेईमानी करता है वह अपना भाई ही क्यों न हो उसकी जांच करना चाहिये और जांच करने के बाद जनता को विश्वास में लेना चाहिये और यदि आप जनता को विश्वास में नहीं लेंगे तो जिस तरह से वह मंत्री-मण्डल चला गया आप भी चले जायेंगे। चले ही नहीं जायेंगे लेकिन जो नाजायज तरीके से धन प्राप्त किया है उसको लोग छीनेंगे और सड़कों पर ठोकर खाते फिरेंगे। इसलिये बेईमानी से जितना भी धन इकट्ठा किया है वह जनता में बांट दें, और जो बेईमानी की है उसके लिए प्रायश्चित्त करें। यहां खड़े होकर कि सत्ता में रहकर इस तरह से धन अर्जित किया है इसका हमने बड़ा गुनाह किया है। आप कहें कि हम आगे आने जाने हैं तो जिस तरह से आगे जाते हैं उनको वापिस बुलाने का भी तरीका है। नहीं मानेंगे तो यह वोट से करेंगे और वोट से ही नहीं जीतने देंगे। लोग खड़े हो जायेंगे फिर क्या करेंगे? फिर क्या ताकत है कि जो आप फिर आ जायं? आप हर तरह से आराम-तलब हो गये हैं। इसलिए समय रहते हुए आपने जो घोटाले किए हैं उन घोटालों के बारे में आपको कमीशन बिठाना चाहिये और उस कमीशन के द्वारा जो भी दोषी साबित हो उसको सजा मिलना चाहिए। यदि आप इस प्रकार की कार्यवाही नहीं करते हैं तो 5 साल इस विधान सभा

××× माननीय अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार कार्य विवरण से निकाले गए।

(श्री रामचन्द्र आर्य)

में बैठकर हमने अनेक आरोप लगाये हैं और अब यह आखरी सेशन है और उसका आखरी दिन है पांच साल का इसलिए मैं यह भी कह देना चाहता हूं कि मैं किसी के खिलाफ भी नहीं हूं लेकिन जो आदमी गलत काम करता है उसका कट्टर दुश्मन भी हूं। इसलिए इस सदन में मैंने जितने भी आरोप लगाये हैं वे बिल्कुल तथ्य सहित लगाये हैं और एक भी झूंठा नहीं कहा है चाहे किसी सदस्य या किसी मंत्री को बुरा लगा हो, लेकिन वह तथ्य से दूर नहीं है। मैंने जितने मामले यहां पर रखे हैं उन पर आवश्यक कार्यवाही हो सकती है। लेकिन अध्यक्ष महोदय, हमारा तो यही कर्तव्य है कि हम कह सकते हैं। कर तो यही सकते हैं, क्योंकि इनके पास में सत्ता है। इसलिए आप यह न समझें कि रामचन्द्र आर्य ने जो आरोप लगाये हैं यह हमारे खिलाफ हैं इसलिए बोल रहा है। मैं इसलिए बोल रहा हूं कि आप लोग बेईमानी करते हैं, आप लोग भ्रष्टाचार को पनपा रहे हैं, आप लोग भाई भतीजावाद को पनपा रहे हैं। अब भाई भतीजावाद का एक नमूना बताऊं...

श्री अध्यक्ष : अब समाप्त कर दें, माननीय सदस्य

कई माननीय सदस्य : एक नमूना तो देख लें।

श्री रामचन्द्र आर्य : समापन समारोह अच्छी तरह से हो रहा है।

अध्यक्ष महोदय, अभी एक जयनारायण सिंह "है उसका एक नम्बर था और दूसरा नारायणसिंह" उसका आठवां नम्बर था, अब भाई-भतीजावाद का एक नमूना है। आपने खोटे काम किये हैं जिन्दगी में, अच्छा काम कभी नहीं करा है।

श्री अध्यक्ष : फिर कहते किस पर हैं?

श्री रामचन्द्र आर्य : जी भर कर करो। नतीजा जो आयेगा उसको भुगतने को तैयार रहें। 1 नम्बर वाले को प्रमोशन नहीं दें और अपना रिश्तेदार होने के नाते आठवें नम्बर वाले को प्रोमोशन दे दें। यह भाई-भतीजावाद का नमूना है। तो इसी तरह से हजारों गलत काम किये हैं।

श्री अध्यक्ष : अब तो मुझे राहत दे दें स्थान ग्रहण करके।

श्री रामचन्द्र आर्य : दे दूंगा आपको अध्यक्ष महोदय, मैं दे दूंगा राहत। (हंसी) अभी, अध्यक्ष महोदय, सिंचाई मंत्रीजी गंगानगर गये और उनके सामने हमने एक ज्ञापन पेश किया, क्योंकि गंगानगर जिला ऐसा है जिसकी उपेक्षा की जाती है। सौतेला व्यवहार किया जाता है वहां के काश्तकारों के साथ में, वहां की जनता के साथ में वहां पर पानी की कमी नहीं हैं, पैसे की कमी नहीं है। बंगला देश को देने के लिए 5 करोड़ रुपया प्रतिदिन आ सकता है, लेकिन 8 करोड़ रुपये वहां खर्च नहीं कर सकते हैं। पीने के लिए पानी वहां नहीं है। मैंने इसके लिए ज्ञापन पेश किया, उसके लिए कोई कार्यवाही नहीं हुई। चूरू और गंगानगर को आप को अगर राजस्थान में नहीं रखना है तो हरियाना को दे दो। आपके इन कारणों से बीकानेर डिविजन राजस्थान में रहने वाला नहीं है। जो पानी पाकिस्तान को जाता है, उसको हमको दिया जाये।

(श्री रामचन्द्र आर्य)

रुपया आप का लगेगा। धरती में पानी जाएगा और देश में अकाल दूर होगा। करोड़ों रुपये अकाल में खर्च नहीं होंगे। आज तक आपने कोई कदम नहीं उठाया है इसलिए मैं अविश्वास प्रकट करता हूं।

शिक्षा के क्षेत्र में आप देख लीजिये। मिडिल स्कूल खोलने के लिए रुपया जमा कराओ। हाई स्कूल खोलने के लिए रुपया जमा कराओ। पैसा जमा करो तो भी स्कीम कुछ नहीं है। आप क्या करते हैं? गांवों के गरीब काश्तकारों को प्राइमरी स्कूल देना चाहिए। बराबर मांगने पर भी, आज तक आपने एक भी स्कूल नहीं खोला है। राजस्थान के उस इलाके में जहां शरणार्थी आये हैं उनके लिए खर्चा है लेकिन स्कूल खोलने के लिए कहा गया वह नहीं हुआ। वहां जो मकान बनाये गये, वह गिर गये। इस प्रकार सारा का सारा घपला है। इस प्रकार की कार्यवाही यह सरकार करती है लेकिन एजूकेशन में देने के लिए पैसा नहीं है। 5 साल का बजट इन्होंने एक साल में खर्च किया है। जहां जरूरत थी वहां नहीं खोले गये। जहां जरूरत नहीं थी वहां खोले गये हैं। ऐसे वातावरण को पैदा न करो। नहीं तो वैसे ही जनता में अविश्वास होता जा रहा है। इसलिए मनोहर सिंह जी ने जो अविश्वास का प्रस्ताव पेश किया है, उसका मैं समर्थन करता हूं। मैं आशा करता हूं कि इस सरकार को आज हटा देना चाहिये ताकि इनके पेट बहुत मोटे हो गये हैं, वह भी छोटे हो जायें। (हंसी)

कई माननीय सदस्य : अध्यक्ष महोदय···

श्री अध्यक्ष : श्री वृद्धिचन्द्र जैन।

श्री वृद्धिचन्द्र जैन (बाड़मेर) : अध्यक्ष महोदय, श्री मनोहरसिंह मेहता ने जो अविश्वास का प्रस्ताव रखा है, मैं उसका विरोध करता हूं। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ, स्वतन्त्र पार्टी, जनसंघ, संसोपा, भारतीय क्रान्तिदल ··· ····

श्री रामकिशन : अब संसोपा, नहीं है।

श्री अध्यक्ष : अब क्या है ?

एक माननीय सदस्य : केवल 'सोपा' है।

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : सोपा है।

इन 4 पार्टियों ने किसी ने अविश्वास प्रस्ताव पेश नहीं किया है। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मनोहरसिंह जी मेहता जो बहुत ही सीधे सच्चे आदमी हैं, उनका उपयोग किया गया है···

श्री मनोहरसिंह मेहता : उपयोग नहीं किया है। हमें भी कुछ ज्ञान है। आप जो कह रहे हैं, वह गलत है।

श्री अध्यक्ष : यह भी गलत है कि सीधे सच्चे आदमी हैं ?

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : मनोहरसिंह जी मेहता ने 5 साल इस सदन में भाग लिया

श्री अध्यक्ष : यह तो ठीक है।

श्री मनोहरसिंह मेहता : अभी मैं सुन लेता हूं। बाद में जवाब दूंगा। आप मुझे समय बतायेंगे।

Page No 72

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : 12 नवम्बर को जब हिन्दुस्तान-पाकिस्तान के तनाव पर स्टेटमेण्ट हुआ था। उस समय जो विचार व्यक्त किये गये थे बड़ा सुन्दर वातावरण था।

एक माननीय सदस्य : (अश्रव्य)

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : उस समय यह लगता था कि यह अविश्वास का प्रस्ताव कोई भी विरोधी पार्टी नहीं ला रही है। परन्तु अविश्वास का प्रस्ताव आया। यहां तो जब पार्लियामेंट का चुनाव चालू था, उस समय स्वतन्त्र पार्टी, जनसंघ, ससोपा, पुरानी कांग्रेस सब ने मिल कर नई कांग्रेस के विरोध में, चुनाव में संगठन किया था और उस पार्लियामेण्ट के चुनाव में जनता ने कांग्रेस को बड़ीभारी सफलता प्रदान की थी। यह जो अविश्वास का प्रस्ताव प्रस्तुत करने जा रहे हैं, वे अगले चुनाव की भूमिका तैयार कर रहे हैं। आपको मैं कहना चाहता हूं कि कांग्रेस पार्टी के खिलाफ अगर सभी पार्टियां मोर्चा लगा दें तो भी कुछ असर नहीं होने वाला है। पुरानी कांग्रेस जिसका कि राजस्थान में कोई अस्तित्व नहीं है, स्वतन्त्र पार्टी जो कमजोर हो गई है, जनसंघ और संसोपा का साथ नहीं है। तो मैं यह कहना चाहता हूं कि ये सारी शक्तियां अगर मिल भी जायें और चुनाव हमारे विरोध में लड़ें तो कहना चाहता हूं....

श्री विजयसिंह : आप को कोई जानकारी नहीं है।

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : पहले आपको जानकारी नहीं थी। इन्दिरा गान्धी की आप को जानकारी नहीं है। राजा महा-राजा, स्वतन्त्र पार्टी, जनसंघ, ये सभी मिल जायें परन्तु कांग्रेस को पूरे मिल कर भी हरा नहीं सकते हैं।

श्री विजयसिंह : रामलीला में भाग ले रहे हो क्या ?

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : अध्यक्ष महोदय....

श्री किशनलाल शाह (नावां) : ऑन ए प्वाइण्ट ऑफ ऑर्डर।

श्री अध्यक्ष : प्वॉइण्ट ऑफ ऑर्डर, माननीय सदस्य।

श्री किशनलाल शाह : Point of Order, Sir अविश्वास प्रस्ताव की बहस के दौरान, माननीय सदस्य बिरदीचन्द्र जैन ने जितने भी वाक्य कहे हैं। क्या मूल विषय से उनकी संगति है ? इस पर आपकी व्यवस्था चाहते हैं।

श्री अध्यक्ष: No point of Order. (श्री वृद्धिचन्द्र जैन से) शुरू रखें।

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : मैं बिलकुल रिलेवेण्ट बोल रहा हूं।

श्री किशनलाल शाह : अविश्वास के विषय के अन्तर्गत नहीं आता है।

श्री अध्यक्ष : ऑर्डर ऑर्डर माननीय सदस्य व्यवस्था दे दी है।

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : मैं जयपुर से आने वाले माननीय सदस्य के विचार सुन रहा था। माननीय सदस्य ने चीफ सेक्रेट्री के बारे में कहा है। बन्दूकों के बारे में बात करते हैं। वह हमेशा बन्दूकों के बारे में बात करते हैं। मैंने बाड़मेर जिले में बन्दूकों के बारे में जानकारी की है।

(श्री वृद्धिचन्द्र जैन)

बाड़मेर में 10% राजपूत हैं। 60% बन्दूकें उस जाति को दी गई हैं। यह कहना कि इस बारे में सरकार पक्षपात की नीति अपना रही है यह गलत है। आप इस बारे में ऐसी बातें करके जातिवाद फैलाना चाहते हैं। यह गलत है।

श्री बालसिंह सोढा (जैसलमेर) : वहां आज तक देखा है।

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : कोई भी जुल्म करेगा तो हम उसके खिलाफ हैं। जो कोई भी एक्सपलायटेशन करता है तो हम उसके विरोध में हैं।

तो इसका मतलब यह नहीं है···

श्री विजयसिंह : चैनाराम ने जुल्म किया है उसके बारे में क्या कहते है? चैनाराम, प्रधान, डेगाना के बारे में।

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : चैनाराम के बारे में जानकारी नहीं है। जिसके बारे में जानकारी नहीं, उसके बारे में मैं बोलना नहीं चाहता।

श्री हरिवल्लभ शर्मा : आप वहां पर गये थे।

श्री दौलतराम सारण : क्या आपको जानकारी है कि किसके पास कितने बंगले हैं, कितनी सम्पत्ति है? यह जानकारी है?

श्री अध्यक्ष : आरम्भ रखिये।

श्री दौलतराम सारण : यह सम्पत्ति कहां से आई?

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : हमारी कांग्रेस के अन्दर हिन्दू हैं, मुसलमान हैं—सभी जाति के हैं, राजपूत हैं···

श्री विजयसिंह : बनिये हैं।

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : हमारा सिद्धान्त विशाल है और विशाल दृष्टिकोण से हम देखते हैं। हम कभी इस प्रकार के दृष्टिकोण से नहीं देखते कि यह अमुक जाति का है इसलिए कन्सीडरेशन न करें। चीफ सेक्रेटरी के बारे में गवर्नमेंट ऑफ इंडिया ने निर्णय लिया है। आज चीफ मिनिस्टर पर इतना विश्वास रखें कि वह अपने कान्फीडेन्स के चीफ सेक्रेटरी को रखें। अपने कान्फीडेन्स के चीफ सेक्रेटरी को रख कर काम कर सकेगा, नहीं तो नहीं कर सकेगा। चीफ सेक्रेटरी का क्वेश्चन है, इसके बारे में हाई कोर्ट का, सुप्रीम कोर्ट का डिसीजन हो चुका है। चीफ सेक्रेटरी की पोस्ट पर, आई. जी. पी. की पोस्ट पर, ऐसा नहीं है, सीनियोरिटी के हिसाब से ही व्यक्ति रखा जाय, जिसको स्यूटेबल समझें और सीनियोरिटी के हिसाब से समझते है कि केवल चीफ सेक्रेटरी नहीं हो सकता है और एडमिनिस्ट्रेशन अच्छी तरह से नहीं कर सकता है, योग्यता नहीं है, यह पब्लिक के कान्फीडेन्स का नहीं है, गवर्नमेंट के कान्फीडेंस का नहीं—इन दृष्टिकोण को सामने रख कर चीफ सेक्रेटरी के बारे में निर्णय लिया जाता है। चीफ सेक्रेटरी के बारे में जो निर्णय लिया गया था वह अच्छा निर्णय लिया गया था। उसी तरह के अच्छे निर्णय लेने की जरूरत हैं। जब बोर्डर कमिश्नर थे, और चेयरमैन इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड थे, तब से मैं जानता हूं, वह आनेस्ट है, इम्पार्शल है और इन्टीग्रिटी के व्यक्ति हैं, और आउट लुक ब्रांड आउट लुक है। ऐसे व्यक्ति को चीफ सेक्रेटरी का

Page No 74

(श्री वृद्धिचन्द्र जैन)

पद दिया जाय यह प्रशंसा के योग्य हैं। मैं कहता हूं, जो चीफ सेक्रेटरी के बारे में जैसा निर्णय लिया वैसा ही दूसरे मामलों में निर्णय लें। दूसरे स्टेप्स लेने के अन्दर क्यों कमजोर रहे हैं? आपको कमजोरी नहीं दिखानी चाहिए। आज आपको आई. जी. पी. को भी चेंज करना चाहिए। मैं समझता हूं, आई. जी. पी. ब्रोड आउट लुक के नहीं हैं। आप जिस जाति के आधार के लिए कहते हैं, मैंने उनके काम को देखा है वह जाति के आधार पर चलते हैं। आप पुलिस विभाग में पर्सेन्टेज देखें तो सबसे ज्यादा संख्या किनकी है, आर० ए० सी० में किनकी संख्या कितनी है। कोई भी मसला या मामला होता है तो आई० जी० पी० इन्टरफियरेन्स करते हैं और गलत चीज के लिए एस० पी० आदि के ऊपर दबाव डालते हैं····

श्री विजयसिंह : निकालो। हिम्मत है तो निकाल दो।

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : यह गवर्नमेंट की वीकनैस है, डेमोक्रेटिक गवर्नमेंट है उसमें एक स्टेप ले रहे हैं चीफ मिनिस्टर, तो दूसरा डिसीजन क्यों नहीं लेते हैं। हम पूरे जोर से गवर्नमेंट को कहेंगे कि विरोधी पार्टी से क्यों घबराते हैं, विरोधी पार्टी के लोग कभी भी····

श्री बालसिंह सोढ़ा : जो चीज पहले वृद्धिचन्द्रजी ने कही थी कि वह जातिवाद के खिलाफ हैं अब उसके ही खिलाफ कह रहे हैं।

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : मैं कह रहा हूं, मैं जाति विशेष के खिलाफ नहीं हूं। जो जाति विशेष के आफिसर हैं जो एस० पी० है आनेस्ट, और आफिसर है जाति विशेष के उनकी मैं प्रशंसा करता हूं।

श्री विजयसिंह : आप सभी राजपूतों को निकाल दो।

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : यह हमारा दृष्टिकोण नहीं है।

श्री विजयसिंह : और आप बन जाओ।

श्री पृथ्वीसिंह (बाली) : आप यह कह रहे हैं कि आर० ए० सी० में जो नियुक्तियां की गई हैं वह पक्षपातपूर्ण तरीके से की गई है··· .

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : मैं कहता हूं, क्या स्थिति होती है पक्षपात की ··

श्री अध्यक्ष : आप विशाल दृष्टिकोण रखिये।

श्री बालसिंह सोढ़ा : एक पाइन्ट मैं कहना चाहता हूं, आप और अपने आदमियों को आर० ए० सी० में भेज कर देखिये।

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : आप बीच में क्यों इन्ट्रप्ट करते हैं।

श्री देवीदत्त गाड़िया : आपकी जाति है कांग्रेस, इसमें कौन कौन बेईमान हैं? आप बताइये, आपकी जाति है कांग्रेस, इसमें बतायें, कौन कौन बेईमान हैं और इनमें से किस किस को बदलना है?

श्री विजयसिंह : बोर्डर पर बन्दूक चलानी पड़ती है, लाठी नहीं।

श्री पृथ्वीसिंह : माननीय वृद्धिचन्द्र जी कह रहे हैं···

श्री अध्यक्ष : आर्डर आर्डर। आप ऊंचे स्वर से चिल्लाइये। आरम्भ रखिये। आर्डर आर्डर !

श्री पृथ्वीसिंह : गवर्नमेंट ने पक्षपातपूर्ण तरीके से नियुक्ति की है, आप यह कहते हैं।

श्री बालसिंह सोढा : वृद्धिचन्द्रजी विश्वास नहीं है गवर्नमेंट में, क्योंकि जो नियुक्तियां की हैं वह गलत की हैं।

श्री किशनलाल शाह : अहम भाव है।

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : आप गवर्नमेंट के खिलाफ अविश्वास क्यों रखते हैं ? अगर गवर्नमेंट में कोई वीकनेसेज है तो वह कहने का हमें अधिकार है। ऐसी बात नहीं है। परन्तु वीकनेसेज कहने का मतलब यह नहीं है कि मैं अविश्वास रखता हूं।

श्री अध्यक्ष : आप प्रश्न पर आ जाइये। इन्होंने कहा है वह छोड़ दीजिये।

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : गवर्नमेंट ने जो कार्य किये हैं उनमें सबसे पहले मैं कहना चाहता हूं····

श्री बालसिंह सोढा : संकट के समय एक तरफ तो आप सहयोग की याचना करते हैं और दूसरी तरफ जाति जहर फलाते हैं?

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : संकट के समय आपको अविश्वास का प्रस्ताव नहीं रखना चाहिए। संकट के समय अविश्वास का प्रस्ताव रख कर अच्छी भावना का परिचय नहीं दिया है।

श्री अध्यक्ष : आरम्भ रखिये।

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : जो पानी की समस्या है

श्री बालसिंह सोढा : उधर ऐसे बैठे हैं, जैसे आत्मा मर गई है। बोल नहीं रहे हैं।

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : राजस्थान सरकार ने पानी की समस्या को हल करने के लिए पांच वर्षों में बड़े प्रयास किये है इसकी मैं प्रशंसा करता हूं। प्रथम पंचवर्षीय योजना द्वितीय पंचवर्षीय योजना, तृतीय पंचवर्षीय योजना और प्रथम साल, द्वितीय साल, तृतीय साल इन सालों के अन्दर कांग्रेस सरकार ने ग्रामीण क्षेत्र के लिए 9 करोड़ रुपया खर्च किया था, 11 करोड़ नगरीय जल प्रदाय योजना के लिए खर्च किया था, इस प्रकार कुल 20 करोड़ रुपया खर्च किया था, परन्तु चौथी पंचवर्षीय योजना के अन्दर 31 करोड़ रुपये का प्रावधान रखा है, उसमें 20 करोड़ ग्राम पेयजल योजना के लिए है

श्री विजयसिंह : खाने के लिए।

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : हां, पानी के लिए। बाड़मेर डिस्ट्रिक्ट में दो करोड़ रुपयों की जल प्रदाय योजना मंजूर हुई है। मैं कहना चाहता हूं, मेरे क्षेत्र के अन्दर जो मंजूरी हुई है 75 गांवों की, वहां सभी गांवों में पानी का संकट है, वहां पानी की व्यवस्था हो रही है। फेमिन के अन्दर संवत् 2025–2026 के अकाल में गवर्नमेंट ने मदद दी, केन्द्रीय सरकार ने मदद दी और वहां राहत पहुंचाई····

श्री विजयसिंह : खा गये।

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : सात गांवों में मदद नहीं पहुंची। रुपया खा गये, उनके खिलाफ

(श्री वृद्धिचन्द्र जैन)

कार्यवाही की, परन्तु जनता को राहत पहुंचाई।

श्री पृथ्वीसिंह : आपने खाया आपका राज्य है।

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : इस वर्ष अकाल की स्थिति है। बाड़मेर जिले में, जैसलमेर जिले में, बीकानेर जिले में, पाली जिले में, जोधपुर जिले में और गंगानगर जिले के कुछ हिस्से के अन्दर। और भी जिले हैं। मैं गवर्नमेंट का इस ओर ध्यान दिलाना चाहता हूं कि आपने सम्वत् 2025 और 2026 में मदद दी····

श्री विजयसिंह : और खाना बाकी है।

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : इस साल मदद देनी होगी इस साल मदद नहीं देंगे तो यह जिले बताये हैं, यह सीमावर्ती जिले हैं इनका मनोबल आप बनाना चाहते हैं, तो सब लोगों की जिम्मेदारी है, इनका मनोबल बढाने के लिए, सीमावर्ती क्षेत्र होने के नाते गवर्नमेंट का फर्ज है (समय समाप्ति सूचक घण्टी) इन गांवों के बारे में जानकारी प्राप्त करलें, कौन कौन ग्राम फेमिन अफेक्टेड हैं, इसकी जानकारी प्राप्त करे फेमिन रिलीफ मिनिस्टर चीफ मिनिस्टर इसकी ओर ध्यान दें, केन्द्रीय सरकार से मदद लेनी है तो वह लें और लेकर पूरी मदद दें। आपने जितनी मदद दी है, उतनी देने के बाद अगर आपने इस साल नहीं दी तो यह जो मदद दी है, उसका प्रभाव नहीं रह सकेगा। मैं यह ध्यान में लाना चाहता हूं। फेमिन के अवेरेशन पर ध्यान दिलाते हुए, क्योंकि और भी माननीय सदस्य बोलने वाले हैं, मैं इस विषय में इतने ही विचार रखता हूं और मनोहरसिंह जी ने जो प्रस्ताव रखा है उसका मैं विरोध करता हूं।

श्री अध्यक्ष : श्री आदित्येन्द्र जी।

श्री आदित्येन्द्र (डीग) : अध्यक्ष महोदय······

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आरम्भ रखिये।

श्री आदित्येन्द्र : अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले मैं आपको इस बात के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं कि आपने मुझे बोलने का अवसर दिया। कल जब जो कुछ भी कार्यक्रम बनाया गया था कि अविश्वास के प्रस्ताव के सम्बन्ध में कौन कौनसी पार्टी के लोग बोलेंगे उस वक्त शायद पुरानी कांग्रेस, जो कि संगठन कांग्रेस है उस पार्टी का नाम तो भुला ही दिया था जैसा मुझे अपने आपको लगा या शायद ऐसा हो सकता है कि आपने यह सोचा होगा कि संगठन कांग्रेस इस अविश्वास के प्रस्ताव का, जो विधान सभा में आया है, उसका विरोध नहीं कर रही है, या ऐसा हो सकता है कि आपने शायद यह सोच लिया हो कि संगठन कांग्रेस राजस्थान विधान सभा में है ही नहीं या जो विपक्ष के दल के साथ नहीं है या ऐसा सोच लिया हो कि शायद पुरानी कांग्रेस का विलय नई कांग्रेस के अन्दर हो गया है। चाहे जो भी कारण समझ लें और या कोई कारण हो सकता है इस सम्बन्ध में मुझे ज्यादा नहीं कहना है। आज राजस्थान विधान सभा में अध्यक्ष महोदय, एक बात है कि राज्य सरकार के खिलाफ में एक अविश्वास का प्रस्ताव आया

(श्री आदित्येन्द्र)

है। इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि इसका क्या परिणाम होगा यह तो इधर बैठे माननीय सदस्य जानते हैं और उधर बैठे माननीय सदस्य भी जानते हैं इसलिये राज्य सरकार भी भयभीत नहीं हो रही है। मेरा इस बारे में यह निवेदन है कि जब सरकार के विरुद्ध ऐसे अविश्वास प्रस्ताव आते हैं तो इतना जरूर स्पष्ट हो जाता है कि आज जनता में इस सरकार की नीतियों के खिलाफ अभी भी आवाज उठायी जाती है। सिर्फ यह है कि मन्त्रिमण्डल का आकार छोटा हो गया है इससे थोड़ा सा सन्तोष हो जाता है और चार पांच महिने पहले जो बड़ा मन्त्रिमण्डल था उसे छोटा करने के लिये कई बार इस सदन के मंच पर माननीय सदस्यों ने अपनी अपनी बात कही और आग्रह किया कि इस बड़े मन्त्रि मण्डल को छोटा करना चाहिये पर वह मन्त्रि मण्डल छोटा नहीं हुआ। बाद में चाहे केन्द्र के अनुरोध से हुआ हो या केन्द्र के दबाव से हुआ हो पर मन्त्रिमण्डल छोटा हुआ और अब यह नया मन्त्रिमण्डल आया, पुराना मन्त्रिमण्डल गया, लोगों के मन में यह जागृति हुई कि अब शायद समाजवादी नीतियों की क्रियान्विति होगी पर अध्यक्ष महोदय, बड़े अफसोस की बात है कि अभी तक राज्य सरकार में कोई परिवर्तन नहीं हुआ और जो समस्यायें पहले थीं उनका कोई भी हल नहीं निकला और वो समस्यायें यों की यों रही हैं। पहले उस वक्त जो भ्रष्टाचार के बारे में इतनी शिकायतें की जाती थी वह समाप्त तो नहीं हुई अपितु उसकी पराकाष्ठा बढ़ गयी है। इतना समय हो गया है लेकिन कोई भी भ्रष्टाचार के आरोप जिन लोगों के खिलाफ लगाये गये हैं उनके विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं हुई। नये मुख्य मन्त्रीजी ने यद्यपि अपना पद सम्भालते ही भ्रष्टाचार के खिलाफ में घोषणायें जारी करदी कि मैं भ्रष्टाचार का उन्मूलन करूंगा और अब राजस्थान में कोई भ्रष्टाचार नहीं रहेगा मैं उसे बिलकुल मिटा दूंगा। जब हमने इस बारे में उनके भाषण सुने तो हम कभी कभी हंसते थे कि इस बात के स्टेटमेंट जो मुख्य मन्त्रीजी ने दिये वे इतने थोड़े समय में भ्रष्टाचार कैसे समाप्त करेंगे। या कोई वह बात इस प्रकार की तो नहीं है कि जिस प्रकार नन्दाजी ने भ्रष्टाचार उन्मूलन करने की सौगन्ध उठायी थी और बाद में भ्रष्टाचार तो आज वहीं का वहीं है और उल्टा बढ़ा है लेकिन नन्दाजी मन्त्री नहीं रहे। इसी तरह मुझे यह भय है कि जिस जोश से भ्रष्टाचार के उन्मूलन की कही, वह उसी तरह नहीं हो जाय जैसा कि नन्दाजी में हुआ और आपको भी कहीं जाना पड़े। क्योंकि आज स्थिति वो ही बनी हुई है जो कि पहले थी और भ्रष्टाचार अपनी चरम सीमा की तरफ ज रहा है। आज सभी लोग यही कहते हैं कि ऐसा भ्रष्टाचार का वक्त तो कभी नहीं आया पहले भी जहां सरे आम लोग खुल्लमखुल्ला रिश्वत लेते हैं, मुख्य मन्त्रीजी से, मैं आपके मारफत निवेदन करूंगा अध्यक्ष महोदय, कि आप इसे हटाने में जागरूक जरूर रहें। इसके अलावा जहां तक भ्रष्टाचार का मामला है यह सिर्फ राजस्थान में ही नहीं है बल्कि ये तो पूरे हिन्दुस्तान में फैला हुआ है। कहीं कम कहीं ज्यादा होगा लेकिन आज आवाज चारों तरफ भ्रष्टाचार की है। मैं मुख्य मन्त्रीजी, राजस्थान के दूसरे जिलों के बारे में तो ज्यादा जानकारी नहीं रखता परन्तु इतना जरूर कह देना चाहता हूं कि

(श्री आदित्येन्द्र)

भरतपुर जिले में जितना भ्रष्टाचार है, जहां सरे ग्राम रिश्वत चलती है उतनी शायद ही कहीं ग्रौर चलती होगी। मैं ग्रापको निवेदन करूं अध्यक्ष महोदय, कि भरतपुर जिले के सभी सब-डिविजनों के बारे में जो जानकारी है वह मैं निवेदन कर दूं कि आज वहां ऐसी हालत है कि चारों तरफ आप जहां जावो वहां खुले आम रिश्वत मांगते हैं ग्रौर आप जहां कहीं भी जाग्रोगे, चाहे आप सड़कों पर जायें, चाहे ग्राप खेतों में जायें, चाहे ग्राप कोर्ट में जायं, चाहे दुकानों पर जायें कहीं पर भी चले जायं आपको सिवाय इसके कि रिश्वत सरे आम ग्राज चल रही है। इसके सिवाय ग्रापको कोई चर्चा सुनने को नहीं मिलेगी। ये तो स्थिति आज भरतपुर के तीनों सब डिवजनों की हैं। अध्यक्ष महोदय, मैं नीचे के स्तर के लोगों की बात तो कहना नहीं चाहता परन्तु बड़े ग्रफसरों की करता हूं आज 6-6 वर्ष से वहां बड़े-बड़े ग्रफसर टिके हुए हैं और खूब सरेआम रिश्वत लेते हैं लेकिन उनका ट्रांसफर नहीं होता है उनके खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं होती है सभी कर्मचारी उनसे परेशान हैं। आप भरतपुर के ए०डी० एम० को लें वे रिश्वत लेते हैं सरे ग्राम कोई डर नहीं, डीग के एस०डी० एम को लें, वे वो इसी प्रकार भ्रष्टाचार से लिप्त हैं। तो ग्रध्यक्ष महोदय, मेरा निवेदन यह है कि उनके खिलाफ आरोपों की जांच नहीं होती ग्रौर वहां एक तरह गुट बना हुग्रा है और अगर उनकी ट्रांसफर कर दी जाय तो वो वापिस केन्सिल हो जाती है। क्योंकि कुछ निहित स्वार्थ वर्ग के लोग उन्हें वहां रखना चाहते है इसलिये उन्हें हटाया नहीं जाता है दूसरे ग्रॉफिसर इस विशेष गुट से परेशान हैं, जनता में उनके प्रति संतोष नहीं है, तो भी ग्रध्यक्ष महोदय, वहां अड़े हुए हैं। खुले आम कहते हैं कि कितने-कितन रुपये देगा इस काम के लिये। कोई संकोच ही नहीं है तो जिसके पास रुपया है रिश्वत देने का उसका काम हो जाता है चाहे वह जायज है नाजायज तो इस प्रकार का ग्राज ग्रन्याय भरतपुर के तीनों सबडिविजनों में हो रहा है तो मेरा माननीय मुख्यमंत्रीजी से अनुरोध है कि उन लोगों के विरुद्ध कोई जांच होनी चाहिये ग्रौर दण्डित करना चाहिये ताकि भ्रष्टाचार की कमी हो भ्रष्टाचार खतम हो सकता है इसमें मुझे कम विश्वास है।

(समय समाप्ति सूचक घन्टी)

अध्यक्ष महोदय, अभी समाप्त करता हूं। एक बात में जो ग्रौर निवेदन करना चाहता हूं वह यह है है कि पहले मन्त्रिमण्डल में लगभग 40 मंत्री थे ग्रब वो 10 मन्त्री रह गये है लेकिन ग्रभी जो पुराने मन्त्री लोग थे वह उन्हीं मकानों में रहते है वही शानदार बंगले है तो अध्यक्ष महोदय, यह बात गलत है। यह भी तो एक तरह का भ्रष्टाचार है क्योंकि मन्त्री के नाते उन्हें यह फ्री फेसीलिटी दी जाती है और अगर वो मन्त्री के नहीं हैं तो फिर उन्हें ग्रापने सिर्फ नोमीनल किराये पर उन्ही बंगलों में कैसे रहने दिया? तो भ्रष्टाचार का मतलब ग्रगर ग्राप रिश्वत से ही लेते है तो सही ग्रर्थ नहीं है क्योंकि भ्रष्टाचार दो शब्दों से जुड़ कर मिला है ग्रौर अगर उसके हम टुकड़े करें तो एक टुकड़ा है भ्रष्ट और दूसरा है आचरण इसका मतलब है भ्रष्ट ग्राचरण तो मैं समझता हूं कि यह दस मन्त्रियों के सिवाय आपने जिन लोगों को जो कि ग्रब मन्त्री नहीं है ग्रौर आपने उन्हें उन्हीं बंगलों में रहने दिया

(श्री आदित्येन्द्र)

है, चाहे आपने किराया लिया है पर वह किराया भी तो कम है क्या वह किसी दूसरे व्यक्ति को उतने ही पैसे में किराये में मिल जाता? मैं समझता हूं अध्यक्ष महोदय, कि नहीं मिलता; इसलिये अध्यक्ष महोदय, यह भी भ्रष्टाचार की श्रेणी में आता है। इसलिये माननीय मुख्य मन्त्रीजी ने पुराने मन्त्रियों के आग्रह पर अगर उन्होंने उनको उन्ही बंगलों में रहने दिया"

श्री विजयसिंह : वो तो सभी के सभी भूत हो गये।

श्री आदित्येन्द्र : यह कार्य ठीक नहीं हुआ। इसका असर जनता पर भी पड़ता है। सरकारी कर्मचारियों पर भी पड़ता है, व्योपारी वर्ग पर भी पड़ता है कि अभी भी भ्रष्टाचार तो खतम नहीं हुआ है। इसलिये मेरा निवेदन है कि हालांकि नियमों में प्रावधान तो है कि उन्हें बंगले किराये दे दिये जांय लेकिन वो भी एक्सेपशनल केसेज में तो यह कहना कि राज्य सरकार भ्रष्टाचार मिटा रही है वह गलत है उल्टा भ्रष्टाचार तो पहले से ज्यादा हुआ है और उसके मिटाने के लिये अभी तक कुछ नहीं किया गया है।

दूसरी बात है यहां की बेरोजगारी और यहां जो कुछ भी बेकारी है उसके बारे में। बेरोजगारी और बेकारी के लिये हमारी सरकार की ओर से छुट पुट चाहे जो काम होते हों लेकिन कोई बड़ा काम नहीं हो रहा है। न लोगों को इस बात के लिये प्रोत्साहन दिया जा रहा है, न लोगों में वह इच्छा पैदा की जा रही है जिससे लोग ज्यादा से ज्यादा परिश्रम करें और किसी प्रकार ऐसे अवसर ढूंढे या उपलब्ध करें जहां पर बेकार आदमियों को काम दिया जा सके। डाक्टरों में देखते हैं तो डाक्टरों में बेकारी। आज इन्जीनियरों में देखो तो वहां पर बेकारी और अध्यापकों में बेकारी। एस टी ट्रेन्ड व्यक्ति तो हजारों बेकार हैं।

श्री मनोहरसिंह मेहता : मंत्रियों में भी बेकार हो गये हैं। 26 बेकार हो गये हैं।

श्री आदित्येन्द्र : आज उन पढ़े लिखे लोगों में नाराजगी का होना स्वाभाविक है।

कई झगड़े शिक्षा के सम्बन्ध में होते हैं, युनिवर्सिटी के झगड़ों के सम्बन्ध में आज से दो दिन पहले बहस हुई। मूल में देखा जाय तो शिक्षा का आज कोई उद्देश्य नहीं रहा है। जो लोग आज शिक्षा पाते हैं वे यह नहीं पाते हैं कि शिक्षा पूरी करके कोई काम उन्हें मिलेगा या नहीं। गृहस्थी में प्रवेश करेंगे तो हम अपना और जो कुछ भी गृहस्थ हैं उनका जीवन यापन ठीक कर सकेंगे या नहीं। इसलिये आज नाराजगी हमारे नौजवान दोस्त और विद्यार्थियों में है। जब तक हम इस समस्या को दूर नहीं करते हैं तब तक इसको नहीं मिटा सकेंगे।

आप कहेंगे कि खाली आलोचना करते हैं। क्या ऐसे सुझाव हैं? यह मौका नहीं है सुझाव देने का। मैं इस समय केवल मूल सिद्धान्तों की तरफ इशारा करना चाहता हूं आल इन्डिया कांग्रेस और देश के महान् लोगों ने महात्मा गांधी और जवाहर लाल नेहरू जैसे महापुरूषों की ओर। महात्मा गांधी के बाद हमने उनके सिद्धान्तों को तिलांजली दे दी। रोजाना अखबारों में मिनिस्टरों और दूसरे लोगों के बारे में पढ़ते हैं कि

(श्री आदित्येन्द्र)

कितना कितना खर्चा किया लड़के और लड़कियों की शादियों में, कितनी शान और शौकत से काम किया। कितना फिजूल खर्चा दूसरे लोगों ने किस प्रकार भेंट दी। और समाज में जो ये झगड़े हैं डावरी प्रथा आदि आज हम उन पर जोर नहीं देते हैं उनके छुटकारे से। आज तो केवल चुनाव पर जोर देते हैं और वोट के सहारे ऊंच नीच भी कर देते हैं और सहारा देते हैं। इससे काम नहीं चलेगा। 47 से पहले जो सादगी थी और 47 के बाद भी जिस सादगी की कल्पना को थी वह सादगी समाप्त होती जा रही है और सादगी छोड़कर जो पूर्व राजा महाराजाओं के जमाने में जिस प्रकार की निराशा होती थी उससे भी कहीं अधिक निराशा आज होती है। स्वदेशी, स्वावलम्बन और श्रम की जो कल्पना की थी वह समाप्त हो गई। राष्ट्र का कोई व्यक्ति, स्त्री और पुरुष लगातार दो घंटे अपने कार्यों के अलावा राष्ट्र के निर्माण का कार्य करेगा, श्रमदान करेगा किसी पार्टी ने और खास कर रूलिंग पार्टी ने, उसके लिये यह इसलिये कहा जाता है क्योंकि वह लगातार शासन में है वह इस प्रकार का आदर्श प्रस्तुत करती, लेकिन किसी प्रकार के श्रमदान का मजाक किया गया। स्वावलम्बन के लिये मैं कहना चाहता हूं कि जब जब हिन्दुस्तान की आजादी की घोषणा कर दी गयी सन् 1945 में और यह मालूम कि 15 अगस्त, 1947 को देश आजाद हो जावेगा तो महात्माजी को विदेशी लोगों ने यह कहा कि देश का विभाजन हो गया पाकिस्तान के साथ सब नदियां चली गई वहां तो खाद्य समस्या हल हो जावेगी और हिन्दुस्तान के पास खाद्य की कमी हो जावेगी तो उन्होंने जवाब दिया मेरा सम्पूर्ण देश, राजस्थान के ही नहीं, केन्द्र के तमाम मिनिस्टर भूखे रहेंगे परिवार के स्त्री पुरुष भूखे रहेंगे यह सब काम होगा और उसके अलावा हिन्दुस्तान की जनता त्यागी और अपरिग्रही है कि एक टाइम खाकर भी संतोष कर लेगी और अमेरिका और रूस से और किसी से भी किसी भी हालत में हाथ नहीं जोड़ेंगे, कपड़ा स्वयम् पछाड़ेंगे– यह स्वावलम्बन की पराकाष्ठा थी न स्वावलम्बन और न ही सादगी। आज महात्माजी तो चले गये और उनके जाने के बाद में स्वावलम्बन की भावना ही समाप्त हो गयी। उद्घोष तो हमारा समाजवाद है लेकिन हमारे एक तरह से जो संस्कार हैं, कर्म है वे

3.45 म. प.

(श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल, सभापति पदासीन)

एक तरह से सामन्तवादी हैं। बचपन से हमारे संस्कार इस प्रकार के रहे हैं जैसे कि सामन्तवादियों के होते हैं। हमारी जो कुछ एक्टीविटीज हैं वे एक तरह से पूंजीवादी है। हर एक यह चाहते हैं कि मेरी कुर्सी न चली जाय और जिनके पास कुर्सी नहीं है वह यह चाहता है कि जो कुर्सी पर बैठा हुआ है उसको हटा दूं। रुपया हमारे पास है। तिकड़म हमारे पास है। हमारे संस्कारों में क्रान्ति होनी चाहिये। इसमें हिंसा नहीं होनी चाहिये किन्तु उसमें अहिंसा हो। कम्यूनिस्टों तक इस माने में जाना चाहूंगा कि व्यक्तिगत सम्पत्ति चाहे रहे या न रहे और व्यक्तिगत सम्पत्ति रहेगी तब तक यह नहीं हो सकेगी।

इन तमाम बातों के अलावा तीसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं और फिर बन्द कर दूंगा। तीसरी बात जो है वह शराब बन्दी।

(श्री आदित्येन्द्र)

चार साल, पांच साल पहले एक आन्दोलन किया गया, एक सत्याग्रह किया गया। हमारी सरकार में खलबली मची। सरकार ने भी इस ओर सोचा। उधर केन्द्र में उप प्रधान मंत्री मोरारजी भाई थे। वे भी इस पक्ष के थे कि शराबबन्दी की जाय। उन्होंने भी कहा कि कुछ हम देने के लिये तैयार हैं। लोग इस विचार के थे कि शराबबन्दी की जाय और इसी प्लेटफार्म से यह कहा गया कि 72 के मार्च के आखीर तक पूर्ण शराबबन्दी कर दी जावेगी। मैं समझता हूं कि पूर्ण शराबबन्दी लागू होने का तो सवाल ही नहीं हैं। डेढ वर्ष से तो ऐसी प्रवृत्ति चल रही है कि शराब को और बढ़ाया जाय। मुझे दुख इस बात का है कि मेरे पुराने साथी जिनके साथ बहुत दिनों तक रह कर काम किया हमारे फाइनेन्स मिनिस्टर श्री शोभारामजी, जिनके पास एक्साइज एण्ड टेक्सेशन भी है, वे बड़ी भावना से इस कांग्रेस, उस समय के प्रजामण्डल में आये। सिगरेट पीते थे, उसको उन्होंने छोड़ दिया। नगे पैर। जूते छोड़ दिये। आज वे बार बार कई तरह की बातें करते हैं। रुपया बढ़ना चाहिये, आमदनी सरकार की बढ़नी चाहिये चाहे वह किसी तरह से बढ़े। इससे बड़ी हानि हुई है। आज सब जगह अनुचित ढंग से काम करने की प्रवृत्ति बढ़ी है।

एरियर जो हैं जरूर वसूल किये जावें। पर अभी भी जो बड़े कहलाने वाले लोग हैं जो अपने हथकण्डों से रिश्वतें खिला पिला कर करोड़ों रुपया करों का जो दबाये बैठे हैं, इनसे आज भी वसूल मुस्तैदी से नहीं किया जाता। वे देने को तैयार नहीं। जो गरीब हैं उससे तुरन्त ले लिया जाता है।

तो जब तक आप रुपये की टर्म में सोचते रहेंगे यह काम आप नहीं कर पावेंगे। इस बारे में कनविंस भी किया कि इससे गरीब उठेगा, उसकी आमदानी भी ज्यादा बढ़ेगी अगर शराब बन्द कर दी तो। पर आज तो आंखे मूंदें ये लोग न जाने किधर दौड़ रहे हैं।

इस पर मैं सोचता हूं कभी कभी कि मद्रास की सरकार ने इसे खतम कर दिया। और लोगों ने भी कर दिया और थोड़े दिनों में महीने, दो महीने, चार छः महीने में जिन ने शराबबन्दी की थी वे सब समाप्त होवेंगी। इसका प्रश्न ही उठ जावेगा, यही नहीं बल्कि शायद इसकी चर्चा करना भी अपराध माना जावेगा। शायद लोग यहां तक बढ़ जावें कि इसकी चर्चा करने वाले को दण्डित भी किया जावे।

तो आज कम से कम हमारी सरकार इस बात को समझे। आज जो यह प्रस्ताव आया है वह भी सरकार की इसी तरह की गलतियों के कारण आया है, सरकार को सावधान करने के लिये आया है। प्रस्ताव पास हो जावेगा, यह तो हम भी नहीं मानते पर यह बात जरूर है कि सरकार सावधान हो जावे यह हम चाहते हैं। इस कम्पलीसेन्सी में न रहें कि सब काम उसका ठीक ठाक चल रहा है और कुछ सोचने की जरूरत नहीं है।

आज मिनिस्टर कहीं जाते हैं किसी दुकान का उद्घाटन करने या पंचायत भवन का शिलान्यास करने अथवा स्कूलों का उद्घाटन करने तो इसके जरिये दो सौ, चार सौ आदमी उनके इर्द गिर्द इकट्ठे हो जाते हैं और इस पर से वे समझ जाते हैं कि आज

Page No 82

(श्री आदित्येन्द्र)

सारी दुनिया उनके पीछे है। पर वास्तव में ऐसी बात नहीं है।

संसद के चुनाव अभी हुए उसमें और आज इन चुनावों की स्थिति में अन्तर है। संसद में कांग्रेस को आम जनता ने इसलिये वोट दिये थे कि केन्द्र में एक मजबूत सरकार होना जरूरी है क्योंकि स्टेटों में उनको महीने, दो महीने, चार छः महीने चलने वाली सरकारों का तजुर्बा हो गया था। इसलिए जनता ने सोचा कि अगर यह हालत केन्द्र में बन गई तो देश की सुरक्षा खतरे में पड़ जावेगी।

पर स्टेटों में जो भी काम सरकार करती है, उसका सीधा असर जनता पर पड़ता है। आज भी जमीनों की समस्या का हल सरकार नहीं कर पाई है। हम 48 में इस समस्या का समाधान करने का सपना लेते थे और कहते थे कि जमीन किसकी, जो बोए जोते उसकी। पर आज आपने क्या किया? बड़े बड़े फार्मों पर लोग टूट पड़े और वे लोग खेती करने लगे जिनके पास और दूसरे कई काम धन्धे हैं। आज इन फार्मों से उनकी पांच दस हजार महीने की आमदनी है। किसी के पास पचास बीघा का फार्म है, किसी के पास सौ का और दो दो सौ का।

मैं इस मत का हूं कि यह सारी जमीनें उनसे छीन ली जायं और भूमिहीन लोग हैं उनमें बांट दी जाय तो पाप नहीं है। अन्याय नहीं है। हिंसा नहीं है।

अगर इस तरह से समझा बुझा कर इन बड़े बड़े लोगों से जमीनें ले ली जावें तो मैं समझता हूं दस बीस लाख एकड़ तक जमीन निकल आ सकती है जिनको अगर भूमिहीनों में बांटा जावे और उनसे पूरी महनत कराई जावे तो पैदावार और भी अधिक होगी। लोग काम अधिक करने लग जावेंगे। बेकारी मिटेगी।

आज कठिनाई यह है कि एक एक आदमी कई कई काम करता है और उन कामों के बारे में हम यह परवाह नहीं करते कि एक आदमी को इतना ही काम दिया जावे कि जिसमें वह अपना गुजर बसर आराम से, ईमानदारी से, देशहित को देखकर करता रहे और कुछ थोड़ा अपने कठिन समय के लिए बचा भी ले। इसमें कोई ऐतराज नहीं है। पर आज तो स्थिति बड़ी विषम है। पांचसौ हजार रुपया महीना तक हो तो अच्छी बात है। पर इसकी जगह पर पांच हजार, दस हजार हो कैसे काम चले। कल लोग चर्चा कर रहे थे। एक एस्कोर्ट कम्पनी है फरीदाबाद में। उसके मालिक नन्दा का खर्चा रोजाना दो हजार का है। खाली जेब खर्चा। यह कहाँ से आता है? यह सब तो ब्लेक मनी से ही आता होगा।

सरकार के इन्कम टैक्स के कागजों में इतना रुपया तो किसी एक आदमी के पास छोड़ा भी नहीं जा सकता। दो हजार रोज का मतलब है साल का आठ सौ लाख रुपया उनका एक का खर्चा है तो यह उचित नहीं कहा जा सकता। बर्दाश्त भी नहीं किया जा सकता। पर भ्रष्टाचार में सभी चल रहा है।

तो ऐसी स्थिति को बदलने के लिए सरकार को जागृत करने के लिए मेरा

Page No 83

(श्री आदित्येन्द्र)
विश्वास है कि ऐसे अविश्वास के प्रस्ताव लाये जाने चाहिये। इसका जरूर असर होगा।

इसलिये भी यह प्रस्ताव लाया गया है कि शायद पिछले चुनावों में अत्यन्त बहुमत में आने से शायद ये कांग्रेस दल के लोग यह समझने लग गये हों कि दूसरे जो दल हैं जनसंघ, स्वतन्त्र पार्टी, कम्यूनिस्ट, सोशलिस्ट आदि आदि ये सब पार्टियां अलग अलग हैं और एक दूसरे से लड़ेंगे झगड़ेंगे, हम तो पूरी तरह से मौज मनावें। पर इस प्रस्ताव के आने के बाद उनका भ्रम टूट जाना चाहिए। उनको सतर्क रहना चाहिए। उनको समझ लेना चाहिये कि समय पर वे सब भी एक हो सकते हैं।

जहां तक इमर्जेन्सी का सवाल है या देश पर आने वाले संकट का सवाल है, हम सभी एक हैं।

श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर): आप कम्यूनिस्ट पार्टी का नाम न लें। कम्यूनिस्ट पार्टी अपनी बात अलग से रक्खेगी।

श्री आदित्येन्द्र : आप अपनी राय रखिये। पर मैं जो बात बता रहा हूं उन बातों पर महरबानी करके ध्यान दें ठीक तरह से कम से कम। मेरा इतना ही कहना है। मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

(श्री खेतसिंह के खड़े होने पर)

श्री सभापति : श्री प्रद्युम्नसिंह।

श्री प्रद्युम्नसिंह (राजाखेड़ा) : सभापति महोदय, अविश्वास प्रस्ताव पर बहस चल रही है विधान सभा का सत्र प्रारम्भ होने से पहले ही यह बात मालूम हो गई थी।

(व्यवधान)

मैं कह रहा हूं उस समय की बात कह रहा हूं, उसको समझने की कोशिश करें।

एक माननीय सदस्य : जब आप डिप्टी मिनिस्टर थे।

श्री प्रद्युम्नसिंह : जी नहीं।

श्री सभापति : ऑर्डर प्लीज।

श्री प्रद्युम्नसिंह : वे बीच में डिस्टर्ब करते हैं सभापति महोदय। तो मैं यह कह रहा था सभापति महोदय, जिस तरीके से अविश्वास प्रस्ताव इस सदन के अन्दर पेश किया गया है वह इस बात को जाहिर करता है कि अविश्वास प्रस्ताव को लेकर शुरू के अन्दर विरोधी पक्ष के अन्दर एकता का अभाव था और सब लोग सहमत नहीं थे कि राज्य मंत्रिमण्डल के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव रखा जाय आखिर में एक रास्ता निकाला और वह यह कि सदन के निर्दलीय सदस्य श्री मनोहरसिंहजी मेहता द्वारा अविश्वास प्रस्ताव पेश किया जाय। सभापति महोदय, जैसा आपको मालूम ही है फरवरी में आम चुनाव होने वाले हैं। राजस्थान में ही नहीं सारे हिन्दुस्तान में आम चुनाव होने वाले हैं। अब ऐसे करीब समय में राज्य मन्त्रिमण्डल के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव पेश करना इनके लिये स्वाभाविक भी था, क्योंकि आम चुनाव सिर पर है और ऐसे समय में राज्य मन्त्रिमण्डल को छिछालेदार की जाय। उनके लिये यह आवश्यक है, मैं इसमें उनका कोई दोष नहीं मानता हूं। लेकिन सभापति महोदय, जो

(श्री प्रद्युम्नसिंह)

एक बात देखने में आई है कि राज्य मन्त्रि-मण्डल की जो आलोचना की गई है और जो मुद्दे यहां पर उठाये गये हैं ज्यादातर मामलों के अन्दर या तो व्यक्तिगत आधार पर चर्चा की गई है या मन्त्रिमण्डल के किसी एक दो खास सदस्यों के बारे में व्यक्तिगत बात कही गई है लेकिन नीति सम्बन्धी कोई मुद्दे किसी ने नहीं उठाये हैं।

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : अब आप उठा दीजिये।

श्री प्रद्युम्नसिंह : मैं तो उठाऊँगा या नहीं उठाऊँगा लेकिन••••••।

श्री सभापति : आॅर्डर प्लीज। भाषण जारी रखें।

श्री प्रद्युम्नसिंह : तो सभापति महोदय, जैसा आपको मालूम ही है आम चुनाव को मद्देनजर रखते हुए यह अविश्वास का प्रस्ताव पेश किया गया है! यह भी आपको मालूम है कि पिछले लोक सभा के चुनावों के अन्दर जो करारी पराजय का मुँह विरोधियों को देखना पड़ा है उससे इनका इस तरह से अविश्वास प्रस्ताव लाना भी स्वाभाविक है! लोक सभा के आम चुनाओं में उनको यह मालूम हो गया है कि कांग्रेस से टक्कर लेना मुश्किल है क्योंकि उनके पास कोई नीति नहीं है, कोई कार्यक्रम नहीं है और इसी तरह पिछली बार मुंह देखना पड़ा था। सभापति महोदय, राजस्थान के अन्दर जो तरक्की राजस्थान सरकार ने की है वह किसी से छिपी हुई नहीं है। आज जितने विरोधी पक्ष के वक्ता बोले हैं, उन्होंने किसी सिद्धान्त पर नहीं कहा है, किसी खास मुद्दे पर किसी ने कोई चर्चा नहीं की है। यह मैं मानता हूं कि विधान सभा में खाली आलोचना की जाती है। कोई कन्स्ट्रक्टिव डिसिजन नहीं रखे जाते है। माननीय जनसंघ दल के नेता महोदय बोले हैं, संगठन कांग्रेस के नेता बोले हैं और कई माननीय नेताओं ने कहा है लेकिन किसी ने आज कांग्रेस की सराहना नहीं की, केवल आलोचना करने की दृष्टि से कहते है।

सभापति महोदय, यहां पर खासतौर से इस मन्त्रिमण्डल के विरुद्ध जो अविश्वास का प्रस्ताव रहा है और जो दो चार मुद्दे जनसंघ दल के नेता माननीय भैरोंसिंहजी ने उठाये हैं, उन पर मैं अपने विचार जरूर जाहिर करना चाहूंगा। जनसंघ दल के नेता महोदय ने माननीय मुख्य मंत्री महोदय को साम्प्रदायिकता फैलाने की बात कही है लेकिन मैं कहता हूं कि आज सारे हिन्दुस्तान के लोग जानते हैं कि जनसंघ का मुसलमानों के बारे में, माइन्योरिटि के बारे में, उनकी नीति क्या रही है। आज हिन्दुस्तान के प्रान्तों में, विभिन्न प्रान्तों में, जो कुछ माइन्योरिटि के साथ व्यवहार हुआ है, जो कुछ गन्दा वातावरण फैला है, मैं डिटेल में तो नहीं जाना चाहता हूं न कहना चाहता हूं, कई जगह लोगों की यह आम भावना है कि जनसंघ साम्प्रदायिक दल के रूप में हमारे सामने आया है। सभापति महोदय, उन्होंने मुख्य मंत्रीजी पर यह आरोप लगाया है कि जो लोग नौकरी से मुअत्तिल कर दिये गये थे उनको माननीय मुख्य मन्त्री महोदय ने रिन्इन्स्टेट किया है। मेरा निवेदन है कि जो कुछ माननीय मुख्य मन्त्रीजी ने किया है वह एक कोर्ट के आदेश के तहत किया है। आज उनके लिये इस तरह की बात की जाती है कि जमायते–इस्लामी के सदस्य हैं, गलत है। तत्कालीन शिक्षा मन्त्री के द्वारा बहुत

(श्री प्रद्युम्नसिंह)

कुछ केसेज में हो सकता है हिन्दू कर्मचारियों और मुस्लिम कर्मचारियों को फायदा मिला हो लेकिन यह कोट करना कि वे मुस्लिम हैं, मैं समझता हूं यह उचित परम्परा नहीं है। मैं निवेदन करना चाहता हूं जो आर० एस० एस० के लोग प्रशासन में घुसे हुये हैं उनके लिये माननीय जनसंघ दल के नेता महोदय का क्या कहना है ? आज इस तरह वे नोटिंग को पढ़ रहे थे। फाइल के, सारे एक्सट्रेक्ट्स पढ़ रहे थे कि प्रशासन के किसी अधिकारी या कर्मचारी का उनसे पूरा सम्पर्क है। ये आर. एस. एस. के कर्मचारी हैं वरना दुनियां भर को नोटिंग को इस प्रकार वरबेटम कहां से पढ डाला ? यह बात स्वाभाविक है कि आर.एस.एस. के कर्मचारियों की ये हरकतें है। यह बात किसी से छिपी हुई नहीं है। मैं माननीय मुख्य मंत्री महोदय से निवेदन करूंगा कि जो इस प्रकार के आर०-एस. एस. के व्यक्ति प्रशासन में घुस गये हैं, उनको रोकने का पूरा प्रयत्न किया जाय। इस प्रशासन के लिये आस्तीन के सांप है। सिक्रेट को जो आउट करते हैं वे किसी भी सरकारी कर्मचारी के लिये उचित नहीं है चाहे किसी भी पोलिटिकल पार्टी से उनका अलाइनमेंट हो। सभापति महोदय, यहां पर एक बात खासतौर से प्रशासन के बारे में कही गई, कुछ लोगों ने खासतौर से विरोधी दल के लोगों ने वर्तमान मुख्य सचिव, पिछले मुख्य सचिव, आइ० जी० पी० के बारे में कही। सभापति महोदय, मैं इस बात को मानकर चलता हूं जो सदस्य इस सदन में उपस्थित नहीं है, मैं रामानन्द जी की बात से सहमत नहीं हूं। उन्होंने बीच में टोक कर कहा सबको सबके बारे में मालूम है, कौन क्या है, किसने क्या किया है, लेकिन निश्चित रूप से निवेदन करूंगा कि आखिर इतने बड़े हैड आफ दी डिपार्टमेंट का जो अपने महकमें में काम करते हैं कभी किसी के साथ फायदा करना पड़ता है तो कभी किसी के साथ नुकसान भी करना पड़ता है, उनके ऊपर चार्ज लगाना कहां मुनासिब है। सभापति महोदय, एक बात और कही गई खासतौर से वर्तमान मुख्य सचिव के बारे में माननीय भैरोंसिहजी ने कहा बड़े आफिसर है, सुपर टाइम स्केल के आफिसर हैं उनमें किसी भी प्रकार का मन मुटाव पैदा न किया जाय इस प्रकार की बात कही है। सरकारी कर्मचारियों और बड़े उच्च अधिकारियों के बारे में भी बात कही है, यह एक राजनैतिक मसला है, क्योंकि आम चुनाव को देखते हुये उन्होंने सबकी सहानुभूति हासिल करने की कोशिश की है।

श्री रामसिंह कुड़ी (जायल) : आप उसका विस्तार में विवेचन करें।

प्रद्युम्नसिंह : सुनिये, आप सुनने की क्षमता तो रखिये। सभापति महोदय, यहां कहा गया, मैं निवेदन करूंगा कि जो मूल भाव था वह यह था कि वरिष्ठ अधि-कारियों के बीच में भेदभाव फैलाकर एक कर्मचारी की पदोन्नति दी गयी और बाकीके अधिकारियों को सुपरसीड करके मुख्य सचिव बनाया गया। इसके लिए कहा गया कि वरिष्ठ अधिकारियों में असन्तोष है, सेक्रेटेरियट के कर्मचारियों में असन्तोष है। सभापति महोदय, मैं इन दोनों मसलों को अलग अलग लूंगा।

सभापति महोदय, राजस्थान की आर्थिक स्थिति किसी से छिपी हुई नहीं है। अकाल के कारण राजस्थान सरकार के ऊपर जो

(श्री प्रद्युम्नसिंह)

आर्थिक भार पड़ा है वह किसी से छिपा हुआ नहीं है और इसी के कारण ओवरड्राफ्ट की समस्या हमारे सामने आई और इस समस्या को सामने रखते हुए पिछले मुख्य मंत्री जी ने भी और वर्तमान मुख्य मंत्री ने भी और उस समय के मंत्रिमण्डल ने और वर्तमान मंत्रि मण्डल ने सरकारी कर्मचारियों के प्रति पूरी सहानुभूति रखी है और जो कुछ भी सुविधायें उनको दी जा सकती थीं वह उनको दी हैं लेकिन सभापति महोदय, इसके बावजूद यह कोशिश की जा रही है कि उनमें किसी प्रकार से असन्तोष फैले। सभापति महोदय, यह तो प्रजातंत्र है और कभी हो सकता है आप इधर बैठें और हम उधर बैठें और आज के दिन यदि आपने सरकारी कर्मचारियों में फ्रस्ट्रेशन फैलाने की कोशिश की तो उसका नतीजा अच्छा निकलने वाला नहीं है। आपको भी उतनी ही परेशानी का सामना करना पड़ेगा।

साथ ही साथ सभापति महोदय, वरिष्ठ अधिकारियों को लेकर कहा गया है कि सुपरसीड किया तो माननीय सभापति महोदय, मैं इस बात को मानने वाला हूं कि मुख्य मंत्रीजी का अपना अधिकार है कि वह किसी को भी मुख्य सचिव बनावें। हिन्दुस्तान के अन्दर मैं आपको कई मिसाल दे सकता हूं कि जहां 20–20 आइ० ए० एस० आफिसर्स को सुपरसीड करके चीफ सेक्रेटरी बनाये गये हैं। उत्तर प्रदेश में बनाया गया, मद्रास में बनाया गया, यू०पी० के अन्दर तो 7 डी० आइ० जी० को सुपरसीड करके आइ० जी० बनाया गया श्री सम्पूर्णानन्द जी के जमाने में। अगर सही प्रशासन चलाना है, अपनी नीतियों को कार्यान्वित करना है तो मुख्य मंत्री जी को अधिकार है कि वे अपनी पसन्द का आइ० जी० और चीफ सेक्रेटरी रखें।

माननीय सभापति महोदय, भैरोंसिंहजी ने एक बात और कही। मैं सरकार के अन्दर रहा हूं इसलिये मुझे मालूम है। उन्होंने जाहिर करने की कोशिश की है आर. ए. एस. आफिसर्स की पदोन्नति के बारे में। ऐसा मालूम पड़ा उनके भाषण से जैसे कि सरकार ने इस मामले में कोई बहुत बेईमानी की हो या सरकार की नीति खराब हो। जहां तक मुझे ध्यान है इस मामले में मैरिट को सुप्रीम कोर्ट ने भी माना है। एक सरकुलर निकला था उसको शायद नहीं माना। ऐसा मुझे ध्यान पड़ता है कि मैं तो राजस्थान सरकार को मेरिट के मामले के अन्दर बधाई देना चाहता हूं हिन्दुस्तान में राजस्थान पहली स्टेट है जिसने मेरिट फार्मूला माना है।

सभापति महोदय, वर्तमान मंत्रिमण्डल के विरुद्ध जिसको अभी चार महीने ही हुए हैं बने हुए उसके बारे में अविश्वास का प्रस्ताव पेश किया गया है, मैं तो यह कहूंगा कि जिस सिन्सीयोरिटी के साथ वर्तमान मंत्रिमंडल ने जो जो घोषणायें की हैं उनको क्रियान्वित करने की कोशिश कर रहा है। यह सही है कि देश के अन्दर बेरोजगारी की समस्या राजस्थान में ही नहीं है बल्कि सारे देश में यह समस्या मुंह बाये खड़ी है। आज बंगला देश की समस्या होने के कारण हमारे ऊपर 600–700 करोड़ रुपये का खर्चा करना पड़ रहा है, उसके कारण से कीमतें भी बढ़ी हैं। सभापति महोदय, हमको मालूम है कि देश के अन्दर पूंजीपतियों के ऊपर इस सरकार ने अंकुश लगाया है और

(श्री प्रद्युम्नसिंह)

उसके कारण से पूंजीपतियों ने नये उद्योग लगाना बन्द कर दिया है और इसके कारण से बेरोजगारी की समस्या और भी बढ़ती जारही है। मैं तो कहूंगा कि इसके लिए रास्ता निकालना चाहिए और आज हमारे दल के अन्दर इसका चिन्तन करने लगे हैं कि मिक्स्ड इकोनॉमी कन्ट्री के अन्दर चलने वाली नहीं है। आज मिश्रित अर्थव्यवस्था से देश का भला होने वाला नहीं है। सब चीजों को राज्य के अन्दर लेना पड़ेगा क्योंकि मिक्स्ड इकॉनॉमी फेल होती जा रही है। अगर इसको आप एलाउ करते हैं तो देश की दौलत चन्द हाथों में चली जाती है। तो आज जो देश की समस्यायें हैं, उनके कारणों से राजस्थान के ऊपर भी प्रभाव पड़ा है, इसको हम नजर अन्दाज नहीं कर सकते।

सभापति महोदय, मैं निवेदन कर रहा था कि सरकार की सिन्सीयेरिटी के अन्दर, नीति के अन्दर और नीयत के अन्दर हम अविश्वास करके नहीं चल सकते, यह बात हमारे सामने है। जैसा आपको विदित है कैश प्रोग्राम के तहत आप कहेंगे कि एक एक जिले के अन्दर हजार आदमियों को रोजगार देने से क्या बेरोजगारी की समस्या हल हो जायेगी? यह निश्चित बात है कि हजार आदमियों को रोजगार देने से बेरोजगारी की समस्या हल नहीं हो सकती, लेकिन हमारी सिन्सीयेरिटी के अन्दर हम इसको मानकर चलें कि देश के अन्दर बेरोजगारी की समस्या है उसको किस तरह से हल किया जाये उसी दिशा में हमारे कदम बढ़े हैं। कैश प्रोग्राम के तहत एक हजार आदमियों को रोजगार देने की कोशिश की है। सभापति महोदय, बेरोजगारी की दिशा में राजस्थान सरकार ने जो कदम उठाया वह बेरोजगार इंजीनियरों को भत्ता देने की बात कही, डॉक्टरों को भत्ता देने की बात कही और शिड्यूल्ड कास्ट्स के ग्रेजुएट्स को भत्ता देने की बात कही और उसको कार्यान्वित किया जा रहा है। यह बहुत ही महत्वपूर्ण बात है।

सभापति महोदय, मैं दूसरी बात जो निवेदन कर रहा था वह यह है कि यहां पर माननीय विद्युतमंत्री जी के खिलाफ जिन माननीय सदस्य ने यह अविश्वास का प्रस्ताव पेश किया है उन्होंने उनके लिये व्यक्तिगत बातें कहीं। सभापति महोदय, अविश्वास प्रस्ताव के अन्दर बड़ी बदकिस्मती सदन की यह रही है कि हम समझते थे कि हमें कोई नयी बातें सुनने को मिलेंगी, लेकिन आज इतने भाषण हुए सब छोटी-छोटी बातों को लेकर हुए.......

श्री खेतसिंह (शेरगढ़) : अध्यक्ष महोदय, इतना पोचा भाषण भैरोंसिंह जी का कभी नहीं रहा है जितना कि आज था।

श्री भैरोंसिंह : आज तो वृद्धिचन्द्र जी का भाषण होता आइ. जी. के खिलाफ तो राजी होते।

श्री प्रद्युम्नसिंह : सभापति महोदय, मुझे आखिर में यही निवेदन करना है कि अविश्वास प्रस्ताव को सदन स्वीकार नहीं करे और इसको नामन्जूर कर दिया जाये।

श्री जसराज (भिनाय) : मेरा नाम दूसरे नम्बर था इसलिए मैं बोलूंगा।

श्री प्रेमसिंह सिंघवी (छबड़ा) : आज दलबदलुओं में से कोई नहीं बोलेगा ऐसा निर्णय ले लिया है।

श्री सभापति : श्री शिवचरण सिंह ।

श्री शिवचरण सिंह (महुआ) : सभापति महोदय, मांडलगढ़ से आने वाले माननीय सदस्य श्री मनोहरसिंह जी मेहता द्वारा जो अविश्वास का प्रस्ताव रखा गया है उसके सन्दर्भ में एक बात निवेदन करना चाहूंगा। ये विरोधी दल के बैठने वाले माननीय सदस्य चाहे स्वतन्त्र पार्टी के सदस्य हों, चाहे जनसंघ पार्टी के सदस्य हों, यह उनके खोखलेपन का ज्वलंत उदाहरण है। यह अविश्वास का प्रस्ताव केवल आने वाले चुनावों की भूमिका मात्र है और आने वाले चुनावों की भूमिका में आज के आखिरी दिन में एक निर्दलीय सदस्य द्वारा अविश्वास का प्रस्ताव रखा गया है वह बड़े दया के काबिल है क्योंकि अच्छा होता विरोधी पक्ष का यह अधिकार है कि सत्ता पक्ष की कुछ खामियां सामने लायें या नीति में कोई कमी रही तो उनको सामने रखते हुए कोई दलील दें और सत्ता की खामियां सामने रखकर अविश्वास का प्रस्ताव पास करायें या सत्ता प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करें तो कोई गैर-वाजिब बात नहीं थी लेकिन माननीय मनोहरसिंह जी ने अपने अविश्वास के प्रस्ताव में जो भी बातें प्रकट कीं उससे ऐसा लगता है कि कुछ व्यक्तिगत बातें उन्होंने रखीं और दूसरे लोगों ने बहकाकर इनको सामने कर दिया है। यही मैं मानता हूं और इसी प्रकार का कन्ट्रीब्यूशन जनसंघ और स्वतंत्र पार्टी के नेताओं की तरफ से था। उन्होंने जो जो घिसी पिटी बातें कहीं ऐसा लगता है कि वह इसलिये कहीं कि पांच सालों में कही हुई बातें शायद भूल न गये हों और सत्ता पक्ष पर क्या असर हुआ है मैं निवेदन करना चाहता था। अविश्वास प्रस्ताव के जरिये जो भी बातें कहीं गई हैं उनका लेखाजोखा करें तो राजस्थान की पहली सरकार ने और इस सरकार ने बहुत बड़ी उपलब्धियां प्राप्त की हैं।

प्रशासन के बारे में जो कुछ कहा गया है उसके बारे में ज्यादा नहीं कहना चाहता हूं, लेकिन इतना जरूर कहना चाहूंगा कि प्रशासन में कहीं बुराई है तो वह किनके कारण है यह मुद्दा मैं सदन के सामने रखना चाहता हूं। हमारे प्रशासन में कुछ सेबोटियर्स हैं और ये सेबोटियर्स जिनके भेजे हुए हैं वे सारे प्रशासनतंत्र में रोड़े अटकाये हुए हैं और यह इस ओर बैठने वाले और उस ओर बैठने वाले माननीय सदस्य जानते हैं कि ये सेबोटियर्स कौन लोग हैं? ये सेबोटियर्स हैं जो आर० एस० एस० और स्वतन्त्र पार्टी के हैं जो ऐसे ऑफिशियल सीक्रेट तक आपको देते हैं। इस सदन में जिन कागजों को लेकर माननीय सदस्य जोर-शोर के साथ बोलते हैं और जितने मामले यहां रखे गये हैं उन्हीं आधार पर मैं प्रमाणित करना चाहता हूं कि ऑफिशियल फाइल्स से किस तरह से सेबोटियर्स कागजात उड़ा कर पहुंचाते हैं। क्या माननीय सदस्य कह सकते हैं कि जितने कागज उन्होंने यहां पढ़े हैं क्या माननीय सदस्य ने दरख्वास्त देकर सही प्रतिलिपि ली है? उनके इस रवैये से ही स्पष्ट रूप से मालूम होता है कि उस ओर बैठने वाले माननीय सदस्य ...

श्री प्रेमसिंह सिंघवी : आप भी तो ले जाते हो। आप भी लाकर देते हो सूचनाएं।

(व्यवधान)

श्री शिवचरणसिंह : मैं तो देता हूं या नहीं देता, यह तो आप भी जानते हैं। अब आपके पास और कोई रास्ता तो है नहीं,

(श्री शिवचरण सिंह)

इसलिए मेरा नाम नहीं लेंगे तो आपका पीछा कैसे छूटेगा ? लेकिन यह तथ्य है कि हमारे प्रशासनिक तंत्र में सेबोटियर्स हैं और ये सेबोटियर्स ही हमारे प्रशासनतंत्र के रोड़े हैं जो सेबोटियर्स करते हैं। तो इस बात का हम प्रयत्न कर रहे हैं कि इन सब को किस प्रकार से ठीक करें और किस प्रकार से प्रशासन का शुद्धिकरण करें।

श्री भैरोंसिंह : मन्त्रिमण्डल के थोड़े सेबोटियर्स को तो बाहर निकाला है और थोड़े रह गए हैं।

श्री शिवचरणसिंह : कौन सेबोटियर है और कौन नहीं, यह तो देखना हमारा काम है। अगर हम मंत्रिमण्डल से बाहर नहीं निकलते तो आपकी चकल्लस कैसे बनाते ? हमने अपने बोलने का अधिकार प्राप्त किया है इसलिए आज यहां बोल रहे हैं।

(व्यवधान-अश्रव्य)

श्री खेतसिंह : तभी तो मालूम होगा कि आपके लोग इसमें घुसे हुए हैं।

श्री कृष्णकुमार गोयल (कोटा) : आज इस तरह से बोलने से ही मार्क मिल जाएंगे कि कौन एक्सपर्ट है। आज चीफ मिनिस्टर मार्किंग करेंगे इसलिए सब ठीक तरह से बोल रहे हैं।

श्री बरकतुल्ला खां : आपकी रिकमण्डेशन पर नहीं लेने वाला हूं।

श्री खेतसिंह : अध्यक्ष महोदय, मैं एक बात का निवेदन करना चाहता हूं कि बार-बार यह हमको इस बात को कह कर झेंपाने की कोशिश करते हैं कि इन सब को निकाल दिया है। हम इससे झेंपने वाले नहीं हैं। हम मन्त्रिमण्डल में आयेंगे तो अपनी मेरिट के आधार पर आयेंगे अगर डिजर्व करते हैं तो, लेकिन आपकी सिफारिश से नहीं आने वाले हैं।

श्री प्रेमसिंह सिंघवी : बरकत साहब किस खुशी में ताली बजा रहे हैं।

(व्यवधान)

श्री शिवचरण सिंह : तो, अध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन कर रहा था कि इन नीतियों को क्रियान्वित करने में हमारे दल का कैसा रवैया रहा है यह सबको विदित है। अगर हम भूमि-सुधार के प्रश्न को लें तो राजस्थान ही एक प्रांत है जहां पर आज दस करोड़ बीघा जमीन कल्चरेबल काबिल काश्त है उसमें से आठ करोड़ बीघा जमीन जमींदारों के, जागीरदारों के माध्यम से लेकर किसानों को दी है। यही एक प्रान्त था और इस प्रान्त की सरकार थी जिसने मुआवजा जमींदारों और जागीरदारों को देने के पश्चात् तमाम किसानों को भूमि का अधिकार दिया है। आप उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश की मिसाल लें। यू.पी. और मध्यप्रदेश में जनसंघ की और दूसरे दलों की सरकारें रही हैं जो बड़ी जनता की हमदर्दी की बातें करती हैं उन्होंने जो जमीनें जमीदारों और जागीरदारों से ली हैं उसका मुआवजा किसानों से रुपया प्राप्त करके बोंडों के रूप में दिया जा रहा है। इसका स्पष्ट मतलब यह है कि भूमि-सुधार के मामले में राजस्थान की हुकूमत सबसे आगे रही है और दूसरे दलों की सरकारें इस

(श्री शिवचरण सिंह)

काम को क्रियान्वित करने में पीछे रही हैं। हमारी राजस्थान सरकार ने किसानों को अधिकार दिया है और जागीरदारों और जमीदारों को मुआवजा दिया है वह केन्द्रीय सरकार अथवा राजस्थान सरकार के अपने रुपये के माध्यम से दिया है।

जहां तक रोड्स का सवाल है, इलेक्ट्रिसिटी का सवाल है अथवा एज्यूकेशन का सवाल है, बीस साल के शासन में बहुत प्रगति हुई है। मैं आंकड़ों के आधार पर जो प्रगति हुई है उसको बता देना चाहता हूं जिससे उनको आगे याद रहे। हमारे यहां जहां तक रोड्स का सवाल है....

श्री श्रवणलाल (हिन्डौन) : इसके साथ साथ यह भी बता दीजिये कि पहले आपके पास जमीन कितनी थी और मिनिस्टर बनने के बाद कितनी जमीन हो गई ?

श्री शिवचरण सिंह : मेरे पास एक बीघा जमीन भी नहीं बढ़ी है मिनिस्टर बनने के बाद। और अगर एक बीघा जमीन भी आप साबित करदें तो मैं उस आई हुई जमीन को छोड़ने को तैयार हूं। आप आइए आपको दे दूंगा।

श्री मदनसिंह (दांता रामगढ़) : हरिजन हैं इसलिए दे दो।

श्री श्रवणलाल : आपके नाम से नहीं है तो क्या हुआ, आपके रिश्तेदारों के नाम पर है। आप तो ले नहीं सकते थे मिनिस्टर होने के कारण क्या आप उन रिश्तेदारों की जमीन को छोड़ने के लिए तैयार हैं ?

श्री शिवचरण सिंह : मैंने कहा ना कि आप आइए आपको दे दूंगा और आपके नेता अगर भूमिहीन होंगे तो उनको भी दे दूंगा।

तो, अध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन कर रहा था कि हमारे यहां कुल 5 वाटर वर्क्स राजस्थान बनने के समय थे। लेकिन आज हमारे यहां 334 वाटर वर्क्स बन रहे हैं। 106 वाटर वर्क्स शहरों में हैं। जहां तक गांवों का सम्बन्ध है 370 वाटर वर्क्स गांवों में चल रहे हैं और 486 पूरे बन चुके है।

जहां तक स्कूलों का सम्बन्ध है, हमारे यहां राजस्थान बनते समय केवल ढाई हजार स्कूल थे और आज हमारे राजस्थान में 23 हजार स्कूल हैं। जहां पहले एक करोड़ का एज्यूकेशन का बजट था वहां आज 46 करोड़ रुपये का एज्यूकेशन का बजट है। इन बातों को आप देखिए। यह हमारी उपलब्धियां हैं जो मैं आपको बता रहा हूं। यह प्रगति के आंकड़े मैं आपके सामने रख रहा हूं जिससे पता लगता है कि राजस्थान सरकार ने कितनी प्रगति की है। लेकिन आप तो हमेशा यही कहते रहेंगे कि कुछ प्रगति नहीं हुई। जब आदमी फ्रस्ट्रेटेड हो जाता है, उसको कहने के लिए कुछ नहीं रह जाता तो वह गाली देता है। आज जो कुछ सुझाव आप देते हैं उसके लिए हम आपको धन्यवाद देते हैं, आप धन्यवाद के पात्र हैं। लेकिन मैं एक बात निवेदन करना चाहता हूं कि जो बार-बार यह कहा जाता है कि पांच साल में नहीं किया गया तो इधर बैठने वाले माननीय सदस्य तो जानते ही हैं और उधर बैठने वाले माननीय सदस्य भी जानते हैं, और अखबारों के माध्यम से सारे राजस्थान की जनता भी जानती है कि कांग्रेस की नीतियों के कारण किस कदर

(श्री शिवचरण सिंह)

राजस्थान आगे बढ़ता जा रहा है। आज आप जानते हैं कि राजस्थान हिन्दुस्तान का एक बोर्डर प्रान्त है, यहां की आबादी को देखते हुए और यहां की विशेष परिस्थितियों को देखते हुए, यहां की तरक्की अवश्यम्भावी है। केवल टीका-टिप्पणी के आधार पर किसी पर कीचड़ उछालने की कोशिश की जाय, या तो नेताओं पर झूठे सच्चे इल्जाम लगाने की कोशिश की जाय तो उससे यह स्पष्ट रूप से साबित होता है कि इन दलों के पास कोई कार्यक्रम नहीं है। मैं आज सदन के माध्यम से यह निवेदन करना चाहता हूं कि जनता के सामने यह आपका केवल कहना भर होगा और जनता भी समझ लेगी कि पिछले पांच साल में इनका किस प्रकार का कण्ट्रीब्यूशन पब्लिक इन्ट्रेस्ट में रहा है और किस प्रकार का कण्ट्रीब्यूशन ये असेम्बली में देकर आए हैं। इसलिए मैं आपसे निवेदन करता हूं मनोहरसिंह मेहता कि आप अपने इस अविश्वास के प्रस्ताव को वापिस ले लें, इसी में आपकी शोभा है। वरना आपके प्रस्ताव की जो डिफीट यहां पर होगी उसको देखने में मुझे भी शर्म महसूस होगी। इसलिए मैं पुनः निवेदन करना चाहता हूं कि आज तो आपको मौका मिलेगा, पता नहीं भविष्य में आप हम मिलें या नहीं, इसलिए मैं माननीय मनोहरसिंहजी मेहता साहब से निवेदन करूंगा कि वे बड़े पवित्र हृदय के व्यक्ति हैं, उनका मन भी यह चाहता है, उनको तो लॉबी में दबाया गया है इसलिए उन्होंने यह प्रस्ताव रख दिया है। इसलिए मैं निवेदन करूंगा कि आप इस प्रस्ताव को वापिस ले लें, यही मेरा प्रस्ताव है।

श्री हरिवल्लभ शर्मा (सवाई माधोपुर): सभापति महोदय,..........

श्री सभापति: कृपया समय का ध्यान रखें।

श्री हरिवल्लभ शर्मा: माननीय मनोहर सिंह जी मेहता द्वारा जो अविश्वास का प्रस्ताव आज प्रस्तुत किया गया है मैं उसका अनुमोदन करता हूं। इस मंत्रिमण्डल का चार महीने पहले गठन हुआ। इस चार महीने पहले बने मंत्रिमण्डल से लोगों में ऐसी आशा की लहर दौड़ी थी कि इससे कुछ न कुछ प्रशासनिक परिवर्तन नजर आएगा। लेकिन राजस्थान भर में भ्रष्टाचार व्याप्त है उपर से लेकर नीचे तक और रेड-टेपिज्म, वर्षों तक किसी दरख्वास्त पर फैसला नहीं होता है। यह अभी तक चला आ रहा है। मुख्य मंत्री महोदय ने यह घोषणा की थी कि या तो मैं जिन्दा रहूंगा या भ्रष्टाचार? परन्तु वही काम हो रहा है। उनसे यह अपेक्षा की जाती थी कि वे इस ओर शीघ्रता से काम करेंगे। वर्तमान मुख्य मन्त्री को बहुत ही सोच समझकर बनाया गया है। बेदाग का नारा देकर उनको बनाया गया तो यह उमीम्द हो चली थी कि वे निष्पक्ष रूप से प्रशासन में अच्छा काम करेंगे। यह जो अनुभव है इस पीरियड का उसका सीधा अर्थ है और उससे आम जनता को निराशा ही हाथ लगी है। ये तो एक मुनीम की तरह बैठे हुए हैं और यहां पर हाई कमाण्ड की आज्ञा का पालन कर रहे हैं। हमारे भूतपूर्व उपाध्यक्ष महोदय के भाग्य का छींका टूटना था और अब वे मन्त्रिमण्डल में आकर बैठ गये। आखिर हमें उनसे बहुत बड़ी आशा थी।

(श्री हरिवल्लभ शर्मा)

आपके सामने मैं छोटी छोटी बातें बताता हूं। मामूली सी चीजें हैं।

शिक्षा मंत्री जी आपने स्कूलों को क्रमोन्नत किया था। आपने शिक्षा विभाग को राज्य सरकार की तरफ से एक नीति निर्धारित की है। जिला परिषद की सिफारिश आती है तो शिक्षा निरीक्षक उसका निरीक्षण करते हैं। प्रत्येक स्थान पर जाकर जहां के लिये जिला परिषद की सिफारिश होती है उस स्थान पर जाकर यह देखते हैं कि स्कूल क्रमोन्नत करने के लायक बना है, अथवा नहीं, छात्र संख्या निर्धारित है या नहीं है। यह एक माप–दण्ड स्कूल को क्रमोन्नत करने के लिये आपने बनाया था। परन्तु यह मापदण्ड आपका धरा का धरा रह गया। आपके पास मैं जो भी विधायक पहुंच गया उसके कहने के अनुसार आपने उसके स्कूल को क्रमोन्नत कर दिया। जिस जिस विधायक ने कहा इस 2 स्कूल को क्रमोन्नत कर दो, आपने कर दिया। परन्तु इसका परिणाम क्या रहा ? मेरे जिले के बारे में ही मैं निवेदन करना चाहता हूं। सवाई माधोपुर, खण्डार विधायी क्षेत्र का एक भी स्कूल क्रमोन्नत नहीं हुआ। शिक्षा निरीक्षक की रिपोर्ट मौजूद है और जितने आवश्यक कमरे होने चाहिये वे मौजूद हैं। उनको क्रमोन्नत नहीं किये गये, उनकी छात्र संख्या थी 450 और कमरे थे 8/8. शिक्षा विभाग द्वारा जो पेटर्न निर्धारित है उसके अनुसार इस पर कार्यवाही नहीं हुई। एक क्राइटेरिया आपने बनाया था, उसका कोई पालन नहीं किया गया। एक राज की बात कहना चाहता हूं। आपने कहा कि विधायक हमारे पास नहीं पहुंचे। आप भी चाहते हैं कि जैसे राजा महाराजा को जाकर भेंट की जाती थी उसी प्रकार से गद्दी बदलने पर इन मंत्रियों से भी जाकर भेंट की जाये और इस प्रकार जिन कांग्रेस के विधायकों ने भेंट ली उनको जागीर देदी। सवाई माधोपुर में इस वर्ष कॉलेज खोला गया इसके लिये मैं आभारी हूं।

एक बात कॉलेज के विषय में निवेदन करना चाहता हूं। अगस्त के महीने में कालेज खुला, आज तक वहां पर कोई इन्तजाम नहीं है। कॉलेज के छात्रों के लिये फर्श नहीं है। अब अक्टूबर के महीने में सेक्शन भेजी है और जो फर्नीचर खरीदना चाहिये था वह अभी तक नहीं खरीदा गया है। छात्रों ने टोकन स्ट्राइक की, चार दिन तक कॉलेज नहीं खुला। कलेक्टर साहब ने आश्वासन दिया परन्तु कुछ भी नहीं हुआ। जनता यह जान गई कि जो चार वर्षों से चला आ रहा था वही आज भी चल रहा है। वही धांधली आज भी चल रही है। किसी क्राइटेरिया के बगैर स्कूल को क्रमोन्नत कर दिया जाता है। कागजों को जल्दी नहीं निकाला जाता है इसलिये इस ओर भी मैं आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं। वहां पर जो कॉलेज खुला है उसमें इस वर्ष फर्स्ट ईयर टी. डी. सी. वालों को एडमिशन दिया गया है। परन्तु अभी तक नई कॉलेज बिल्डिंग का फाउन्डेशन नहीं लगा है तो वह कब तक पूरा हो पायेगा ? यह कह दिया गया है कि जुन के महीने में स्कूल को तैयार कर देंगे। यह कब पूरा हो पायेगा क्योंकि राज्य सरकार दिसम्बर से तो चुनावों में फंस जायेगी। तीन महीने में किस प्रकार से दस लाख की लागत का भवन आप तैयार कर लेंगे, यह सम्भव नहीं लगता है।

(श्री हरिवल्लभ शर्मा)

जहां तक मुख्य मन्त्रीजी का सम्बन्ध है वे प्यारे मियां के नाम से मशहूर हैं। यह बोझा तो जबरदस्ती इन्दिराजी ने इन पर लाद दिया है। करें भी क्या? यह तो एक केयर टेकर गवर्नमेंट है। इस गवर्नमेंट का काम कैसे चल रहा है उसका एक नमूना आपको बता रहा हूं। सभापति महोदय, मेरी तहसील खण्डार में ग्राम जयसिंहपुरा के कुछ हरिजन के ऊपर एक बड़े फार्म के खातेदार ने थानेदार से मिल कर झूंठा केस बनाया और वहां के 6/7 लोगों को पकड़ कर थाने में बुलाया और उन्हें यह कहा गया कि भाई इसके फार्म की फसल को तुम्हारे मवेशियों ने नष्ट किया है। यह बात जरूर है कि 20 बीघा जमीन इन लोगों ने काश्त की है और उस बड़े खातेदार के मवेशियों ने उनकी फसल को नष्ट किया। अब उल्टा हरिजनों पर केस बनाया गया। थानेदार ने उनको जेवड़े से बांध दिया और बिठा दिया। उसके बाद दो सिपाही उन पर बिठाये गये। उनके पैरों को भी बांध दिया गया और बांधकर थानेदार ने उनके डन्डे देना शुरू किया। उनकी उंगलियों से खून बहने लगा, सारा शरीर खून से भर गया। गांव में त्राहि-त्राहि हो गई। उनका पता नहीं था रात के 8 बजे तक उनको मारा गया और जब उनकी हालत ज्यादा खराब हो गई तो थानेदार घबराया। उसने पांच आदमियों को छोड़ा और कहा कि 1750/- रुपया लाओ नहीं तो तुम्हारी भी यही हालत होगी। बाकी दो आदमियों को वहीं पर रखा। वे आदमी उस हालत में कांग्रेस के नेताओं के पास गये, लेकिन, सभापति महोदय, यह बात कहते हुए कष्ट होता है कि जनप्रतिनिधियों ने, जो सेवा के काम के लिये होते हैं, उन्होंने अपना यह प्रोफेशन बना लिया। वे लोग सब लोगों के पास गये और किसी ने उनका साथ नहीं दिया। कोई भी थाने में जाकर यह कहने को तैयार नहीं हुआ कि इनको छोड़ दें। जो सेवा करने का नाम लेते हैं, उनकी यह स्थिति है।

आखिर में, सभापति महोदय, वे सरपंच के पास पहुंचे। सरपंच से कहा महाराज 1750 रुपयों का किसी न किसी तरह से इन्तजाम करो तो हमारी जान बच जायेगी वरना हम मर जायेंगे। सरपंच ने कहा मेरे साथ चलो। हम एस. पी. को रिपोर्ट करने चलते हैं। वे भाग कर एस. पी. के पास गये। रात को एक स्पेशल ट्रक मंगवाया। उनको एक दरख्वास्त दी। दूसरे दिन एस. पी. साहब के यहां से फोन से उनको इत्तला मिल गई कि एस. पी. साहब आ रहे हैं। परन्तु फिर भी यह नहीं किया कि उनको छोड़ दें। उसने क्या किया, दो तीन घन्टे उनको अलग से छिपा कर रखा और शाम हुई कि दोनों को छोड़ दिया, दो सिपाहियों के साथ में बैरक से बाहर निकाल दिया उस वक्त उनके शरीर से खून बह रहा था। वे बेचारे चल तो नहीं सकते थे पैरों में खून निकल रहा था। ऊपर से पैर सूज रहे थे और नीचे से जैसे जल जाता है और फफोले हो जाते हैं वैसे ही उनकी पगतलियां हो गई थी। उनको पास में लेजाकर जंगल में छोड़ दिया गया। एस. आई. साहब ने थाने की तलाशी ली, लेकिन दोनों नहीं मिले। जब वे नहीं मिले तो सारे गांव के लोगों को यह शक हुआ कि इन दोनों को समाप्त कर दिया गया है। उनके

(श्री हरिवल्लभ शर्मा)

परिवार के लोगों में कोहराम सा मच गया। थानेदार से कहा कि भाई जान अब क्या फायदा है। मैं स्वयं गया था इनको देखने के लिए कि क्या हालत है और क्या स्थिति वहां की है, क्योंकि उन्होंने साफ साफ कह दिया था कि हम कांग्रेस वालों के पास हो आये हैं लेकिन वे थानेदार के पास जाने के लिए तैयार नहीं हैं। अपना मुलाहिजा नहीं तोड़ना चाहते। मैं वहां गया और थानेदार को बुलाकर कहा। कोहराम मचा हुआ था। मैंने पूछा कि कहां भेजा है बताओ तो एस. आई. साहब के सामने तो नहीं कहा और कान में थानेदार ने कहा कि श्रीमानजी, मेरी तो जान गई लेकिन मेरे बच्चे बरबाद हो जायेंगे। आप किसी से न कहें। वे सुरक्षित हैं लेकिन उनकी स्थिति गम्भीर है। तो मुझे ज्यादा चिन्ता हुई। भावना से कर्त्तव्य ऊंचा है और मैंने थानेदार से पूछा कि साफ साफ बताइये कि कहां पर हैं। उसने कहा कि मैंने रिश्तेदार के यहां भेज दिया। रिश्तेदार के यहां भेजा है तो कौन से रिश्तेदार के यहां भेजा है। उसने मुझसे कहा कि 11 बजे रात को एक गांव में भेजा है। गांव में उन्हें भेजा है तो मालूम कर सकते हैं। मोटर मैंने भेजी तो वे उस गांव में नहीं थे तो और भी हाहाकार मच गया। मोटर वापस आ रही थी तो खून सड़क पर बहता हुआ जा रहा था और वे बैठकर कूल्हे के सहारे रिसकते हुए जा रहे थे। हम उनको लायें लेकिन एच. आई. (H.I.) साहब ने उनको नहीं देखा। मैंने उनसे कहा कि मैं वापिस जाता हूं और सवेरे कोर्ट में पेश होजाना। सभापति महोदय, मैं वहां से वापिस जब आने लगा तो सारे गांव वालों ने मेरी मोटर को घेर लिया और कहा, महाराज, हमारी ताकत नहीं है कि हम कोर्ट में पेश हो जायं। मैं रातोंरात उनको सवाई माधोपुर लाया। कोई मेरे साथ नहीं आ रहा था तो मैंने खण्डार वाले लीडरों से कहा कि तुम्हें शर्म आनी चाहिए। तब उन्होंने एक दो आदमी मेरे साथ भेजे। सवाई माधोपुर आये और दूसरे दिन उनका डाक्टरी मुआयना किया गया। उनसे मैंने कहा कि माननीय मुख्य मन्त्रीजी के बंगले पर डेपुटेशन लेकर चलेंगे। उन्होंने कहा कि आप भी चलें तो मैंने कहा कि मैं नहीं जा सकता। आप वोट उनको देते हैं। बैरवा ऐसा ठोस होता है कि गरदन कट जाय लेकिन कांग्रेस को वोट देगा। माननीय मुख्य मन्त्रीजी के सामने दरख्वास्त पेश की। माननीय मुख्य मन्त्रीजी ने एक ऑर्डर दे दिया कि सीनीयर ऑफिसर को भेजकर इसकी इन्क्वायरी कराई जाय। सभापति महोदय, आपको आश्चर्य होगा कि वह सीनीयर आफिसर आज तक नहीं पहुंचा है डॉक्टरी मुआयना होगया, एच. आई. ने बयान सबके ले लिये। शेष क्या है? एक मोटा सा नमूना पेश किया है (विपक्ष से शेम, शेम) कि किस प्रकार से लोगों की सुनवाई होती है। (समय-समाप्ति-सूचक घन्टी)

सभापति महोदय, मैंने बहुत सूक्ष्म रूप से कहा है।

श्री सभापति : 15 मिनट हो गये हैं।

श्री हरिवल्लभ शर्मा : सभापति महोदय, मैं निवेदन यह कर रहा था कि एक आदमी मुख्य मन्त्री जी के सामने आजाय।

(श्री हरिवल्लभ शर्मा)

एन्क्वायरी हो चुकी हो और पैर उसके इतने सूजे हुए थे लेकिन उनमें दम नहीं है कि एक थानेदार के खिलाफ एक्शन इमीजियेटली ले लें। क्या रिफ्लेक्शन वहां के खण्डार तहसील के बैरवाओं पर इसका पड़ेगा ? माननीय मुख्य मन्त्रीजी घोषणा करते हैं और लोग अपनी जान बचाने के लिये रुपया थानेदार को देते हैं। क्यों ? अपनी जान बचाने के लिये। यहां आने का उन्होंने साहस किया तो माननीय मुख्य मन्त्रीजी ने क्या एक्शन लिया ? किसी प्रकार का कोई एक्शन नहीं लिया। एन्क्वायरी तो फाइल पर होगी। फाइल एक दिन में मंगवा सकते थे और कुछ न कुछ डिसीजन देना चाहिए था, लेकिन उसके खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं की गई। मैं उनको बता देना चाहता हूं कि जो आपके कट्टर वोटर हैं उनकी यह हालत है तो हमारे वोटर्स का क्या होता होगा। आज हरिजनों के लिए बड़ी लम्बी चौड़ी दलीलें देते हैं कि हम वह कर रहे हैं और यह कर रहे हैं। वे जानते हैं कि मन्त्रि–मण्डल के अन्दर क्या हुआ ? बरकत साहब भी यहां हैं और आसमान से मन्त्रीजी बैरवा साहब को ले आये।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : कोटा से आये हैं। राजस्थान के हैं। आसमान से नहीं आये हैं।

श्री हरिवल्लभ शर्मा : आपकी यह आवाज थी और बरकत साहब ने यह वायदा किया था कि मैं भ्रष्टाचार को समाप्त करके रहूंगा, रेडटेपिज्म को समाप्त कर दूंगा। यह भ्रष्टाचार और रेडटेपिज्म को समाप्त करने का नमूना है ?

मैं उसकी बात भूल गया था। इन चार महीनों में आपने क्या मार्ग दर्शन किया? इम्प्रेशन पब्लिक पर क्या डाला है?

(समय–समाप्ति–सूचक घंटी)

इधर-उधर खड़े हो कर आप विकास की बात कहेंगे। हम कब कहते हैं कि विकास नहीं हुआ, लेकिन प्रश्न यह है कि जितना कागजों में विकास का काम दिखाया हुआ है उसमें छीजत कितनी हुई है ? उस काम में लोग बाग खा कितने गये ? हम उन बातों को कहते हैं। जब तक क्रियान्वयन नहीं होगा तो कैसे मालूम पड़ेगा। पॉलिसीज के क्रियान्वयन में दिक्कत पहले भी थी और आज भी है। चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों का स्थानान्तरण सवाई माधोपुर से जैसलमेर और जालौर कर दिया जाता है और जालौर से सवाई माधोपुर कर दिया जाता है। एक एल० डी० सी० अलवर जिले वाले को डूंगरपुर और डूंगरपुर वाले एल० डी० सी० को कहां जाना चाहिए ? प्रशासन की इस तरह की लिस्टें आज भी निकल रही हैं और पहले भी ऐसी लिस्टें निकली थीं। यह बात बताती है भ्रष्टाचार को। एक डिस्ट्रिक्ट का एडमिनिस्ट्रेशन बहुत बड़ा होता है। जो 10 वर्ष से घर के बाहर हैं उसको घर जाने का जरिया नहीं है और आज जो 10 वर्ष से घर पर ही हैं वे वहीं रहेंगे क्योंकि उनके पास सिफारिश है। क्या अन्तर लाये हैं आप ? इसके बारे में मैं डाइरेक्टर साहब कृषि विभाग को लिख चुका हूं। हमारे यहां एस०पी० गुप्ता साहब ने डाकू लोगों का उन्मूलन करने का प्रयत्न किया था सवाई माधोपुर में, लेकिन उनका स्थानान्तरण जयपुर में कर दिया, उनको हटा दिया गया।

Page No 96

श्री मोहनलाल मोदी (नीम का थाना) : आप का यही तर्क है और क्या इसी वजह से आप अविश्वास के प्रस्ताव पर बोल रहे हैं कि गुप्ता साहब को वहां से हटा दिया ?

श्री हरिवल्लभ शर्मा : आपकी पालिसीज का जो क्रियान्वयन है वह क्रियान्वयन पहले की तरह से दिखाई दे रहा है या नहीं दिखाई दे रहा है। आप पहले की तरह से ही कर रहे हैं या नहीं कर रहे हैं ये सारी चीजें आपको बता रहा हूं। इससे ज्यादा और क्या बात हो सकती है ?

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : सभापति महोदय, ट्रान्सफर्स में भी रिश्वत का बाजार गर्म है। वहां नजराना हाजिर करो तो ट्रान्सफर्स मुल्तवी हो जाते हैं।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : इतने अर्से के बाद भी आपको नजराना याद है। आपने भी नजराने में कुछ कमी नहीं रखी थी आपके जमाने में आपकी रियासत में, लेकिन वह अब नहीं मिलेगा।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : वह तो आटे में लूण के बराबर था लेकिन आज तो आटे और नमक की मिकदार एक सी है।

श्री मोहनलाल मोदी : आज तो नजराना ...

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : मुझे तो नजराना याद ही रहा है लेकिन आप तो रोज ही कर रहे हैं। यह तो गुप्त नजराना है और जेब गरम कर रहे हैं।

श्री हरिवल्लभ शर्मा : सभापति महोदय, एक नया उदाहरण दे दूं। चार महीने की बात कहूंगा।

(समय समाप्ति सूचक घन्टी)

श्री सभापति : माननीय सदस्य ...

श्री हरिवल्लभ शर्मा : एक हमारे यहां सवाई माधोपुर के पास ...

श्री सभापति : मैं यह कहना चाहता हूं कि 20 मिनिट तो आप बोल चुके हैं और आपकी पार्टी की सूची में और भी मेम्बरों का नाम है।

श्री हरिवल्लभ शर्मा : सभापति महोदय, अभी एक बात और कहूंगा।

सभापति महोदय, यह वन विभाग भीखाभाई के पास है। एक हमारे यहां पर जो सवाई माधोपुर से कलकवाड़ तक 20 मील का घना फारेस्ट है जिसमें कम से कम 10 हिन्दुओं के तीर्थ स्थान हैं और पिकनिक स्पाट्स हैं। वह एक ठेकेदार-नाम नहीं बताना चाहता हूं-जो कि जयपुर का रहने वाला है। उस ठेकेदार ने उस फारेस्ट की इजाजत जब आप दल-बदल कर रहे थे उस समय ले ली। मैंने इस मामले को विधान सभा में उठाना चाहा, लेकिन वन मंत्री महोदय को पता लगा। आम चर्चा थी कि ठेकेदार ने कहा कि मैंने 80 हजार रुपये दिये। जब मंत्री महोदय को यह पता चला तो फौरन उसको कैंसिल कर दिया भूतपूर्व मंत्री महोदय ने। चार महीने पहले जब यह नया मंत्रि-मण्डल बना तो उन्होंने उसको रिओपन किया।

श्री गोकुल प्रसाद शर्मा : आप नाम बता दें।

श्री हरिवल्लभ शर्मा : किस का नाम चाहते हैं ?

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : ठेकेदार का ?

श्री हरिवल्लभ शर्मा : नूर मोहम्मद।

श्री जयनारायण सालोदिया (निवाई): अब क्या करेंगे ?

श्री हरिवल्लभ शर्मा : उस फाइल को रिओपन करने की कार्यवाही चल रही है। सेक्रेटेरियेट में बहुत से पीछे पड़ रहे हैं और उसको थोड़ा टाला जा रहा है। वह ठेकेदार यह कहता है कि खाली 9 हजार में जागीरदार से खरीदा था और सादा कागज पर लिखा-पढ़ी है। मैं राज्य सरकार को चेतावनी देना चाहता हूं कि 52-54 में जब राजस्थान का निर्माण हुआ था तो इसी नूर मोहम्मद ने इसका ठेका लिया था राज्य सरकार से लिया था। इस फोरेस्ट को ....

श्री गोकुल प्रसाद शर्मा : अब तो कैंसिल कर दिया है।

श्री हरिवल्लभ शर्मा : इसके बड़े दुष्परिणाम होंगे। वहां पर कई तीर्थ स्थान हैं। हिन्दुओं के तीर्थ स्थान हैं। मुसलमानों के तीर्थ स्थान हैं। अब उसको फ्री हैण्ड दिया जा रहा है। आप कहते हैं कि अविश्वास प्रस्ताव लाये हैं। आप ऐसा परिवर्तन दिखाइये, जिससे यह लगे कोई परिवर्तन आया है। जहां तक समस्याओं के सुलझाने की आवश्यकता है फैमिन का काम चला, लगभग 80 हजार की कीमत के पो.डब्ल्यू.डी. का मेटिरीयल पड़ा है। उनको कोई भी उठा कर ले जा सकता है। 3 मील की सड़क का टुकड़ा है। 20-25 हजार रुपये का काम है। रोड पर मिट्टी लगाने की मांग आज तक सेंक्शन नहीं हुई है। बीसों बार लिख भेजा है। वह सामान्य सड़क जो फैमिन के समय हुई थी, उस पर मिट्टी पड़ी है। एक डेढ़ मील का टुकड़ा है। आज से पहले तो राजपूतों के प्रति विद्वेष की भावना थी। आप चुनाव में जायेंगे तो वहां के लोगों को कहेंगे कि हम क्या करें। आप विधायक ही ऐसा चुनकर भेजते हैं। इस जनतन्त्रात्मक प्रणाली में कुछ नहीं हुआ। आपके वही विचार हैं। चीफ सेक्रेटरी के अण्डर में कोई कमेटी बना दी। उसे अखबारों में छपा दिया। इससे कुछ होने वाला नहीं है। व्यवस्था करेंगे तो आप की भलाई है। वैसे तो आप जानते हैं कि 6 महीने की अवधि है। मैं इस ज्वाइन्ट नो कॉन्फीडेन्स प्रस्ताव का अनुमोदन करता हूं।

श्री गिरधारीलाल व्यास : सभापति महोदय, 7 बजे तक डिबेट चलेगी। इसलिये प्रार्थना है कि सदन का समय बढ़ा दिया जाये।

एक माननीय सदस्य : बहस चलने तक।

श्री सभापति : सदन की अनुमति हो तो 7 बजे तक बढ़ा दिया जाये।

एक माननीय सदस्य : बहस चलने तक।

श्री सभापति : अभी प्राविजनली, सदन की अनुमति से सदन का समय 7 बजे तक बढ़ाया जाता है।

Page No 98

श्री चुन्नीलाल इन्दलिया (नोखा) : सभापति महोदय, हमारे यहां भूमि विकास बैंक के चुनाव हो रहे हैं। राजस्थान सरकार ने वहां टैलीग्राम दिया है कि चुनाव इस लिए पोस्टपोन किये जा रहे हैं, क्योंकि एमरजेंसी लागू है।

श्री सभापति : इसका क्या महत्व है।

श्री चुन्नीलाल इन्दलिया : क्या एमरजेंसी लागू है? 60–70 मील से चलकर आदमी इकट्ठे हुये हैं।

श्री हरिवल्लभ शर्मा : यह किस लिये लगाते हैं।

श्री रामकिशन (बैर) : सभापति महोदय.....

श्री सभापति : क्या बोलना चाहते हैं?

श्री जसराज (भिनाय) : सभापति महोदय,

श्री सभापति : उनका नाम केवल लिया है।

श्री जसराज : ये तो हमेशा बोलते रहते हैं।

श्री सभापति : अगर आप उनको पहले मौका देना चाहते हैं तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

राव श्री हरिसिंह (बेगूं) : सभापति महोदय...

श्री सभापति : सदस्य के नाते आपका भाषण पहली बार सुन रहा हूं।

राव श्री हरिसिंह : इस अविश्वास प्रस्ताव का कार्यभार श्री मनोहरसिंह मेहता के ऊपर रखा गया है। यह आश्चर्य है।

श्री रामकिशन: वह तो हमने उदयपुर की परम्परा निभाई है।

श्री रामचन्द्र आर्य : केवल इसलिए रखा गया है।

एक माननीय सदस्य : सभापति महोदय, श्री मनोहरसिंह मेहता ने महाराणा प्रताप का रोल अदा किया है।

राव श्री हरिसिंह : अच्छा होता कि यह अविश्वास का प्रस्ताव माननीय सभापति महोदय के दल द्वारा रखा जाता।

श्री सभापति : सभापति को क्यों घसीटते हैं। मैं तो दल बदल कर यहां बैठा हूं।

श्री विजयसिंह : इनको यह भी पता नहीं है कि सभापति का कोई दल होता है? उप मन्त्री के पद पर रह चुके हैं।

एक माननीय सदस्य : सभापति दूसरे दल के हैं।

एक अन्य माननीय सदस्य : अब तो दल बदले हुओं को बदलो।

राव श्री हरिसिंह : आप को निर्दलीय का मतलब मालूम है?

श्री सभापति : आर्डर प्लीज।

राव श्री हरिसिंह : अच्छा होता, माननीय जनसंघ के नेता, स्वतन्त्र पार्टी के विरोधी दल के माननीय नेता रखते तो समझ में आ

(राव श्री हरिसिंह)

सकता है। लेकिन मेहता जी को अभिमन्यु बनाया है। अगर किसी व्यक्ति को ही अभिमन्यु बनाना था तो रामानन्द जी यहां पर थे। तो उनकी एक अच्छी वक्तृता सुनने को मिलती। परन्तु यह कार्य भार माननीय श्री मनोहरसिंह जी पर रखा गया। तो जिस जिम्मेदारी से इस कार्य को वहन करना था, जिस प्रकार आपने वहन किया है। उससे तो मुझे और भी आश्चर्य हुआ है। इस अविश्वास प्रस्ताव का जन्म व्यक्तिगत विरोध से हुआ है। मैं श्री मनोहरसिंहजी मेहता को सदैव से जानता हूं। मेरे क्षेत्र के बिल्कुल नजदीक हैं। अगर आपने नीतियों के आधार पर रखा था तो उस आधार पर कहना था। परन्तु आपने उस आधार पर न कह कर आपने केवल अपना भाषण 15-20 मिनट तक माननीय शिवचरणजी माथुर के व्यक्तित्व पर ही आधारित रखा है। मुझे दुख हुआ। इस प्रकार का अविश्वास प्रस्ताव व्यक्ति को लेकर सदन में रखा जाय और उस पर बड़े गवेषणात्मक ढंग से हर बात को रखा जाय जब कि इक्वायरी का मौका भी न मिल सके तो इस तरह करेक्टर असेसिनिशन करना उचित परम्परा तो है नहीं। इसलिए मैंने निवेदन किया, मुझे दुख और आश्चर्य हुआ।

श्री प्रेमसिंह सिंघवी (छबड़ा): बैठ जाओ।

राव श्री हरिसिंह: व्यक्ति के अन्दर मत भेद होना, विचारों में मतभेद होना यह नेचर का नियम है, विदिन द सेम स्पेसी, डार्विन ने कहा है, स्पेसी में भी मतभेद होता है। क्योंकि व्यक्ति २ में मतभेद होता है, इस लिए कांग्रेस के 110 सदस्य हैं, वह एक से हों, या विरोधी दल के सभी सदस्य एक सा दिमाग रखते हों, या सभी माननीय भैरोंसिंह जी जैसे बोलने वाले हों-मैं समझता हूं, ऐसा नहीं हो सकता है। सभी में कोई न कोई कमी होती है, या कोई विशेषता होती है उसको लेकर यहां छींटाकशी करें– यह उचित नहीं होता है। अगर आज किसी नीति को लेकर कहते, शिक्षा नीति के बारे में कहते, उद्योग की नीति के बारे में कहते, श्रम नियोजन के लिए कहते, देश में जो ज्वलन्त समस्याएं हैं उनके बारे में कहते, बेकारी कैसे दूर कर सकते हैं- इसके बारे में कहते और तथ्य पूर्ण बातें कही जाती या सुझाव दिये जाते तो समझ में आता। खैर अविश्वास प्रस्ताव यहां पर रखा गया।

श्री दौलतराम सारण (डूंगरगढ़): बजट सेशन नहीं है यह, यह अविश्वास प्रस्ताव है।

राव श्री हरिसिंह: और इसके सम्बन्ध में अभी तक जो कार्यवाही हुई है, मैं समझता हूं कि यह दूसरा अविश्वास का प्रस्ताव है, परन्तु जिस तरह का है, इसमें जो तथ्य होने चाहिए, वह मैं समझता हूं कि सही रूप से तथ्य नहीं रखे गये हैं।

श्री देवीदत्त गाड़िया: आप रख दें।

राव श्री हरिसिंह: मैं चेष्टा कर रहा हूं, आपने जो तथ्य रखे ...

श्री जयनारायण सालोदिया: आप फर्मा दें।

राव श्री हरिसिंह : वैसे विरोधी दल को यह अधिकार है कि वह आलोचना करे और खूब दिल से करे, जो भी आलोचना करे, वह तथ्यों पर आधारित हो वह अच्छी और स्वस्थ आलोचना मानी जायगी। परन्तु मैं एक छोटा सा उदाहरण पेश करूं, वैसे यहां बहुत से उदाहरण प्रस्तुत किये गये हैं, उतने उदाहरण मैं प्रस्तुत करने नहीं जा रहा हूं। मैं एक उदाहरण प्रस्तुत करता हूं, एक राजा के पास एक मन्त्री था, वह मन्त्री ...

श्री देवीदत्त गाडिया : राजा के नाम से इनको चिढ है।

श्री सभापति : बोलने दीजिये।

राव श्री हरिसिंह : मैं आपके लिए यह उदाहरण रख रहा हूं। आपका बहुत मुख्य रोल है।

तो वह जो भी कार्य करता, लगन से करता, बड़े परिश्रम से करता। परन्तु जो भी कार्य वह करता, राजा हमेशा उसकी आलोचना करता, कमी निकालता। एक बार तंग आकर उस मन्त्री ने सिर काट लिया, अपनी गरदन काट ली, राजा कहने लगा, यह टेढ़ी कटी है। यह स्थिति हैं, आपकी गाडिया जी, आप माफ करें। विरोधी दल की स्थिति यही रही हैं। पहले कहते थे, मन्त्रिमण्डल को छोटा किया जाय। यह शिवजी की बारात है। पता नहीं भैरोंसिह जी क्या क्या संज्ञा देते थे। ऐसा एक हंगामा हो गया था। अब इतना छोटा मन्त्रिमण्डल हिन्दुस्तान में कहीं नहीं है। हिन्दुस्तान में सबसे छोटा मन्त्रिमण्डल कहीं है तो राजस्थान के अन्दर है।

श्री जयनारायण सालोदिया : पीड़ा की बात अब आई।

राव श्री हरिसिंह : दस का मन्त्रिमण्डल हो गया।

श्री विजयसिंह : ठीक दस नम्बरी हैं।

श्री दिग्विजयसिंह : (उनियारा) : दिल से कह रहे हैं।

राव श्री हरिसिंह : आपका अवसर आये तब आप खड़े होकर बोलना।

यह-सब प्रशासन में सुधार करने के लिए और राज्य की वित्तीय स्थिति को हर तरह से सुचारू रूप से व्यवस्थित करने के लिए है और इसलिए है कि जो भी कांग्रेस की नीतियां हैं, वह राजस्थान की जनता के सामने रखें। अच्छा होता, विरोधी दल के माननीय सदस्य उसमें सहयोग देते। यह तो वांछनीय था। जब आपकी बात मान ली गई, इंदिराजी ने आपकी बात मान ली और हिन्दुस्तान के अन्दर सबसे छोटा मन्त्रिमण्डल राजस्थान में बना, फिर भी कमी निकालते हैं, फिर ...

श्री रामचन्द्र आर्य : आपने ज्यादा गड़बड़ी की और ज्यादा पैसा खाना शुरू किया, इसलिए किया।

श्री जयनारायण सालोदिया : यह कहां की परम्परा हैं।

राव श्री हरिसिंह : माननीय रामचन्द्रजी को तो भ्रष्टाचार ही भ्रष्टाचार दिखाई देता है।

श्री विजयसिंह : यह मेजोरिटी को दुखता है।

श्री रामचन्द्र आर्य : इन्दिरा गांधी ने नये मन्त्रिमण्डल का निर्माण किया है, क्योंकि

(श्री रामचन्द्र आर्य)

पुराने पर भरोसा नहीं रहा था इसलिए उसको हटा दिया गया। जो किया पुराने मन्त्रिमण्डल में उसके कारण किसी को भरोसा नहीं रहा, इसलिए हटा दिया गया।

श्री विजय सिंह : सामने तथ्य आने दें। इस मामले में जानकारी है वह पूर्णतया।

श्री सभापति : मैं माननीय सदस्यों को निवेदन करूंगा, माननीय सदस्य भाषण में अनावश्यक रूप से व्यवधान न डालें। कभी कभी का इन्ट्रप्शन, कभी कभी का हस्तक्षेप डिबेट को लिवली बनाता है। लेकिन हर दो मिनट में इन्ट्रप्शन और हस्तक्षेप शोभा नहीं देता।

श्री गिरधारीलाल व्यास : ताड़ना दीजिये।

श्री भैरोंसिंह : ताड़ना आप पर असर नहीं करती है।

श्री सभापति : फिर वही बात प्रारम्भ हो गई।

राव श्री हरिसिंह : यदि आप संगठित हैं तो इस प्रकार के अविश्वास प्रस्ताव में ऐसे सज्जन सदस्य को आगे कर देना-यह अच्छी परम्परा नहीं होती है। किसी अच्छे काम में नेक इरादे के अन्दर एक होकर आप चलें तो वह तारीफ के काबिल बात है। उस एकता की आवश्यकता है और आगे आने वाले समय में हमें एकता ही चाहिए, चाहे इधर बैठने वाले माननीय सदस्य हों या चाहे उधर बैठने वाले माननीय सदस्य हों यह आवश्यक है कि एकता उनमें हो। उस एकता को तो हम पहुंचे नहीं और अविश्वास प्रस्ताव में एकता नजर आयी और अविश्वास प्रस्ताव को रखने का भार जो सौंपा गया। अब इसका परिणाम क्या होगा, वह तो शाम तक मालूम हो जायगा।

आज मैनपावर की जो स्थिति है, आज देश के अन्दर जो ज्वलन्त समस्यायें हैं उनके सम्बन्ध में मैं यह निवेदन भी कर दूं, आज सबसे आवश्यक जरूरत इस बात की है, आज कोई भी समस्या हो, उस समस्या की जड़ तक हम पहुंचे, तभी वह समस्या हल हो सकती है। प्रायः यह प्रयास किया जाता है जैसे एक पौधे को कोई बीमारी लग जाय, उसकी पत्तियां पीली पड़ जायं, तो हम पीली पत्ती को बीमारी समझने लग जाते हैं और उसका इलाज करते हैं और अगर पीली पत्ती झड़ जायं तो समझते हैं कि बीमारी अब नहीं रही है...

श्री दौलतराम सारण : आप यह मानते हैं कि पत्तियों को तो बीमारी लग गई है।

राव श्री हरिसिंह : हमें तथ्य तक पहुंचना चाहिए......

श्री शिवचरण सिंह : यह आपको पीलापन का रोग है।

श्री केसरीसिंह हाड़ा (हिन्डोली) : झड़ने वाले हैं।

श्री बिजयसिंह : सड़ने वाले हैं।

राव श्री हरिसिंह : और हम उस पौधे के ऊपर रसायन का प्रयोग करते हैं तो मैं समझता हूं कि पौधे का काया कल्प हो जाता है। यह आवश्यक है कि शरीर अस्वस्थ है तो उसकी बीमारी मालूम पड़ जाय......

श्री दौलतराम सारण : आप पेड़ में रसायन डाल रहे हैं।

राव श्री हरिसिंह : वरना पेट में दर्द हो और सिर का दर्द बतायें-ऐसा ही यह हुआ है। मध्यावधि चुनाव में सही इलाज हुआ है, और चाहे जिन्हें प्रतिक्रियावादी कहे, या सम्प्रदायवादी कहें उनके दर्द कहीं और है और वह बता कहीं और रहें हैं। उनका इलाज इन्दिराजी ने ठीक किया, उससे सुधार हुआ है।

श्री दौलतराम सारण : इन्दिराजी के भगत, औराई डेम की जमीन के बारे में क्या कहते हैं ?

राव श्री हरिसिंह: उसका भी मैं जवाब दूंगा, उसका भी हिसाब बताऊँगा।

श्री दौलतराम सारण : जवाब हो तो। नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली।

राव श्री हरिसिंह: सभापति महोदय, हम यदि मुद्दे की तह तक पहुंचे तो हमारी समस्याओं का हल हो सकता है। वरना बात बहुत होती है, धर्म परिवर्तन की बात की जाती है, कभी जोधपुर विश्वविद्यालय के अन्दर कोई दंगा भड़क उठता है और राजनैतिक दल उनके अन्दर सक्रिय हो जाते हैं। कभी उदयपुर विश्वविद्यालय में कुछ होता है। कभी हिन्दुस्तान के किसी प्रान्त में होता है। हम यह सोचें कि केवल वह शक्ति या लाठी चार्ज से समस्या हल हो जायगी तो ऐसा सोचना ठीक नहीं है।...

श्री दौलतराम सारण : बोलने के लिए अभी बाकी है।

राव श्री हरिसिंह : हमें समस्या के मूल तक पहुंचना होगा।

शिक्षा नीति की जो बात है, उसके लिए कान्फ्रेन्स होती है, सेमीनार होती है, वहां बहुत सी बातें की जाती है कि शिक्षा की नीति में परिवर्तन किया जाय। लेकिन शिक्षा का जब तक प्रयोगात्मक ढंग से प्राइमरी क्लासेज से सूत्रपात नहीं हो, मैं समझता हूं कि आगे जाकर वह समस्या बहुत बड़ी समस्या के रूप में, मेगनीफाई हो सकता है। मैंने निवेदन किया कि जड़ तक पहुँचेंगे समस्या के तो यह साबित होगा कि बेकारी की समस्या हमारे देश के सामने है और जिस तादाद में मैन पावर का यूटिलाइजेसन होना चाहिए वह नहीं हुआ है.......

श्री केसरी सिंह हाड़ा : यह किसकी गलती है ?

श्री जुझार सिंह : यह किसकी गलती है ?

राव श्री हरिसिंह : संतुलन समाज के अन्दर होना चाहिए। आज जो असन्तुलन की अनुभूति हो रही है उसमें स्वभाविक है। सभापति महोदय, टेक्नीकल एजूकेशन प्राप्त करने का सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हुआ है। मैं भी एम०एस० सी० पढ़ा हुआ हूं। सभापति महोदय, आज जो विश्वविद्यालय में एजूकेशन दी जाती है उसमें सुधार होना बहुत जरूरी है। आज जो विश्वविद्यालय में गवेषण की शिक्षा दी जाती है उसमें भी सुधार की बहुत आवश्यकता है। क्योंकि आज गवेषण और शिक्षा जो दी जाती है विश्वविद्यालय द्वारा, उसमें तीन चीजों को एक कर दिया है। मुझे इस बात की खुशी है कि मैंने इस संबंध में जो प्रस्ताव इस सदन के सामने इस

(राव श्री हरिसिंह)

बारे में रक्खा था वह राज्य सरकार ने मान लिया। लेकिन मैं तो यह चाहता था कि वो काम अलग रहे पर इन्होंने वह तीनों काम विश्वविद्यालय को दे दिये हैं जिससे यह उधेड़बुन कर रहा है। आज कुछ काम विश्वविद्यालय कर रहे हैं गवेषण का और कुछ कार्य विश्वविद्यालय द्वारा नहीं किया जा रहा है, और उस काम को कालेज एजूकेशन डाइरेक्टर कर रहे हैं। मेरा प्रस्ताव तो यह था कि उसे पूरा ही विश्वविद्यालय को दे दिया जाय और एक फेज्ड मैनर में किया जाय। एक कमेटी बना कर उसे दिया जाय।

सभापति महोदय, इसी तरह जब अमेरिका की हाई पावर कमेटी आयी तो मैंने उन्हें भी इस तरह का सुझाव दिया था कि गवेषणार्थ एक लैण्ड ग्राम लेवल टीचिंग रिसर्च की कायम करने की आज आवश्यकता है। और इस कार्य को इन्टीग्रेटेड मैनेर में लिया जाय। और गांव के जो किसान हैं उन्हें इस बारे में, खेती के बारे में, इसकी ट्रेनिंग दी जाय और इस कार्य को व्यापक पैमाने पर किया जाता है तो अच्छा रहेगा। इसमें ऐसा है कि 100 सौ काश्तकार को वहां भेजा जाय। तो सभापति महोदय, हमारे काश्तकार जो कि पढ़े लिखों की तादाद में कम है वो जाकर अपने पहले गांव के सरपंच के पास जायेंगे और सरपंच और वो काश्तकार अपने एम० एल० ए० के पास जायेंगे और यही कहेंगे कि हम वहां जाकर क्या करेंगे। वहां तो किताबी कीड़े रहते हैं। इसके अलावा सभापति महोदय, राजस्थान के पश्चिमी इलाके में एक एरिड जोन है। चूंकि पश्चिमी इलाके का पानी खारा है और अगर विश्वविद्यालय इस कार्य को करता है या अगर हम विश्वविद्यालय को इस काम का उत्तरदायित्व सौंपते हैं कि इस बारे में वही कार्य गवेषणा का करे तो ठीक होगा। आज मैं आपको, सभापति महोदय, बताद्ं कि इस प्रकार का काम इज़रायल में जहां पानी की यही प्राबलम थी, अरब में थी, मिश्र में थी वहां सभी जगह इस प्रोबलम को सोल्व कर दिया है अमेरिका में तो यहां तक हुआ कि समुद्र के पानी को जो की खारा है उसे मीठा पानी बना दिया है और खारे पानी की समस्या को खतम कर दिया है। और यहां पर शिक्षा में भी दलगत नीति हो गयी है। तो मैं निवेदन करता हूं सभापति महोदय, कि······

श्री दौलतराम सारण: यही तो हम कह रहे हैं।

राव श्री हरिसिंह: राज्य सरकार को मेरा सुझाव है कि इस गवेषण को एक फेज्ड मेनर में किया जाय। आज वल्लभ नगर में शोधशाला बनायी गयी है वह विश्वविद्यालय के करीब नहीं है और इस तरह वहां जो काम गवेषणा का हो रहा है वह अन-इकोनोमिक है। इस प्रश्न को बार बार सदन में उठाया गया था कि वहां जो शोधशाला है वह अन-इकोनोमिक है, पर नहीं मालूम क्या बात है इसके पीछे क्या राजनैतिक कारण है कि वह वहां ही है जो कि गलत है। इसलिये मेरा कहना यह है कि इसको एक फेज्ड मेनर में किया जाय ताकि राज्य सरकार को नुकसान नहीं हो, अन-इकोनोमिकल राज्य सरकार को यह नहीं रहे और राजस्थान की जनता को भी इसका समुचित लाभ मिले। और उसे विश्वविद्यालय को सौंप दिया जाय। सभापति महोदय, आज राजनीति के अखाड़ों के कारण यह सभी हो रहा है। तो मेरा सुझाव यह है

(राव श्री हरिसिंह)

कि शिक्षा को राजनैतिक अखाड़े न बनाकर, टैक्निकल एजूकेशन, और दूसरी जो भी आज एजूकेशन दी जाती है उसे भी मीनिंगफुल बनायी जानी चाहिये। और ऐज्यूकेशन चाहे वह टेक्निकल हो, चाहे फिजीकल हो चाहे वह दूसरी एजूकेशन हो उन सभी में कोर्डिनेशन होना चाहिये और इनमें समन्वय होना चाहिये। और इसके अभाव में अगर इनमें समन्वय नहीं हुआ तो मैं आपको यह निवेदन कर दूं की शिक्षा में प्रगति नहीं हो सकेगी और मेरा सुझाव यह भी है कि विश्वविद्यालयों को दल गत नीति से दूर रखा जाय इसमें राजनीति आती है तो फिर शिक्षा का स्तर गिरता ही जायेगा।

(समय समाप्ति सूचक घन्टी)

सभापति महोदय, मुझे इस विषय में इतना ही कहना है। और श्री मनोहर सिंह मेहता को मेरा ·········

श्री रामकिशन : अब तो समाप्त करें।

राव श्री हरिसिंह : आपको मौका मिले तब आप भी बोल लेना। सभापति महोदय, मेरा एक निवेदन है यह जो सुझाव मैंने दिये हैं उन्हें क्रियान्वित किया जाय।

श्री रामकिशन : ये आप सरकार को कह रहे है या एम०एल०एज. को ? अगर इधर की तरफ कह रहे हैं तो उधर क्या देख कर कह रहे हैं।

राव श्री हरिसिंह : मैं तो सभी को कह रहा हूं।

श्री रामकिशन : मेरे ख्याल से सरकार को कह रहे है।

राव श्री हरिसिंह : सभापति महोदय, कुछ माननीय सदस्यों ने अपने यहां जो मिश्रित अर्थ व्यवस्था को खराब बताया है उसके बारे में मेरा तो यही निवेदन है कि जो आज हमारे यहां अर्थ व्यवस्था मिश्रित चल रही है वह हमारी परिस्थितियों के अनुकूल है। कुछ माननीय सदस्यों का कहना है कि इससे पून्जीवाद को बढ़ावा मिलता है एकाधिकारवाद बढ़ता है। लेकिन मेरा इस बारे में यह विचारधारा है कि अच्छे से अच्छा पब्लिक सेक्टर लगा दिया जाय अगर जो आज यहां बात की जा रही है कि रूस और चीन में है उसे ही ठीक माना जाय तो मैं वह वहां की परिस्थितियों के अनुसार ठीक हैं पर हमारे देश में यह व्यवस्था अनुकूल नहीं हो सकती है। और अगर लोग कहते हैं कि प्राईवेट सेक्टर से लोग पून्जीपति हो जाते हैं तो उसके लिये हमारी सरकार कुछ टेक्स रख सकती है टेक्सेज वगैरहा लगा कर ताकि पून्जीवाद नहीं फैल सके और एक ही आदमी के पास धन एकत्रित नहीं हो सके। सरकार को टेक्सेशन की ऐसी नीति निर्धारित करनी चाहिये कि किसी भी व्यक्ति के पास धन एकत्रित नहीं हो और सन्तुलन अर्थ व्यवस्था का बिगड़े नहीं। ऐसा नियमों में प्रावधान हो कि असन्तुलन नहीं हो और यह जो कहा गया कि प्राईवेट सेक्टर बिलकुल बन्द कर दिये जायं उसका मैं हामी नहीं हूं मैं तो मिश्रित अर्थव्यवस्था का समर्थन करता हूं और इतना ही कह कर मैं माननीय सदस्य श्री मनोहरसिंह मेहता को विनम्र निवेदन करूंगा कि वह अपना अविश्वास का प्रस्ताव जो वर्तमान मन्त्रि मण्डल के खिलाफ रखा है उसे जल्दी

(राव श्री हरिसिंह)

से जल्दी वापिस ले ले । और इतना ही निवेदन कर मैं अपना भाषण समाप्त करता हूं ।

श्री सभापति : श्री रामकिशन ।

श्री रामकिशन (बैर) : सभापति महोदय, आज विधान सभा में माननीय सदस्य श्री मनोहरसिंह मेहता ने एक अविश्वास प्रस्ताव वर्तमान मन्त्रि मण्डल के खिलाफ रखा है मैं उसका समर्थन करने के लिये खड़ा हुआ हूं । मैं इसका समर्थन क्यों कर रहा हूं दृष्टिकोण अलग है और जो माननीय श्री भैरोंसिहजी शेखावत ने समर्थन उसका किया वह अलग अलग है ।

एक माननीय सदस्य : एक माननीय सदस्य को बलि बकरा बनाया गया है ।

श्री रामकिशन : आप कृपया शान्त रहे । आप बात न करे । तो मैं यह निवेदन कर रहा था सभापति महोदय कि आज जो अविश्वास प्रस्ताव आया है वह किसके लिये है ? क्या यह श्री बरकत साहब के खिलाफ में आया है या इन्द्रा गान्धी की कांग्रेस सरकार के खिलाफ आया है जोकि उन्होंने यहां बनायी है ? ये कौनसी कांग्रेस की सरकार के खिलाफ आया है ? या तो पहले कांग्रेसी सरकार थी उसके खिलाफ में आया है तो सरकार तो दोनों ही वक्त कांग्रेस की थी । तो सवाल यह आता है कि कौनसी कांग्रेस सरकार के विरूद्ध यह प्रस्ताव आया है ।

श्री गिरधारीलाल व्यास : जिस कांग्रेस से आप निकले ।

श्री रामकिशन: आप शान्त रहिये । तो मेरा निवेदन यह है कि इस प्रस्ताव को लाने का क्या कारण है क्या इस कारण से इस सरकार में भ्रष्टाचार है इसलिये तो इसके बारे में कई बार कह चुका हूं कि भ्रष्टाचार का उन्मूलन सम्भव नहीं है । यह उन्मूलन तब तक सम्भव नहीं है, जब तक कि यह मिश्रित अर्थ व्यवस्था को बन्द नहीं की जाय और जब तक कि व्यक्तिगत पून्जी या व्यक्तिगत सम्पति जब तक रहेगी तब तक सही माने भ्रष्टाचार का समाप्त होना सम्भव नहीं है । इसलिये यह बात तो है नहीं चूंकि जब तक समूल पून्जीवाद नष्ट नहीं होगा तब तक भ्रष्टाचार यहां तो क्या दुनिया के किसी भी हिस्से में समाप्त नहीं हो सकता । मेरा विश्वास यह है कि सभापति महोदय, आज करीब दो ढाई साल से हिन्दुस्तान में हवा चली है परिवर्तन की सभी क्षेत्रों में कांग्रेस के इस परिवर्तन की धारा चली और इसका परिणाम यह हुआ कि कांग्रेस के टुकड़े हो गये और कांग्रेस दो भागों में विभक्त हो गई । एक कांग्रेस जो पहले थी जिसमें श्री मुरार जी भाई, श्री जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, इन्द्रागांधी, पाटिल वगैरहा हम सभी थे जो सन् 48 के पहले की कांग्रेस थी । सन् 48 के बाद जब आजादी मिली तो भारत में एक चेतना चली । एक नई राजनैतिक विचारधारा चली जो देश में एक पहले स्ट्रेटेजी पैदा करने लगी कांग्रेस में और थोड़े बहुत लोग अलग हो गये और उस पर वाद-विवाद भी पहले हुआ और कांग्रेस में कुछ आर्थिक नीति के अनुभवी नेता श्री मुरारजी भाई, एस. के. पाटिल व श्री जवाहरलाल नेहरू वगैरहा रह गये जो कि संगठन कांग्रेस है और कुछ आर्थिक और राजनैतिक कारणों से जो आर्थिक नीति इन लोगों ने अपनायी

(श्री रामकिशन)

थी वह देश की जनता के लिये ठीक नहीं थी तो इन्दिरा गांधी प्राइम मिनिस्टर बनने के बाद उसने कहा कि यह जो कांग्रेस की आर्थिक नीति थी वह मुरारजी भाई वगैरह की वजह से आज देश का उत्थान नहीं हो सका और वो यह समझती है कि अगर हिन्दुस्तान का कोई कल्याण कर सकता है तो मैं और मेरे पिताजी ही कर सकते हैं और इसका ही परिणाम यह होगा कि कांग्रेस का विभाजन 72-73 तक एक बार और होना चाहिये ताकि समाजवाद का जो नारा है और समाजवाद की जो नीतियां है उनकी क्रियान्विति हो सके।

श्री खेतसिंह (शेरगढ़) : ताकि विभाजन होने के बाद आप कांग्रेस में आ जाओ।

श्री रामकिशन : इस चक्कर में माननीय सदस्य नहीं रहे। मैं तो कह रहा हूं कि इसी स्ट्रेटेज से विभाजन और होगा और बाद में समाजवाद का लक्ष्य पूरा होगा, आजादी की लड़ाई के लिये रूस में, जर्मनी में, साम्राज्यवाद के विरोध में समाजवाद पैदा हो गया था। उस कांग्रेस में से कई हमारे पुराने साथी कांग्रेस में बैठे हैं। जैसे ही हम कांग्रेस से अलग हुए हमने समाजवाद की स्पष्ट व्याख्या की। जमीन के बारे में उद्योग के बारे में, श्रम नीति के बारे में और आर्थिक विकास के बारे में हमने ठोस विकल्प बताये कि हिन्दुस्तान को इस रास्ते पर चलना चाहिये। अविभाजित कांग्रेस ने उसका मजाक उड़ाया। लेकिन वे ही आवड़ी में कहने लगे कि अब हम भी समाजवाद की ओर बढ़ेंगे। कांग्रेस में यह परिवर्तन विज्ञान की दृष्टि से सही है। उसमें चिन्तन हुआ और मनन हुआ और समाजवाद की धारणा बनी।

वर्तमान सरकारें दिल्ली की, महाराष्ट्र की, राजस्थान की और दूसरे प्रान्तों की समाजवादी हैं या नहीं इसकी कसौटियां क्या है? असली जो समाजवादी हैं और जो जनता में काम कर रहे थे, कांग्रेस के नकली समाजवाद से उनमें हमारे बारे में भ्रम न फैल जायें इसीलिये मैंने इस अविश्वास के प्रस्ताव का समर्थन किया है।

श्री गिरधारीलाल व्यास : असली नकली बता रहे हैं? आपका तो चौपट हो गया मामला।

श्री रामकिशन : नकली न समझलें इसीलिये तो इस अविश्वास के प्रस्ताव का समर्थन किया है। चार महीने में किसी की सरकार चाहे भैरोंसिहजी की हो या लक्ष्मणसिंहजी की हो भ्रष्टाचार नहीं मिटा सकती। हमें यह आशा नहीं है। हमें अफसोस यह होता है कि हिन्दुस्तान के प्रधान मन्त्री और मुख्य मन्त्रियों ने गांव गांव में जाकर घोषणा की कि हम परिवर्तन ला रहे हैं। बरकत साहब, आखिर आपके दल का समाजवाद है क्या? मैं नहीं कहता कि आप समझदार नहीं है। मुझसे तो सब ही ज्यादा है। हिन्दुस्तान की संस्कृति रही है निराकार की पूजा और साकार से मोह। निराकार संसार नाशवान है। वही पूंजी सबसे ज्यादा इकट्ठी करेगा। आखिर आपके समाजवाद का रूप क्या हैं जिसको हम पढ़ सकें समझ सकें। आखिर पता तो लगे जिससे हम भी साथ आ जायें।

कांग्रेस पार्टी आवड़ी के बाद और भुवनेश्वर के बाद यह नहीं बता सकी है कि समाजवाद उसका क्या है? उसकी व्याख्या क्या है और वह कैसे चलेगा? सारी डिबेट

(श्री रामकिशन)

को उस तरह से नहीं ले जाना चाहता हूं लेकिन आज तक कांग्रेस दल ने इस प्रकार की कोई स्पष्ट व्याख्या समाजवाद की नहीं की। उसका साकार रूप क्या है? हम कहते हैं इस देश में कोई ऐसा आदमी नहीं होना चाहिए जिसकी 1500 रुपये से अधिक आमदनी हो महारावल लक्ष्मणसिंहजी हों, चाहे हरिदेवजी जोशी हों, चाहे भरतपुर के महाराजा हो। क्या है आपका समाजवाद स्वरूप बता सकते हैं? कोई ठोस चिन्तन नहीं, मनन नहीं। नारा दे दिया समाजवाद का।

जमीन के बारे में क्या धारणा है तो मंत्रीजी ने जवाब दिया कि चिन्तन कर रहे हैं। आपकी सरकार चिन्तन कर रही है। जो क्रान्तिकारी सरकारें होती हैं वे चिन्तन नहीं करती हैं वह तो एक मिनिट में फैसला करती हैं। आवड़ी में कहा समाजवादी हो गये। तो चिन्तन तो बहुत हो गया। दुनिया के देशों ने विकास किया है। समाजवादी देश हैं उनमें चिन्तन किया गया और फैसले किए गये। राजस्थान की जनता को भ्रम में डालें तो मैं रोक नहीं सकता। आपके संस्कार होंगे। कहते हैं आमदनी की सीमा बांधेंगे, सीलिंग करेंगे, छोटे-बड़े में फर्क करेंगे। जनरलों और फौज की संख्या तय करेंगे नहीं, देश का भला क्या होगा इसको तय करेंगे नहीं, फिर भी आप कहते हैं आपके समाजवाद की स्पष्ट धारणा को देश समझ ले। माननीय वृद्धिचन्द्रजी ने कहा समाजवादी पार्टी के पास तो कुछ नहीं है। यदि हमारे पास बहुमत होता तो हम अपनी सरकार बनाते हैं। हम मानते हैं हम कमजोर हैं। आप कांग्रेस में रहे हों। कौनसी कांग्रेस में? आज की कांग्रेस मे? इन्दिरा गांधी की कांग्रेस। 48 की कांग्रेस नहीं। आज इन्दिराजी की आरती उतारते हो जब कि 48 में उनको गाली देते थे। इन्दिरा गांधी का तो पता नहीं था लेकिन नेहरूजी को जरूर देते थे। मुझे बड़ी हंसी आती है और तरस भी आता है। एक मंत्री कहता है इन्दिरा डॉक्टर है, एक कहता है इन्दिरा कप्तान है। माओत्सेतुंग को जिस प्रकार चीन में सर्वे सर्वा और उसकी पूजा की जाती है उसी प्रकार आज इन्दिरा की आरती उतारते हो।

इस देश की कसौटियां क्या हैं? देश की रक्षा कर सके, रोटी दे सके और चरित्र का निर्माण कर सके। किसी भी सरकार की तीन कसौटियां होती हैं--देश की रक्षा, रोटी और चरित्र-निर्माण। क्या देश के चरित्र का निर्माण हुआ? देश के 23 वर्षों में चरित्र का पतन हुआ है या निर्माण? उसकी जिम्मेदारी किसकी है? जो राज्य करते हैं उनकी। समाज के मुखिया हैं उनकी जिम्मेदारी है। शान शौकत का युग आया है। माननीय मास्टर साहब ने कहा कि शोभारामजी ने सिगरेट छोड़दी थी, चप्पल भी छोड़ दी थी और नंगे पांव थे। मुझे आपको कहना है कि आप किसको कह रहे हैं कि चप्पल भी छोड़ दी थी शोभारामजी ने और सिगरेट भी छोड़ दी। किसको कहा जा रहा है? वह गांधीजी का युग था। त्याग का युग था। आज इन्दिराजी का युग है। भोग का युग है। हमारा आज कोई राष्ट्रीय चरित्र नहीं, कोई राष्ट्रीय धर्म नहीं, कोई राष्ट्रीय पोशाक नहीं, कोई राष्ट्रीय भाषा नहीं और कोई राष्ट्रीय संस्कार नहीं। आज तो राष्ट्रीय कुछ है ही नहीं। कोई धोती पहन रहा है, कोई पेन्ट पहन रहा है,

(श्री रामकिशन)

कोई कुर्ता पहन रहा है और कोई कमीज पहन रहा है, कोई लूंगी लगा रहा है और कोई टोपी लगा रहा है और कोई टोपी नहीं लगा रहा है। इतवार को अंग्रेजी सिनेमा चलता है। भूतपूर्व केबिनेट के मंत्री मिल गये। वे यह समझ रहे थे कि मैं सिनेमा देखने आया हूं। मुझे दिक्कत यह थी कि जीप की जरूरत थी, भरतपुर जाना था। मैं थोड़ी देर में चला गया। भूतपूर्व मंत्री जब मिले तो 300, 400 नौजवान लड़के निकल रहे थे। उनका पहिनावा देखा। शक्ल सूरत देखने है तो ऐसा लगता है कि किसी के बाल बढ़ रहे हैं किसी के लूंगी लगा रखी है, एक ने कहा कि वलगर से क्या बात करते हो। डर्टी से क्या बात करते हो। हम डर्टी हैं। वलगर हैं। यह देश में राष्ट्रीय भावना पैदा नहीं कर सकते। सरकार का पहला मुख्य धर्म था कि राष्ट्रीय भावना और स्वदेश प्रेम सिखाती। 23 वर्ष में कांग्रेस दल, विभाजन से पूर्व और उसके बाद, असफल हो गया। रिश्वत और भ्रष्टाचार की बातें सारे देश और समाज में आपको नक्ल करके फैल गयी। अक्लमन्द के लिए इशारा काफी है। आप देश की सीमाओं की रक्षा नहीं कर सके। दुनिया में यदि बेशर्म सरकार कोई हैं तो यही सरकार है। माओ की मुस्कान हो गयी, गरीबी हट गयी। हर रोज कहते हैं कि जमीन वापिस लेंगे जो दबा ली है चीन ने। हमारी लोक सभा का प्रस्ताव है चीन ने जमीन दबा ली है सो दबा ली, माओ कभी मुस्करा दिये इसलिए हमारे रिलेशन्स चीन से नॉर्मल हो जावेंगे। पाकिस्तान से नॉर्मल हो जावेंगे। राष्ट्रीय बेशर्म सरकार अगर दुनियां में कोई है तो यह है। कई छोटे-छोटे देशों की सरकारों ने आजाद होने के बाद अपनी जमीन वापिस लेने के लिए संकल्प किए हैं। अब यह अलग बात है कि कितना समय इसमें लगे। हो सकता है दस बीस साल लग जावे। अधिक लग जावे। पर इरादा छोड़ा नहीं है।

पर हम दुनिया में सबसे अधिक अपमानित राष्ट्र हैं। हमारी हैसियत है कोई ? इन्दिराजी दुनिया का दौरा करने गई। कभी यू. एस. ए. से कुछ मांग लाई, कभी कनाडा से मांग लाई। दुनियां के कोने कोने में हमारे 27 मिनिस्टर 23 सालों से घूम आये। बरकत साहब आप भी गये थे। बंगला देश के सवाल पर। दुनिया के सारे राष्ट्रों में हम गये। सब जगह खुले आम कहा गया कि वे पाकिस्तान का साथ देंगे। रूस वाले कहते हैं धीरज रखो संयम रखो हम साथ हैं। ह्यूम ने कहा हम चिट्ठी लिख रहे हैं। विली ब्रांट कह रहा है हम चिट्ठी लिख रहे हैं। फ्रान्स ने कहा हम चिट्ठी लिख रहे हैं। हम समझे कि हम कहां हैं दुनिया में ? हमारी हैसियत क्या है ? हम तो एक अपमानित और पराजित राष्ट्र हैं। हम अपनी सीमाओं की रक्षा अपने आप नहीं कर सकते।

यह अविश्वास प्रस्ताव क्यों लाये हम ? किसी एक व्यक्ति या अनेक व्यक्तियों के कारण नहीं। बरकत साहब, शिवचरण या पूनमचन्द से हमारी नाराजगी नहीं है। हमारा तो आपकी नीतियों और उसके रिजल्ट से सम्बन्ध है, उनके बारे में हमारा आपमें अविश्वास है।

रोजगार और रोटी का सवाल है दुनियां में। अंग्रेज छोड़कर गये तो हमें एक चीज सिखा दी। आंकड़े सिखा गये

(श्री रामकिशन)

थे। स्कूलें इतनी बना दीं, अस्पताल इतने कर दिये। यह इतना कर दिया, वह इतना कर दिया। आंकड़ों के बारे में मैं हर बार बताता रहा हूं। पर एक बात समझो। जिस दिन अंग्रेज यहां से गये तो मैं पूछता हूं उस दिन चीन, इण्डोनेशिया, अरब, इसराइल आदि छोटे-मोटे देश किस जगह थे? 80 अरब का कर्जा कराया, 60 अरब की सहायता दुनिया भर से बटोरी, हर देश से भीख मांगी, कोई देश दुनियां का ऐसा नहीं बचा, जिसके सामने हमने अपनी झोली न पसारी हो। आज इतना करजा और सहायता लेने के बाद भी हम हैं कहां? आपने यह कभी देखा? क्या स्थिति है आज हमारी? कभी आपने इसका विश्लेषण किया ईमानदारी से?

जापान और जर्मनी पिछले युद्ध में ध्वस्त हो गये थे, बिलकुल बरबाद कर दिये गये थे। देखते ही देखते आज उन्होंने छलांग मारी है कि वे आज आसमान में उड़ रहे हैं। अगर जापान पर पाबन्दी नहीं लगाई गई तो तीन चीजों में वह दुनियां को पीछे छोड़ जावेगा। इस्पात, कपड़ा और जहाजी उद्योग में।

हमने एक काम में जरूरी प्रगति की है। भाषण देने में। 24 घंटों भाषण प्रधान मन्त्री के भाषण, मुख्य मन्त्री के भाषण फलां मिनिस्टर के भाषण, रात दिन भाषण। सारे अखबार इसी से पटे पड़े हैं। इसमें कोई किसी से पीछे नहीं है। विवेकशून्य भाषण, बाजी में एक दूसरे से बाजी मार रहे हैं। बरकत साहब आपने भी भाषण दिये हैं। जब लड़ाई होगी तो पाकिस्तान की जमीन में होगी, हम कहते नहीं थकते। पर ऐसा कह कर हम पाकिस्तान से लड़ते हैं तो मेरी समझ में आता है कोई मतलब है। मैं खुशी जाहिर करता हूं कि राजस्थान के मुख्यमन्त्री एक अल्पसंख्यक सम्प्रदाय से बने हैं। सेक्यूलर शेप की हमारी रक्षा के लिये यह जरूरी है कि आपस में विश्वास पैदा किया जावे। पर केवल इस व्यक्ति के उठने से या फकरुद्दीन के सेन्टर में ले लेने से सम्पूर्ण मुस्लिम जाति की दरिद्रता समाप्त हो गई हो मैं ऐसा नहीं मानता। आज भी वे अत्यन्त दरिद्र अवस्था में हैं जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती। अन्य जातियों के एक वर्ग विशेष में कुछ पूंजी भी दिखती है अमीर भी हैं, पर इस जाति में तो सम्पूर्ण रूप से गरीब ही गरीब नजर आते हैं।

पर इससे क्या लेना देना बरकत साहब को। ये कुछ लोग तो यह समझ रहे हैं कि समाजवाद हमने नारों में स्वीकार कर लिया है तो चलो सबकी गरीबी समाप्त हो गई। समाजवाद का मुलम्मा चढ़ाकर हमने समझ लिया कि हमारी लड़ाई जीत ली है हमने। इन्दिरा पुराने राजनैतिक खिलाड़ी की बेटी है। वह राजनीतिज्ञ है। होशियार है। हरिजनों के प्रतीक जगजीवनरामजी, और मुसलमानों के प्रतीक बरकत। उनको हाथ में ले लो, और 15 करोड़ वोटों का सौदा पक्का करलो। इसके बाद समाजवाद का क्या लेना देना है।

अगर सही माने में समाजवाद लाना होता आपको तो घोषणा होती। लोकसभा में आपका बहुमत होता है। लाइये न समाजवाद। कौन रोक रहा है आपको। शहरी सम्पत्ति की सीलिंग पांच लाख कर दिया।

(श्री रामकिशन)

यह भी कब बनेगी कैसे बनेगी। अभी बात ही बात है इसका कोई मतलब नहीं। कहां है पांच लाख की सम्पत्ति आज शहरों में ? किसके पास है ? जिसके पास होगी, वह बहुत चतुर है। अपने बेटों के नाम कर देगा, अपने मुनीम गुमाश्तों के नाम कर देगा। कानून जब तक बन कर आवेगा तो देश भर में कुल दो मकान मिलेंगे आपको। एक तो जयपुर के महाराजा का और दूसरा एम.एल.ए.क्वार्टर पीछे एक किला टूटा फूटा महल। यह कोई समाजवादी सरकार का दम भरने वालों का आचरण है। ये काम तो तत्काल किये जाने के होते हैं। इसका ढिंढोरा नहीं पीटा जाता। प्रचार नहीं किया जाता।

तो बरकत साहब, माथुर साहब और एक दूसरे जो अपने को समाजवादी करार दे रहे हैं, यह समाजवादी नहीं है, समाजवाद का मुलम्मा चढ़ाकर बाजार में इसे बेचना चाहते हैं तो यह टके के भाव भी नहीं बिकने वाला है। इसलिये हम यह अविश्वास का प्रस्ताव लाये हैं।

चार महीने में कांग्रेसी सरकार बदली, एक दल के लोगों के बाद दूसरे दल के लोग आ गये तो इसमें कोई परिवर्तन आ गया हो इस सरकार के कार्य कलापों में, मैं ऐसा मानकर नहीं चलता। मुझे हंसी आती है। दो भूतपूर्व मंत्री बोले। ऐसे मंत्री या लोग बोलते जो हिन्दुस्तान की समस्याओं को समझते हों। पर यह समझ यहां कहा ? एक मन्त्री के हाथ में दे दी स्कूलों की लिस्ट और दूसरे हाथ में दे दी दूसरी लिस्ट। अब अगर उनसे यह उनसे यह पूछा जावे कि बजट कितना है तो इसका जवाब वे ठीक से नहीं दे पावेंगे।

मालूम है आपको जिस समय राजस्थान बना था। राजस्थान के लोगों पर एक पैसा का कर्जा नहीं था। एक पैसे का टैक्स नहीं था। आज उस राजस्थान का कर्जा 6 अरब रुपया तक पहुंच गया है। जो ऊपर से टैक्सों की भरमार हुई वह अलग है।

एक मन्त्री ने कहा, एक भूतपूर्व मंत्री ने कहा कि बेरोजगारी मिटाने के लिये कैश प्रोग्राम चलावेंगे। मैं पूछता हूं राजस्थान में कितने बेरोजगार हैं ? न जानते हैं न बता सकते हैं। अब मान लीजिये जवाब भी हो तो किससे बेरोजगारी मिटेगी यह ? कैश प्रोग्राम से वह बेरोजगारी मिट जावेगी इस भ्रम में है आप।

इस कैश प्रोग्राम के बारे में भी निवेदन करूंगा। सारे देश के लिये यह एक जैसा नहीं हो सकता। होना भी नहीं चाहिये। देश के हरेक हिस्से में अलग अलग समस्या है। भरतपुर के हर पंचायत समिति क्षेत्र में रोजगार देना चाहते हैं। रोजगारी तीन रुपया देना चाहते हैं भरतपुर में तीन रुपया रोज में कोई मजदूर आपको नहीं मिलेगा। लिस्ट मांगकर देख लें परसरामजी। वहां तो पढ़े-लिखे बेरोजगार हैं। जैसलमेर बाड़मेर में पढ़े लिखों में हो सकती है, जहां तीन रुपया रोज में भी काम करने वाले लोग मिल जावेंगे। भरतपुर में नहीं मिलेंगे। तो इनका अलग अलग हिस्सा करना चाहिये। उत्तरप्रदेश के उत्तर पूर्वी इलाके में बेपढ़ों में बेरोजगारी है, बंगाल के कुछ हिस्सों में है या उड़ीसा के रायलसीमा में हो सकती है, ग्रामीण क्षेत्र में हो। पर भरतपुर, अलवर, सवाईमाधोपुर जयपुर के ग्रामीण अंचलों में नहीं है यहां पढ़े लिखों में हैं। मंत्रीजी में विवेक नहीं इस तरह का। दूसरे डिप्टी-मिनिस्टर गीत गा रहे हैं।

(श्री रामकिशन)

भरतपुर में एलॉट हुआ है। पर अभी तक काम शुरु नहीं हुआ है। मार्च तक शुरु होने की उम्मीद भी नहीं है। फिर वहां पांच छः रुपये से कम पर मजदूर वैसे भी नहीं मिलते। अब अगर लिखे पढ़े बेरोजगारों को आप कहें कि तीन रुपया रोज में वे बान्धों पर मिट्टी डालने का काम करें या फावड़ा चलावें तो वे नहीं कर नहीं सकेंगे। न इससे इस तरह से बेरोजगारी मिट सकती है।

इसके लिये आठ दस सालों का कार्य-क्रम तै करना होगा। छोटे छोटे उद्योगों का जाल बिछाना होगा। जमीनों का बंटवारा ठीक तरह से करना होगा। पानी और बिजली गांव गांव तक पहुंचानी होगी। अन्यथा आप वांछित रिजल्ट नहीं ले सकते।

मैंने अपने अविश्वास का कारण प्रकट कर दिया। मेरे कारण भैरोंसिहजी वाले नहीं हैं। बरकत से गुस्सा हो वह नहीं है। कांग्रेस छोड़ने से गुस्सा लगा हो ऐसी बात भी नहीं है। अगर यह संस्था फिर टूट जावे और यह समझा जावे कि समाजवादी सभी एक जगह इसमें इकट्ठे हो गये या हो जावेंगे तो यह भी मैं मानता नहीं। कांग्रेस छोड़ने से या इसके टुकड़े होने से कोई आशा हो और कुछ समाजवादी उसमें से निकल आवें तो कह नहीं सकता। अन्यथा किन्हीं व्यक्तियों से मेरा कोई मोह नहीं नतीजे से, नीतियों के निर्धारण से मुझे है मोह, उससे लगाव है। व्यक्तियों से नहीं।

वेगूं से आने वाले माननीय सदस्य ने कहा मनोहरसिंहजी को क्यों यह काम दिया? अभिमन्यु उनको कहा। तो क्या हम आपको कौरव मान लें। कौरव में कर्ण था। आप में है कोई? आप हमें अभिमन्यु मानते हैं तो हम पांडव हुए आप कौरव। पर गान्धारी है कोई आप में? द्रोणाचार्य है कोई आपमें? आप में इनमें से कोई नहीं है। आपमें केवल है तो दुर्योधन है। दुर्योधन की आपकी नीतियां है। उसी की तरह आपके कर्त्तव्य हैं। बाकी समाजवादी राज कायम करने का न आपके पास कोई कार्यक्रम है न आपकी नीतियों से और कार्य-कलापों से ऐसा लगता है, आपके कामों में और करने में कोई संगति भी नहीं है।

श्री गिरधारीलाल व्यास : आप उल्टी विशेषताएं लगा रहे हैं। आप कौरवों के बीच में फंस गये हैं।

श्री रामकिशन : गिरधारी लाल जी, यह ट्रान्सफॉर्मरों का मामला नहीं है। महाभारत की कथा है। गम्भीर और ज्ञान की बातें हो रही हैं, इनसे आपका क्या लेना देना। यह ट्रान्सफार्मरों की लिस्ट नहीं है।

पिछली सरकार गई। आपकी आई। आपकी कसौटियां भी देखना चाहता हूं। चार महीने में भ्रष्टाचार आप नहीं मिटा सकते। जिस हालत में बरकत साहब आपने यह सरकार सम्भाली है चार महीने में सारे भ्रष्टाचार की बात करना सम्भव नहीं है। लेकिन आपने जो घोषणायें की हैं वे चार थीं। उनको याद कर लें। जो घोषणायें की हैं वे याद भी हैं या नहीं, क्योंकि आपकी उमर ढलती जा रही है इसलिये मुझे शंका है आपको याद रहे। तीन चार घोषणायें आपने की थीं–एक तो भ्रष्टाचार मिटा दूंगा नहीं तो खुद मिट जाऊंगा। यह भी हम मानते हैं कि चार महीने में आप भ्रष्टाचार

(श्री रामकिशन)

नहीं मिटा सकते थे लेकिन कुछ कम किया होता। अब भी आप एक समय ले लें 10 साल, 5 साल, एक खुला समय ले लें लेकिन समय निश्चित करें। आपने मुख्य सचिव को कैसे हटाया, उनका चरित्र ठीक नहीं था क्या? लेकिन मैं इस विवाद में नहीं पड़ूंगा। एक आपने सिचाई विभाग के श्री शास्त्री को हटा दिया और हटाकर आपने क्या किया, यहाँ से हटाकर आपने उनको चम्बल प्रोजेक्ट में लगा दिया जहां पर खरीद ज्यादा होती है। शास्त्री को हटाने से क्या हुआ उसको दूसरी जगह लगा दिया। इसी तरह मेडीकल के डाईरेक्टर हैं, उनको हटा दिया। चार महीने में आप सम्पूर्ण भ्रष्टाचार को तो नहीं मिटा सकते लेकिन आपने भ्रष्टाचार को कुछ और बढ़ाया ही है।

आपके सचिवालय में कई मेहता हैं, बड़े बदनाम बैठे हुये हैं। मैं सभी मेहताओं के लिये तो नहीं कह सकता क्योंकि एक मेहता साहब यहां भी बैठे हैं, वे अभी मुझ पर नाराज हो जायेंगे। मैं वैसे कोई मेहताओं के खिलाफ नहीं हूं लेकिन जब तक आप संपूर्ण मेहता, भण्डारी और कोठ्यारी को नहीं हटायेंगे, तब तक कुछ होने वाला नहीं है। केवल मुख्य सचिव को हटा देने से या सिचाई विभाग के श्री शास्त्री को हटा देने से भ्रष्टाचार खतम हो जायगा, इस बात को आप कैसे मानते हैं? मैं इसकी अवश्य बधाई देता हूं कि राजस्थान का मन्त्री मंडल छोटा हो गया है, हमने इसकी मांग की थी। इसकी मैं बधाई देता हूं। लेकिन स्थिति यह नहीं है आज राजस्थान में 5-7 आफिसर्स हैं जो ईमानदार हैं आप उनसे भी चुनाव में चन्दा इकट्ठा करवाते हैं। यह भ्रष्टाचार नहीं होगा तो क्या होगा? पहले तो संस्कार की वजह से और फिर आपके कार्यकलापों की वजह से भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है। मैं आज पूछता हूं पुलिस विभाग में कितना भ्रष्टाचार है, गृह मन्त्रालय भी आपके पास है। गृह मन्त्रीजी के इस विभाग में भ्रष्टाचार में कमी की बात हो, मुझे तो एक भी थानेदार, एक भी एस. पी. ऐसा नहीं मिला जो यह कह दे कि पहले सुखाड़िया साहब के समय में दो हजार देते थे, अब एक हजार तो दे जाओ। कोई रेवेन्यू का आफिसर नहीं मिला जो यह कह दे कि अब तो बरकत साहब आ गये 500 रु० ही रिश्वत के दे जाओ। पहले सुखाड़िया साहब के समय एक हजार देते थे। प्रशासन के प्रतीक करोड़ों जो लोग हैं, पटवारी, थानेदार, गिरदावर, पुलिस का कान्स्टेबल उनमें आज भ्रष्टाचार की जड़ें गहरी होती जा रही है। अगर इसमें कहीं कमी नहीं आई है तो फिर भ्रष्टाचार को कैसे खतम किया जा सकता है? लेकिन इस तरफ तो आपका दृष्टिकोण हो नहीं है।

मैं एक और निवेदन करना चाहूंगा। मान लीजिये जैन साहब हैं, अब तो वे सो रहे हैं-बाड़मेर में ध्यान मग्न हो रहे हैं, कहा संकट का समय है। अब जैसे वे हमें समझाने चले हैं, मैं आपको बताना चाहता हूं इंगलैन्ड में जब युद्ध चल रहा था उस समय ऐटली को पराजित कर चर्चिल प्रधान मन्त्री बना था लेकिन इसलिये नहीं कि जो ब्रिटिश सरकार है वह दक्षिण एशिया में पराजित हुई है। ऐसे संकट के समय में ऐटली पर अविश्वास का प्रस्ताव पेश किया था। आप जरा समझें, यह इतिहास का भी काम है, यह राजनीति का भी काम है, यह विधान मण्डल का काम है और ज्ञान नहीं

(श्री राम किशन)

हो तो चुप रहने में कोई ज्यादा हानि नहीं है। यह सबसे ज्यादा उपयुक्त मौका है, क्योंकि राष्ट्रीय संकट का समय है और ऐसे समय में राष्ट्र का चरित्र ऊंचा हो जाय तो लोगों में चेतना की भावना जगेगी। यही एक सीधा सा अविश्वास प्रस्ताव लाने का अर्थ है और इन्हीं कारणों से मैंने अविश्वास प्रस्ताव का समर्थन किया है। अब मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि आप स्वयं विचार कर लें और अन्दाज लगा लें आप और आपकी सरकार इस स्थिति में कुछ करने की कोशिश करेगी तो ठीक है नहीं तो केवल आपके थोथे नारे हैं। सभापति महोदय, ये समाजवाद की चर्चा करते हैं, यह समाजवादी सरकार है, मैंने कहा इसका आप साकार स्वरुप रखें, लेकिन मैं जानता हूं आप रखेंगे नहीं और इसलिये नहीं रखेंगे कि आपको डर है और अगर रख देंगे तो आपका असली स्वरूप आ जायगा। लोकतन्त्र में अहिंसा, सत्याग्रह, राष्ट्रीयवाद इन तत्वों को मिलाकर जो दल चलेगा वह समाजवादी दल होगा। आप सोचें आपके दल में इसमें से कोई चीज है क्या? गान्धी जी की मृत्यु के बाद अंग्रेजों के जाने के बाद और स्वर्गीय नेहरू के बाद कभी कांग्रेस ने सत्याग्रह का प्रयोग नहीं किया। ये बातें जब तक आप में साकार नहीं हो जायेंगी तब तक आपका निखार नहीं हो सकता है।

सत्याग्रह से दूर, अहिंसा का तो क्या बयान करें आपका आचरण दिखता है-पुलिस में लाठी का प्रयोग, गोली का प्रयोग आये दिन होता रहा है। आज स्टूडेन्ट्स पर लाठी पड़ जाती है तो कल किसानों पर लाठी की बोछार होती रहती है। आप लोकतन्त्र के मुख्य मन्त्री हैं, आप इन्डस्ट्री के मन्त्री है। लोगों के बीच में जावें और उनकी तकलीफों को सुनें और अपनी बात को उनके बीच में रखें, यह है लोकतन्त्र। अहिंसा का मेरा मतलब यह भी नहीं है कि जब कभी जन अन्दोलन हो तो उनका प्रहार लाठी से न करें। जब कभी स्थिति पुलिस के नियंत्रण से बाहर निकल जाती है तो लाठी का भी प्रयोग लिया जा सकता है लेकिन स्थिति की गम्भीरता का ध्यान रखें। अहिंसा का यह मतलब नहीं है कि पाकिस्तान का हम पर हमला हो और हम भाग जायें, चीन का आक्रमण हो तो हम पीछे हट जायें-उनका डटकर मुकाबला करना और अपने देश की रक्षा करना अहिंसा है। अगर भीड़ एकत्रित हो जाय और उसमें उग्रता बढ़ जाय तो निश्चित रूप से लाठी गोली चलनी चाहिये, लेकिन मामूली मामूली सी और छोटी छोटी सी बात पर लाठी प्रहार करना हिंसा है। धोबी एक जूलूस बनाकर विधान सभा के सामने आ जायं और अपनी मांगें मांगने लग जायं तो आप उनको पुलिस के डन्डों से पिटवा दें। आप नाई, धोबी, तेली को कोई बात समझाने की कोशिश करें तो निश्चित रूप से समाजवाद है। 40-50 धोबी आ जाते हैं तो कौनसा विधान सभा का अनर्थ होने वाला था। कभी धोबियों पर डण्डा पड़ता है तो कभी स्टूडेन्टस को मारा जाता है। इस तरह से आपका जो दृष्टिकोण है अहिंसा के बारे में, वह साफ है सत्याग्रहियों के बारे में आपका दृष्टिकोण साफ है। आपका किसी बारे में कोई चरित्र ही नहीं है-आपका चरित्र किस में? विधान-सभा में फेन्सी ड्रेस पहन कर आ जाना किसी दिन सफेद चश्मा है तो किसी दिन रंगीन चश्मा-आखिर

(श्री राम किशन)

हमारा एक राष्ट्रीय चरित्र होता है। हमारे सदन के नेता महोदय का जो आचरण होता है वह हम लोगों पर आता है और हमारा जो आचरण होता है उसका असर जनता पर पड़ता है आप गंभीरता से विचार करें। आप समाजवाद की चर्चा मेहरबानी करके बन्द कर दें तो ठीक रहेगा। आपकी दुकान तो वैसे भी चलेगी। आप तो यह कह कर वोट लेते हैं कि हमने बिजली लगा दी, पहले चार वाटर वर्क्स थे अब इतने हो गये। क्या आपने अपने घर से लगा दिये वाटर वर्क्स ? ये वाटर वर्क्स लग गये यह रिपोर्ट तो हमें भी मालूम है-हमको पढ़ने को मिल जाता है कितने स्कूल है, कितनी सड़के हैं कितने क्या है लेकिन राजनीति में इन चीजों की चर्चा करना ठीक नहीं है। आज शासन में लक्ष्मणसिंहजी भी होंगे तो भी बान्ध बनेगा, रामचन्द्रजी होंगे तो भी बान्ध बनेगा, सुखाड़िया साहब थे तब भी बान्ध बनता था और अब बरकत साहब आ गये तो भी बान्ध बनेगा, सड़के बनेंगी। पहले लक्ष्मणसिंहजी थे तो अब बरकत साहब बनायेंगे। जो खजाने का काम करेगा वह करेगा-लेकिन देखना यह है कि जो बान्ध बनाया है उसका लाभ किसको मिल रहा है। जब फसल आती है तो भाव गिर जाते हैं और जैसे ही फसल निकल गई गेहूं जौ, चने के भाव बढ़ गये मेरी जानकारी है इस संबंध में तीन करोड़ रुपया दूसरे लोगों के पास चला गया। आपकी नीति क्या है ? आप बता सकते हैं, उसके लिये कोई चिन्तन नहीं, कोई मनन नहीं हर फसल पर भाव गिर जाते है और फसल गई, भाव बढ़ जाते हैं। आज जो भाव हैं वह दो महीने बाद नहीं रहेंगे। इस सम्बन्ध में कांग्रेस दल की कोई नीति होनी चाहिये। अगर मतदाता समझेगा कांग्रेस की नीति है तो वोट देगा। इसी तरह आज आपके इन्डस्ट्रियल उत्पादन की स्थिति क्या है ? अनाज के भाव निरन्तर गिरते रहते हैं लेकिन 20 वर्षों में लोहे, कपास, पेट्रोल, मिट्टी के तेल के भाव कभी गिरे हैं ? आपने कभी देखा है इनके भाव गिरते हुये, नहीं देखा होगा। जिनका उत्पादन सेठ करते हैं उनके भाव ऊंचे जाते हैं और जिनका उत्पादन किसान करते हैं उनके भाव गिरते रहते हैं। इस संबंध में मुख्य मंत्री जी की क्या नीति है ?

दूसरा मैं निवेदन करना चाहूंगा इन सारे सवालों के अलावा और बातें भी कही गई हैं। जैतारण से आने वाले माननीय शंकर लाल जी बोले, जैन साहब बोले और भी माननीय 8-10 सदस्य बोले हैं उन सबने अपने अपने विवेक से बातें बताई हैं लेकिन मेरा कहना है उन पर चिन्तन करें केवल यह कह देने से काम नहीं चलेगा तुमने इस मेहता को हटा दिया और उसको इसके स्थान पर क्यों बना दिया ? यह अविश्वास प्रस्ताव अध्यक्ष महोदय, इसलिए रखा है कि नीतियों के बारे में आपके दल के लोगों के दिमागों की सफाई हो और इसका नतीजा है कि आपने समाजवाद से माननीय रामानन्द जी तो भ्रम में हैं ही। इस प्रस्ताव का वे विरोध तो करेंगे लेकिन हमारा साथ नहीं देंगे तो ये न तो आपका साथ देंगे और न हमारा ही साथ देंगे तो ये दुनियां में एक नये त्रिशंकु ही पैदा हुए हैं। ये बोलेंगे और आलोचना भी करेंगे, समाजवाद की बात करेंगे, उद्योगपतियों को बुरा कहेंगे, शहरी सम्पत्ति की सीमा के बारे में कहेंगे, श्रमिकों के लिए कानून नहीं बनाया, भ्रष्टाचार नहीं मिटाया वे इन सब विषयों पर तो सरकार की आलोचना करेंगे लेकिन

(श्री रामकिशन)

जब प्रस्ताव पर वोट देने का मौका आयेगा तो यही बैठे रहेंगे। क्यों वे वोट दें? मैं कहता हूं कि जिस गाड़ी में भैरोंसिंह जी और महारावल साहब हैं उसमें बैठेंगे या नहीं? वो भी कहते हैं पूंजी एक जगह इकट्ठी न हो जाये, वो भी समाजवाद की बात कहते हैं, वो भी शहरी सम्पत्ति की बात करते हैं, तो मेरे कहने का मतलब यह है कि आपको उस गाड़ी में जाना तो पड़ेगा ही क्योंकि गाड़ी तो एक ही है। जब तक हम सरकार में नहीं आये हमारी अलग अलग धारणायें हैं। आज हमारे विरोधी दलों के सदस्यों के मतभेद उतने ही व्यापक है जितने कि हमारे कांग्रेस पार्टी से हैं। लेकिन जब तक हम अलग अलग हैं तब तक हम एडजस्ट नहीं करेंगे तो हम और आप दोनों एक नहीं हो सकते और अगर आज हम सिद्धान्तों में और विचारों में एक नहीं होते तो चर्चा कैसे होती नीतियों के बारे में? आपकी स्वतंत्र पार्टी की जो नीतियां हैं वे अमान्य हैं, जनसंघ की नीतियां अमान्य हैं और राष्ट्रीयता के मामले में, धन के मामले में, श्रमिकों के मामले में, शहरी सम्पत्ति के मामले में और इसी तरह की कई नीतियों के मामलों में मान्य होते हुए भी हमारे कुछ सामान्य विचार हैं। कम्युनिस्ट पार्टी भी एक अजीब नीति अपनाती है। आज सारा विवाद क्यों है? आप कहें कि मुस्लिम लीग कम्युनल नहीं है और जनसंघ कम्युनल है। है, कम्युनल मैं कहता हूं जनसंघ और मुसलिम लीग दोनों ही कम्युनल हैं लेकिन मेरा ऐसा मानना है अध्यक्ष महोदय, कि मुसलिम लीग से जनसंघ कम कम्युनल है और वह इसलिए कम है कि कम से कम भारत के विभाजन का आरोप जनसंघ पर नहीं है। भारत के विभाजन के लिए तो मुसलिम लीग ही जिम्मेदार थी और आप तो केरल में सरकार बनायेंगे मुसलिम लीगियों से मिलकर और आप कहते हैं कि हम साम्प्रदायिकता के साथ संघर्ष कर रहे हैं। दूसरी तरफ कम्युनिस्ट पार्टी डी. एम. के. के साथ गठबन्धन करती है और यह डी० एम० के. वही पार्टी है जो संविधान को नहीं मानती और संविधान इसकी सम्पति या आधार नहीं है। सम्पूर्ण संविधान ही उनको अमान्य है। सम्पत्ति के संबंध में जो डी० एम० के० का कहना है वह समान है लेकिन वे संविधान के विरुद्ध हैं उन्होंने यह भी एलान किया था कि हम देश को अलग करेंगे और जब शेख मुजीबर्रहमान ने अलग बंगला राज्य बनाने की बात कही तो डी० एम० के० ने कहा कि हमारे देश में भी हो सकता है। अविश्वास प्रस्ताव के ऊपर दस्तखत करने से साम्प्रदायिक हो जाते हैं वह बात मेरी समझ में नहीं आती। कम्युनिस्ट पार्टी सारी दुनिया में संयुक्त मोर्चे बनाती है। चीन और अमेरिका की दोस्ती क्या है? आप तो खास-तौर से संशोधनवादी है। आपका भी संघर्ष यह है कि कांग्रेस नहीं रहनी चाहिए, हम भी कहते हैं कि कांग्रेस नहीं रहनी चाहिए लेकिन साथ ही साथ हमारा यह भी कहना है कि स्वतंत्र पार्टी और जनसंघ पार्टी भी नहीं आनी चाहिए क्योंकि ये दोनों पूंजीवाद की प्रतीक हैं। जब रामानन्द जी बोलेंगे तो सरकार के खिलाफ बोलेंगे लेकिन वोट के मामले में न उनके साथ और न हमारे साथ। हिन्दुस्तान में युद्ध नहीं होगा तो कम्युनिस्ट पार्टी की नीति बदल जायेगी, युद्ध के दौरान अगर रूस हमारी मदद नहीं करता है तो कम्युनिस्ट पार्टी की नीति

(श्री रामकिशन)

बदल जायगी । मैं आपकी जानकारी के लिए कहना चाहता हूं कि सरकार परिस्थितियों के अनुसार अपनी नीतियां बदलती है कोई भी सरकार एक दिशा में नहीं चल सकती। लेकिन इस समय हालत क्या है हमारे मित्र सरकार में बैठे हैं-शिवचरणजी माथुर, हरिदेवजी जोशी, शोभाराम जी, बरकतुल्ला साहब-ये सब पुराने परिचत लोग हैं-ये सरकार में बैठे हैं। इनकी सरकार का चरित्र क्या है ? इनका व्यक्तिगत चरित्र कैसा है इसका फिलहाल मैं मुद्दा नहीं उठाता हूं क्योंकि आज भी और पहले भी इस सदन में इस विषय पर काफी चर्चा हो चुकी है। मैं कहता हूं कि यह सरकार पिछले चार महिनों में जो घोषणायें कर चुकी है उनमें से किसी भी एक नीति पर अमल नहीं कर पाई। भ्रष्टाचार को मिटाने वाली बात हमारे मुख्य मंत्रीजी ने बड़े जोर शोर से कही थी लेकिन भ्रष्टाचार नहीं खतम कर पाये। हम मानते हैं कि 4 महिने में कोई भी भ्रष्टाचार नहीं मिटा सकता लेकिन चार महीनों में कुछ तो करते।

भूतपूर्व मुख्य मंत्रीजी के मामले में मैं निवेदन करना चाहता हूं भरोंसिह जी ने भी कहा।

(समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

शंकर दयाल शर्मा ने भी कहा कि हम बेदाग मंत्री मण्डल बनायेंगे और आपके एक मंत्री आप नाराज मत होना राजबहादुर जी हैं और हमारे जिले से वे केन्द्रीय सरकार के मंत्री है और आजकल इन्दिराजी के नजदीक हैं। वे कहते घूमते हैं कि राजस्थान में हमने बिना संकट के क्रांति करदी सुखाड़ियाजी को हटा दिया। वह तो कहते हैं कि भ्रष्टाचार की वजह से हटा दिया। और आप कहते हैं कि हमने मंत्रि मण्डल छोटा कर दिया और मंत्रि मण्डल के दूसरे सदस्य कहते हैं कि हम में वैराग आ गया। तो एक तो कहते है कि भ्रष्टाचार की वजह से हटाया, दूसरे कहते हैं कि छोटा मंत्रि मण्डल करने की वजह से हटा दिया, तीसरे कहते हैं कि वैराग आ गया तो इन तीनों में से कौनसी बात सही है

श्री गिरधारीलाल व्यास : आप फूट डालने की कोशिश कर रहे हैं।

श्री रामकिशन : अगर सुखाड़िया जी को अध्यक्ष महोदय, वैराग हुआ है तो अशोक को भी वैराग हुआ था, भर्तहरी को भी वैराग हुआ था। वैराग के मामले में मैं कहता हूं कि भर्तहरी के बाद सुखाड़िया जी का ही नम्बर हो सकता है लेकिन वैराग की जो विचारधारा है वह माता पिंगला की तरफ तो नहीं जा रही हैं, यह देखना है। मैं निश्चित कहता हूं कि स्टेजजी के रूप में सुखाड़िया जी हटे और चुनावों के बाद टिकट देने की बात को कमेटी में रखा है। अब कौन कहता है कि भ्रष्टाचार मिटाने के लिए सुखाड़ियाजी ने कुछ किया जबकि उनकी बगल में दस-दस हजार एकड़ भूमि पर फार्म बनाने वाले बैठे हैं श्री जगजीवनराम और चाव्हान साहब। आज मैंने अखबार में पढ़ा दिनमान में जो बहुत अच्छा अखबार है उसमें क्रांतिकारियों की सूची आई है। मुझे हंसी आई जब मैंने पढ़ा कि उसमें

Page No 117

(श्री रामकिशन)

किस किस के नाम हैं। उसमें पहला नाम तो है बरकत साहब का और दूसरा नाम आया है वैसे जब किसी महिला का नाम आये तो हम महिला के बारे में बहुत संभल कर बोलें। कैसे क्रांतिकारी है ये ? इनको क्रांतिकारी इसलिए बना दिया कि इनके पूर्वजों ने महाराणा प्रताप का साथ दिया था। मैं तो कहता हूं कि नेहरू जी के बाबा तो दरोगा थे और उन्होने अंग्रेजों का साथ दिया था तो इसका मतलब यह थोड़े ही हुआ कि वे देशद्रोही थे। फिर दूसरे क्रांतिकारी बताये इसलिए कि उन्होंने गिरी को वोट दिया था, उसमें आपका भी नाम है। तो गिरी को तो हमने भी वोट दिया था। क्या गिरी को वोट देने से ही क्रांतिकारी हो गये। आप तो शुरू से ही अच्छे परिवार में पैदा हुए हैं। गिरी को वोट हमने भी दिया और वोट देकर हम भी पछता रहे हैं कि हमने गल्ती की थी, हम भी अपनी गल्ती महसूस कर रहे हैं। लेकिन यह गल्ती भी हमने इसलिए की थी कि हम चाहते थे कि देश में क्रांति हो वह जल्दी से जल्दी हो।

राव श्री हरिसिंह: माननीय सभापति महोदय, जो माननीय सदस्य कह रहे हैं...

श्री रामकिशन : मैं तो कुछ भी नहीं कह रहा हूं।

राव श्री हरिसिंह: मैं तो माननीय सदस्य से यह पूछना चाहता हूं कि आपके तो चार चार टुकड़े हो चुके हैं। पहले पी.एस.पी. थी, उससे एस. एस. पी. बनी और फिर एस.पी. बनी और अब शायद डी.वाइ. एस.पी. बनने वाले हैं। आप लक्ष्मीकुमारीजी की क्या बात करते हैं, आपकी तो पदोन्नति के बजाय अवनति हो रही है।

श्री सभापति : आप जल्दी समाप्त करें।

श्री रामकिशन : सभापति महोदय, मैं तो हिन्दुस्तान की राजनीतिक परिभाषा बता रहा हूं।

राव श्री हरिसिंह: आप क्या परिभाषा बतायेंगे, आपका दिमाग तो क्लियर ही नहीं है।

श्री रामकिशन : आप इन चीजों को समझ नहीं पायेंगे।

(व्यवधान-अश्रव्य)

श्री सभापति : (श्री हरिसिंह की ओर मुखापेक्ष) : आप कृपया स्थान ग्रहण करें।

(श्री रामकिशन की ओर मुखापेक्ष) आप जल्दी भाषण समाप्त करें।

श्री रामकिशन : तो सभापति महोदय, मैं यह निवेदन कर रहा था कि क्रांति की परिभाषा बदलती रहती है। क्रांति की परिभाषा यह नहीं है कि हमने किसको वोट दिया या हमारे पूर्वजों ने किसको वोट दिया। इसको हम क्रांति नहीं कह सकते हैं। आज हमारे देश का प्रेस, हमारे देश का रेडियो, हमारे देश के बुद्धिजीवी जब इस किस्म की चर्चा क्रांति के सम्बन्ध में करें और इस प्रकार की परिभाषा क्रांति की करें तो थोड़ा दुःख होता है।

(समय समाप्ति सूचक घण्टी)

(श्री रामकिशन)

मैं अभी समाप्त करता हूं। अन्त में मैं एक चीज कह कर अपनी बात समाप्त करता हूं।

हमारी सरकार भ्रष्टाचार मिटाने की बड़ी चर्चा करती है। यह बात सही है कि चार महीने में भ्रष्टाचार मिटने वाला नहीं है और चार महीने में भ्रष्टाचार मिट जायगा इसकी हम आशा भी लेकर नहीं चल रहे थे, हमें इसकी आशा भी नहीं थी। लेकिन जो जो मामले आपके नोटिस में आते हैं क्या उन पर कोई कार्यवाही करते हैं, उन पर थोड़ी बहुत भी कार्यवाही करते हैं। मैं समझता हूं कि वह स्थिति भी नहीं है। सभापति महोदय, मैं आज इस मामले में विस्तार में नहीं जाकर हमारे भरतपुर के सिंचाई विभाग के सम्बन्ध में जो मेरा स्थगन प्रस्ताव है और जिसके सम्बन्ध में मैंने जोशीजी से भी बात की थी और उन्होंने कहा था कि इस बारे में ज्यादा न बोलें। लेकिन मैं यहां इतना ही निवेदन करना चाहता हूं कि केवल यही मामला नहीं है, आज लाखों की खरीददारी होती है और लाखों की खरीददारी में किस प्रकार के घोटाले होते हैं, यह मैं आपके सामने रखना चाहता हूं। हमारे भरतपुर जिले में एक्स.ई.एन. हैं सिंघल साहब, यह उनके बारे में है कि वे रिश्वत नहीं लेते, वे एक चरित्र के आदमी हैं। लेकिन वे करते क्या हैं कि जगह जगह कांग्रेस को चन्दा दिलाने का काम करते हैं। ज्यादातर माल उदयपुर की फर्म से ही खरीदा जाता है। आप विश्वास मानिए कि सिंघल साहब अच्छे आदमी हो सकते हैं लेकिन सभी तो ऐसे नहीं हो सकते। इसलिए मैं आपसे यह निवेदन करना चाहता हूं कि आप सरकारी सर्विसेज को इस काम में इस्तेमाल मत करिए, इनसे चन्दा इकट्ठा मत कराइए। सिंघल साहब जो चन्दा इकट्ठा करते होंगे वह पूरा आपको दे देते होंगे लेकिन सभी तो ऐसे नहीं हो सकते। ज्यादातर ऐसे होंगे कि दस हजार रुपये लायेंगे तो तीन हजार आपको देंगे और बाकी खुद खा जायेंगे। इन सरकारी कर्मचारियों को आप मौका देते हैं, पूर्व सरकार ने यह प्रणाली चालू की थी कि ट्रान्सपोर्ट ओथोरिटि वाले हैं तो वे पैसा लावें, पुलिस वाले हैं वे पैसा लावें, रेवेन्यू वाले हैं वे पैसा लावें, सिंचाई और पी० डब्ल्यू० डी० वाले हैं वे पैसा लावें, आप मेहरबानी करके ऐसा कोई काम नहीं करें माननीय शिवचरणजी और जोशीजी। इसलिए मैं निवेदन करना चाहता हूं कि सरकारी अधिकारियों के मार्फत चन्दा लेना बन्द कर दीजिए। उसूलन भी यह चीज गलत है। वे अगर पैसा लाकर भी देंगे तो इसका कोई हिसाब तो है नहीं, कोई रसीद तो दे सकते नहीं। आप इनसे चन्दा लेने की छुट्टी कर दें।

मैं आशा करता हूं कि मैंने जो दलीलें माननीय सदस्यों के सामने रखी हैं उनसे कांग्रेस दल के माननीय सदस्यों पर भी असर हुआ होगा कि जो अविश्वास का प्रस्ताव सरकार के विरुद्ध रखा गया है उसको पारित कराना चाहिए। अब अगर आप पर कोई असर ही नहीं हुआ हो जैसा कि बांदीकुई से आने वाले जोशीजी पर कुछ असर नहीं हुआ तो यह मेरा दुर्भाग्य है कि मैं आपको समझा नहीं सका। लेकिन मैं ऐसा मानता हूं कि अगर मेरी इतनी बातों का भी आप पर असर नहीं हो सकता तो न चाणक्य का असर हो सकता है, न

(श्री रामकिशन)

वृहस्पति का असर हो सकता है और न इन्द्राजी का असर हो सकता है। बस इतना ही निवेदन करना था।

श्री विश्वम्भरनाथ जोशी (बांदीकुई) : आप पर तो क्या असर होगा। जो बातें चेम्बर में कही थी वह आपने यहां पर कह दीं।

श्री विजयसिंह : आपको तो परिवार नियोजन पर भी विश्वास नहीं है। आपके 13-13 बच्चे हैं।

श्री सभापति : आॅर्डर प्लीज। श्री रामानन्द अग्रवाल।

(व्यवधान—अश्रव्य)

No disturbance on my right hand side.

श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर) : सभापति महोदय, जो अविश्वास का प्रस्ताव श्री मनोहरसिंहजी मेहता ने रखा है मैं समझता हूं कि उस सम्बन्ध में यह मान कर रखा है कि यह प्रस्ताव पास नहीं होगा और जो दल की स्थिति है उसके अनुसार यह बात अवश्यम्भावी भी है। तो मकसद जो उस प्रस्ताव को रखने का है वह केवल अपनी अपनी पार्टी की नीति आमतौर पर और सरकार के प्रति दृष्टिकोण यहां रखने का मकसद है और इस अविश्वास के प्रस्ताव को रख कर यह अवसर मिला है। माननीय सदस्य ने जो मेरे से पहले बोले हैं उन्होंने इस प्रस्ताव के सम्बन्ध में सरकार के प्रति दृष्टिकोण भी और अपनी पार्टी की जनरल जो राजनैतिक नीति है उस पर प्रकाश डालने की कोशिश की है। मैं भी इस बात का प्रयत्न करूंगा कि इस अविश्वास के प्रस्ताव पर बोलते हुए इस सम्बन्ध में सरकार के प्रति और हमारी पार्टी की जो नीति हैं, जो राजनीतिक नीति है उस तक ही सीमित रहूं। आज यह अविश्वास प्रस्ताव जबकि आगामी चुनाव जल्दी होने वाले हैं उस पृष्ठभूमि में भी आ रहा है और इसलिए राजनीतिक दलों के गठबन्धन चुनावों के लिए और राजनैतिक प्रश्नों पर आगे होने वाले हैं, उस सन्दर्भ में भी यह उपयुक्त है और वाजिब है कि राज्य की जनता में इस बात के बारे में स्पष्ट दृष्टिकोण अलग अलग दलों के बारे में जनता के सामने आवे।

सभापति महोदय, हमारी यह मान्यता है कि यह जो विधान सभाएं या पालियामेंट है, इसमें उनका उपयोग एक दल या रूलिंग पार्टी है, वह रूलिंग पार्टी के रूप में काम करे और विरोधी पार्टी जो रूलिंग पार्टी नहीं है उनका केवल काम यही हो कि वह किसी न किसी तरीके से, उस सरकार का, कोई उसमें से आलोचना करके और कोई बातें निकालें और केवल यहीं मकसद हो कि उसको अपदस्थ करने की कोशिश करें, तो यह एक पूंजीवादी पालियामेंट का सिस्टम है, वहां इसी तरीके से चलता है। इन पार्टियों के बीच में इस ओर की पार्टी सत्ता में आवे या उस ओर की पार्टी सत्ता में आवे तो कोई बेसिक बुनियादी फर्क नहीं पड़ता है। वहां इस प्रकार की राजनीति है और इन सभा स्थलों को, इस पालियामेंट्री सिस्टम को इस रूप के लिए इस्तेमाल किया जाता है। कम्युनिस्ट पार्टी जब इन संस्थाओं और विधान सभाओं में आती है या हिस्सा लेती

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

है, तो हम राज्य सत्ता को बुनियादीतौर से बदलने में विश्वास करते हैं और इसीलिए हमारे लिए यह बहुत महत्व का प्रश्न है। सत्ता बदले तो केवल कुछ हाथों में ही नहीं चली जाय, एक तमाशा या एक कौतूहल के लिए इधर से उठ कर उधर आ जायं और उधर से उठ कर इधर आ जायं, जिसका कोई राजनैतिक उद्देश्य नहीं है, यह परिपाटी हमारी नहीं है। जनता के जन जीवन या उसके भाग्य को आगे बढ़ाने या बिगाड़ने का तरीका नहीं है। हम यह समझते हैं कि इसका उपयोग इस दृष्टिकोण से नहीं होना चाहिए। इसलिये हम अविश्वास के प्रस्ताव या इन प्रश्नों पर इस लाइट तरीके से नहीं सोचते हैं चाहे काला चोर आ जाये। सोशलिस्ट पार्टी कहती है कि हमारा मकसद कांग्रेस को हराना है, फिर चाहे कोई भी आ जाये। हम इस बारे में बहुत आंख खोलकर चलते हैं और हम समझते हैं कि इस तरह का दृष्टिकोण रख कर जैसा कि माननीय राम किशन जी ने यहां पर रखा है, गलत हो, जर्मनी में भी इसी तरह की घटना हुई थी जिसका नतीजा क्या हुआ ? उस विरोध के कारण जर्मनी के अन्दर हिटलर को पावर में ला दिया। हम इस प्रकार की गलती के हिमायती नहीं हैं और न यह करना चाहते हैं और यही कारण है कि पिछले मध्यावधि चुनावों में हमारी पार्टी ने जबकि जनसंघ, स्वतन्त्र पार्टी संगठन कांग्रेस और संसोपा ने भी इनके साथ मिलकर पावर को चेलेन्ज किया, उस समय हमने उन तमाम शक्तियों को एकत्रित करने की कोशिश की, इकट्ठा करने की कोशिश की ताकि देश के अन्दर सत्ता परिवर्तन, हम कांग्रेस से सेटिसफाइड हैं, कांग्रेस के प्रोग्राम को दुरस्त मानते हैं ऐसी बात नहीं है, लेकिन जिन हालातों में जो सम्भव हो सके, उसके मुताबिक हमारी पार्टी के अनुसार जो अल्टरनेटिव देश के सामने आ रहा था, वह खतरनाक था। उसका नतीजा देश के अन्दर फासिज्म आने का था जिसका नतीजा केवल जनता के नाम पर, जनता के असन्तोष का फायदा उठा कर सत्ता में जाना था और जो देश की बेहबूदी के लिये, देश में गरीबी को हटाने, जमीन के बंटवारे के लिये, समाजवाद के लिये काम करने के लिये नहीं बल्कि उन विशिष्ट वर्गों की उन प्रिविलेज्ड क्लासेज की, केपिटलिज्म के साथ ताना बाना बुन कर, उनकी ताकत पर, उनके फौजी शिकंजे की बुनियाद पर, इस देश के अन्दर प्रजातन्त्र को कुछ अर्से के बाद खतम कर के फौजी तानाशाही कायम हो, वह रास्ता था। इसलिये हमारी पार्टी ने यह साफ किया है। हम साफ मानते हैं कि यह जो स्लोगन है, यह जो राजनैतिक स्लोगन है कि एक को हटाने के लिये और सब इकट्ठे हो जायें, यह इस देश के हित में नहीं है। हटा कर हम यह नहीं चाहते हैं कि चाहे काला चोर आ जाये। हम चाहते हैं कि बैटर गवर्नमेंट आनी चाहिये। जो सरकार आज है, कांग्रेस की सरकार है उससे जनता संतुष्ट नहीं है। जनता भी चाहती है कि बैटर गवर्नमेंट आये। यह हमारा भी मकसद है। लेकिन बैटर गवर्नमेंट किस तरीके से आनी चाहिये वह रास्ता हमें ढूंढना चाहिये कि यह बैटर गवर्नमेंट कैसे हो सकती है, कौन से रास्ते से हो सकती है। जैसाकि यहां पर कहा गया, चाहे काला चोर आ जाये, तो यह दृष्टिकोण हमारा नहीं है। इसी कारण से सोशलिस्ट पार्टी के इस स्लोगन को हम देशहित में नहीं समझते हैं कि कांग्रेस विरोधी सभी पार्टियों को एक हो जाना चाहिये।

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

ऐसा हुआ है और उसका हमें अनुभव भी है। वर्ष 67-68 में देश की राजनीति इस बुनियाद पर चली और उसका नतीजा यह हुआ कि देश आगे नहीं बढ़ा। हम यह समझते हैं कि आज कांग्रेस के प्रशासन से, उनकी नीतियों से देश के विकास में रुकावट है तो देश के सामने दो रास्ते हैं। एक रास्ता है वामपंथि का और दूसरा रास्ता है दक्षिण पंथि का। आज यह क्युश्चन मार्क देश के सामने है ? यह आज हमारी पार्टी ने देश के सामने रखा है और इसलिए देश के अन्दर एक पोलोराइजेशन की राजनीति सामने आई है कि एक समान विचार के लोग कम से कम कुछ अर्से के लिये छोटे से छोटे कार्य-क्रम पर एकमत हो सकते हैं तो उन लोगों को एक साथ चलना चाहिये। दूसरे लोग जो दूसरे कार्यक्रम पर एकमत हो सकते हैं, उनको एक साथ चलना चाहिये। मैं समझता हूं कि स्वतन्त्र पार्टी, जनसंघ और कांग्रेस संगठन इन्होंने एक नीति बनाई। अब तक उन्होंने जो कहा है वो भी मैं सही मानता हूं। भैरोंसिहजी की जनसंघ पार्टी और हमारी कम्युनिस्ट पार्टी में एकता नहीं हो सकती है। वे गैरकम्युनिस्ट और दूसरे दलों से, पार्टियों की एकता की बात करते हैं और मैं यह समझता हूं कि यह उचित ही है, यह सही भी है। आखिर हमारी और आपकी जनता से दुश्मनी नहीं है। हम विरोध में बैठे हैं इसलिए नहीं कि उनसे दुश्मनी है या उनसे मोहब्बत है। जिन सवालों पर मतभेद है, मैं समझता हूं कि जनता उनको जानती है, इस सदन के अन्दर बैठने वाले सभी माननीय सदस्य भी जानते हैं। कितने ही ऐसे प्रश्न हैं जिनके ऊपर हमारे और महा-रावल साहब के बीच में तीव्र मतभेद है। कांग्रेस से भी हमारे मतभेद हैं, उसके इम्प्लीमेन्टेशन के सवाल पर मतभेद है। हमारे और भैरोंसिंह जी के मतभेद है, देश को आगे किन नीतियों की बुनियाद पर ले जाना चाहिये और किन पर नहीं ले जाना चाहिये, यह अलग बात है। सोशलिस्ट पार्टी से हमारे कम मतभेद है। वह वामपंथी पार्टी होते हुए भी जो रास्ता अपना रही है वह रास्ता यह है कि वह दक्षिणपंथी पार्टियों के साथ मिल कर मोर्चा बना रही हैं। मैं समझता हूं कि उसने यह गलती महसूस की है और तभी तो कोई आगे गलती नहीं हो, अपनी पार्टी का नाम बदला है, लीडरशिप को बदला है। सुबह का भूला हुआ शाम को घर आ जावे तो वह भूला हुआ नहीं कहा जाता है। आखिर देश की राजनीति केवल इसी एक चुनाव से खतम नहीं हो गई है। तमाम उन प्रगतिशील शक्तियों को जो देश के अन्दर काम कर रही हैं, वे कम प्रोग्राम पर इकट्ठी हो सकती हो तो उनको एकताबद्ध होना चाहिये। वे कहते हैं कि विरोधी पार्टी के साथ हो सकते हैं, परन्तु जो कांग्रेस हैं, उसके अन्दर जो प्रगति शील व्यक्ति है उनके साथ एकताबद्ध नहीं हो सकते हैं। मैं समझता हूं कि कांग्रेस के नाम से उनको चिढ नहीं है। शायद नेहरू और उसके खानदान से इनको चिढ़ हैं ···

श्री रामकिशनः नेहरू से ज्यादा सम्बन्ध था इसलिए चिढ़ते थे ···

श्री रामानन्द अग्रवाल : कांग्रेस से इनको शिकायत नहीं थी। कांग्रेस का विभाजन हुआ, दो हिस्से हुए। यह बात समझ में आ सकती थी जब इनका कांग्रेस संगठन और कांग्रेस एन, दोनों से कोई सम्बन्ध नहीं होता। ये एक ही परिवार के

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

दो हिस्से हैं। इनके नेता राजनारायण ने कांग्रेस संगठन से समझौता किया। मैं समझता हूं कि चार गलत आदमी एक जगह पर इकट्ठे हो जायें तो वह गलती बढ़ती ही है। उसका नतीजा सामने आया ···

6. 10 सायं

(श्री रामनारायण चौधरी, उपाध्यक्ष पदासीन)

इसलिए उपाध्यक्ष महोदय, मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि हमारी पार्टी ने साफ तौर से देश के सामने यह सवाल रखा है कि हमारा यह कहना है। यह समाजवाद देश की जो स्थिति है उससे अभी परे है। एक स्थिति देश के अन्दर हो, कितना रिफार्म करना है, कितना सुधार करना है। समाजवाद की तरफ कदम उठाना है और उसके लिए हमें भूमि तैयार करना है इसलिये हमारी पार्टी का कार्यक्रम अभी पूरे देश में समाजवाद लाने का नहीं है। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। हम कम्युनिस्ट पार्टी के लोग अन्त में समाज को कम्युनिज्म की ओर ले जाना चाहते है। लेकिन हम यह भी मानते हैं कि देश में पहले डेमोक्रेटिक रिफार्म्स से काम करने की जरुरत है, भूमि सुधार हो जाये, मोनोपोलिस्ट खतम हो जाये, देश में साम्राज्यवाद का जो शिकजा जमा हुआ है वह खतम हो जाये, जो शासन तंत्र है वह डेमोक्रेटाइज हो जाये। हम चार काम पहले करना चाहते हैं, देश के अन्दर शीघ्र भूमि सुधार हो जाये, इजारेदारियों की जड़ें खतम हो जायें, साम्राज्यवादियों की देश के ऊपर से जकड़ कम हो जाये और नौकरशाही का डेमोक्रेटाईजेशन हो जाये। ये चार काम हो जायं तो फिर समाजवाद की तरफ जाने के लिए भूमि तैयार होगी। इसलिए आज जो हम सोशलिस्ट पार्टी के सामने प्रोग्राम रख रहे हैं, कांग्रेस के सामने रखा है, सी. पी. एस. के सामने प्रोग्राम रखा है और तमाम उन पार्टियों के साथ जो सम्राज्यवाद के खिलाफ हैं, जो सामन्तवाद के खिलाफ हैं, जो इजारेदारी पूंजीपतियों के खिलाफ हैं उन सबके सामने एक मीनीमम कामन प्रोग्राम रख रहे हैं जिससे कि ये चारों काम पूरे हो जायं।

और उसके लिए हम सब को इकट्ठा करना चाहते हैं जिसमें कांग्रेस के कुछ लोग भी आ सकते हैं। माफ करेंगे, हमारी कांग्रेस की तरफ से दो सज्जन बोले हैं। एक ने कहा कि अब हम इस स्टेज पर पहुंच गये हैं कि इससे काम नहीं चलेगा और एक ने कहा बहुत जल्दबाजी है। यह मतभेद है इस कांग्रेस के अन्दर और इसको हम रियेलाइज करते हैं कि कांग्रेस में मत-मतान्तर है, और इनमें और धीरसिहजी में फर्क है। इसके कारण से सम्पूर्ण कांग्रेस को एकसा मानते हैं और सम्पूर्ण कांग्रेस को कन्डेम करते है। ये सम्पूर्ण कांग्रेस को एक ऐसी शक्ति मानते हैं कि जो समाजवाद के लिए नहीं लड़ सकती है, एक ऐसी शक्ति मानते हैं कि जो भूमि सुधार के लिए या इजारेदारी के खिलाफ नहीं लड़ सकती है। ऐसी इनकी मान्यता है और हम से टूट कर जो सी.पी.एम. बनी है वह मानती है। हमारी पार्टी की यह मान्यता नहीं है। हमारी पार्टी की यह मान्यता है और यह आज से नहीं है। हमारी पार्टी की यह मान्यता 1951 से है। हमने यह कहा था कि कांग्रेस होमोजीनियस पार्टी नहीं है। यह कांग्रेस बुर्जुआ पार्टी है, लेकिन देश के विकास के साथ जब

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

मोनोपोली का विकास होगा तो सामान्य पूंजीपति और और इजारेदार के अन्दर टकराव पैदा होगा। इजारेदार सबको खाना चाहेंगे, और ये लोग उनकी खिलाफत करेंगे। आज यह इनके अन्दर स्प्लिट हुआ है और इसी रूप में देख रहे हैं। कांग्रेस के अन्दर भी देखते हैं। आज ये समझते हैं। आज यह शिकायत भी है। उद्योग विभाग की जब हम चर्चा करते हैं तो हम यह कहते है कि डी. सी. एम. सारी की सारी बिजली ले गया। यह छोटे-छोटे उद्योग वाले कहते है कि सारा कोटा इनको मिलता है, सारे परमिट्स इनको मिलते हैं। छोटा पूंजीपति आज बड़े के खिलाफ चल रहा है। अब वक्त हुआ है कि लोग देखते हैं कि 75 परिवारों ने सारे देश की धन-दौलत को समेट लिया है। आज वह टकराव आया है। वे आगे बढ़ना चाहते हैं। देश का विकास हुवा तब सारे उस टकराव ने यह स्प्लिट पैदा किया है। आज कांग्रेस और इन्दिराजी ने पुरजोर रूप से इन मोनोपोलिस्ट्स पर हमला किया और नान-मोनोपोलिस्ट्स की हिमायत की है। यह हमारी पार्टी की मान्यता है। हम नहीं मानते हैं कि कांग्रेस समाजवाद ला सकती है। समाजवाद वह वर्ग लायेगा जो शोषित है, जो शोषण के खिलाफ लड़ रहा है। हम यह मान सकते हैं कि इसी कांग्रेस के अन्दर ऐसे लोग निकलेंगे जो पूंजीवाद को बिल्कुल समाप्त करने की बात कहेंगे, लेकिन जैसा कि हरिसिंहजी ने अभी इन्कार कर दिया और मिक्स्ड इकोनोमी की बात आई है। तो इस तरह के मतभेद हैं, चाहें भूमि-सुधार का सवाल आता हो, चाहे सीलिंग का सवाल आता है कि सीलिंग को लोअर किया जाय, कुछ लोग उसके हक में हैं और कुछ लोग उसके खिलाफ हैं। इजारेदारी की खिलाफत का सवाल आता है, राजाओं का सवाल आता है तो कुछ लोग उसके हक में हैं और कुछ लोग उसके खिलाफ हैं। चाहे ये कितनी ही एकता की बात करें हम यह समझते हैं कि यह देश के लिए अच्छा है कि आपके अन्दर मतभेद हों। नीतियों के सवालों पर भी मतभेद हैं। लेकिन नीतियों के सवालों के मतभेद पर बहुत कमजोर हैं और फेक्ट्स एण्ड फीगंस पर ज्यादा लड़ते हैं। आपकी खिचड़ी उस तरह की है जो कि देश में राजनैतिक सफाई के आने में, देश के अन्दर कोई आधार बनने में दुविधा पैदा करती है। इधर हमारे सोशियेलिसटस लोग हैं वह बात तो करते हैं प्रगतिशीलता की और संयुक्त मोर्चा बनाते हैं दक्षिण पंथियों के साथ। तो वह शक्ति, आज अगर देश को उठाना चाहते हैं तो, कैसे बढ़ेगी ? सभापति महोदय...

श्री बद्री प्रसाद गुप्ता (बानसूर) : सभापति नहीं उपाध्यक्षजी।

श्री रामानन्द अग्रवाल : उपाध्यक्ष महोदय, माफ करेंगे। मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि यह जो अविश्वास का प्रस्ताव माननीय मनोहरसिंहजी ने रखा है जिसका समर्थन स्वतन्त्र पार्टी और जनसंघ ने किया है हम इस प्रस्ताव का समर्थन नहीं करते हैं इस बुनियाद पर कि ये दल देश को या राजस्थान को कोई प्रगतिशील कार्यक्रम दे सकते हों, कोई प्रगतिशील सरकार दे सकते हों, यह हमारी मान्यता नहीं है...

श्री विजयसिंह : इसीलिये आपका यह दल इतना क्षीण है कि आप अकेले ही हैं।

श्री रामानन्द अग्रवाल : हमारी मान्यता है कि राजस्थान को आगे बढ़ाने का रास्ता क्या है ? यह बात सही है कि एक टकराव आ गया है। परिवर्तन चाहते हैं लोग। किस तरह का परिवर्तन ? क्या रुकावट है उसमें ? हमारी यह मान्यता है कि जिस तरह से सारे देश का पैमाना है उसी तरह से राजस्थान का पैमाना है। आज सामन्तशाही के अवशेष, साम्राज्यवाद के टुकड़े, इजारेदारों की तानाशाही, और डेमोक्रेसी का शासन नहीं होना, ये सबसे बड़ी रुकावटें हैं। हम उनके साथ लड़ने को तैयार हैं। आज इन चारों शत्रुओं के खिलाफ लड़ने को तैयार हैं। उन सबके एक साथ होते हुए भी लड़ने को तैयार हैं। लेकिन जब मैं देखता हूं कि महारावल साहब इन चार शत्रुओं के नेता है, जब मैं देखता हूं कि भैरोंसिंहजी इन चार शत्रुओं के सिपहसालार है तो मेरी उनसे एकता किस बुनियाद पर हो सकती है ? मैं लड़ना चाहता हूं और खुलकर लड़ना चाहता हूं। मेरी यही शिकायत रही है सुखाड़ियाजी के मंत्री मण्डल के साथ··· ·

6.25 सायं

(श्री निरंजननाथ आचार्य अध्यक्ष पदासीन)

··· जनता ने शिकायत की और हमने भी शिकायत की। सुखाड़ियाजी से हमारा द्वेष नहीं है। उस मंत्रिमण्डल के किसी भी सदस्य से व्यक्तिगत राग द्वेष नहीं है। हमारी यह शिकायत है कि राजस्थान जो इतना पिछड़ा हुआ है और राजस्थान को आगे तभी बढ़ाया जा सकता है जब चुन चुनकर इन राजाओं सामन्तों इन इजारेदारों, पूंजीपतियों और इन साम्प्रदायिकतावादियों के साथ खुलकर निर्निमेष संघर्ष करने के लिये आज जनता तैयार होगी। उस जनता को संगठित करके हम तैयार होंगे तभी हम आगे बढ़ सकते हैं आप हरिजनों की भावनाओं को महसूस करें आप आम गरीब लोगों की भावनाओं को महसूस करें। उनके लिए काम करें। उनको जमीनें देकर जो उन पर अत्याचार करते हैं उनके साथ सख्ती का बर्ताव करके, जमीन का बंटवारा करके, बड़े लोग कैसे भी बने हुए हैं उनकी संपति को वितरित करके आप जनता के समर्थन को बढ़ा सकते हैं। इससे मुझे खुशी हो सकती है। लेकिन आपके सुखाड़िया साहब ने सत्ता की राजनीति चली। बजाय इसके कि इस तरीके से सुधार के काम करके आम जनता का समर्थन ले उन्होंने सामन्तों और साम्प्रदायिकतावादियों से हाथ मिलाया। सुखाड़िया जी जिस वक्त मुख्यमन्त्री बने तो जयनारायणजी व्यास के खिलाफ यह आरोप लगाया कि वे जागीरदारों के साथ समझौता कर रहे हैं। चूंकि जयनारायणजी व्यास जागीरदारों से समझौता कर रहे हैं और मैं भूमि सुधारों को आगे बढ़ाऊंगा इसलिए कांग्रेस दल में उनको बहुमत मिला। लेकिन शासन में आने के बाद चाहे वे उदयपुर के महाराणा हों, चाहे और कहीं के हो, जो भी राजाओं के प्रति नीति रखी, जो भी जागीरदारों के प्रति नीति रखी, जो साम्प्रदायितावादियों के प्रति नीति रखी, वह समझौते की नीति रखी। वह कन्टेन्शन देकर राजी करने की नीति थी, कुछ न कुछ राजी करके दे-लेकर अपने साथ मिलाने की नीति थी। मुझे खुशी हुई थी परिवर्तन पर इसलिए, लेकिन मैं यह कहना चाहता हूं कि इस बुनियाद पर हम नहीं समझते हैं कि

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

राजस्थान का विकास आज भी सम्भव हो। आप चाहें जिस एकता से खुश हो रहे हों तो आप फिर इन्दिरा गांधीजी को दोषी बनाना चाहते हैं कि उन्होंने एकता तोड़ी है। फिर तो हिन्दुस्तान में और उस वक्त यहां पर भी था। लेकिन माननीय जोशीजी इस बात के लीडर थे कि हम अपने संगठन के लिए वफादार हैं। चाहे इन्दिरा गांधी हो, चाहें कोई भी हो, जो भी अनुशासन को तोड़ता है उसके खिलाफ एक्शन होना चाहिए और बरकत साहब आपने अपनी घोषणा की, शिवचरणजी ने घोषणा की, पूनमचन्दजी ने घोषणा की, यह आपको विदित है श्री जोशी जी ने जिस समय मंत्रि मण्डल के अन्दर सुखाड़ियाजी से यह कहा था कि इन लोगों को फौरन सस्पेंन्ड कर देना चाहिए, इनके खिलाफ एक्शन लिया जाना चाहिए ताकि यह बीमारी आगे बढ़ने से मिटे। बड़े बड़े भाषण हुए थे, बड़े बड़े मिलिटेन्ट भाषण हुए थे। नाथूरामजी मिर्धा जो अभी तक अध्यक्ष बने हुए थे, आपके साथ थे, आपके सहयोगी थे और इन्दिरा गांधी को फांसी लगाने के पक्ष में थे उस वक्त तो, लेकिन बाद में जो चुनाव का नतीजा हुआ वह दूसरा हुआ, और उसने आपके मन में परिवर्तन किया। यह सैद्वांटेजिकल परिवर्तन हो यह तो आपके दिल की बात आप जानें, लेकिन यह वास्तविकता है तो मैं यह निवेदन करना चाहता हूं ––....

(समय समाप्ति सूचक घंटी)

यह निवेदन करना चाहता हूं अध्यक्ष महोदय, इसीलिए मैं आज यह उचित समझता हूं कि जो सुखाड़िया मन्त्रिमण्डल गया तो हम यह चाहते थे कि उन नीतियों का अन्त हो। उन प्रशासनिक तरीकों का अन्त हो। जिसमें शासन सत्ता और उसके लोगों में जनता का काम करने के बजाय इधर से या उधर से कुछ लोगों को तोड़ लिया। मैं समझता हूं कि इधर के लोगों ने भी किया और उधर के लोगों ने भी किया। मेरी पार्टी ने साथ नहीं दिया। जो आज भी गलत काम करते हैं।

श्री रामचन्द्र आर्य : यह तो आप ही सोच सकते हैं। क्योंकि आप अकेले हैं।

श्री रामानन्द अग्रवाल : इस प्रकार की नीति अपनायें तो शासन पर असर पड़ता है। तो मैं ऐसे मन्त्रिमण्डल की उम्मीद करता था। मेरी पार्टी ने एक प्रस्ताव पास किया और 3 सूत्री कार्यक्रम आपके सामने रखा और जनता के सामने रखा। वह कार्यक्रम बहुत बड़ा कार्यक्रम नहीं है। वह कानून सीलिंग कानून को कम करके उसको लागू करना है। वह कार्यक्रम राजाओं की जमीन का पुर्नग्रहण करने का सवाल था। उनकी सम्पत्ति को ग्रहण करने को रि-ओपन करने का सवाल था वह एक व्यवहारिक कार्यक्रम भी था। इस मन्त्रिमण्डल का गठन किया है। बरकतुल्लाखां साहब ने, उसमें सन्दिग्ध व्यक्तियों को किस प्रकार लिया है। श्री हरिदेव जोशी, रामकिशोर व्यास और भीखाभाई हैं। भीखाभाई को हम यह समझें कि आदिवासियों में और कोई नहीं है। लेकिन जोशी जी और रामकिशोर व्यास, इनके बारे में आप क्या कहते हैं? माफ करें, जो जोशी जी हैं, इनका तरीका वही सिण्डीकेटी तरीका आज भी है। रामकिशोर व्यास, उनका साम्प्रदायिक होना। अगर शंकराचार्य जी यहां आयें तो

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

उनकी सभा की अध्यक्षता रामकिशोरजी व्यास करें। उनके लड़के का माननीय सदस्य भैरोंसिंह जी ने चौमूं का मामला रखा है। इस विधान सभा में भी मामले आये हैं। आपने दूसरे मन्त्रियों को हटाया, उनके फैक्ट प्रूव नहीं हो सके थे ? लेकिन उनके खिलाफ भी काफी वजनदार मामले विधान सभा में आये हैं। वह इवेण्ट नहीं देंगे।

मेरी मान्यता है, सुखाड़िया साहब खुद नहीं गये हैं। प्रधान मन्त्री इन्द्रा गांधी अपने एडमिनिस्ट्रेशन की रूपरेखा बदलना चाहती थी। पिछले मिडटर्म इलेक्शन में सारे राजाओं से हार गये हैं कांग्रेस के लोग।

श्री अध्यक्ष : कृपया समाप्त करें। 25 मिनिट ले लिये हैं।

श्री रामानन्द अग्रवाल : अध्यक्ष महोदय, मैं जल्दी समाप्त करने की कोशिश करूंगा।

खासतौर से माननीय रामकिशनजी ने जो मामला रखा है।

श्री रामकिशन : मेरा नाम लेकर समय बढ़वा रहे हैं।

श्री अध्यक्ष : जल्दी समाप्त करें।

श्री रामानन्द अग्रवाल : अध्यक्ष महोदय, मैंने यह आकांक्षा की थी कि अगर आप ऐसे प्रोग्राम पूरे करते हैं तो दूसरे जो हमारी पार्टी के लोग हैं, उनके लिए हम प्रयत्न कर सकते हैं कि वे समर्थन करें। अध्यक्ष महोदय, कुछ कदम उठाये भी गये हैं। जैसे कि राजाओं की भूमि पर सीलिंग लागू कर लेने के लिए कोशिश की गई थी। कच्ची बस्तियों की समस्या को हल करने के लिए कोशिश की गई। एडवर्ड मिल को चालू करने की घोषणा की गई है। लेकिन यह सामान्य नीति चले हैं इसमें हमें यह कहना पड़ता है। मैं यह नहीं मानता हूं कि 4 महीने में किसी खास स्थिति पर पहुंच गये हैं। जैसा कि मैंने कहा है, आपकी सैनिकों के प्रति क्या नीति है ? आज हालत क्या है, मुख्य मन्त्रीजी मजदूरों के प्रति अपना प्रेम बताते हैं। उनको मदद भी करना चाहते हैं। लेकिन आपका पूरा श्रम मंत्रालय मालिकों से मिला हुआ बैठा है। मुझे अनुभव है। अध्यक्ष महोदय, अभी कृष्णा मिल को लेबर डिपार्टमेंट ने चिट्ठी लिख कर मालिकों को नोटिस निकाला है। लेबर डिपार्टमेंट चिट्ठी लिखता है 16 तारीख को श्रम मन्त्री के हस्तक्षेप से बात हुई। श्रम मन्त्री की बात मानने से इन्कार कर दिया। उनको नोटिस दिया गया। फैक्ट्री चलवादी गई है। आज वह श्रम मन्त्रालय समझता है कि भीखा भाई कुछ समझते नहीं हैं। बरकत साहब कुछ समझते नहीं हैं। मैं कहना चाहूंगा, ये श्रम मन्त्रीजी और मुख्य मन्त्री जी इस तरीके से करते हैं। श्रम मन्त्री के नाम पर मालिकों का काम करते हैं। उन लोगों के खिलाफ एक्शन लिया जाना चाहिए। उनको हटाया जाना चाहिए। इसी तरह से अध्यक्ष महोदय मैं, निवेदन करूंगा, राजाओं के प्रति, मैंने एक रेजूलेशन दिया था कि राजाओं के पास जो इनवेन्ट्री है, इनवेन्ट्री के नाम पर, जो उनकी नहीं है वह उनके नाम झूठी लिखी हुई है। जयपुर के चन्द्र महल पर कब्जा किया जाये। जयपुर महाराजा का वह गैर कानूनी है। इसी प्रकार जो वह जो नेशनल प्रापर्टी है, वह स्टेट गवर्नमेंट की होनी चाहिए। जयपुर महाराज

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

उस पर टिकट लगा कर रुपया वसूल कर रहे हैं। लेकिन सरकार कोई ध्यान नहीं देती है। वही सुखाड़ियाजी की नीति थी।

श्री विजयसिंह : आप अलवर में, अलवर महाराज की जमीन पर कब्जा करने के लिए गये थे तो उन्होंने आप पर कुत्ते छोड़ दिये थे और आप भाग आये।

श्री रामानन्द अग्रवाल: स्वतन्त्र पार्टी में कुत्ते बहुत हैं। उन पर तो हम कब्जा नहीं कर पायेंगे।

अभी मैंने सुना है, कोटा के महाराजा और बीकानेर के महाराजा करनीसिंह को कांग्रेस में लाना चाहते हैं। यह खबर पढ़ी कि जोधपुर की राजमाता को, गजसिंह को बरकतुल्लाजी कोशिश कर रहे हैं कांग्रेस में लाने की ताकि जोधपुर के लोग सोचें, उदयपुर के महाराणा को सुखाड़ियाजी साथ रख सकते हैं तो हम जोधपुर वाले को क्यों रखें। यदि यह कम्पीटीशन करना है, यहीं रखना है रास्ता, तो आपका रास्ता वही रहेगा और विकास के लिए आप आगे बढ़ेंगे नहीं, आर्थिक तरक्की के लिए आगे नहीं बढ़ेंगे। यदि इस रास्ते से बुनियादि मतभेद हैं तो उस रास्ते को छोड़ कर जैसा मैंने बताया, उस रास्ते पर चलें। मैंने कहा था उस प्रस्ताव के लिए एडवाइजरी कमेटी में, और पार्टी से तो मैं उम्मीद क्या करता था, लेकिन हमारे कांग्रेस के मित्रों ने रिजोल्यूशन किया था, शंकर लालजी ने, वृद्धिचन्द्र जी ने, केदारनाथ जी ने और मैंने। हम सब ने मिल कर रिजोल्यूशन रखा था, वह रिजोल्यूशन रखा नहीं गया है और बातचीत राजाओं से करना चाहते हैं क्योंकि कांग्रेस की नीति उसमें बाधा पहुंचाती है। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि यह साम्प्रदायिक तत्वों से टिके हैं, जैसा शिवचरण माथुर ने बताया था कि आदर्श विद्या मन्दिर है, उसमें न केवल और एस. एस. की शाखा लगती है बल्कि मैनेजमेंट द्वारा उसमें पूरा रिक्रूटमेंट् आर. एस. एस. के बेसिस पर होता है। टीचर से पूछा जाता है कि तुम शाखा में गये हो? शाखा में जाते हो या नहीं? शाखा में जाना पड़ेगा। यदि हां भर ली तो उसे टीचर रखा जायगा वरना नहीं रखा जायगा। जो उसके मैनेजर हैं, जो उसके सेक्रेटरी है वह आर. एस. एस. के बड़े बड़े पदाधिकारी हैं, छुट्टी के दिनों में वहां कैम्प लगता है, जिसको आप ऐड देते हैं, उस ऐड का आर.एस.एस. के संचालन में उपयोग होता है। ऐसा होता था, इसलिये ऐड बन्द की। अब बरकतुल्ला साहब आ गये तो इन्हें ब्लेक मेल करते हैं क्योंकि यह माइनोरिटी के हैं, जनसंघ के दोस्त इन्हें ब्लेक मेल करते हैं और स्कूल को ऐड चालू कराने का फैसला कराने की कोशिश करते हैं। तो यह जो साम्प्रदायिकता का जहर है इस समस्या से जो लड़ने की बात है वह नहीं हो सकती। मुझे ताज्जुब हुआ, एक महीना ही शायद हुआ होगा इस मंत्रिमण्डल को बने, जनसंघ की कार्यकारिणी ने प्रस्ताव पास कर दिया कि जब से बरकतुल्ला खां मुख्य मंत्री बने हैं तब से गुप्तचरों का पाकिस्तान से आना बहुत तेजी से शुरू हो गया है। यह सैकुलेरिज्म है आपका? एक मुसलमान मुख्यमंत्री हो गया तो उसने रास्ता खोल दिया मुसलमानों के लिए गुप्तचर हिन्दुस्तान में आ जाय। यह ईमानदारी की पालिटिक्स नहीं है। यह आपकी ईमानदारी नहीं है कि

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

आपको मुसलमानों में विश्वास नहीं है और भारतीयकरण की नीति में विश्वास रखते हैं, और आप इस तरह के रिजोल्यूशन पास करके उन्हें लपटने की कोशिश करते हैं। यह चीज आपसे छूट नहीं सकती है। आपके कण कण में, आपकी बात बात में साम्प्रदायिकता झलकती है, आपकी साम्प्रदायिकता उभर उभर कर आती है उस बात से जो बात आपके मुंह से निकले। मैं नहीं मानता कि यह गलती नहीं करते हैं। इस प्रकार की बात नहीं है। मुझे समझ में नहीं आया कि आपने सही किया या गलत किया एडमिनिस्ट्रेटिव मामलों में, मुझे नहीं पता, वह जाने, आप जाने। अगर आपका कहना सत्य है तो उन्हें कन्डेम करना चाहिए, गलत है तो गलत कहना चाहिये। आपको यहां बैठे हुए कैसे मालूम हो गया कि मुसलमान मुख्य मंत्री बनने से गुप्तचरों का आना तेज हो गया। मैं समझता हूं, यह अतिशयोक्ति है और यह फिजां को खराब करने का बात है और इससे जो सेकुलेरिज्म की बात करते हैं वह समाप्त होगी...

(समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

यह मेरी यह शिकायत सरकार से है। इसी तरह सुखाड़ियाजी के उदयपुर के अन्दर अभा काण्ड हुआ, जनसंघ के लोगों ने आग लगाई थी कांग्रेस दफ्तर के नीचे, उसके सारे मुकदमे वापिस ले लिए। अभी कह रहे भैरोंसिंहजी किसी का मुकदमा वापिस लेने के लिए। अभी हमारा जो जमीन आन्दोलन हुआ था, उस समय कई किसान और मजदूरों पर मुकदमा चलाया, उसमें किसी का मुकदमा वापिस नहीं लिया और अभी अभी तक चलते रहे हैं। लेकिन जिन्होंने आग लगाई, मुसलमानों की दुकाने जलाई, उन लोगों से समझौता करने के लिए उन सब लोगों के कैसेज वापिस ले लिये इस तरह की बात यहां कही। हमें इस बात की भनक आती भी थी कि सेंस आफ फ्रस्ट्रेशन आ गया है आप चीफ सेक्रेटरी को हटाने की या फलां को हटाने की बात कहें। लेकिन हम इस बात को समझते हैं कि आप चाहे जो कहें लेकिन खुद चीफ मिनिस्टर के हटने से आपमें फ्रस्ट्रेशन आ गया हैं, और चाहे और किसी में आया हो या नहीं लेकिन भैरोंसिंह जो में आया लगता है। अध्यक्ष महोदय, तो मैं यह निवेदन करना चाहता हूं इन शब्दों के साथ कि जो सरकार की लेबर के सम्बन्ध में नीति है, जो सरकार को इजारेदारों, पूंजीपतियों के सम्बन्ध में नीति है हमने मांग की कि आपने अनइक्वल एग्रीमेंट किया हुआ है, बड़े बड़े पूंजीपतियों के साथ चाहे बिजली दर के एग्रीमेंट किये हुए हों, चाहें माइन्स के सम्बन्ध में किये हों, हमने कहा कि उनको आप कैंसिल कीजिये। इसको आप बुनियाद मत बनाइये, आप अपनी पालिसी में चेंज करिये। अभी भी आप पूंजीपतियों के इन्ट्रेस्ट को वाच कर रहे और स्टेटस को मेन्टेन कर रहे हैं। आपने सीलिंग को लागू करने के लिए और जमीन को एक्वायर करने के लिए कदम नहीं उठाया

(समय समाप्ति सूचक घन्टी)

टैनेन्सी के सम्बन्ध में नये रिफार्म्स करने के बावजूद केन्द्रीय सरकार के कहने से कोई कदम नहीं उठाया गया है। इसमें जो बीस सूत्री प्रोग्राम रखा था जिसमें जनता का

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

हित है, जो कांग्रेस के प्रोग्राम से भेद नहीं रखता है, जो सोशलिस्ट पार्टी के प्रोग्राम से भेद नहीं रखता है उसको पूरा किया जाय। मैं समझता हूं, सोशलिस्ट पार्टी, हम और कांग्रेस के वह लोग जो सामन्तशाही के खिलाफ हैं, इकट्ठे होकर उस प्रोग्राम को पूरा कर सकते हैं, लेकिन उसको पूरा करने में झिझक है, आपमें से कुछ की इच्छा है, वह ईमानदारी से घोषणा करते हैं लेकिन दूसरे अपने दबाव से नहीं निकलने दे रहे हैं और पावर से चिपक कर बैठे हैं। यह आपके लिए अनुचित है। ऐसी हालत में हमें उत्साह नहीं होता कि हम इस सरकार का आखिर समर्थन करें, लेकिन चार महीने की सरकार है, इसका कोई कन्ट्रीब्यूशन नहीं है। इसलिए इस नतीजे पर पहुंच जाय कि यह बेकार है, तो जो बेकार कह कर हटाने की बात कर रहे हैं, तो मेरा निवेदन है, यह नई सरकार है नहीं, उलटी वही सरकार की सरकार है, और जनता उस बारे में वर्डिक्ट दे चुकी है। माननीय सदस्य कह रहे थे, यह अविश्वास प्रस्ताव पुरानी सरकार के नये एडमिनिस्ट्रेशन के बारे में है। उस सरकार के बारे में, पुरानी सरकार के बारे में, तो अविश्वास प्रस्ताव इन्दिरा गांधी ने पास कर दिया। उसके बाद जो तब्दीली हुई, इसको कितना ही छिपाये इसे छिपाने से कोई लाभ नहीं है। इन्दिरा गांधी ने, जितना छिपाया था, उसको खुला कर दिया........

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य, समाप्त करें।

श्री रामानन्द अग्रवाल : अभी करता हूं।

मैं निवेदन करता हूं कि पिछले सदन में पहले जो सामने की बेंचों पर नहीं थे, वह अब सामने की मेजों पर बैठने वाले लोग हैं। सुखाड़ियाजी, मथुरादास माथुर, दामोदर लाल व्यास, रामकिशोर व्यास, जोशी थे—यह राजस्थान का सिंडीकेट था। राजस्थान का सिंडीकेट जो था, उसका जो दिमाग था, विचार थे, वह पुराने होने की वजह से वह समाप्त हो गया। अब इनके पास क्या है ? आपको नयी नीतियां अपनानी है। आपके हाथ में शासन है, आप इस मंत्रिमण्डल में हैं, इसलिए आपका अपना जो आर्गेनाइजेशन है,इससे भी इनको अलविदा कहिये। इन्हें और कोई जगह दे सकते हैं, कोई पिंजरा पोल हो सकता है, कोई अनाथालय हो सकता है, या और जगह हो सकती है, इन्हें जहां लगाने से मेनेजमेंट अच्छा हो सकता हैं, उस जगह पर इन्हें भेज दीजिये क्योंकि राजस्थान को आगे बढ़ाने की हर बात में रोड़े अटकाये हैं, वाम पंथ के रास्ते पर आगे बढ़ने में रोड़े अटकाये हैं। कभी कहते हैं, कम्युनिस्ट बन रहे हैं, कभी कहते हैं, कम्युनिस्टों के चक्कर में हैं। हर बात में रोड़े अटकाये हैं। आपने देखा है, सुखाड़ियाजी के चुनाव समिति के चुनाव को जीतने के बाद कांग्रेस में वही लोग सामने आये हैं, और इनके संगठन कांग्रेस होने का अन्देशा होने लगता है और जैसा ड्रिल में होता है, एज यू वर, उसी पोजीशन में आ गये हैं जैसे पहले थे। इसलिये नया जीवन देना है और राजस्थान को आगे बढ़ाना हैं तो वह इससे असम्भव है। इसका आल्टरनेटिव इसमें नहीं है, कि स्वतन्त्र पार्टी और जनसंघ सरकार में आ जाय। कहीं ऐसा नहीं हो कि यह सरकार कांग्रेस की पुरानी नीतियों पर

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

चली जाय क्योंकि इसका अभी यही हाल है। इसलिए मिनिमम प्रोग्राम के आधार पर कांग्रेस के लोग संघर्ष करें, लड़ाई के मैदान में आवे और प्रोग्रेसिव पार्टी, प्रोग्रेसिव शक्तियां, चाहे वह कांग्रेस के बाहर हों चाहे कांग्रेस के अन्दर हों-उन्हें इकट्ठे होकर प्रयत्न करना चाहिए जिससे कि पूरी पार्टी को आगे ले जाया जा सके और राजस्थान का भविष्य अच्छा हो सके। माननीय अध्यक्ष महोदय, इसलिये मैं और मेरी पार्टी ने निर्णय किया है कि हम इस अविश्वास के प्रस्ताव का समर्थन नहीं करेंगे और न इन वजूहात के कारण सरकार को अपदस्थ करेंगे, इसलिये इस वक्त हम तटस्थ रहेंगे।

श्री अध्यक्ष : अब माननीय शिवचरण माथुर।

श्री खेतसिंह (शेरगढ़) : अध्यक्ष महोदय, मुझे दस मिनिट का समय दिया जाय।

श्री अध्यक्ष : अब नहीं।

श्री पूनमचन्द विश्नोई (शिक्षा मंत्री): मैं दस मिनिट में अर्ज करना चाहता हूं...

श्री अध्यक्ष : अभी इनके बाद कर दें।

श्री खेतसिंह : मैं मुद्दे की बात करूंगा।

श्री अध्यक्ष : अभी नहीं।

श्री प्रेमसिंह सिंघवी : शेरगढ़ में कह देना।

श्री शिवचरण माथुर (सार्वजनिक निर्माण मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, गवर्नमेंट के प्रति अविश्वास प्रस्ताव पेश करते हुए माननीय सदस्य, श्री मनोहरसिंह मेहता ने मेरे सम्बन्ध में आरोप लगाये थे। जैसा कि आज की चर्चा से विदित है कि यह प्रस्ताव एक तरह से सरकार के खिलाफ नहीं था क्योंकि उन्होंने मुख्य मंत्रीजी में विश्वास प्रकट किया, मुख्य मंत्रीजी की आलोचना नहीं की, और केवल मेरे खिलाफ कुछ आरोप लगाने वाली बात उन्होंने कही, और उस जोश में यह कहना भी भूल गये कि उनको प्रस्ताव मूव करना है। माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरे दल के कई साथियों ने मुझ से कहा, हमें कुछ फैक्ट्स दीजिये, हम बोलना चाहते हैं। मैंने निवेदन किया, जो कुछ भी आरोप लगाये गये हैं, मैं स्वयं उनका उत्तर सदन के सामने रखूंगा। और जब आप बोल रहे थे, उस समय मैंने एक आपत्ति उठाई थी ऐसे मामले, जो मंत्री के खिलाफ, सदन के सदस्य के खिलाफ, यदि उठाये जायं तो उसके लिये यह ज्यादा उचित होता है कि उसे पहले सूचना दी जाय, और स्पष्टीकरण की तैयारी का मौका उसे दिया जाना चाहिये पूरे तरीके से। कोई माननीय सदस्य गम्भीर मामलों के कोई आरोप लगा दे और दिन भर बैठने के बाद कहा जाय कि जवाब दो तो मैं समझता हूं यह उचित प्रक्रिया नहीं है। सदन हमारे स्वाभिमान का रक्षक है, और मैं समझता हूं, मंत्री होने के नाते, सरकार में बैठने के नाते स्वाभिमान को बेच नहीं दिया है, खो नहीं दिया है। मैं निश्चित रूप से कहता हूँ कि मनोहरसिंह जी मेहता मुझे भ्रष्टाचारी मानते हैं या बेईमान बताते हैं तो उससे मैं भ्रष्टाचारी या बेईमान नहीं हो सकता। यदि मैं भ्रष्टाचारी हूं, बेईमान हूं, तो माननीय अध्यक्ष, मैं आपको निवेदन करना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान की सबसे बड़ी

Page No 131

(श्री शिवचरण माथुर)

ताकत कोई भी हो, चाहे प्राई मिनिस्टर हो, वह भी मुझे नहीं बचा सकती और अगर मैं भ्रष्टाचारी नहीं हूं, बेईमान नहीं हूं, तो कोई भी मेरे खिलाफ में कुछ भी नहीं कर सकता। अध्यक्ष महोदय, चाहे जितना मेरे खिलाफ में अखबारों में प्रचार किया जावे कि भ्रष्टाचारी हूं, बेईमान हूं, मेरा कुछ भी नहीं बिगड़ सकता। अभी इस सदन में माननीय सदस्यों ने जिक्र किया कि मेरे खिलाफ अखबारों में यह खबर छपी है कि मैंने भ्रष्टाचार से तीन तीन बगले बना लिये हैं जयपुर में। तो अध्यक्ष महोदय, मैं आपको निवेदन करना चाहता हूं कि माननीय सदस्यों को शायद यह मालूम नहीं होगा कि मेरे सिर्फ एक मकान है यह मैं आपके जानकारी के लिये बतादूं कि वह सन् 55 में बनना शुरू हुआ बाद में 8 वर्ष तक लगातार धीरे धीरे उसमें काम मेरी सुविधा के अनुसार होता रहा और वह बादमें तैयार हुआ। और अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी जानकारी के लिये यह भी निवेदन कर दूं कि सन् 63 के बाद में मेरे मकान में एक ईंट भी नहीं लगी है। यह जानकारी आप भीलवाड़ा के किसी भी व्यक्ति से आप पूछ कर प्राप्त कर सकते हैं। मैंने मन्त्री परिषद् में आने के बाद कोई मकान नहीं बनवाया है। अगर कोई यह कहदे कि मन्त्री बनने के बाद में मैंने वहां किसी प्रकार का कन्सट्रक्शन कराया है तो वो चाहे जैसी सजा मुझे दे सकते हैं ....

श्री मनोहर सिंह मेहता : ये मैंने कभी नहीं कहा था कि आपने मन्त्री परिषद् में आने के बाद बंगला बनाया है।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य स्थान ग्रहण करें, व्यवधान नहीं करें।

श्री शिवचरण माथुर : इसके अलावा मेरे उपर यह चार्ज लगाया है कि मैंने गलत तरीके से ढाई बीघा जमीन कब्जे में करली थी, तो उसके बारे में मैं आपसे निवेदन कर दूं कि जब विधान सभा में मेरे उपर यह चार्ज लगाया गया तो मैंने उस वक्त इस्तिफा दे दिया। मैं अध्यक्ष महोदय, आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि मैंने इस्तिफा इस बात के लिये दिया था कि एक नागरिक होने के नाते मेरा फर्ज हो जाता है कि इसमें कितना सच है उसमें इस सदन के सामने रखता। मैं माननीय सदस्यों की जानकारी के लिये बता दूं कि मैंनें इस्तिफा इसलिये दिया था कि मेरे मन में ग्लानि हो गयी थी और बाद में मैंने मुख्य मन्त्रीजी से इस बारे में जांच करने के लिये कहा था और उन्होंने मैं आपको निवेदन कर दूं, अध्यक्ष महोदय, की इस बारे में डिटेल्ड जांच की और उसके बाद में वो इस निर्णय पर पहुचे कि मैं निर्दोष हूं इसलिये उन्होंने मुझे वापिस मन्त्री पद पर एपोइन्ट किया। क्योंकि मैंने मेरे पद का दुरुपयोग नहीं किया था और कोई जमीन नहीं हड़पी थी और बाद में मैंने उस जमीन को छोड़ने का इरादा कर लिया। मुझे इस बात का अफसोस होता है अध्यक्ष महोदय, कि आज फिर से इस सदन में गड़े मुर्दे उखाड़े गये हैं। अध्यक्ष महोदय, मैं अभी तक यह बात नहीं समझ पाया हूं कि आखिर बात क्या है, ये चाहते क्या है ?

दूसरी बात अध्यक्ष महोदय, जो यहां पर इस सदन में कही गयी है, मेरे बारे में वह यह है कि मैंने मेरे लड़के को एक फैक्ट्री ट्यूब की लगादी है। तो अध्यक्ष महोदय, मैं आपको जानकारी के लिये बतादूं कि मेरा बच्चा अभी दो साल पहले इन्जीनियरिंग में ग्रेजुएट हुआ है और उसे अगर मैं चाहता

Page No 132

(श्री शिवचरण माथुर)

तो कोई इन्जीनियर की जगह कहीं न कहीं दिला देता पर मैं सभी माननीय सदस्यों की जानकारी के लिये बतादूं कि मैंने उसे नौकरी नहीं करने की बात कहीं और उसे कहा की वह कोई सर्विस न करके कोई काम अपना खुद का ही स्कीम बना कर करे। मैं अध्यक्ष महोदय, आपको निवेदन करना चाहता हूं कि मेरे लड़के ने अप्रेल 1969 में आगरा यूनिवरसिटी से इन्जीनियरिंग में ग्रेजुएशन किया है। चूंकि मैंने उसे कह दिया था कि वह कोई अपना खुद का धन्धा करे इसलिए उसने एक एजेन्सी सीमेन्स की भीलवाड़ा में ही ली पर चूंकि हमारी आर्थिक हालत ठीक नहीं थी इसलिये उसे बन्द कराना पड़ा और आर्थिक हालत खराब होने की वजह से ही वह फैक्ट्री, मैं माननीय सदस्यों की जानकारी के लिये बतादूं कि दो वर्ष ही के बाद वह, बन्द करनी पड़ी। अगर मैं चाहता तो अपने पद का दुरुपयोग करके कोई उसे गलत तरीके से कोई सप्लाई का आर्डर वगैराह दिला कर उस काम को आगे चलने देता। पर मैंने ऐसा नहीं किया और उसे काम को छोड़ने की सलाह दी। फिर राजस्थान सरकार द्वारा इसी दरमियान में एक ऐसी स्कीम निकली कि जो इंजीनियरिंग ग्रेजुएट्स है और इन्जीनियरिंग डिप्लोमा होल्डर्स हैं उन्हें राजस्थान स्टेट मिनरल एण्ड डवलपमेंट कारपोरेशन से अपना खुद का धन्धा लगाने के लिये सरकार पैसा देगी तो उसमें ऐसा है कि दो दो इन्जीनियर्स शामिल होंगे तब कारपोरेशन उस स्कीम पर खर्चा करेगी तो मैं आपकी जानकारी के लिये बतादूं माननीय अध्यक्ष महोदय, कि उसमें एक पार्टनर मेरे लड़के का जो है वह महेशचन्द्र है उसके साथ काम शुरू किया है इसमें मैं आपको निवेदन कर दूं, अध्यक्ष महोदय, कि इसका खर्चा कारपोरेशन करेगी और इसमें कारपोरेशन के तीन डाइरेक्टर्स हैं, और यह लोन दिया हुआ है इस कारपोरेशन से ही इसलिए यह कहना अध्यक्ष महोदय, कि मैंने मेरे लड़के को 2–3 लाख रुपये देकर यह फैक्ट्री खुलवायी है, यह गलत बात है। गवर्नमेन्ट की स्कीम के अनुसार इसे इन्जिनियरिंग ग्रेजुएट होने के नाते 250 रुपये स्कोलरशिप मिलती है। यह फैक्ट्री जो है वह कारपोरेशन के स्कीम के अनुसार जिस प्रकार काम होना चाहिये उसी तरह, काम इसमें होता है। मेरा लड़का सुबह 8 बजे जाता है और रात को 9 बजे वापिस आता है। इसलिये मेरे लिए जो यह बात कही गई है कि मैंने लाखों रुपये की रिश्वत लेकर अपने बच्चे को फैक्ट्री खुलवायी है यह बात गलत है। आप चाहें तो इसकी जांच करवा सकते हैं और अगर इसमें दोषी पाऊं तो मुझे कोई भी सजा दी जा सकती है। इसके अलावा मेरे उपर यह आरोप लगाया कि मेरे लड़के ने एक साईकिल ट्यूब्स की इन्डस्ट्री लगा रखी है उसकी एजेन्सी आकड़ एण्ड कम्पनी को दे रखी है और आकड़ एण्ड कम्पनी का सारा माल कारपोरेशन द्वारा खरीदा जाता है और पावर डिपार्टमेन्ट विद्युत विभाग, जिसका कि मैं मिनिस्टर हूं वहां खरीदा जाता है, तो मैं इसके लिये निवेदन करदूं कि आकड़ एण्ड कम्पनी को मैं जानता ही नहीं हूं और ऐसा सुना है कि वह जयपुर में कोई साईकिल की होलसेल दुकान है, बड़ी दुकान है, पर मेरा इसमें कोई लेना देना नहीं है और न ही मेरे लड़के का इसमें हाथ है कि उसकी वजह से विद्युत विभाग में कोई माल खरीदा जाता होगा। पावर डिपार्टमेन्ट में अगर कोई माल खरीदा

(श्री शिवचरण माथुर)

जाता है तो वह विद्युत विभाग का आन्तरिक मामला है और अगर दूसरी कोई कारपोरेशन खरीदती है उसे तो वह कारपोरेशन जाने और फैक्ट्री का माल खरीदा जाता है तो यह भी कारपोरेशन का आन्तरिक मामला है। मुझे इससे कोई मतलब नहीं है। आकड़ एण्ड कम्पनी का मेरे डिपार्टमेन्ट से डील है या नहीं मुझे पता नहीं है। मैंने इतना जरूर आपसे पहले ही निवेदन कर दिया है कि आकड़ एण्ड कम्पनी एक साईकिल ट्यूब टायर वगैरह की जयपुर में बड़ी दुकान है और अगर कारपोरेशन ने, जिसके कि मेरे लड़के की फैक्ट्री में शेयर हैं, और उन्होंने एजेन्सी दी है तो दूसरी बात है क्योंकि कारपोरेशन की पून्जी मेरे लड़के की फैक्ट्री में लगी हुई है और वह गवर्नमेंट की स्कीम के अनुसार है उसमें कोई नाजायज बात नहीं इसलिये ये आरोप भी निराधार है। मुझ पर जो आरोप सिर्फ माननीय सदस्य ने मुझे बदनाम करने के लिये लगाये हैं, वैसे वे खुद मन में समझते हैं कि वह गलत हैं। इसके अलावा एक चार्ज मेरे छोटे भाई छैल बिहारी माथुर पर लगाया कि उसने फर्जी पट्टे बनाकर जमीन हड़प ली है। मैं आपको, अध्यक्ष महोदय, सभी सदस्यों को जानकारी दे देना चाहता हूं कि वह बात भी गलत सिद्ध हुई। उसके लिये भारत सरकार की पुलिस, सेन्ट्रल ब्यूरो आफ इन्वेस्टीगेशन हैं, उसके द्वारा जांच की गयी थी और वह केस कोर्ट में भी चला और उसमें भी मेरा भाई निर्दोष पाया गया, इसलिए सभी बातें राजनैतिक लाभ उठाने के लिये मेरे बारे में भ्रामक प्रचार करने के लिये की गयी हैं और इससे ज्यादा कुछ नहीं है। तीसरी बात अध्यक्ष महोदय, यह कही गयी है कि मेरे लड़के और लड़की की शादी में मैंने बिजली के पोल के खम्भे गड़वा कर बिजली ली थी मुफ्त में, तो उसके लिये मेरा निवेदन है कि आप चाहे तो जांच करवा सकते हैं मैंने...

श्री गिरधारीलाल व्यास : अध्यक्ष महोदय, हाउस 7 बजे तक का ही था, अगर आपकी और माननीय सदस्यों की आज्ञा हो तो इसको आगे बढ़ाया जाय।

श्री अध्यक्ष : यदि सदन की अनुमति हो तो समय जब तक यह डिबेट खतम नहीं हो तब तक के लिये बढ़ाया जाय। समय बढ़ाया गया श्री माथुर, आप जारी रखें।

श्री शिवचरण माथुर : तो मैं निवेदन कर रहा था कि अध्यक्ष महोदय, यह भी आरोप मुझ पर झूंठा लगाया गया है कि मैं इस बात के लिये आपको निवेदन कर देना चाहता हूं कि मैंने उसका पेमेन्ट 549 रुपये 70 पैसे का किया है और उसकी रसीद नम्बर 19191/दिनांक 31-3-71 को पेमेन्ट कर दिया है। अगर आप जितने भी 184 माननीय सदस्य इस सदन के हैं वो चाहे तो जाकर देखलें, और अगर जो बात मैंने कही है, वह अगर गलत हो तो मेरे खिलाफ कोई भी कार्यवाही की जा सकती है। इसके अलावा मेरे उपर यह चार्ज लगाया गया है कि मैं भीलवाड़ा जिले में, जहां श्री मनोहरसिंहजी मेहता की कान्सटीट्यून्सी है, वहां से लोगों को तबादले करा कर परेशान करता हूं, तो अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन करदूं कि भीलवाड़ा जिले में 8 सीटें एम. एल. एज. की हैं, उसमें सिर्फ एक मांडलगढ़ क्षेत्र है जिससे कि श्री मनोहरसिंह मेहता चुनाव

(श्री शिवचरण माथुर)
जीत कर आये हैं और बाकी के लोगों ने ऐसी कोई शिकायत नहीं की। मैं आपको निवेदन कर दूं कि मैंने इस भीलवाड़ा क्षेत्र में सभी जगह दौरे किये हैं पर मनोहरसिंह मेहता नहीं चाहते कि मैं उनकी कान्सटीट्यून्सी में ही जाऊं तो मैं आपको निवेदन कर दूं कि मैं इनको नाराज भी नहीं करता हूं और मैंने इनकी कान्सटीट्यून्सी में कोई तबादले वगैरहा नहीं कराये हैं और मैं ऐसे ऐसे छोटे काम करने के पक्ष में नहीं हूं और ऐसे नीचे स्तर के काम नहीं करता हूं और नहीं कभी किये हैं, और करूंगा भी नहीं। इसके अलावा मेरे ऊपर यह आरोप लगाया गया है कि मैंने गरीब लोगों को, जो कि शिड्यूल्ड कास्ट और शिड्यूल्ड ट्राइब के लोग हैं, उनको जमीने नहीं लेने दी और उनको जमीने देने में रोड़ा लगाया है तो यह भी आरोप, अगर मेरे उपर लगाया जाता है तो, गलत है क्योंकि अगर किसी भी जिले के हरिजनों को अगर जमीन मिलती हैं तो मुझे क्यों एतराज होगा। मैंने तो राज्य सरकार की जो नीति रही है, समाजवाद लाने की, उसके अनुसार कार्य किया है और समाजवाद के सिद्धान्तों के अनुसार हमेशा शिड्यूल्ड कास्ट और शिड्यूल्ड ट्राइब के लोगों की मदद की है। मैंने तो भीलवाड़ा जिले के श्री राधेश्याम खाती और जगदीप धोबी को जमीने अलोट करवायी हैं जो कि अच्छी से अच्छी जमीन है। इसलिये मेरे उपर यह आरोप जो लगाया है कि मैं हरिजनों का दुश्मन हूं बिलकुल निराधार है और मैंने जो काम किया वह मेरे पद का दुरुपयोग करते हुए नहीं किया है क्योंकि मेरे कार्ड तो ओपन है। मैंने तो मजमा-ए-आम में कहा है कि हरिजनों को जमीन और मकान अलोट होना चाहिए और मैंने उनको मकान या जमीन देने में कोई बाधा नहीं डाली है। लेकिन किन्तु फलां ने आदमी को जमीन अलाट कर दी, मामाजी को अलाट कर दी, निश्चित रूप से कह सकता हूं कि मामाजी को कहीं पर जमीन अलाट हुई इसकी मुझे जानकारी नहीं। दीगोद में अलाट हुई। कहीं मेरा हाथ हो, पांच साल में मनोहरसिंहजी को बहुत समझाने की कोशिश की कि जमीन अलाट कराने में मेरा कोई हाथ नहीं है। पता नहीं इस सेशन में उन्हें क्या हो गया। लिसोडा बीड और केशव विलास के बारे में आप कहते हैं, मेरा निश्चित रूप से इसमें हाथ नहीं है। मैंने इनकी कोन्सटीटुएन्सी में विकास करने की जरूर कोशिश की है, वे माने या न माने। सच्चे तरीके से जानने की कोशिश करेंगे तो वे मानेंगे कि कुछ न कुछ काम करने की कोशिश की।

चार पांच तरह के आरोप लगाये गये उनके सम्बन्ध में मुझे इतना ही कहना है कि वे बुनियाद हैं। इसमें कोइ आधार नहीं है। केवल इस आधार पर कि राजनैतिक दृष्टि से लाभ मिल जाय और अखबारों में और सुर्खी में नाम आजाय इसके सिवाय और कुछ नहीं है। यही मुझे पर्सनल एक्स्प्लेशन के रूप में कहना है।

श्री अध्यक्ष : विधि मंत्री।

श्री पूनमचन्द विश्नोई (विधि मंत्री): माननीय अध्यक्ष महोदय, इस बहस के दौरान जयपुर से आने वाले माननीय सदस्य मुख्य मंत्रीजी और हमारी पार्टी पर यह तो इल्जाम लगाते हैं कि कम्युनल पार्टी है और खुद भी

(श्री पूनमचन्द विश्नोई)

कम्युनिज्म में विश्वास करते हैं और दो तीन उसके लिये उन्होंने उदाहरण दिये ।

पहला मामला उठाया वह सवाई माधोपुर के अध्यापकों का है जिनको 5 जून 1964 को पृथक कर दिया । उन पर इलजाम यह था कि वे जमियत इस्लामी के सदस्य हैं और इसलिये सरकारी नौकरी में वे नहीं रह सकते । अध्यापकों ने हाई कोर्ट में रिट की और साथ साथ राज्य सरकार के सामने प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया कि उनके साथ अन्याय हुआ है । उस पर विचार करके राज्य सरकार ने उस मामले को रिजेक्ट कर दिया । दुबारा एक प्रार्थना पत्र तत्कालीन शिक्षा मंत्री के सामने प्रस्तुत किया कि हमारे खिलाफ कोई ऐसा चार्ज नहीं हैं जिसके कारण कि हमें नौकरी में न रखा जाय इसलिये हमें दुबारा नौकरी में ले लिया जाय शिक्षा मंत्री ने एक नोट बनाया....

श्री भैरोंसिंह : शिक्षा मंत्री कौन थे ?

श्री पूनमचन्द विश्नोई : बरकत साहब

सबवर्सिव एक्टीविटी की हो ऐसा सबूत सामने नहीं आया और तीसरा यह है कि उनको मौका नहीं दिया अभियोग लगाकर उनको सुनने का और बिना सुने उनको सेवा से पृथक कर दिया । मुख्य मंत्रीजी के पास यह मामला, यह नोट गया और राज्यपाल महोदय के पास भी गया तो अस्वीकार कर दिया । उसी वक्त राजस्थान हाई कोर्ट से यह फैसला आया कि उनको सेवा से मुक्त करना गलत था और हाई कोर्ट ने वही ग्राउन्ड्स दिये कि जो शिक्षा मंत्री ने दिये । गवर्नमेन्ट ने उसकी अपील कर दी ।

श्री भैरोंसिंह : ओर्डर तो वापिस ले लिया ? सर्विसेज टरमिनेट की ।

श्री पूनमचन्द विश्नोई : हाई कोर्ट के आदेश से की ।

श्री भैरोंसिंह : जब अपील की है तो कैसे किया ?

श्री पूनमचन्द विश्नोई : सब तरह से एक्जामिन किया है कि हाई कोर्ट के फैसले में ज्यादा समय लग सकता था ।

श्री भैरोंसिंह : कोई अपील पेन्डिग नहीं है । हाउस में तो यह मत कहिये कम से कम ।

श्री पूनमचन्द विश्नोई : गवर्नमेंट की अपील पेन्डिग है । मेरे पास यही सूचना है ।

श्री भैरोंसिंह : मैं भी आपको कह रहा हूं कि कोई अपील पेन्डिग नहीं है । कम से कम आप यह तो हाउस में मत कहिये ।

श्री पूनमचन्द विश्नोई : मेरे सामने जो है वह कह रहा हूं ।

जहूर अहमद को डिप्टी गवंनमेंट एडवोकेट बनाया उसके बारे में कहा । कई प्रकार के इल्जाम लगाये गये कि संदिग्ध व्यक्ति माना जाता था ।

श्री भैरोंसिंह : यह नहीं कहा ।

श्री पूनमचन्द विश्नोई : और जो संदिग्ध व्यक्ति आते थे उनका पक्ष करता था यह जहूर अहमद सन् 65 में पब्लिक प्रोसिक्यूटर हुआ डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट की सिफारिश पर और समय समय पर इनकी पुनर्नियुक्ति होती रही । 1970 की 4 मार्च को डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ने यह रिपोर्ट दी कि यह संदिग्ध व्यक्ति

(श्री पूनमचन्द विश्नोई)

है और इसने मुसलमानों का फेवर किया है। पहली बात यह थी कि मुस्लिम एक्यूज्ड का यह पक्ष लेता था। उसकी गवर्नमेन्ट एडवोकेट ने जांच की। उसने किसी प्रकार यह किया जाना नहीं पाया।

विभिन्न स्तर पर इसकी जांच करा गई। डी० आई० जी० सी० आई० डी०, एस० पी० सी० आई० डी०। होम मिनिस्टर और ला कमीश्नर सब से स्क्रूटिनाइज कराया। इस आरोप में सचाई नहीं है और सब आरोपों से मुक्त कर दिया। इसी बीच में पब्लिक प्रोसीक्यूटर चल रहे थे और एक डिप्टी गवर्नमेंट एडवोकेट की जगह थी उनकी योग्यता और उनके अनुभव को देखते हुए उनको नियुक्त किया गया।

श्री भैरोंसिंह : बी० सी० चटर्जी की ओपीनियन क्या थी ?

श्री पूनमचन्द विश्नोई : अध्यक्ष महोदय, मेरे पास यह सूचना नहीं है।

श्री अध्यक्ष : दूसरा प्रश्न।

श्री पूनमचन्द विश्नोई : तीसरा केस बताया शमीम और दो एक्युज्ड। अपील की हाई कोर्ट में और वापिस ले ली गई। वाकयात हैं कि तीन मुल्जिमों का तीन दफा में चालान हुआ एडीशनल डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के पास और तीनों को बरी कर दिया। एस० पी० की यह राय हुई कि उनके खिलाफ अपील की जाय। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट और डिप्टी गवर्नमेंट एडवोकेट की यह राय थी कि इसमें कामयाबी की सूरत नहीं है, इसलिए अपील दायर नहीं की जाय। फिर भी राज्य सरकार ने इस पर विचार करके निर्णय लिया कि केवल जिन व्यक्तियों को चोट लगी वह ही गवाह बामोके से लेना चाहिये और अपील कर देनी चाहिये। तीनों व्यक्तियों के खिलाफ अपील दायर की। बड़ी मुश्किल से एक के विरुद्ध अपील एडमिट हुई और दो के विरुद्ध नहीं हुई। सब ने यह राय भेजी कि इसमें कामयाबी की सूरत नहीं है इसलिए इसको विड्रो कर लिया जाय। इस सिफारिश को भी राज्य सरकार ने नहीं माना। दुबारा गवर्नमेंट एडवोकेट और डिप्टी को राज्य सरकार की राय के साथ फिर भेजा कि इसमें कोई कामयाबी की स्थिति तो नहीं है ? इधर हाई कोर्ट से तामील नहीं हो रही है समन और तीस दिनों में तामील करानी है। समय करीब आ गया। बराबर हाई कोर्ट में पैरवी करने वालों की ओर से तकाजा आ रहा था तो इस स्थिति में आदेश दिये गये कि सरकार प्रेस नहीं करे।

श्री भैरोंसिंह : एक जानकारी।

क्या यह सही है कि श्री राजनारायण, गवर्नमेंट एडवोकेट की सिफारिश से ही तो अपील फाइल की थी और उनकी ही सिफारिश से अपील वापिस ली गई ? इन तीनों केसों में सरकार के एडवोकेट राजनारायण ने मन्त्री मण्डल की काफी सेवा की.इसके रिवार्ड में उनको हाई कोर्ट का जज बनाया गया है।

श्री पूनमचन्द विश्नोई : उस स्टेज पर ये वकील नहीं थे। एम० डी० पुरोहित थे। राजनारायणजी की सिफारिश तो बहुत बाद में आई।

इन दो की सिफारिश को रिजेक्ट करके अपील फाइल करने का फैसला किया था।

(श्री पूनमचन्द विश्नोई)

एक मामला और उठाया गया जो शिक्षा विभाग से सम्बन्धित है। कहा गया है कि बहुत सी जगहों पर जहां भवन अच्छे थे, लड़के भी बहुत थे, पर वहां पर स्कूलें नहीं खोली गई। छोटी छोटी जगहों पर खोल दी गई। राजनैतिक दृष्टि से खोल दी।

मैं साफ कर दूं कि किसी जगह राजनैतिक दृष्टिकोण नहीं अपनाया गया। जिन ने भी कहा सबका ध्यान रखा गया। विभाग की सिफारिशों पर भी ध्यान दिया गया।

पर एक निवेदन कर देना चाहता हूं कि बहुत अधिक संख्या में इस साल प्राथमिक शालाएं और सैकेण्डरी स्कूल खोले गये हैं। हर जिले से चार पांच के लिए सिफारिशें थीं उसकी जगह पर बीस बीस पच्चीस पच्चीस और तीस चालीस तक संख्या में प्राथमिक शालाएं खोली गई। फिर मौका भी अधिक नहीं मिला था मुझे। शपथ ग्रहण जिस दिन की तब तक आठ नौ रोज स्कूलें खुले को हो गये थे।

फैसले जल्दी करने थे। जनसंख्या को हमने आधार माना है। केवल एक जिला मेरे ध्यान में है जिसमें एकाध कम पड़ता है।

श्री चालसिंह सोढ़ा (जैसलमेर) : आपने मेरे जिले की तरफ ध्यान नहीं दिया।

श्री पूनमचन्द विश्नोई : आपके यहां हमने काफी स्कूलें खोली हैं। सैकेण्डरी और प्राथमिक। आप यह कह रहे थे कि मैंने कोई वहां भाषण दिया था कि आपके जिले के एम०एल०ए० ने पैरवी नहीं की इसलिये समय पर नहीं खुल सकीं। मैं स्पष्ट कर दूं कि आपको जन संख्या के अनुपात से भी अधिक दिया है। वहां के लोगों ने कहा भी कि हमारे एम० एल० ए० अगर नहीं आये तो हमारे साथ ज्यादती नहीं होनी चाहिये। मैंने कहा कि भाई हमें करना है न्याय।

पर इसके बाद भी एक एम० एल० ए० के नाम निवेदन कर देना चाहता हूं। राजस्थानी में एक कहावत है उसके अनुसार पूरा सिद्ध करके काम करना चाहिये।

श्री हरिवल्लभ शर्मा : आपने सवाई माधोपुर के साथ बड़ा अन्याय किया है। पक्षपात से काम लिया है। इन्सपेक्टर की रिपोर्ट वहां की थी। जिला परिषद् की सिफारिशें थीं। आबादी के लिहाज से आपने सवाई मधोपुर में न्याय नहीं किया। इसका क्या कारण था ?

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज।

श्री हरिवल्लभ शर्मा : यह कोई क्राइटेरिया नहीं कि एम. एल. ए. स्वयं भागदौड़ करे।

श्री पूनमचन्द विश्नोई : हमने सभी रिपोर्टों पर पूरा गौर किया है। और भी कई एन्गल से हमने विचार किया है।

श्री हरिवल्लभ शर्मा : आपने एक भी मिडिल स्कूल नहीं खोली, इसका क्या कारण है ?

(शोरगुल : अध्यक्ष)

आप तो भूरसी बांटते हुए चले गये।

श्री पूनमचन्द बिश्नोई : यह जो प्रस्ताव सदन में आया है। इसे हम अच्छी तरह समझते हैं क्यों लाया गया। सुखाड़िया-जी ने किसी तरह से सामन्ती तत्वों को, पूंजीपतियों को, कांग्रेस के विरोधियों को, पिछले 18।20 साल के अपने शासनकाल में, एक नहीं होने दिया। पर जब उन्होंने सत्ता छोड़ी तो इन तत्वों ने समझा कि इन्होंने कोई त्याग नहीं किया है यह तो जबरन इनसे छुड़ाया गया है तो इतना बड़ा विरोधी निकल गया तो अब हमारा फायदा है। अब तो पीछे छोटे छोटे लोग हैं, इनको आपस में लड़ा दो।

पर अध्यक्ष महोदय, चुनाव नजदीक आ रहे हैं और कांग्रेस पार्टी के बारे में जो भ्रम विरोधी पक्ष में था कि यह तो स्वार्थ के कारण एक जगह हैं, इनमें तो मिनिस्ट्री के लिये मतभेद हैं, आर्थिक या राजनैतिक कोई कार्यक्रम इनके पास नहीं है, इसलिये इनके मन में यह कल्पना थी कि इससे इनका घर टूट जायगा।

पर अध्यक्ष महोदय, कांग्रेस पार्टी सिद्धान्तों पर आधारित है। इसका आर्थिक और राजनैतिक कार्यक्रम है। इस विरोधी पक्ष को यह आशा थी कि जितने भी दूसरे प्रदेश हैं, सब जगह किसी एक महीने, कहीं दो महीने ही सही, पर कुछ न कुछ सत्ता में आकर अपने हाथ पीले किये हैं, उसी तरह से राजस्थान में भी ये कांग्रेस की फूट का लाभ लेकर अपने हाथ पीले करना चाहते थे सत्ता में आकर। पर उनकी यह आशा सफल नहीं हो सकती है। हमारे यहां विरोधी दल के लोग हमेशा कंवारे रहे हैं और अब बुढ़ापे की ओर अग्रसर हो रहे हैं। इसलिये उनको काफी निराशा हो रही है और यह अविश्वास का प्रस्ताव उसी का द्योतक है। वे कंवारे रह गये हैं इसलिए लाये हैं इसे।

श्री अध्यक्ष : माननीय उद्योग मंत्रीजी।

श्री रामकिशन : अध्यक्ष महोदय, काल अटेन्शन का जवाब दें।

श्री हरिदेव जोशी (उद्योग मंत्री) : माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय मनोहर सिंहजी मेहता ने अविश्वास का प्रस्ताव रखा है उसका विरोध करने के लिये मैं खड़ा हुआ हूं।

अध्यक्ष महोदय, आज इस सदन में जहां प्रशासनिक स्थितियों के बारे में माननीय सदस्यों के विचार सुनने का मौका मिला, वहां पर कुछ राजनैतिक दर्शनों की बात भी सुनाई दी।

प्रत्येक दल के नेता ने अपनी अपनी बात यहां रखी। मुझे सबसे अधिक हैरानी विरोधी दल के माननीय नेता को सुनकर हुई जबकि उन्होंने कहा कि यहां तो नई बोतल में पुरानी शराब भर दी गई है।

अध्यक्ष महोदय, कांग्रेस पार्टी हटकर दूसरी पार्टी पावर में आई हो ऐसा तो कुछ नहीं है। पहले भी कांग्रेस पार्टी ही थी, जिसका एक लीडर हटकर दूसरा लीडर इलेक्ट हो गया। बस इतना सा मामला है। तो अब इसमें पुरानी और नई शराब क्या हुई? फिर मैंने भी तो कभी शराब चखी नहीं। विरोधी दल के माननीय नेता मुझे बतला सकते हैं जो पुरानी शराब को ज्यादा पसन्द करते हैं।

मगर जो भी हो। कुछ लोगों को भ्रम था। उनका भ्रम टूटा। मैं एक

(श्री हरिदेव जोशी)

बात कह सकता हूं कि प्रत्येक पार्टी के जीवन में कुछ इवोल्यूशन हुए हैं। यह बात केवल कांग्रेस के साथ ही हुई हो ऐसा नहीं है। स्वतन्त्र पार्टी के साथ हुई, जनसंघ, सोशलिस्ट पार्टी और कम्यूनिस्ट पार्टी भी इससे नहीं बची है।

कम्यूनिस्ट पार्टी के माननीय सदस्य को तो शिकायत है मुझ से। मुझे इसमें ऐतराज नहीं। उनसे भी लाखों लोगों को ऐतराज है।

श्री रामानन्द अग्रवाल : नीतियों से, आपकी व्यक्तिगत नहीं।

श्री हरिदेव जोशी : आपकी विचारधारा से तो आपके ही लाखों लोगों को ऐतराज है। और पार्टियां हैं जो आपको प्रतिक्रियावादी कहती हैं। एक कम्यूनिस्ट पार्टी आफ इण्डिया थी। इसके बाद में दूसरी कम्यूनिस्ट पार्टी हुई। दूसरी पार्टी पहली को बुर्जुआ कहते हैं।

श्री रामकिशन : चार हैं।

श्री हरिदेव जोशी : इसके बाद मार्क्सिस्ट लेनिनिस्ट बनी जिनको बोलचाल की भाषा में नक्सलिस्ट कहो, वे आपको भयंकर प्रतिक्रियावादी कहते हैं। और जो कम्यूनिस्ट पार्टियां हैं वे एक दूसरे को फूटी आंखों नहीं देखते तो आप कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को किस निगाह से देखते हैं इसमें हमें कोई आश्चर्य नहीं। नं मिला है आपसे।

मैं एक ही बात कह सकता हूं, अध्यक्ष महोदय, विद्यार्थी जीवन छोड़कर जब से मैं राजनीति में आया हूं।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल (जौहरी बाजार जयपुर). पढ़े भी हो क्या ?

श्री हरिदेव जोशी : मैं कभी भी इस प्रकार की स्थिति में नहीं बैठा, जिसमें माननीय सदस्य बैठे हैं।

जब चुनाव हुए अध्यक्ष महोदय, यह विश्लेषण उस दिन करते तो खुशी होती। तो मैं कह रहा था कि विद्यार्थी जीवन छोड़कर जब से मैं राजनीति में आया हूं मैंने बराबर राजाओं, महाराजाओं और जागीरदारों का मुकाबला किया है। आज ये कहते हैं मैं सिंडीकेटी हूं। अब क्या हूं, क्या नहीं हूं, आप सब जानते हैं। मुख्यमन्त्रीजी जानते हैं। अब वे चाहें तो अपने साथ रक्खें, न चाहें तो मुझे इसमें कोई नाराजगी नहीं है, इससे कुछ फर्क नहीं पड़ता, मैं तो कांग्रेस का सिपाही हूं। सिपाही रहूंगा। पर जिस स्थिति में आज माननीय सदस्य बैठे है, उस स्थिति में न मैं कभी बैठा हूं, न आगे बैठने वाला हूं। अध्यक्ष महोदय, राजस्थान जबसे बना है और जबसे चुनाव शुरू हुये हैं, राजस्थान में एक तरफ कांग्रेस रही है और दूसरी तरफ चाहे किसी भी नाम से सामन्तवादी शक्तियां कांग्रेस के मुकाबले में रही हैं। और अगर राजस्थान में प्रगतिशीलता का झण्डा बुलन्द किया है तो कांग्रेस पार्टी के अलावा कोई नहीं है। राजशाही का मुकाबला किया है तो कांग्रेस ने, सामन्तशाही का मुकाबला किया है तो कांग्रेस ने, जागीरदारी प्रथा का अन्त किया तो कांग्रेस ने किया और आज भी मैं कह सकता हूं

(श्री हरिदेव जोशी)

कांग्रेस बहुत गाल बजाना नहीं चाहती है, काम करना चाहती है और उसने काम किया है। इसलिये अध्यक्ष महोदय, मैं इस विवाद में नहीं पड़ना चाहता कि मैं सिन्डीकेट का प्रतिनिधि हूं अथवा मैं प्रगति शील हूं। जो कुछ मैं हूं, अगर बरकत साहब मुझे मंत्रिमण्डल में रखना चाहते हैं तो रखें इससे ज्यादा कुछ नहीं कह सकता हूं। अगर मैं मंत्रिमण्डल में नहीं रहूंगा तो यह चीज नहीं है कि उसके बिना मैं वो हो जाऊंगा। इसलिये अध्यक्ष महोदय, जिस समय आप राजनीति में प्रजा मण्डल में कांग्रेस के साधारण सदस्य के रूप में थे, उस समय भी मैं कांग्रेस के पदाधिकारियों में से एक था। उस समय कांग्रेस की हुकूमत नहीं थी इसलिये अध्यक्ष महोदय, मैं यह नहीं कहता किन्तु मुझे आपकी बात से गिला नहीं है। जो मुझे प्रतिक्रियावादी समझ सकते हैं, समझें, लेकिन दुनियां में लाखों लोग आपको प्रतिगामी समझते हैं, उतना ही पिछड़ा हुआ समझते हैं और राजनैतिक इतिहास को अगर आप उठाकर देखें तो एक साधारण से मौके पर कांग्रेस के साथ तटस्थ रहने का कार्य किया है। मगर जिस समय सामन्तवादी शक्ति थी उस समय आप महारानी गायत्री देवी के साथ रहे हैं, उस समय आप महारावल लक्ष्मणसिंह जी की गोद में जाकर बैठ गये मुझे इसमें कोई शिकायत नहीं है। हर समय हर आदमी को अपने बारे में राजनैतिक निर्णय करने का अधिकार है। वह अधिकार आपके पास भी सुरक्षित है और मेरे पास भी सुरक्षित है। इसलिये अध्यक्ष महोदय, आज सोशलिस्ट पार्टी के माननीय नेता ने एक फिलोसफी का यहां उद्घाटन किया और वह उद्घाटन यह है कि सिवाय उनकी पार्टी के और कोई दूसरी पार्टी ही नहीं है हिन्दुस्तान भर में, दूसरे कोई थिन्कर नहीं है देश में; कोई पोलिटिकल फिलोसफर नहीं उनकी पार्टी के अलावा। अध्यक्ष महोदय, एक बात मैं नम्रता पूर्वक कहना चाहता हूं अगर जनमत कोई वस्तु है तो उस जनमत ने सिद्ध कर दिया है कि आपकी फिलोसफी सही नहीं है, गलत है। आप एक तरफ समाजवाद लाने की बात करते हैं और दूसरी तरफ सामन्तवाद के साथ दल बदल करते हैं। एक तरफ प्रगतिशीलता की बात करते हैं और दूसरी तरफ राजा–महाराजा का और सामन्तवाद और प्रतिगामियों के साथ बैठकर आगे बढ़ना चाहते हैं। आज राजस्थान में अध्यक्ष महोदय, कब्बडी के पाले में कौन जीता है। सन् 67 में आप किधर थे-हम राजा महा–राजाओं के खिलाफ लड़ रहे थे और आप उनकी गोद में चल रहे थे। और आज भी मैं कहना चाहता हूं आज आप कांग्रेस की बात को क्या कहते हैं'''' "

श्री विजयसिंह : राजा महाराजा तो आपके विरोध में रहे हैं।

श्री हरिदेव जोशी: अध्यक्ष महोदय, आप केवल उसकी बात क्या कहते हैं, एक निवेदन करना चाहता हूं और वह यह है कि अखिल राजस्थान के स्तर पर सोसलिस्ट पार्टी ने अपना प्रोग्राम दिया होगा और अगर वह जनता को उचित लगा होता तो राजस्थान की जनता भी उसकी ओर आकर्षित हुई होती। अखिल राजस्थान के अन्दर अगर आप लोगों को अपनाया होता, प्रभावित किया होता, लेकिन नहीं। मुझे

(श्री हरिदेव जोशी)

तो लग रहा है डा० लोहिया के बाद जैसे इस पार्टी का दिवालियापन नजर आया और सोसलिस्ट पार्टी अलग अलग बिखरी हुई दिखाई देती है। इसलिये अध्यक्ष महोदय, मैं आपको पुन: विचार करने की राय दूंगा। जिस हालत में आप गुजर रहे हैं वह फैसला ठीक नहीं है। आप भाषण यों देंगे और वोट देंगे स्वतन्त्र पार्टी को। सोसलिस्ट पार्टी की तरफ से और सामन्तवादियों के खेमें में से प्रतिक्रियावादियों के खेमें में जाना चाहते हैं, तो पाले में जाकर कबड्डी खेलें। अध्यक्ष महोदय, स्वतन्त्र पार्टी के नेता महोदय ने...

श्री विजयसिंह (मकराना) : बीच वाली टोपी प्रभावित करती है...

(व्यवधान)

हमको डराने की बात करते हैं।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य।

श्री हरिदेव जोशी : अध्यक्ष महोदय, स्वतन्त्र पार्टी के......

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आर्डर, आर्डर। माननीय सदस्य।

श्री हरिदेवजी जोशी : स्वतन्त्र पार्टी के माननीय नेता महोदय ने दल बदल की भी बात कही। यह अजीब सी बात है मीठा-मीठा हम और कड़वा-कड़वा तुम। जब आप कांग्रेस के किन्हीं लोगों को अपने दल में ले लें तो सरकार बनाने की मांग करने लग जायं और जब आपके दल के लोग दूसरी तरफ चले जायं तो आप शिकायत करने लग जायं और फिर कहें कि होम मनिस्टर साहब की बात नहीं मानते हैं। अध्यक्ष महोदय, सन् 67 से देश में दल बदल की प्रक्रिया शुरु हुई।

श्री राम किशन : सन् 52 से।

श्री हरिदेव जोशी : और उसकी प्रक्रिया भी शुरू हुई और लोग निश्चित रूप से समझते हैं कि सरकार में मन्त्री बनने के लिए इधर उधर जो लोग दल बदल कर जाते हैं, उनकी इज्जत नहीं करते हैं।

(श्री रामचन्द्र आर्य द्वारा व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, कांग्रेस पार्टी किन्हीं दूसरी पार्टियों के सदस्यों को अपने में मिलाने की गुनाहगार है तो हिन्दुस्तान की सारी की सारी सरकारें इस बात की गुनाहगार हैं जिसने कांग्रेस के सदस्यों को तोड़कर अपनी पार्टी में मिलाकर सरकार बनाने की कोशिश की। इसलिए अध्यक्ष महोदय केवल कांग्रेस को उपदेश देने के लिए अगर कोई बात कही जाय तो वह ठीक नहीं होगी और आपको आखिरी चोट तो जनसंघ ने मारी है- स्वतन्त्र पार्टी के नेता महोदय को निवेदन करना चाहता हूं, हमसे कोई शिकायत करते हैं .....

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : मैंने तो माननीय मन्त्री महोदय को यह कहा कि कोई न कोई बात से या कानून के जरिये इसमें रुकावट होनी चाहिये।

श्री हरिदेव जोशी : अध्यक्ष महोदय, आपको मालूम है कि सारे राजस्थान में से एक स्वतन्त्र पार्टी का सदस्य चुन कर गया था पार्लियामेन्ट के लिए और उसको भी जनसंघ ने छीन लिया अब इसकी शिकायत मुझसे क्यों करते हैं ?

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : आप जो कह रहे हैं बिलकुल सच है लेकिन कोई न कोई रुकावट कानून के जरिये होनी चाहिए।

श्री हरिदेव जोशी : अब देखना यह है आप क्या रुकावट करते हैं ? अब आप जनसंघ के साथ मेल करते हैं, चौगुटा बनाते हैं अथवा जो 67 में किया था, वही करते हैं। अब देखने की बात तो यह है। कांग्रेस तो विरोधी दल है.......

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : ये राजनीतिज्ञ और डिप्लोमेसी की बात करेंगे तो मेरी समझ में नहीं आयेगी।

श्री विजयसिंह : हम तो चौगुटा बनाते हैं लेकिन आपको तो पकड़े हुए हैं।

श्री हरिदेव जोशी : हम तो आपके विरोध में हैं और आपकी पार्टी को देखना चाहते हैं, बताइये क्या कहना चाहते हैं ? अब आप जिनके साथ बैठते हैं उनकी हमदर्दी आपके साथ है क्या ? और इसलिये अध्यक्ष महोदय, मेरा तो यही निवेदन है कि यह सोचने की बात है, सोच लीजिये।

श्री विजयसिंह : इन्होंने सन् 52 में दल बदला।

श्री हरिदेव जोशी: आप नहीं सोचेंगे तो पछतायेंगे, इसको भी देख लीजिए। एक प्रक्रिया अध्यक्ष महोदय, जैसे जैसे चुनाव शुरू हुए हैं वैसे वैसे चुनावों की प्रक्रिया शुरु हुई है और वह प्रक्रिया तब तक चलेगी जब तक कि अध्यक्ष महोदय, चुनाव पूरे नहीं हो जाते हैं। इस प्रक्रिया में प्रथम चरण आज का यह अविश्वास का प्रस्ताव है, अध्यक्ष महोदय। इसमें आपने कोई गलत काम किया है या कुछ किया है ऐसा मैं नहीं मानता। अध्यक्ष महोदय, विरोधी दल का अधिकार है कि वह अपनी बातों को कहे और एम्फेटिकली कहे, अविश्वास प्रस्ताव लाये और सरकार के सामने बात को कह दे और जीत सके तो नो कान्फीडेन्स पास करवाकर सरकार को गिरादें, इसमें किसी को कोई ऐतराज नहीं होना चाहिए। जो पार्लियामेन्ट्री डेमोक्रेसी में विश्वास करते हैं उनको इस प्रक्रिया से कोई नाराजगी नहीं होनी चाहिए बल्कि और उससे कुछ पा सकते हैं तो ज्यादा सीखने और समझने की कोशिश करनी चाहिए। मगर अध्यक्ष महोदय, अगर कोई आता हैं बृहस्पति के रूप में और चाणक्य के रूप में और दूसरों को उपदेश दे और खुद ग्रहण करने की कोशिश नहीं करे तो यह नहीं चल सकता।

अध्यक्ष महोदय, इसलिए मुझे यह निवेदन करना है कि आज की इस बैठक के बाद सदन के सदस्य इस सदन में जीतकर आयेंगे तो फिर मिलेंगे . . . .

श्री भैरोंसिंह : बिना जीते ही मिलेंगे एक बार तो।

श्री हरिदेव जोशी : यों बाहर तो हमेशा ही मिलेंगे।

श्री भैरोंसिंह : अन्दर भी मिलेंगे।

श्री हरिदेव जोशी : एक चीज जरूर है वह यह कि कुछ मित्रों ने सुखाड़ियाजी को यह कह कर कि उन्होंने तो इस सरकार से इसलिए इस्तीफा दिया कि इन्दिराजी ने चाहा। मैं सुखाड़ियाजी जैसे व्यक्ति के लिए इन्दिरा जी कहें और वह नहीं छोड़ें ऐसा मैं मानकर नहीं चलता, किन्तु यह निश्चित रूप से अधिकारपूर्वक कह सकता

(श्री हरिदेव जोशी)

हूं कि सुखाड़ियाजी वह व्यक्ति हैं जिन्होंने 62 के अन्दर सरकार छोड़कर अलग हटने की कोशिश की और उसके बाद में उन्होंने इस बार भी सरकार छोड़कर अलग हटने की कोशिश की। शुरू शुरू में मेरे जैसे व्यक्ति को ऐसा लगा था कि वह नहीं छोड़ें तो ज्यादा अच्छा है किन्तु मैं एक बात कह सकता हूं और वह यह है कि सरकार के निर्माण के आधार पर कई पार्टियां बनी और बिगड़ गयी। उत्तर प्रदेश का उदाहरण सामने है मगर राजनीति में कोई ईमानदारी है तो राजस्थान कांग्रेस को आपको बधाई देना चाहिए कि वह चट्टान की तरह से एक हो कर खड़ी रही। बड़ी बड़ी कसौटियों के मौके पर राजस्थान कांग्रेस ने कोई ऐसा करेक्टर नहीं दिखाया जो कि दूसरी पार्टियों ने दूसरी जगह दिखाया। 1967 के अन्दर हमारे सामने चुनौती थी मगर कांग्रेस का एक भी आदमी कांग्रेस छोड़ कर नहीं गया और आज कोई अगर यह आशा करे चलता है कि अमुक आदमी लीडर चुन लिया जाये इसलिए दूसरों को प्रोवोक करके कांग्रेस के अन्दर फर्क पैदा किया जायेगा उनको निराशा के अलावा कुछ हाथ नहीं लगने वाला है। अध्यक्ष महोदय, आज भी मैं ऐसा समझता हूं कि चीफ मिनिस्टर और मेरे साथी यह मानते हैं और एक बार नहीं अनेक बार कह चुका हूं कि सुखाड़िया जी आज भी हमारे नेता हैं। मैं यह कह सकता हूं कि मोहनलालजी सुखाड़िया वर्तमान राजस्थान के निर्माता हैं और उनके नेतृत्व के अन्दर कांग्रेस आगे बढ़ी है, राजस्थान आगे बढ़ा है। पालिसीज में और एप्रोचेज में किन्हीं लोगों के साथ हमारा मतभेद हो सकता है...

श्री रामचन्द्र आर्य : भ्रष्टाचार में भी आगे बढ़ा है।

श्री हरिदेव जोशी : अध्यक्ष महोदय, आज जो लोग ऐसा सोचते हैं कि इस प्रकार की बातें करकर वे कांग्रेस दल में निराशा पैदा कर सकेंगे तो उन्हें निराशा ही हाथ लगेगी, यही मैं कह सकता हूं और यही मुझे कहना है।

अध्यक्ष महोदय, राजस्थान का जिस दिन इतिहास लिखा जायेगा, उस दिन आज जो बातें कुछ व्यक्तियों के बारे में कही गयी हैं, निश्चित रूप से इतिहास में राजनैतिक रागद्वेष से कही गयी हैं, इसके सिवाय कोई दूसरी संज्ञा इसको नहीं दी जायेगी।

माननीय अध्यक्ष महोदय, सदन के माननीय सदस्यों ने कुछ बातें कुछ विभागों के बारे में भी कही है। एक माननीय सदस्य ने भरतपुर इलाके के अन्दर इरींगेशन डिपार्टमेंट के अन्दर परचेजेज और इर्रेगुलेरिटीज के बारे में एक ध्यान आकर्षण प्रस्ताव दिया था। मैं तो उन व्यक्तियों में से हूं अध्यक्ष महोदय, कि जिन्होंने पालियामेंट और असेम्बली को सर्वोच्च अपने मन में मानकर स्थान दे रखा है। मैंने उस दिन भी उनसे यही निवेदन किया था और आज भी यही कहना चाहता हूं कि जो कोई भी इर्रेगुलेरिटी होगी, कोई भी इर्रेगुलेरिटी करने वाला व्यक्ति अनपनिश्ड् नहीं रह सकता, यह मैं विश्वास दिलाकर चल सकता हूं। अब उसमें मुझे समय चाहिये। कल और परसों अध्यक्ष महोदय, एक स्टडी टीम गवर्नमेंट आफ इण्डिया की यहां आई हुई थी। इरींगेशन विभाग के आफिसर्स भी उनके साथ गये हुए थे। इसलिये जो मेटेरियल मुझे

(श्री हरिदेव जोशी)

मिलना चाहिए था वह नहीं प्राप्त कर सका। आफिसर्स का भी उनके साथ रहना जरूरी था मगर फिर भी दोहराता हूं कि जो कार्यवाही होगी वह कार्यवाही मैं अवश्य करूंगा।

इसी प्रकार से विरोधी दल के माननीय नेता ने कडाना प्राजेक्ट और फ्लोराइड प्राजेक्ट के बारे में कुछ शंकाये प्रकट की हैं। मैं उन्हें एक बात कहता हूं कि जिस जगह आप पैदा हुए है, मैं भी वहीं पैदा हुआ हूं और डूंगरपुर और बांसवाड़ा के लोगों की जो परेशानियां और एन्जाइटी है उससे हम परेशान नहीं हों ऐसी बात नहीं है किन्तु कडाना प्राजेक्ट के बारे में हमारे सामने कुछ कठिनाइयां हैं उनको हम हल करना चाहते हैं, सीरियसली उसमें हमारी नियत के ऊपर कहीं पर भी शक नहीं होना चाहिए। कडाणा प्रोजेक्ट 419 एफ. आर. एल. का होगा यह बात आज से बहुत वर्षों पहले तय हो चुकी थी और दो गवर्नमेंट्स का इस बारे में फैसला हो गया। गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया का इसमें अप्रूवल हो गया। राजस्थान गवर्नमेंट ने इस पर एतराज उठाया और राजस्थान गवर्नमेंट यह चाहती है कि उनको जो भी इरींगेशन बेनिफिट मिलना चाहिए वह उनको मिले, उससे हम उनको डिप्राईव नहीं करना चाहते हैं। इस हालत में मैं गुजरात गवर्नमेंट का यह आग्रह नहीं समझ पाया कि जबकि 419 एफ. आर. एल. का फैसला हो गया तो 410 एफ. आर. एल. से पानी मिल सके तो उनको एतराज क्यों होना चाहिए। मुझसे गुजरात के गवर्नर साहब ने कहा कि इलेक्टेड गवर्नमेंट इसके बारे में फैसला करेगी। आखिर मैं भी कोई यूनिलेटरल कोई बात कह नहीं सकूंगा। पहले हम भी परेशान थे लेकिन खुशकिस्मती से ठेकेदार भाग गया है। पहले स्थिति यह थी कि 1972 के अन्दर पानी आने वाला था और गलियाकोट के अन्दर सबमरजेंस शुरू होना था। क्योंकि अब सारा प्रोग्राम ढीला पड़ गया है इसलिए इलेक्टेड गवर्नमेंट गुजरात की जब आएगी उस समय इस पर चर्चा करेंगे। इसलिए इस विषय में तत्काल परेशान नहीं होना चाहिए यह मेरा निवेदन करना है।

अध्यक्ष महोदय, विरोधी दल के माननीय नेता महोदय ने फ्लोराइड प्रोजेक्ट के बारे में भी कुछ बातें कहीं। यह सही है कि डूंगरपुर के मांडवपाल में फ्लोराइड प्रोजेक्ट के बारे में शंका पैदा हो गई। मगर उसका प्रोस्पेक्टिव केवल जी. एस. आई. ने ही किया हो ऐसी बात नहीं है। इसका पूर्वेक्षण राजस्थान माइन्स डिपार्टमेंट ने भी किया था। इतना ही नहीं है इस क्षेत्र के अन्दर एक बहुत रीनाउण्ड इंजीनियरिंग फर्म है, राइट इंजीनियर्स हैं, जिनका ग्रोबल टेन्डर था, उन्होंने आकर पूर्वेक्षण किया था और उन्होंने भी यहां हैवी डिपोजिट्स बताए थे। हैवी डिपोजिट बताने के बाद में उन्होंने जो एडवाईज दी उसके आधार पर हम आगे बढ़े। मगर उस जगह पर दो एक जगह पर खुदाई करने के बाद राजस्थान इण्डस्ट्रियल मिनरल डेवलपमेंट कारपोरेशन को ऐसा लगा कि उस क्षेत्र में उतना शायद डिपोजिट न हो। तो हमने फरदर इन्वेस्टमेंट करने से पहले यह उचित समझा कि जो सन्देह पैदा हो गया है उसका निवारण पहले हो जाना चाहिए। इसके सिवाय इसमें दूसरा कोई प्रश्न नहीं है।......

श्री भैरोंसिंह : इसके लिए जो आपने 45 लाख का प्लान्ट मंगा लिया उसका क्या होगा ?

श्री हरिदेव जोशी : प्लाण्ट अभी आया नहीं है।

श्री भैरोंसिंह : आपने आर्डर तो कर दिया है।

श्री हरिदेव जोशी : आप सुनिए।

श्री भैरोंसिंह : आपने जो उसका आर्डर कर दिया और उसके बाद में आर्डर रोक दिया तो उसके लिए फर्म ने आपसे क्लेम मांगा है ?

श्री हरिदेव जोशी : मैं आपसे निवेदन करता हूं। हमारे सामने एक प्रश्न था कि जो तीन पार्टीज ने एडवाईज किया, राजस्थान गवर्नमेंट के माईनिंग डिपार्टमेंट ने, जियोलोजिकल सर्वे आफ इण्डिया ने और राइट इंजीनियर्स ने, इन सब ने मिलकर प्रोस्पेक्टिव डिपोजिट्स के बारे में जो केपेसिटि बताई, या तो उस केपेसिटि के आधार पर काम शुरू कर देते और जब काम शुरू नहीं करते हैं तो उस प्लाण्ट का क्या होता? जब काम शुरू करते ही एक जगह सन्देह पैदा हो गया तो या तो उस सन्देह को हम दबा देते और प्लाण्ट आ जाता और प्लाण्ट आ जाने के बाद में खुदा ना खास्ता वह एडवाईज गलत साबित होती तो उसका क्या करते ? उसकी अपेक्षा हमने यह उचित समझा कि जो काम शुरू किया गया है उसी को वहीं पर रोक दिया जावे और एक सन्देह जो पैदा हो गया है उसको साफ कर लें। इस सम्बन्ध में जो भी आवश्यक कार्यवाही करनी होगी उसको पूरा किया जावेगा। इसलिए मेरा निवेदन यह है कि"

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : मंत्री महोदय, आपतो इतना बता दीजिए कि अब स्थिति क्या है ? एक्सपर्ट्स की एड्वाईज क्या है ? निराशामय है या आशामय है ?

श्री हरिदेव जोशी : एक्सपर्ट्स की टीम कनाडा से एकाध हफ्ते में आ जाएगी और फिर से पूर्वेक्षण करके अपनी रिपोर्ट देगी। इसलिए हमने यह सोचा कि फरदर इन्वेस्टमेंट करने से पहले जो सन्देह उत्पन्न हो गया है उसका निराकरण करा लें और तब तक काम शुरू नहीं किया जावे।

अध्यक्ष महोदय, इसी प्रकार से माननीय सदस्य ने, जनसंघ के नेता महोदय ने रोक फास्फेट के बारे में बात कहीं। उन्होंने एक टेन्डर के सिलसिले में मेरे आर्डर, डी० एम० जी० की चिट्ठी और दूसरों की टिप्पणी के बारे में कहा। उन्होंने बीकानेर जिप्सम को यह ठेका देने की व्यवहारिता के बारे में भी कहा। उन्होंने ट्रांसपोर्ट और माईनिंग की कोस्ट के बारे में भी कहा। ट्रांसपोर्टेशन के लिए किन्हीं लोगों को काम देने के बारे में भी कहा।

अध्यक्ष महोदय, सारी चीजों को फिर से पढ़ने के बाद मैं इस नतीजे पर पहुंचता हूं कि इस मामले में कहीं पर कोई गलती नहीं की गयी है। यह केस ठीक केबिनेट लेवल तक जाकर डिस्कस हुआ है और डिस्कशन होने के बाद केबिनेट का इस पर फैसला हुआ है। किसी एक इण्डीवुअल का डिसिजन नहीं है।

दूसरा जहां तक टेंडर का सवाल है, मैं इस टेंडर की फाईल को माननीय मुख्य मन्त्रीजी के हाथों सुपुर्द करता हूं।

(पत्रावली श्री जोशी द्वारा मुख्य मन्त्रीजी को हाथ में दी गई)

(श्री हरिदेवजोशी)

और उनसे निवेदन करता हूं कि इस फाईल को वे एग्जामिन करा लें और उनको किसी भी क्षण यह महसूस हो कि इसमें किसी भी स्तर पर कोई नेग्लीजेंस है अथवा मेलाफाईडी इण्टेंशन आपको मिले तो आप मुझ से कह दें....

श्री भैरोंसिंह : कौन से टेंडर की फाईल है ?

श्री हरिदेव जोशी : जिसके बारे में आपने कहा था।

श्री भैरोंसिंह : जिस टेंडर की बात मैंने कही थी वही फाईल है ?

श्री हरिदेव जोशी : वही फाईल है।

श्री भैरोंसिंह : ठीक है रख दीजिए।

श्री हरिदेव जोशी : इसलिए, अध्यक्ष महोदय, मैं मुख्य मंत्रीजी से निवेदन करना चाहता हूं कि कभी किसी स्टेट पर किन्ही डिसिजन्स के अन्दर कोई आदमी गल्ती भर कर सकता है, एरर आफ जजमेंट भी हो सकता है और उसको कभी भी मेलाफाईडी इंटेंशन बताकर गलत रूप में पेंट भी किया जा सकता है, मगर इस केस के अन्दर फाइनेंस डिपार्टमेंट और माईनिंग डिपार्टमेंट के सारे आफिसर्स के नोटिस हैं सारी चीजें मौजूद हैं इसलिए मैं यह उचित समझूंगा कि आप इस बारे में सारे तथ्यों को देख कर निर्देश देंगे कि इस बारे में क्या करना चाहिए।

श्री भैरोंसिंह : ठीक है, आप फाईल सुपुर्द कर दीजिए।

(विराम)

हमने जो फाईल के नोटिंग बताए हैं वे इसमें हैं ?

श्री हरिदेव जोशी : उसकी सारी फाईल मैंने रख दी है।

श्री भैरोंसिंह : फाईल रख दी जो तो ठीक है लेकिन जो मैंने नोटिंग बताया था वह इसमें हैं या नहीं ?

श्री हरिदेव जोशी : आपके नोटिंग में थोड़ा सा फर्क है।

(व्यवधान)

वह तो वरबेटम रिकार्ड यहां पर आया है। आपने पढ़ा है वह यहां वरबेटम आया है। मुख्य मन्त्रीजी इसको लेकर एग्जामिन करवा लें और मेरे बारे में निर्णय कर लें कि कहां गल्ती रही है।

इन शब्दों के साथ में, मैं माननीय अध्यक्ष महोदय, जो प्रस्ताव रखा गया है उसका विरोध करता हूं और निवेदन करता हूं कि इस प्रस्ताव को गिराया जाय।

श्री बालसिंह सोढा : राजस्थान केनाल के बारे में भी स्थिति स्पष्ट कर दें।

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल (जौहरी बाजार) : मुख्य मन्त्रीजी, मुझे हस्तक्षेप करने के लिए क्षमा करें और अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी अनुमति से इस सदन में एक बात की जानकारी चाहता हूं। हम जितने भी सदस्य हैं, पौने पांच बरस में अच्छी तरह से एक दूसरे को जानते हैं। एक सदस्य मंत्रिमण्डल में नये आये हैं। उनके बारे में कुछ इस प्रकार की चर्चा हुई

(श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल)

कि शिड्यूल्ड कास्ट के रिप्रेजेन्टेटिव के नाते उनको केबिनेट में लिया गया है। मुझे जानकारी मिली है और कांग्रेस की लोबीज में भी इस तरह की चर्चा थी कि इनके पिताजी ने कोर्ट में यह बयान दिया था कि वे शिड्यूल्ड कास्ट के नहीं है और दूसरी कास्ट के हैं, इसका क्लेरिफिकेशन हो जाय तो ठीक रहे। आप कहते हैं कि ये शिड्यूल्ड कास्ट के रिप्रेजेन्टेटिव हैं। क्या यह सही है कि आपके पिताजी ने किसी कोर्ट में यह बयान दिया था कि आप चौहान हैं, राजपूत वंश के हैं और शिड्यूल्ड कास्ट के नहीं है? ऐसा कोई बयान दिया है क्या? केवल इतना क्लेरिफिकेशन हो जाय।

(विराम) (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे चाहता हूं। प्राइमाफेसी तो लगता है, कि ये शिड्यूल्ड कास्ट के नहीं है और निश्चित रूप से इनके पिताजी ने यह बयान दिया है अदालत में कि उनकी जाति शिड्यूल्ड कास्ट की नहीं है, वे चौहान हैं। अब अगर यह गलत है तो आप खड़े होकर कह दीजिए कि आपके पिताजी ने ऐसा कोई बयान नहीं दिया।

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज। मुख्य मन्त्रीजी।

श्री बरकतुल्लाखां (मुख्य मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय सदस्य का बहुत आभारी हूं कि उन्होंने यह मौका दिया आज इस अविश्वास के प्रस्ताव द्वारा कि वह भी अपनी बात कह सकें और हम भी अपनी बात कह सके। मैं खूब जिम्मेदारी के साथ यह बात समझता हूं कि आपके मन में परेशानी है और कुछ शंकाएं हैं और इसलिए मैं चाहता था कि आपकी शंकाएं और परेशानियां दूर हों। मैं कोआपरेशन आपको देना चाहता हूं और देता रहा हूं। क्योंकि मैं जानता हूं कि इलेक्शन जो जल्दी ही होने वाले हैं, उस मौके पर कुछ न कुछ चीज आपको कहनी चाहिए और उस कुछ कहने के आधार पर ही आप अपना इलेक्शन मेनीफेस्टो ड्राफ्ट करेंगे। जो डिबेट यहां पर हुई है उसी को आधार बना कर आप अपना इलेक्शन मेनीफेस्टो बनायेंगे। मैं यह भी जानता हूं कि यह मौका नहीं आता अगर मैं दो दफा याद नहीं दिलाता और आमतौर पर यह भ्रम हो जाता कि मैंने अपनी ओर से कोशिश करके कुछ विरोधी दल के मेम्बरान को अपने मेम्बरान के साथ मिला लिया। इसलिए भी, मैंने इस शंका को दूर करने के लिए भी इस बात की कोशिश की और यह मैं इसलिए भी करना चाहता था कि जो पोलिटिकल अपॉरचुनिज्म है वह जनता के सामने आए। मैं यह जानना चाहता था कि इसके अन्दर कौन कौन अपने मतलब से शरीक होना चाहते हैं। पोलिटिकल अपॉरचुनिज्म के आधार पर शरीक होते हैं तो होना चाहिए और शरीक हुए हैं तो इसकी भी मुझे कोई शिकायत नहीं है। शिकायत होगी तो जनता को आपसे होगी कि ये पोलिटिकल अपोरचुनिज्म में कैसे हिस्सा ले रहे हैं। जिनकी पोलिटिकल फिलोंसोफी अलग है, जिनकी क्रीड़ अलग है, जिनका अप्रोच अलग है लेकिन एक कोमन पोइन्ट पर यह होता है।

चाहे कुछ हो जाये कांग्रेस को हराने की कोशिश करो, और कांग्रेस नहीं हारी तो कम से कम इतनी कोशिश जरूर करो, इतना

(श्री बरकतुल्ला खां)

वातावरण बिगाड़ो कि लोगों के दिमागों में शंका पैदा हो जाये। यह ठीक बात नहीं है। कांग्रेस को हटायेंगे, जरूर हटाइये। लेकिन अपने मन से न तो कोई हटता है और न कोई हटाया जा सकता है। जनता जिसका समर्थन करती है वही आता है और वही आयेगा। इसलिये जो आपका ऐतराज था उसके अन्दर मुझे सबसे बड़ा ताज्जुब लगा जो सोशलिस्ट पार्टी की ओर से कहा गया। हमारे उनके मतभेद हैं वे हमें नकली सोशलिस्ट हैं और अपने आपको असली मानते हैं। देश के अन्दर इस तरह का वातावरण पैदा करना कि मैं सही हूं और तुम सही नहीं हो, तो यह गलत है। सोशलिस्ट पार्टी जागीरदारों और राजाओं के साथ हमदर्दी रखती है तो फिर आप में और राजाओं में क्या फर्क है ? वह हमारा दिमाग बदलने की बात करती है परन्तु आप अपनी दिमाग को बदलने की कोशिश करें। जनता ने आपको बार बार मौका दिया है और जब भी आप जनता के सामने आये हैं, हमेशा निराश होकर आये हैं। आपने कार्ल मार्क्स हिन्दी में नहीं पढ़ा है, अंग्रेजी में पढ़ा है। हराल्ड लास्की को पढ़ा है, अंग्रेजी में पढ़ा है। इतना दिमाग खुला रखो जब भी बाहर से आइडिया आवे तो अपने दिमाग को बन्द मत रखो। दिमाग को बन्द रखने से कोई फायदा नहीं है। जो सही आइडियाज आवें उनको असेप्ट करना चाहिये। आपकी सोशलिस्ट पार्टी का ह्यूमेनिज्म अपने घर से नहीं निकाला है, जो साइन्टीफिक सोशलिज्म को बात आप करते हैं वह आपके दिमाग से नहीं आया है। ह्यूमेनिज्म पर मैंने एम० एन० राय को पढ़ा है। ह्यूमेनिज्म साइन्टीफिक सोशलिज्म के साथ जुड़ता है, एम०एन० राय को अंग्रेजी की पुस्तक है। फिर इसमें थोड़ा सा चेन्ज आया। इससे अन्दाजा हो सकता है। जिस गवर्नमेंट के बारे में आप कह रहे है कि कांग्रेस की कोई फिलोसोफी नहीं है, तो यह कहना पड़ा है कि सोशलिस्ट पार्टी की जो फिलोसोफी है वह आपने कहां से इजाद की है। जिस जमाने में हम आये थे, उस जमाने में सोशलिज्म की चमक से लोग डरते थे, चमकते थे। सोशलिज्म के नाम से उनको एक डर हो गया था, आज वह निकला है और वह डर निकालने के बाद हमने वह नारा भी दिया है। सोशलिज्म का नाम लेते थे तो सोचते थे, एक नारकीय स्थिति, यह एक खतरनाक जानवर का नाम है। लेकिन हमने इसको किया। मास तक इसको ले गये और मास को समझाने की कोशिश की और लोग इससे डरना चमकना भूल गये। हम इन्टेलेक्चुअल हेअर स्पोलिटिंग के लिये नहीं जाते हम तो जनता के सामने यह बताना चाहते हैं कि आज जो स्टेज है, जिससे हम गुजर रहे हैं, यह वहां की स्टेज है जिसके अन्दर कन्सलटेशन करना पड़ेगा। बुर्जुआ सोसाइटी के अन्दर फाबिन मेथड्स एप्लाय किये और यह बता दिया है कि जो सोशलिज्म है वह फाबिन मेथड्स से भी आता है और डाइरेक्ट कन्सलटेशन से भी आता है। जब आप हिंसा की बात करते हैं तो ताज्जुब होता है। सोशलिज्म का आपको इनसेक्शन हूमन राइट है। इनसेक्शन से असेप्ट करना है या नहीं करना है यह मुझे मालूम नहीं। असेप्ट करना है और यह यकीनीतौर पर कह सकता हूं कि आप अहिंसा की बात नहीं करते हैं। अहिंसा की बात हम करते हैं। हम अहिंसा के जरिये सोशलिज्म को लाये हैं और लाने की कोशिश कर रहे हैं। देश को आजाद कराया, देश की समस्याओं को दूर किया।

(श्री बरकतुल्लाखां)

जहां तक कम्युनिस्ट पार्टी की नीति है उनको कुछ विश्वास दिलाना चाहता हूं । वह यह है कि हमारी गवर्नमेंट की पोलिसी बेसिकली किसान और मजदूरों के साथ है । बेसिकली हम किसान और मजदूर को स्ट्रेन्थन करना चाहते हैं । हम यह अच्छी तरह से समझते हैं कि हमारी रीढ़ की हड्डी किसान और मजदूर हैं । हम यह भी जानते हैं कि आज के दिन जो बाइसेस किसान और मजदूर के खिलाफ हैं उन्हें इनइफेक्टिव करना पड़ेगा । हम यह भी जानते हैं कि आज की सोसाइटी के अन्दर जो मिक्स्ड इकोनोमी है, उसके अन्दर थोड़ा परिवर्तन लाना पड़ेगा, उसमें परिवर्तन लाने की जरूरत है । हम यह भी मानते हैं कि प्रोडक्शन के साथ साथ डिस्ट्रीब्युशन पर कन्ट्रोल होना चाहिये । इक्वेटि बिफोर डिस्ट्रीब्यूशन होना चाहिये । केवल एक सेक्शन को नहीं कह सकते कि उन को ही मजबूर किया जाये । इन सारे कामों में लोग किसान और मजदूर अपना खून बहायें और बहाने के बाद उनको सही मजदूरी नहीं मिले । आखिर में है क्या ? जिन लोगों ने इन्डस्ट्री खड़ी की है उन्होंने तो केवल टूल्स प्रोवाइड किये हैं और उसके ऊपर जो वे मेक्सिमम फायदा उठा सकते थे वह उन्होंने उठा लिया है, उठा चुके हैं । इसलिये हमारी गवर्नमेन्ट की यह पोलिसी है । मैं माननीय नेता कम्युनिस्ट पार्टी को यह विश्वास दिलाना चाहता हूं कि मैंने किसी राजा महाराजा से बात नहीं की है । जोधपुर के महाराजा गजसिंह से मेरे सात पीढ़ी के सम्बन्ध हैं, रहेंगे और व किसी हालत में टूट नहीं सकते हैं । उनकी पोलिटिक्स अलग है और मेरी अलग है । लेकिन सात पीढ़ी के सम्बन्ध की मैं इज्जत करता हूं, राजमाता की इज्जत करता हूं, राज दादी की इज्जत करता हूं । मेरे उनसे तालुकात हैं इससे इन्कार नहीं करता हूं । आज इस पार्टी के सब लोगों से मैं दोस्ती रखता हूं और उधर बैठने वाले माननीय सदस्यों से भी दोस्ती रखता हूं । यह कहना कि जोधपुर दरबार को मैंने काल किया । न तो वे इतने भोले हैं और न मैं इतना भोला हूं । कॉल करने का मतलब यह नहीं होता है और मैं इसमें विश्वास रखता हूं कि हर शख्स को फ्रीडम होना चाहिये, और वह फ्री होना चाहिये । जो लाइन उन्होंने अख्तियार कर ली, कर ली औ जो मैंने कर ली, कर ली । कई एम. एल. एज. विरोधी दल के यहां पर बैठे हैं, वे मेरे पुराने दोस्त हैं । वे यहां पर बता दें किसी भी दिन मैंने उनसे कहा है कि आप मेरे कहने के मुताबिक वोट देना, या आप अब्सेन्ट रह जाना । कई मेरे पुराने साथी यहां पर बैठे हैं, किसी को मैंने कहा है कि आप न्यूट्रल रह जाना ? किसी को कहा है ? मैं आजादी के अन्दर विश्वास रखता हूं । मैं राजमाता और महाराज गजसिंह की इज्जत रखता हूं । उनको पूरा अख्तियार है कि वे जिस पार्टी में चाहे जायें, जिस तरीके से चाहें इलेक्शन लड़ें लेकिन जो हमारे घर के ताल्लुकात हैं वे न कभी टूटे हैं और न कभी टूटेंगे । इसी तरीके से, माननीय अध्यक्ष, दूसरे डिटेल में तो मैं बाद में आऊंगा । काफी दिनों से यह चौखटा बना है इसके बारे में यह जरूर कहना चाहता था कि आपने जो कोशिश करनी थी वह करली, लेकिन जनता ने एक जवाब दिया, "बदलकर आयें वह लाख खूब सूरत बनाकर, आखों ने बता दिया" । जनता ने आपको पहचान लिया, और पहचानने के बाद जो आपकी दुर्दशा होने को थी वह हो गई और बाकी जो रह गई है वह 72 के अन्दर होने जा रही

(श्री बरकतुल्ला खां)

हैं। वह जानी-पहचानी जनता है, जाने पहचाने दूसरे लोग हैं। कभी कुछ लोग वक्त पड़ने पर सोशियेलिज्म की बात करने लगते हैं। मुझे खुशी है कि जनसंघ भी कुछ अपने इरादों से हटता जा रहा है। जनसंघ के माननीय नेता ने मेरे बारे में कहा। मैं काफी दिनों से सोच रहा था कि ऐसी बात क्या हुई, लेकिन जब से मैं पहली मर्तबा गंगानगर बोर्डर पर गया हूं तब से पाकिस्तान रेडियो साढ़े दस बजे मेरे खिलाफ प्रचार करता चला जा रहा है। उसका प्रचार अपने तरीके से था और इधर जो जनसंघ से सर्टिफिकेट मिल गया, और जनसंघ से सर्टिफिकेट मिल गया तो मैं समझता हूं कि मैं सेक्यूलर हूं। यदि यह सर्टिफिकेट पाकिस्तान नहीं देता और सिर्फ आप ही देते तो मेरे दिमाग में एक शुबाह रहता कि कोई न कोई कमजोरी मेरे में है। दोनों तरफ से सर्टिफिकेट मिलने के बाद हिन्दुस्तान की जनता नहीं कह सकती की मैं कम्युनल हूं। साधारण जनता मानती है कि मैं गलत बात नहीं कर रहा हूं। "जाहिद तंग ने मुझे काफिर जाना और काफिर ने मुझे मुसलमान माना" हम तो जिस चीज के लिये खड़े हुए हैं वह सेक्यूलेरिज्म है, और जब सेक्यूलेरिज्म के लिए खड़े हुए हैं तो बगैर हिन्दु-मुस्लिम का ख्याल किये हुए काम करना चाहते हैं। न मैं किसी के दबाव में चलता हूं और न ब्लेकमेल होना चाहता हूं और न कमिट होना चाहता हूं। रामानन्दजी ने एक बात कही थी एक स्कूल के बारे में यह सही बात थी कि एक स्कूल की ग्रान्ट बन्द हो गई क्योंकि वहां पर दो एक आर. एस. एस. की रेलियां हुई। मेरे पास यह सवाल आया तो डरकर नहीं बल्कि मैंने कहा कि कुछ शिक्षकों की गलतियों की वजह से वहां के जो छात्र हैं उनको पढ़ने का मौका क्यों न दिया जाय। कुछ लोगों ने गलती की है और उन लोगों ने माफी मांग ली। उसके बाद में बच्चों को क्यों सजा दें। मेरी नजर में कभी यह सवाल नहीं आया, न यह सवाल है और न यह सवाल कभी आयेगा। जनसंघ के नेता ने कहा तो मैं कहना चाहता हूं कि मैंने रफी अहमद किदवई के साथ इलेक्शन लड़ा है और सैयद अली जहीर जैसे लोगों के साथ इलेक्शन लड़ा है जिनके खिलाफ मुस्लिम लीग ने कसम खाई थी कि इनके खड़े होने पर अपना केन्डीडेट खड़ा करेंगे। मैं इसके लिए स्कूल में लड़ा हूं, कालेज में लड़ा हूं। मैंने कोई अपनी संस्था नहीं बनाई। किसी मुस्लिम संस्था से मेरा सम्बन्ध नहीं रहा है। कभी कोई यह साबित कर दे कि कभी भी रहा हो तो आज भी मैं इस्तीफा देने को तैयार हूं। इसके लिए दोनों तरफ से सर्टिफिकेट मिल गया तो मुझे चैन आ गया। आपकी तरफ से दूसरा सर्टिफिकेट मिल जाता तो मेरे दिल में घबराहट रहती, लेकिन थैंक गाड, खुदा की महरबानी है, ईश्वर की महरबानी है, राम की महरबानी है कि आपकी तरफ से वही सर्टिफिकेट मिला जिसकी मुझे जरूरत थी।

श्री भैरोंसिंह : पाकिस्तान का रेडियो वही बात बोलता है जो आपके मुंह से निकलती है उसको आप सर्टिफिकेट समझते है तो दुर्भाग्य की बात है।

श्री बरकतुल्ला खां : जी नहीं।

श्री भैरोंसिंह : वह जो पाकिस्तान ने कहा वह मैंने भी सुना था।

श्री बरकतुल्ला खां : सुना क्या ? मेरे हक में कहा था।

श्री भैरोंसिंह : पाकिस्तान रेडियो ने यह कहा कि राजस्थान के मुख्य मन्त्री श्री बरकतुल्ला ने प्रेस कान्फ्रेंस में यह बात कही है कि हिन्दुस्तान में नौकरियां मुसलमानों को नहीं मिलती है।

एक माननीय सदस्य (कांग्रेस पक्ष): यह गलत है।

श्री बरकतुल्ला खां : उसने गलत कहा होगा। मैंने किसी के सामने यह नहीं कहा।

श्री भैरोंसिंह : यह आपने कहा है। आप चाहें कहें कि नहीं कहा आपने। मैं औरों की तरह से बात नहीं करता हूं। अखबारों के कटिंग रखता हूं। आपने कहा है। इण्डियन एक्सप्रेस की मेरे पास कटिंग रखी है।

कई माननीय सदस्य (कांग्रेस पक्ष): अखबार वाले ने गलत लिखा है।

श्री भैरोंसिंह : पाकिस्तान का सर्टिफिकेट लेना चाहते हैं....

श्री बरकतुल्ला खां : न तो मैंने कहा है किसी को अकेले में और न किसी के सामने। जब भी प्रेस कान्फ्रेंस करता हूं तो एक दो नहीं होते हैं पूरे जने मौजूद रहते हैं। और कौन से अखबार में निकला है। पाकिस्तान का यह रवैया है कि रोज अपने यहां से बराबर मेरे खिलाफ बोलता है।

श्री भैरोंसिंह : आप रोज लाहौर भागते थे। मुख्यमंत्रीजी इस प्रकार के भाषण देते हैं तो पाकिस्तान दूसरे इन्टर-नेशनल लेवल पर हिन्दुस्तान को बदनाम करना चाहता है इसलिए आपको बराबर याद करता हूं।

श्री बरकतुल्ला खां : माननीय अध्यक्ष महोदय, आज के दिन जो लोग बातें कर रहे हैं वह मैं कहना चाहता हूं कि यह गवर्नमेंट कांग्रेस की है और यह गवर्नमेंट जो है कांग्रेस की पालिसीज को कन्टीन्यू करती है, और यह गवर्नमेंट जो है वह सुखाड़िया साहब के विरुद्ध गवर्नमेंट नहीं है, बल्कि जो सुखाड़िया साहब ने हमको दी है वह गवर्नमेंट है। जाति एप्रोचेज अलग अलग हो सकते हैं, एम्फेसिस और सोचने का तरीका अलग अलग हो सकता है। एक एडमिनिस्ट्रेशन जब आदमी अपने हाथ में लेता है तो अपने तरीके से चलाने की कोशिश करता है और सूझ बूझ जितनी भी मुझे दी है, कुछ कम है, उसके हिसाब से मैं चलता हूं, और उसके अन्दर इस बात की कोशिश करता हूं, जो वह होना चाहिए, कि कांग्रेस की पालिसीज हम मेन्टेन करें। इस तरह हमने कोशिश की है कि जो कांग्रेस ने अपना मकसद दिया है उसको पूरी तरह से कामयाब करें। यही नहीं, बल्कि यह भी कहा है कि जहां तक हो सकेगा समाजवाद को लायेंगे, और समाजवाद लाने के लिए हम प्रयत्नशील हैं, और इस बात की पूरी कोशिश करेंगे कि इस देश में समाजवाद आये, राजस्थान के अन्दर समाजवाद आये। हमने उसकी ओर कदम लिये हैं। जमीनों की सीलिंग के अन्दर जोर दिया है। राजा नवाबों की जमीनों को सीलिंग के अन्दर लाये हैं। उसके लिये आर्डर कराये हैं। शहरी

(श्री बरकतुल्ला खां)

प्रापर्टी की एक सीमा निर्धारित होना चाहिए, और जो एक्स्प्लायटेशन होता है टेनेन्ट्स का वह एक्स्प्लायटेशन नहीं होना चाहिए ।

इसके साथ-साथ मैं यह भी कहना चाहता हूं कि लोगों को मुझसे निराशा है, होना चाहिए। क्योंकि सब लोग यह समझते हैं कि मेरे हाथ में अलादीन का चिराग है कि जरा सा घिसा और उसके बाद जिन्द आगया और जिन्द से मैंने कहा और उसने सारा काम कर दिया। लोग यह समझते हैं कि हमारे यहां कोई विधान नहीं और कोई याह्या खां आगया जो मनमानी कर सकता है। करप्शन का एक कन्टीन्युअस प्रोसेस है। इसको रोकने की कोशिश की हैं, और इसको बराबर रोकने की कोशिश कर रहे हैं। अब तक 13 गजेटेड आफिसर्स को सस्पेन्ड किया गया है और 7 गजेटेड आफिसर्स के खिलाफ मुकद्दमें चलाने की इजाजत दी है....

कई माननीय सदस्य (विपक्ष) : पहले भी होता था।

श्री बरकतुल्ला खां : कुछ नहीं करने के मकसद से....

श्री भैरोंसिंह : पहले भी होता था।

श्री बरकतुल्ला खां : इसके साथ-साथ विजिलेन्स कमीशन को जो सहायता चाहिए वह दी है। हमने कहा है कि बराबर कोशिश करते रहें एन्टीकरप्शन के जरिए और जरियों से जागृत रहें। लेकिन मैं संविधान के अन्दर काम कर सकता हूं। उसके बाहर जाकर नहीं कर सकता हूं। किसी के खिलाफ कोई बात हो तो उसको नोटिस देना पड़ेगा, बाकायदा उसका केस बनाना पड़ेगा। उसके ओवर एण्ड एबाऊ जाकर एकदम सस्पेण्ड नहीं कर सकता हूं, डिसमिस नहीं कर सकता हूं....

श्री दौलतराम सारण : माननीय अध्यक्ष, मैं माननीय मुख्य मन्त्रीजी को थोड़ा सा डिस्टर्ब कर रहा हूं वे माफ करेंगे। यह जो सम्पत्ति इकट्ठी कर रखी है लोगों ने गलत तरीके से और आज बहुत बड़े दीख रहे हैं यह सम्पत्ति तो आपके ध्यान में है उस सम्पत्ति की आप छानबीन करें और उसके बारे में जानकारी या कार्यवाही करें। यह तो संविधान के अन्दर आता है।

श्री बरकतुल्ला खां : मैं यह बात भूल गया था वह कह दूं। राजस्थान सरकार ने भारत सरकार को लिखा है लोकपाल और लोक आयुक्त के बारे में कि जल्दी ही चीफ मिनिस्टर्स की कान्फ्रेंस बुला लें और उस पर निर्णय करलें और जो भी निर्णय होगा उसको राजस्थान गवर्नमेंट मानेगी।

श्री भैरोंसिंह : भारत सरकार ने आपको मोडल बिल दे रखा है। आप स्वयं ही उसको हाउस में लाकर पास कराते। भारत सरकार की अनुमति लेने की उसमें क्या आवश्यकता है ?

श्री दौलतराम सारण : आप खादी बोर्ड का वाइस-चेयरमैन बनाने के लिए आर्डिनेन्स जारी कर दें और लोकपाल और लोक आयुक्त के लिए आप आर्डिनेन्स जारी नहीं कर सकते थे ?

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : अब करेंगे।

श्री बरकतुल्ला खां : हम तो राजस्थान को इन्डिया की जो ओवरआल पिक्चर है उसमें फिटइन करना चाहते हैं, और यह मैं कहना चाहता हूं कि आपकी कम्पलेन्ट आई थी और जिसके बारे में शिकायत की जाय·····

श्री भैरोंसिंह : देखिये कई स्टेट्स ने कर दिया। आप ओवर आल पिक्चर में राजस्थान को फिटइन करना चाहते हैं तो केरल ने उसका कर दिया।

श्री बरकतुल्ला खां : हमने लिखा है, और अगर भारत सरकार का यह जवाब आ जाय कि हम चीफ मिनिस्टर्स की कान्फ्रेंस नहीं रखना चाहते हैं तो उस पर पुनर्विचार करेंगे, लेकिन यह सवाल पैदा होता है कि लोगों का विच-हन्टिंग नहीं होना चाहिए। विच-हन्टिंग शुरू हो गया तो बचने वाला नहीं है। लेकिन प्राइमाफेसी केस बने और कोई सबूत हो, कोई कान्क्रीट चीज हो, आप जिसको कहें मैं दिखवा सकता हूं और वह किसी तरह से प्राइमाफेसी केस हो तो एक्शन लिया जा सकता है।

श्री दौलतराम सारण : इस सदन में जो केसेज कहे हैं उनमें से एक भी देखा है आपने ?

श्री अध्यक्ष : आप आरम्भ रखिये।

श्री बरकतुल्ला खां : यदि पोलीटिकल विच-हन्टिंग शुरू हो गया तो ऐसी बात नहीं है कि पोलीटिकल विच-हन्टिंग सिर्फ इस पार्टी के पक्ष में शुरू हो, अगर उस पार्टी में भी शुरू हो गया तो काफी बहुत ज्यादा कन्फ्लिक्ट हो सकते हैं। इसलिए यह परम्परा हमें चलानी नहीं चाहिए।

श्री दौलतराम सारण : अपोजिशन को चिन्ता नहीं है।

कई माननीय सदस्य (विपक्ष) । तैयार हैं हम।

श्री दौलतराम सारण : अपोजिशन की बिल्कुल चिन्ता नहीं है। जो चोरी करेंगे वह कहीं भी चोरी करेंगे।

श्री बरकतुल्ला खां : चोरी करे उसको सजा मिलनी चाहिए।

(व्यवधान—अश्रव्य)

एसाइनमेंट करना दूसरी चीज है।

श्री भैरोंसिंह : क्या यह सही है, कुछ आप बता दें, मैंने जो लेटर दिया था यदि आप कहें कि मैंने जांच करवाई थी और वह गलत साबित हुआ है ? करेक्टर असेसीनेशन के लिए दिया गया था। वह कह दें।

श्री बरकतुल्ला खां : जांच पूरी नहीं हुई है। मैं अपने तरीके से करवा रहा हूं।

श्री भैरोंसिंह : पता तो लग जाये।

श्री बरकतुल्लाखां : मैं यह कहूंगा, आज जहां तक लालफीताशाही का सम्बन्ध है, उसको घटाने की कोशिश की है। उसको कई तरीके से घटाने की कोशिश की है। पहले तो 5–6 स्टेजेज से कागज गुजरता था। उसको कम किया है, 2–3 रखी है। पुरानी फाइल जो पड़ी हुई थीं, उनके प्रोफार्मा बनवाये कि कितनी फाइल हैं। ऐसी कितनी फाइल हैं, जो डिस्पोज आफ नहीं हुई हैं। इसके अलावा····

श्री दौलतराम सारण : यह तो हर 15 वें दिन स्टेटमेण्ट आता है। हमेशा से आता है।

श्री अध्यक्ष : आरम्भ रखें।

श्री बरकतुल्ला खां : इसके अलावा सेक्रेटरी और हैड ऑफ डिपार्टमेण्ट के लिए यह किया है कि जो डिस्कशन के लिए पेपर हैं, उस पर डिस्कशन करके समाप्त किया जाये। इसी प्रकार से जो सेक्रेटरीज हैं और हैड ऑफ डिपार्टमेण्ट हैं, वह महीने में एक दो दफा, सीनियर आफीसर मिल जायें और मिलकर बात करके, उसके बाद एक निर्णय पर पहुंच करके फैसला करें। मैंने फाइल्स के डिस्पोजल के लिए यह नहीं माना है कि कोई कहे कि मैंने इन्क्वायरी करके भेज दी है। मैंने यह नहीं माना है कि हैड आफ डिपार्टमेण्ट फाइल भेज दे और पीरियड खत्म होने के बाद फिर मंगाये। मैंने यह माना है कि जो आफीसर है, उसका पहला नोट कम्प्रीहेंसिव होना चाहिए। इसके लिए दो राय नहीं हो सकती हैं।

इसी तरीके से भ्रष्टाचार के जो जो केसेज आये है, एन्टीकरप्शन में भेजे हैं। जो कम्प्लेन्ट आई थीं, डायरेक्ट विजीलेंस कमीशन के पास भेजी हैं और यह अर्ज की है कि जल्दी से जल्दी रिपोर्ट बनायें। पब्लिक ग्रिवेंसेज में 3128 शिकायतें आई हैं। 666 दुरुस्त नहीं मानी गई हैं। बाकी पर कार्यवाही हुई है। मैं जानता हूं कि रिटायरमेण्ट के बाद लोगों को प्राविडेण्ड फण्ड नहीं मिल पाता है। लोग दौड़े दौड़े फिरते हैं। इसीलिए मैंने पब्लिक ग्रिवेंसेज की पोस्ट को दुबारा रिवाइव किया है। इसलिए यह कोशिश की है। आर्डिनरी आदमी की अगर कोई बात नहीं सुनता है तो वह जाकर पब्लिक ग्रिवेंसेज कमिश्नर के पास बात कह सकता है।

इसी तरह से यहां पर चीफ सेक्रेटरी की नियुक्ति के बारे में कहा गया है। मैं अच्छा समझता कि पुराने चीफ सेक्रेटरी साहब का नाम नहीं लिया जाता। न मैं कहूंगा। लेकिन सब जानते है, जहां तक चीफ सेक्रेटरी का सम्बन्ध है, जब भगवत सिंह मेहता बने तो काफी नम्बरों को उन्होंने सुपरसीड किया। और उसके बाद ··

श्री भैरोंसिंह : किसको किया है ?

श्री बरकतुल्ला खां : एक तो मैनन को ही किया है।

श्री भैरोंसिंह : वह तो जूनियर हैं।

श्री बरकतुल्ला खां : क्या है, वह मैं बता दूंगा।

एक माननीय सदस्य : वह दूसरे हैं।

श्री बरकतुल्ला खां : उसके बाद मि० मेनन के लिए चला तब भी हुआ है। यह तो हाईकोर्ट का जजमेण्ट है। सवाल यह है कि····

श्री भैरोंसिंह : (अश्रव्य)

श्री बरकतुल्लाखां : दूसरी स्टेट्स में आई. सी. एस, आई. ए. एस. हैं। मद्रास है। लेकिन वहां उन्होंने चीफ सेक्रेटरी अपनी पसन्द का लिया है। जिसको फंक्शन करना पड़ता है। फंक्शनिंग के अन्दर उसको डिसीजन में गवर्नमेंण्ट की जो विल है, गवर्नमेण्ट विल को प्रिवेल करने में कड़ाई से काम करे। भाषण से काम नहीं चलता है। जो भी चीफ सेक्रेटरी बनता है, वह गवर्नमेण्ट की अपनी चोइस होती है। अपनी चोइस

(श्री बरकतुल्ला खां)

के आदमी को बनाते हैं। मैं यह भी कहना चाहता हूं, जहां तक आई. जी. पी. का सम्बन्ध है, वह अच्छा काम कर रहे हैं। मेरा उन पर पूरा विश्वास है। मेरी उनके बारे में कोई शिकायत नहीं है। (हर्ष ध्वनि)

श्री भैरोसिंह : तालियां बज गई ?

श्री रामकिशन : वृद्धिचन्द्रजी को बहुत शिकायत है।

श्री बरकतुल्ला खां : आप को भी शिकायत है। आखिर यह एक ओपेन कण्ट्री है। लेकिन हमारे जो विचार थे वह मैंने रखे हैं।

इसके साथ साथ मैंने बेरोजगारी को दूर करने के लिए एज लिमिट को 28 कर दिया है। इसी तरह से जो इन्जीनियर्स बेरोजगार हैं, उनको 250 रु० महीना, ओवरसीयर को 150 रु० महीना, डाक्टर्स को 250 रु० महीना, पहले साल, दूसरे साल 200 रु० महीना दिया जायेगा। उनको ऋण भी देंगे, अगर वह ऐसी जगह जाने का तय करले जो शहर से दूर हो। इसी तरह से हरिजन भाइयों के लिए भी तय किया गया है। 28% की उनको गारण्टी की है। जब मैं हरिजन भाइयों के लिए बोलता हूं तो बहुत ही सहानुभूति से बोलता हूं। अपने पेरेन्ट्स के जो सिन्स हैं, उनकी कीमत हमें चुकानी पड़ेगी। यह सही है कि एक समाज में दो तरह के लोग नहीं रह सकते हैं। एक के पास करोड़ों रुपये हों। दूसरे के पास खाने को भी नहीं हो। गवर्नमेण्ट यह जानती है। गवर्नमेण्ट ने यह किया है कि जो आदिवासी बच्चे हैं, जिनको नौकरी नहीं मिली है, उनको 150 रु० दिया जाये। जो ग्रेजुएट्स हैं, उनको 250 रु० देंगे। यह भी कि उनको माइनर जोब पर नहीं लगायेंगे। प्रोपर जोब पर लगायेंगे। सुपरवाइजरी जोब पर लगायेंगे। इस तरह से माननीय अध्यक्ष महोदय,

(अल्प विराम)

मेरी पार्टी के लोग हैं, यह कह रहे हैं कि बहुत बोल लिया है। सामने के लोग हैं, वह भी कह रहे हैं इसलिए ज्यादा न कहते हुये फिर इस बात को दुबारा दुहराता हूं कि यह विरोधी दल का हक था, वोट ऑफ नो कान्फीडेन्स लाना चाहिए था। जब तक वह नहीं लाते तो यह जो भ्रम था यह दूर नहीं होता। इसके साथ साथ मैं यह भी जानता हूं "

एक माननीय सदस्य : (अश्रव्य)

श्री बरकतुल्ला खां : आप के प्वाइण्ट ऑफ व्यू हैं, और हमारे भी हैं। जो हमने रख दिये हैं। डेमोक्रेसी में जनता ही मालिक है। और जनता फैसला करेगी वह सबको मानना पड़ेगा और जनता के सामने जाने से पहले किसी के दामन पर धब्बा देखने से पहले यदि अपना धब्बा इन्सान देख ले तो काफी मुश्किल दूर हो सकती है।

आज के दिन मैं सदन के सभी माननीय सदस्यों को यह विश्वास दिलाता हूं कि गवर्नमेंट डेमोक्रेसी में विश्वास रखती है, सोशलिज्म में विश्वास रखती है और इस कारण से जो भी रास्ता सोशलिज्म का है उसको अपनायेगी, सोशलिज्म का रास्ता

(श्री बरकतुल्लाखां)

नहीं छोड़ने वाली है चाहे जो कीमत देनी पड़े। इसी के साथ में जो विरोधी दल के द्वारा अविश्वास प्रस्ताव रखा गया है उसका विरोध करता हूं।

श्री अध्यक्ष : प्रश्न यह है····

श्री मनोहर सिंह मेहता : अध्यक्ष महोदय, मुझे अभी जवाब देना है। संक्षेप में मैं जवाब दूंगा। मुझे जवाब देना है। मुझे जवाब देने का अवसर मिलना चाहिए। अध्यक्ष महोदय, मैं थोड़ी देर बोलूंगा, लेकिन बोलूंगा जरूर।

(शोरगुल)

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज ?

श्री बरकतुल्ला खां : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं यह निवेदन करूंगा कि मूवर को पूरा अधिकार है कि वह डिबेट का रिप्लाई दे।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : फिर विरोध किस बात का कर रहे हैं ?

श्री बरकतुल्ला खां : उन्हें पूरा अधिकार है कि डिबेट का रिप्लाई दें।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : पांच मिनिट दें, दस मिनिट दें··

श्री अध्यक्ष : आप बैठ जाइये।

श्री भैरोंसिंह : यदि मनोहर सिंह मेहता मुझे अलाऊ कर दें तो मेरे बोलने में क्या आपत्ति है ?

कई माननीय सदस्य : नहीं नहीं।

श्री मनोहरसिंह मेहता : मैं बोलूंगा। अध्यक्ष महोदय, आज सत्ता पक्ष के और उधर विराजने वाले माननीय सदस्य···· ··

श्री मोहनलाल मोदी (नीमकाथाना): खाली माननीय मेहताजी··· ······

श्री मनोहरसिंह मेहता : माननीय सदस्यों ने मुझ पर रहम जताया·······

श्री मोहनलाल मोदी : प्रस्ताव वापिस ले लें तो ज्यादा अच्छा होगा।

श्री मनोहरसिंह मेहता : (श्री मोहनलाल मोदी से) क्या फर्मा रहे हैं ?

श्री अध्यक्ष : इधर इधर। उधर छोड़िये।

श्री मनोहरसिंह मेहता : किसी ने कहा··

श्री अध्यक्ष : संक्षेप में। शालीनता से। संक्षेप में बोलें।

श्री मनोहरसिंह मेहता : बहुत संक्षेप में। आप देखिये, दस मिनिट में समाप्त कर देता हूं।

किसी ने कहा, बहुत सीधा हूं, मुझे चक्कर में ले लिया है। किसी ने कहा, अभिमन्यू हूं। मुझे अभिमन्यू बताया गया और उन्होंने मेरे प्रति रहम जताया इसके लिए मैं आभारी हूं। निवेदन करना चाहता हूं, मनोहर सिंह सीधा नहीं है, मनोहर सिंह यदि सीधा होता तो यहां पर डिप्टी मिनिस्टर बन जाता, मिनिस्टर बन जाता। मनोहरसिंह तो उस धातु का बना हुआ है, जिस पर किसी का असर नहीं होता है।

(श्री मनोहर सिंह मेहता)

आपने यह भी फर्माया कि मैं अभिमन्यू हूं, तो आपने मुझे इज्जत ही दी-इसके लिए मैं आभारी हूं। हर आदमी को अभिमन्यू बनना चाहिए। हर आदमी को समझदार बनना चाहिये, हर आदमी को सज्जन बनना चाहिए·······

(शोरगुल)

श्री अध्यक्ष : आर्डर, आर्डर प्लीज !

श्री मनोहरसिंह मेहता : आपने यह भी फर्माया कि इसको एक तरह से चक्कर में ले लिया। मैं यह निवेदन करना चाहता हूं, पौने पांच साल में आज का सबसे बड़े आनन्द का दिन है क्योंकि मैं इनके प्रति अपने मन में आदर तो रखता हूं, लेकिन यह गलत रास्ते पर जा रहे हैं, इसलिए ठीक रास्ते पर ले जाना चाहता हूं। यह रास्ता है, यह गलत रास्ता है, ठीक रास्ते पर लाने के लिए, अविश्वास प्रस्ताव लाने का रास्ता है। आप मीठी मीठी बातें कह रहे हैं, लेकिन जिसको बुखार है उसको आप खीर खिला रहे हैं और हम बुखार को ठीक करने के लिए कड़वी नीम गिलोय खिला रहे हैं –

कड़वी वो ही केवसी
जो हित चण्यो होय।
खीर न काढ़े ताप ने
काढे नीम गिलोय।।

हम नीम गिलोय खिलाना चाहते हैं। हम यह जानते हैं कि चार महीने में कोई बहुत बड़ा परिवर्तन नहीं कर सकते हैं, लेकिन एक परिवर्तन कर सकते थे, क्योंकि आपके मन में तमन्ना थी, आपने वायदा किया था कि भ्रष्टाचार को दूर कर देंगे। भ्रष्टाचार दूर करना है तो पहले मंत्रिमण्डल के सदस्यों में से कीजिये, जो दागी हैं, बेदागी हैं या जो इस मंत्रिमण्डल में हैं या नहीं हैं और पहले थे। मैं फिर आपको कहता हूं कि सचमुच आप भ्रष्टाचार मिटाना चाहते हैं तो यह केवल संख्या बताने से काम नहीं चलेगा कि आठ कर्मचारियों को मोअत्तिल किया या दस कर्मचारियों को मोअत्तिल किया। आप देखिये, आजादी के पहले कितनी जायदाद किसके पास थी और अब कितनी है। मैं आपको ऐसे ऐसे मंत्री बता सकता हूं, जब अमेरिका में तीन आदमियों के बीच दो कार होंगी, यहां क्योंकि समाजवाद आ गया है इसलिए तीन भाइयों के बीच तीन तीन कारें हैं। आइये, आप जांच कराइये उनकी। मैं कांग्रेसी हूं, मैं निवेदन कर दूं, मेरी कांग्रेसी की परिभाषा है, जिसने आजादी के बाद कुछ न बनाया हो वह कांग्रेसी है, जिसने बनाया है वह कांग्रेस की छाती में छुरा भोंकने वाला है इसलिये, आइये, जांच कराइये। आखिर दस तारीख को मैंने क्या निवेदन किया था, वह यह निवेदन किया था, अध्यक्ष महोदय, मैंने आपकी आज्ञा का कभी उल्लंघन नहीं किया है, आज सार्जेण्ट मुझे उठा कर ले जाय तो मैं तैयार हूं। मैंने तीन स्थगन प्रस्ताव रखे थे, एक तो 1972 के मार्च तक आप कम्प्लीट प्रोहिबिशन कीजिये क्योंकि इस सरकार ने वायदा किया था। और जो वायदे से मुकरती है उससे निकम्मी सरकार नहीं हो सकती। एक बात यह कही कि 1972 तक पूर्ण नशाबन्दी होनी चाहिये। हरिजन भाइयों से भी मैं निवेदन करना चाहता हूं, कोई सबसे ज्यादा दु:ख

(श्री मनोहर सिंह मेहता)

देने वाली चीज है आपको तो यह है, इसलिए आप अन्तर्रमावादी बन कर, जिस तरह इन्होंने अन्तर्रमावादी बन कर मंत्रि-मण्ल बनाया है, आप हमसे मिल कर इस प्रस्ताव के पक्ष में वोट दीजिये......

कई माननीय सदस्य : गलत है।

श्री मनोहर सिंह मेहता : दूसरी बात है, आप जांच कराइये, किस किसने सम्पत्ति बनाई है। आपने जांच कमीशन नहीं बैठाया है, जो कभी का आपको बैठाना चाहिए था। आप जांच कमीशन बैठा देते तो अधिकारियों में चेतना आ जाती...

श्री अध्यक्ष : दूसरा प्रश्न ले लें।

श्री मनोहर सिंह मेहता : आपने निवृत हुए मंत्रियों को बंगले दिये, आपने राज्य के खजाने पर डाका डाला है। आप कहते हैं, यह एक बहुत बड़ा काम किया है-बांध बनवाये हैं, सड़कें बनवाई हैं एक करोड़ की, चालीस करोड़ तक एजुकेशन का खर्चा ले गये हैं, लेकिन आज जो शिक्षा दे रहे हैं इसका परिणाम आपको भुगतना पड़ेगा क्योंकि आपने श्रम और बुद्धि को दूर हटा दिया है। शिक्षा ऐसी कर दी है जिससे बेकारी बढ़ रही है। आपने श्रम और बुद्धि में जो भेद चालू कर दिया है इससे यह बीमारी बढ़ेगी। जब तक आप इसमें परिवर्तन नहीं करेंगे, आपके अच्छे दिन आने वाले नहीं हैं। आपकी शिक्षा नीति में परिवर्तन नहीं आया, शिक्षा में परिवर्तन नहीं लाये, बुद्धि और श्रम को साथ नहीं मिलाया तो वह दिन दूर नहीं जब गांधी का कथन साकार होने वाला है। उन्होंने कहा था, वह दिन दूर नहीं है जब लोग चुन चुन कर मारेंगे। इसलिए आप कृपया सम्भलिए और बार बार यह मत कहिये कि यह काम किया, यह काम किया। आपने काम किया तो क्या घर के पैसे से किया। सात सौ करोड़ का कर्ज चढ़ा दिया, 35 करोड़ का ब्याज देना पड़ता है और और 45 करोड़ का आप पर ओवर ड्राफ्ट है। दूसरी पार्टी की सरकार होती तो क्या इस पैसे को घर ले जाती? पैसा वह भी खर्च करती। इसलिए इस बात को मन में रख लीजिए कि आप यह बात मत कहें इसके साथ ही एक बात और याद रखिये-

बांध बंधा बणाव सड़क
भलो मदरसा खोल।
नैतिकता बिन देश को
नीं कोड़ी रो मोल॥

आपने नैतिकता का हरण किया है। सबमें से सच्चाई निकल गई है। इन्दिराजी की नीति के कारण शराब और जुए का प्रचार करके आप देश में सर्वनाश ला रहे हैं और यह सर्वनाश होकर रहेगा। यह बात कह कर मैं खत्म करता हूं।

(पुन: खड़े होकर) एक बात और निवेदन करना चाहता हूं, माफ करिये, अध्यक्ष महोदय, माथुर साहब के प्रति जो मैंने कहा, व्यक्तिगत शत्रुता से नहीं कहा। उन्होंने जो खम्भे वाली बात कही, वह मैं वापिस ले लेता हूं लेकिन जो बाकी के इल्जाम लगाये हैं, उनके लिए मैं खुली जांच के लिए तैयार हूं।

श्री अध्यक्ष : प्रश्न यह है कि श्री मनोहरसिंह मेहता, सदस्य विधान सभा, ने निम्नांकित प्रस्ताव प्रस्तुत किया है :

(श्री अध्यक्ष)

"यह सदन राजस्थान के वर्तमान मंत्रि परिषद् में अपना अविश्वास प्रकट करता है।"

इसे स्वीकार किया जाय।

(अस्वीकृत)

प्रस्ताव गिर गया।

आभार प्रदर्शन

श्री अध्यक्ष : आर्डर, आर्डर।

मैं माननीय सदस्यों को निवेदन करना चाहता हूं, चूंकि यह चौथी विधान सभा का ग्यारहवां सत्र है और हम सब इस सत्र का अन्तिम दिन होने के कारण विसर्जित होने जा रहे हैं, इस लोकतंत्र के पवित्र प्रांगण पर माननीय सदस्यों ने जो मुझको सहयोग दिया, हमारी परम्पराओं और व्यवस्थाओं को सुदृढ़ करने में, इसकी गरिमा बढ़ाने में-इसके लिए मैं सदन का बहुत आभारी हूं। मुझको इस सदन की सेवा करने का उपाध्यक्ष के रूप में भी पांच वर्ष तक अवसर मिला और अध्यक्ष के रूप में मुझे सेवा करने का और भी पांच साल का मौका मिला। मैं इस बात का गौरव महसूस करता हूं। माननीय सदस्यों ने जिस शालीनता से, जिस सद्भावना से, एवं अनुशासन से इस विधान सभा की गरिमा को बढ़ाया—इसका मुझे गौरव है। मैं कह सकता हूं, राष्ट्र भी हमारी व्यवस्थाओं और हमारी परम्पराओं और हमारी उपलब्धियों पर गौरव कर सकता है। मैं मुख्यत: विरोधी दल के नेताओं और विरोधी दल के माननीय सदस्यों से निवेदन करना चाहूंगा, सम्भवतः इस पांच साल के कार्यकाल में आक्रोश, रोष आपकी तरफ से भी और मेरी तरफ से भी हुआ हो किन्तु जो कुछ भी हुआ हो यह सब चूंकि हमारे प्रजातंत्र की परम्पराओं को सुदृढ़ करने की सद्भावना से ही किया गया था अत: मैं अपनी ओर से मेरी त्रुटियों के लिए क्षमा याचना करता हूं। मुझे इस बात की बड़ी प्रसन्नता है कि इस सदन के दीर्घ काल में कोई ऐसी अशोभनीय घटना नहीं घटी, यह गौरव का विषय है। माननीय सदस्यों ने यदि छोटी मोटी कुछ घटनायें हुई भी तो, उनको क्षम्य समझकर एवं पुन: सद्भावना का वातावरण उत्पन्न किया। विरोधी दल के माननीय सदस्यों ने जो सहयोग दिया—उसके लिए मैं आभारी हूं। शासक वर्ग की तरफ से, इस पक्ष में बैठने वाले माननीय सदस्यों ने सदन की कार्य-प्रणाली में जो सहयोग दिया, जिस शालीनता से सहयोग दिया-उसके प्रति आभारी हूं। मुझे गौरव अनुभव होता है यह कहते हुए की सदन की परम्पराओं के संदर्भ में, बहुत से माननीय सदस्यों ने बहुत बड़ा सहयोग सदन की परम्पराओं के निर्माण में दिया है। माननीय सदस्य, विरोधी पक्ष के माननीय सदस्यों ने जो कुछ जानकारी दी, जो कुछ सुझाव दिये, उस जानकारी और सुझावों का सत्ता पक्ष की ओर से बड़ी सजगता और सक्रियता के साथ जवाब दिया जाता रहा एवं उनका पालन भी बहुत कुछ हुआ तथा सत्ता पक्ष ने शालीनता से विरोधी दल को संतुष्ट करने का भी प्रयास किया-वह भी बड़ी परम्परा है। मुख्यतः माननीय नेता महोदय, सदन के, के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूं। उनके मुख्य मंत्री पद के अल्प काल में उन्होंने जिस ढंग से माननीय सदस्यों को विश्वास और

(श्री अध्यक्ष)

सहयोग दिया, उनके सुझावों पर विचार करने की एक सक्रियता दिखाई- इस व्यवहार के प्रति मैं आभार प्रकट करता हूं। साथ ही इस सदन के भूतपूर्व नेता महोदय, मुख्य मंत्री के प्रति भी आभार प्रकट करता हूं। हम एक मत से यह मान्यता रखते हैं कि श्री सुखाड़िया राजस्थान में ही नहीं, राष्ट्र के स्तर पर भी श्रेष्ठतम डेमोक्रेट, एवं विशिष्ट वक्ता हैं कि जिनकी सानी के देश में बहुत कम हैं। मैं उनके कार्य काल में अध्यक्ष पद पर रहा हूं। उन्होंने जो स्नेह और सम्मान विरोधी दलों को और इधर के पक्ष और उधर के पक्ष को दिया है-वह एक अविस्मरणीय उदाहरण है। इस नाते मैं उनके प्रति भी आभार प्रकट करता हूं। उनके कार्य काल में इस विधान सभा का कार्य संचालन, बड़ी शालीनता और बहुत पूर्ण अनुशासन से होता रहा-इसलिए मैं उनके प्रति आभार प्रकट करता हूं। मैं विश्वास रखता हूं, माननीय सदस्य सद्भावना, सौहार्द एवं स्नेह के साथ यहां से विदा होंगे और जो कुछ पारस्परिक मत-मुटाव यदि कुछ हुआ हो तो उसको भूलकर यहां से विदा लेंगे।

श्री मोहन लाल सुखाड़िया (उदयपुर): अध्यक्ष महोदय, आपने इस सदन के अन्तिम सत्र के अवसर पर अपनी तरफ से सबको धन्यवाद दिया लेकिन मैं समझता हूं कि हमारा भी पुनीत कर्त्तव्य होगा कि इस सारे काल में, पिछले चुनाव से लगाकर अब तक कई प्रकार की परिस्थितियां बीच बीच में उत्पन्न हुईं, तब भी अध्यक्ष महोदय ने जिस धैर्य के साथ, जिस सहयोग के साथ इस सदन को चलाया-उसके लिए मैं इस सदन का, आज नेता न होते हुए भी, चूंकि इस अवधि में अधिकांश समय उस पद पर रहा और उस लिहाज से, इस लिहाज से भी कि जब से यह सदन बना तब से इस सदन में बैठने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ और अब तक इस सदन के अन्दर बैठा। मैं अध्यक्ष महोदय का बहुत-बहुत आभार प्रकट करता हूं कि उन्होंने इस सदन की कार्यवाही को बहुत ही सुचारु रूप से चलाया। देश में कई जगह विधान सभाओं में बहुत सी अप्रिय घटनायें भी हुईं-लेकिन यहां तनावपूर्ण वातावरण होने के बाद भी हम यह कह सकते हैं कि विचारों का मतभेद होते हुए भी कुल मिला कर इस सदन ने, जो लोकतंत्र की स्वस्थ परम्परायें हैं, उनका मस्तक ऊंचा किया। अध्यक्ष महोदय, इस अवसर पर मैं सब माननीय सदस्यों को भी खास तौर से धन्यवाद देना चाहूंगा, इस वजह से भी कि बहुत से माननीय सदस्य शायद वापिस चुनाव के बाद इस सदन के अन्दर आयेंगे, और राजस्थान को अग्रसर ले जाने के अन्दर अपना सहयोग देंगे लेकिन मैं वापिस इस सदन के अन्दर उपस्थित नहीं होऊंगा, इसलिए भी इस अवसर पर मेरी तरफ से, मैंने वैसे कभी चाहा नहीं कि किसी का अपमान करूं, लेकिन भूल-चूक से किसी का अपमान हो गया हो तो मेहरबानी करके उसको भूल जायें, अच्छा हुआ, बुरा काम किया—इस विषय के ऊपर कुछ नहीं कहना चाहता, इसीलिए आज के वादविवाद में मैं नहीं पड़ा। मैंने केवल, जैसा आपसे कहा, सदन के माननीय सदस्यों से, दोनों तरफ बैठने वालों से, क्योंकि वक्त-वक्त पर लोकतंत्र में विरोधी दलों में बैठने वाले माननीय सदस्यों का सहयोग प्राप्त नहीं करें तो सदन की कार्यवाही चलाना मुश्किल होता है, केवल बहुमत के आधार

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)

पर लोकतंत्र नहीं चल सकता है, विरोधी दल वालों को भी सहयोग के अन्दर लेना होता है, राजस्थान के अन्दर अपनी अपनी नीतियों पर चलते हुए भी, सबने जो कुछ स्वस्थ परम्पराओं का निर्माण किया है वह इतिहास का हिस्सा बनेगा। मैंने जैसा निवेदन किया, एक बार फिर सब माननीय सदस्यों को बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं। और, अध्यक्ष महोदय, आपने जिस प्रकार सदन का संचालन किया उसकी मैं भूरी-भूरी प्रशंसा करता हूं।

श्री बरकतुल्ला खां (मुख्य मंत्री) : अध्यक्ष महोदय, मुझे भी करीब 15 साल हो जायेंगे इस सदन में बैठते हुए। इन पिछले 15 सालों का जो मुझे अनुभव है वह यह है कि सदन के अन्दर चाहे वे इस ओर के माननीय सदस्य हों चाहे वे उस ओर के माननीय सदस्य हों वह एक दूसरे की इज्जत करने वाले हैं और बहस के अन्दर बहुत आपस के अन्दर गरमागरमी हो जाने के बाद जब वह बाहर निकलते तो जनतन्त्र प्रणाली के अनुसार एक दूसरे के साथ बैठते और एक दूसरे के साथ दोस्त की तरह मिलते जैसे भाई हों और एक दूसरे के प्रति कोई द्वेष भावना नहीं होती और एक दूसरे पर दोषारोपण किया हुआ उनके मस्तिष्क में नहीं रहता। मेरे से तो कभी इस सदन में विशेष वादविवाद नहीं हुआ। आज इस सदन का आखिरी दिन है आप हम सभी यहां से जाकर अपने अपने कार्य में लग जावेंगे। मैं यह जरूर कहूंगा कि इस सदन का जो मुझे तजुर्बा हुआ है वह जिन्दगी भर याद रहेगा। और खास तौर से इस तरीके से आपने इस सदन की कार्यवाही को चलाया है कि उसके लिए मैं समझता हूं, मैं और मेरा दल ही नहीं, बल्कि सारे लोग आपके प्रति अपना आभार प्रगट करेंगे कि जिस आसानी से और जिस खूबी से आपने इस सदन को चलाया और कभी किसी के मन में ख्याल नहीं आने दिया कि आपके मन में किसी के लिये भेद है, बल्कि आपका भाव तो यह हुआ कि जो वीकर सेक्शन है उसको एनकरेज करे।

आज अफसोस हुआ यह सुनकर, सुखाड़ियाजी, मैं अपना बुजुर्ग मानता हूं, इज्जत करता हूं, वह यह कह रहे थे कि इसके बाद से सदन के सदस्य नहीं बनना चाहेंगे। मैं समझता हूं कि सुखाड़ियाजी ने जो भी राजस्थान की सेवा की है, राजस्थान का आने वाला जमाना और आने वाली पीढ़ी उसे याद रखेगी। जिस तरीके से व्यासजी ने राजस्थान के अन्दर आन्दोलन किया और डेमोक्रेसी लाये, सुखाड़ियाजी ने उसको कन्सोलीडेट किया और एडमिनिस्ट्रेशन को राजस्थान के विकास की तरफ लाने के लिये प्रेरणा दी। कभी भी जब राजस्थान का इतिहास लिखा जायेगा तो यह लिखा जायगा कि हमारे व्यासजी, वर्मा साहब, और सुखाड़ियाजी, इन लोगों में से आज की कोई कल्पना नहीं कर सकता, राजस्थान की 22 रियासतों को किस तरह से एक किया, इसकी भी कोई कल्पना नहीं कर सकता, जब राजस्थान बना था, हमारे दिमाग बहुत छोटी छोटी बातों के अन्दर लगे हुए थे, और उनके दिमाग बहुत छोटी छोटी बातों से भरे थे। माननीय व्यासजी ने उसी राजस्थान को एक संगठित रूप दिया और एक नेता के रूप में काम किया। सारे राजस्थान को एक बनाया, राजस्थान को एक बनाया, इसकी नींव को और भी

(श्री बरकतुल्ला खां)

मजबूत सुखाड़ियाजी ने किया और राजस्थान को नये मोड़ पर लाये।

इसी तरीके से जो माननीय सदस्य उस ओर बैठे हैं उनका भी मैं आभार प्रकट करता हूं कि मेरी जिन्दगी में तो कभी मौका नहीं आया कि किसी माननीय सदस्य से मेरी लड़ाई हुई हो। कभी कोई मौका नहीं आया कि हमारे बीच में गरमा गरमी हुई हो। इसके लिये मैं आभार प्रकट करता हूं।

मेरी पार्टी की ओर से सुखाड़िया साहब को और मुझे पूरा सपोर्ट मिला और पूरी हमदर्दी दिखाई। मैं अपनी पार्टी का भी आभार प्रकट करता हूं।

पूरे सदन का आभारी हूं। सब मिल कर पांच साल गुजार दिये और नये चुनावों की ओर जा रहे हैं।

अन्त में, अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी प्रशंसा करता हूं और धन्यवाद करता हूं। कभी कोई सदन के बारे में लिखेगा तो आपका जमाना बहुत खूबी से शान से लिखा जावेगा और जो आपने हमदर्दी दिखाई और जिस तरीके से मेम्बरों को समझा और उनकी बातों को माना उसके लिये पूरा सदन आभारी है।

इसके साथ साथ हमारे जो सचेतक महोदय हैं, दोनों ओर के, उन्हें भी धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने इस वातावरण को शान्त बनाने में सहयोग दिया।

और अन्त में यही आशा करता हूं कि जनता के सामने जावेंगे और जो जनता का फैसला हो जावेगा वह पक्का फैसला होगा। मेरी शुभ कामनायें सब लोगों के साथ हैं।

महारावल श्री लक्ष्मण सिंह (डूंगरपुर): अध्यक्ष महोदय, मैं अपना पुनीत कर्त्तव्य समझता हूं कि आसन के प्रति मेरे दल की ओर से और व्यक्तिगत मेरी ओर से अटूट श्रद्धा व्यक्त करूं। मैं भलीभांति यह अनुभव करता हूं कि अध्यक्ष का उत्तरदायित्व एक बहुत महान् जनतन्त्र के अन्दर विषय है। आपका यह कांटो का ताज, अध्यक्ष महोदय, एक ऐसा उत्तरदायित्व रहा है और महत्वपूर्ण उच्चासन है कि जिसके लिये तरह तरह की भावनायें आज देश के अन्दर हम देख पाते हैं। किन्तु यह निर्विवाद बात है कि जिस दृढ़ता, जिस दूरदर्शिता और जिस कुशलता से आपने इस सदन का संचालन किया है वह चिरस्मरणीय रहेगा।

अध्यक्ष महोदय, मेरे दल की ओर से और मेरी ओर से आसन के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए आपको हार्दिक धन्यवाद अर्पित करता हूं इसके साथ साथ उपाध्यक्ष महोदय, माननीय श्री पूनमचन्दजी विश्नोई के प्रति भी इन्हीं शब्दों के साथ मेरी सद्भावना है और मेरे दल की ओर से हरएक धन्यवाद प्रस्तुत करता है।

मैंने भूतपूर्व मुख्य मंत्री माननीय श्री सुखाड़िया के भी शब्द सुने। मैं विरोधी पक्ष में बैठा रहा हूं। मैं एक आलोचक के रूप में इस सदन के अन्दर उनके मुख्य मंत्री काल के दस वर्ष तक बैठा। मैं विशेष नहीं कहना चाहूंगा किन्तु यह कहे बिना मैं नहीं रह सकता कि माननीय श्री मोहनलालजी सुखाड़िया का मुख्य मंत्री काल राजस्थान के इतिहास में चिर स्मरणीय रहेगा।

(महारावल श्री लक्ष्मणसिंह)

अध्यक्ष महोदय, मेरे दल की ओर से अथवा व्यक्तिगत मेरी ओर से कोई त्रुटि हुई हो तो मैं क्षमा याचना करूंगा। उसके साथ साथ व्यक्तिगत रूप से जो महति कृपा और मेरे जैसे व्यक्ति के लिये जो लिहाज बरता है उसके लिए मैं आपका हार्दिक ऋणी हूं और और धन्यवाद अर्पित करता हूं।

श्री भैरोंसिंह (किशनपोल-जयपुर) : अध्यक्ष महोदय, आपने विरोधी दल के प्रति जिस प्रकार सद्भावना प्रकट की है उसके लिए मैं मेरी ओर से तथा मेरे दल की ओर से आपके प्रति आभार प्रकट करता हूं। साथ साथ, अध्यक्ष महोदय, राजस्थान के वर्तमान मुख्य मंत्री एवं भूतपूर्व मुख्य मत्रीजी ने विरोधी दल के सम्बन्ध में जिस प्रकार की भावनायें प्रकट की हैं, मैं उन भावनाओं के कारण, उनके प्रति भी अपना आभार प्रकट करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, हम लोग विरोधी दल में बैठे हैं। हमारा काम इस सरकार की चौकसी करने का होता है और इस चौकसी के कारण ही हमें कई काम इस प्रकार के भी करने पड़ते हैं जिससे सरकारी पक्ष के कुछ महानुभाव नाराज हो जायं लेकिन जैसा मुख्य मंत्रीजी ने कहा उन सबके उपरान्त भी राजस्थान की विधान सभा में इस प्रकार का वातावरण रहा है कि हमारी कटु आलोचना होने के उपरान्त और सरकार पक्ष से करारा उत्तर प्राप्त होने के बाद भी सदस्यों में किसी प्रकार का भेद भाव स्थाई रूप से नहीं रहा और न उसके कारण आपस में किसी प्रकार का मनोमालिन्य बना रहा। यह बात भी सही है, अध्यक्ष महोदय, जब आलोचना करते हैं तो उस आलोचना से प्रसन्न नहीं होते हैं और उस अप्रसन्नता के कारण कोई स्थाई वैमनस्य लेकर बैठ जायं तो मैं तो उन सदस्यों में से होऊंगा कि उस वैमनस्यता के कारण शायद एक भी सदस्य मुझ से बोलने के लिए तैयार न हो। मैं यह मान कर चलता हूं कि इस प्रकार की स्थिति के उपरान्त भी राजस्थान की विधान सभा में बहुत सौहार्दपूर्ण वातावरण है।

जहां तक विधान सभा की कार्यवाही का सवाल है, हमने हमेशा यह चेष्टा की है कि आसन की गरिमा बढ़े और स्वस्थ परम्परायें बनें और राजस्थान की जनता में लोकतन्त्र के प्रति श्रद्धा का प्रादुर्भाव हो। इसके लिए सदन के सब ही माननीय सदस्य और आपका जिस प्रकार का सामन्जस्य रहा उसी का परिणाम है कि आज राजस्थान विधान सभा की प्रतिष्ठा बहुत ही ऊंची रही है। मैं समझता हूं इस सब प्रयास के लिए मैं मेरे दल की ओर से इस सदन के सब ही माननीय सदस्यों के प्रति आभार प्रकट करना चाहूंगा। उसके बाद में मेरी ओर से और जनसंघ के माननीय सदस्यों की ओर से यदि कोई कटु बात हुई हो और उसको लेकर माननीय सदस्य यहां से जाना चाहेंगे तो मैं उनसे निवेदन करूंगा कि वे सब यहां भूल कर जायं उसी से वातावरण शुद्ध बना रहेगा।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता (बानसूर) : अध्यक्ष महोदय, मैं अपने दल की ओर से इस अवसर पर कुछ शब्द कहने के लिए खड़ा हुआ हूं। मैंने तो आपको बहुत कम कष्ट दिया, लेकिन मेरे दल के एक सदस्य ने आपको सबसे ज्यादा कष्ट दिया। इसलिए मैं सबसे पहले आपसे क्षमा चाहूंगा और आशा करूंगा कि आप उस बात को भूल जावेंगे और आपके जैसे मृदु भाव हैं वैसे आगे और हमेशा भी बने रहेंगे।

श्री खेतसिंह (शेरगढ़) : आप महसूस करते हैं तो आगे से उनको टिकट मत देना।

एक माननीय सदस्य : नहीं, उनकी सदन को बहुत आवश्यकता है।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : मैं इस विधान सभा का काफी समय तक सदस्य रहा, अधिकांश काल तक कांग्रेस पार्टी में रह कर और कुछ काल तक मिनिस्ट्री में भी रह कर। आज विरोधी दल में बैठा हुआ हूं। मुझे दोनों तरफ का काफी अनुभव हुआ है। वह अनुभव काफी उपयोगी है।

मैं कई बार सोचता हूं कि इन अनुभवों पर कोई पुस्तक लिखूं अगर अवकाश का क्षण मिले तो। इस पुस्तक में बहुत सी बातें ऐसी होंगी जिसमें फिक्शन से भी अधिक सच्चाई की बातें होंगी।

श्री भैरोंसिंह : इसमें खेतसिंहजी का नाम जरूर आना चाहिए।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : तो मैं माननीय सदस्यों के प्रति अपनी शुभ कामनाएं ही प्रकट कर सकता हूं इस समय। यह विदाई का समय है। अन्तिम रूप से एक ही बात कहना चाहूंगा कि कौन यहां कब मिल पावेगा। बस।

श्री केदारनाथ (श्री गंगानगर) : अध्यक्षजी, इस सदन में कभी कभी सीरियस डिस्कशन हुआ करते थे उनमें इमोशन्स में टरमोइल्स लाना भी आपकी कला रही और उसको डिजोल्व करना भी आपका कमाल रहा।

हमारा डिबेट का दायरा नेशनल इस्यूज पर भी रहा और कभी बहुत ऊंची दार्शनिक चर्चा भी यहां हुई। कानूनी बहसें भी बहुत ऊंची किस्म की हुई। क्राइसिस ऐसे समय क्रिएट करना भी आपका काम रहा तो उसे रिजोल्व करना भी आप नहीं भूले। जब यहां की हिस्ट्री लिखी जावेगी तो बड़े गर्व से इन चीजों का उसमें उल्लेख होगा कि किसने क्या किया, किसने क्या नहीं किया यह अलग बात है।

पर मैं आपके बारे में इतना जरूर कह सकता हूं कि कभी भी आपने क्राइसिस क्रिएट किया तो उसे डिजोल्व भी किया।

मैंने पंजाब और हरियाणा की विधान सभाएं भी देखीं। पर जो ऊंचाई और विचारों का आदान प्रदान यहां देखा, अन्यत्र देखने में नहीं आया। हमारी असेम्बली उनसे बहुत ऊंची है। हमारे यहां थियोरेटिकल डिस्कशन्स हुए और शार्पनेस भी आई, क्लोजनेस भी रही। ऐसी बात नहीं कही गई जो नहीं कहनी चाहिये। स्ट्रोंग कान्स्टीट्यूशनल इस्यूज भी उठाये गये। मड स्लिंगिंग भी हुई। केरेक्टर एसोसिनेशन भी पर शालीनता भी दिखाई गई।

और यहां पर हमने भैरोंसिंहजी की स्प्रिट भी देखी। सारी मशीनरी की सारी सरकार मशीनरी की कौने 2 से सिमट कर खबरें भी आ रही हैं।

तो दूसरी तरफ, अध्यक्ष जी, रामानन्द जी की हिम्मत भी देखी। पार्टी भी आप ही और फोलोअर भी आप ही हैं। हमला हमेशा उनका हर मुद्दे पर जारी रहा, स्पेअर किसी को कभी नहीं किया।

माननीय अध्यक्षजी, मैंने ऐसा भी देखा कि आज स्टेलमेंट पैदा करता है तो

(श्री केदारनाथ)

सुखाड़ियाजी को सामने ले आया गया । उन के सपोर्ट में गाड़ियाजी खड़े हो गये । तो यह एक कथा रही इसकी । अपनी बात भी कहनी होगी । आपका आर्डर काम्पलेक्स पर देखा । उनके मन में यह रही कि अपनी बात कह दूं ।

तो अध्यक्ष जी, यह भी देखा कि सुखाड़ियाजी बोल रहे थे । सुखाड़िया जी, हम आपके खिलाफ बहुत लड़े हैं, एजीटेशन भी बहुत किये हैं । हिन्दुस्तान में पार्टीशन के बाद में अपने आप में, कभी रंजिश पैदा हुई तो इन मामलों को लेकर हुई । पर आपने कभी रिवेन्जफुल एटीट्यूड नहीं लिया । यह आपके केरेक्टर की खूबी है । यह अलग बात है कि आप कहां तक किस हद तक हमसे सहमत हुए । इतनी तनावपूर्ण स्थिति में आदमी का रिवेन्जफुल न होना, दिमाग को सन्तुलित रख पाना यह बड़ी खूबी रही है आपकी पार्लियामेंट्री लाइफ में ।

यहां पर चीफ मिनिस्टर नये आये । स्टूडेण्ट लाइफ में हम बहुत नजदीक रहे । वे एम. पी. बने, मुझे बड़ी खुशी हुई । डिप्टी मिनिस्टर बनकर यहां आये, बड़ी खुशी हुई । मिनिस्टर बने तो और भी बड़ी खुशी हुई, साथ साथ चलते रहे, पर शादी करके मुझे अकेला छोड़ गये यह अच्छा नहीं हुआ । आप चेले हैं व्यास जी के उनसे साथीपना निभाना सीखा नहीं । आपकी नेशनेलिटी के बारे में, आपकी ओनेस्टी और इन्टेग्रिटी के बारे में और इन्टेलीजेन्सी के बारे में और आपके एप्रोच के बारे में किसी को शक और शुबाह नहीं रह सकता ।

माननीय अध्यक्षजी, यहां रेसिस्टेन्स भी पैदा हुआ । बड़ी आशाएं थी । व्यासजी हैं। डर लगता है । वर्ड्स वर्थ की ये पंक्तियां याद आती हैं :

"The shadow of age begins to fall upon him"

कहीं व्यासजी की दृष्टि न पड़ जाये । ऐसा एक टाइम में पोलिटिकल लाइफ से दूर रहते हैं । बुजुर्गों से बच कर रहे हैं ।

तो बहुत लोगों का यहां कन्ट्रीब्यूशन रहा है, इस साइड से और उस साइड से भी ।

फिर याद दिलाता हूं कि अपने साथ के काफी साथी यहां आये हैं । अपने फन में सभी उस्ताद रहे हैं क्या बोलने में, क्या जवाब देने में, क्या ट्रेनिंग में और क्या खेलने में। पार्लियामेंट्री लाइफ भी शानदार रही । काफी लोग ऐसे निकले है, पांच दस सालों में जो काफी चमके हैं, बढ़े है, शानदार काम किया है ।

एक बात कहूं जोशीजी, यहां कह दूं । हम दोनों एक सरीखे हैं— अंग भंग हैं । मगर एक बात कह दूं मुझे खुशी इस बात की है कि आपने एक हाथ होते हुए भी अपनी हाइट रेज की है । हाइट रेज करना मामूली बात थी । जब से कांग्रेस में आये हैं अपनी बुद्धि कौशल से संजीदगी से काम किया है और आज भी आप मजे से चल रहे हैं । तो मुझे खुशी होती है ।

तो ओवर आल जो कन्ट्रीब्यूशन इस साइड से और उस साइड से किया गया है, जैसे मेरे साथी रामकिशन जो हैं, प्रिन्सिपल और थियोरिज को साथ लेकर आये । अभी बोल गये । कल की बात मालूम नहीं हुआ

(श्री केदारनाथ)

करती। पर स्टार्ट किया आउट आफ ट्यून है। अपनी डिग्निटी रेस्टोर कर ली। मैं तारीफ करता हूं उनके ज्ञान के भंडार की।

अन्त में, अध्यक्षजी, आपका लिट्रेरी टेस्ट और आपकी क्षमता आपका एस्थेटिक टेस्ट काबिले तारीफ है।

माथुर साहब भी यहां अपना कंट्रीब्यूशन दे गये हैं। कभी ऐसी जगहों पर नीरसता न आ जावे थोड़ा रोमान्स का टेस्ट भी हो तो मजा आ जाता है।

तो अन्त में, अध्यक्षजी, आपको उधर के साथियों को इधर वालों को मैं अपनी तरफ से और अपनी पार्टी की तरफ से धन्यवाद देता हूं।

श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर) : अध्यक्ष महोदय, जब आज हमारा विदाई समारोह हो रहा है तो मैं भी अपना कर्तव्य समझता हूं कि मैं भी आपके प्रति अपना आभार प्रदर्शित करूं कि आपने मुझे अपने दल में अकेले रहते हुए भी जो इन्डलजेन्स चाहे टाइम के बारे में हुआ हो, चाहे और एडजस्टमेंट के बारे में भी, वह आपने भी दिया है, दल के दूसरे माननीय सदस्यों ने और अपोजिशन ने भी जो इन्डलजेन्स मेरे प्रति दिखाया है उसका मैं बहुत ही आभारी हूं। अध्यक्ष महोदय, ऐसे भी अवसर आये हैं जब कि हमें बहुत शार्पली बहुत कुछ बातें कहनी पड़ी हैं, कई बार आसन की भी कहनी पड़ी हैं, ऐसे अवसर आए हैं कि आसन के प्रति सन्देह करना पड़ा है, किसी मन्त्रि मण्डल के बारे में कहना पड़ा है, किसी अधिकारी के बारे में कहना पड़ा है। परन्तु मैं विश्वास दिलाता हूं कि जो भी कुछ कहा गया, जनता के प्रति जो हमारी जिम्मेदारी है उस जिम्मेदारी के प्रति वफादारी महसूस करते हुए बिना किसी डर के, बिना किसी बात के कोई नाराज होता है या नहीं होता है मैंने अपनी जिम्मेदारी निभाने का प्रयत्न किया है। यदि इस बात में किसी भाई को, किसी माननीय सदस्य को, अध्यक्ष महोदय, आपको मन्त्रि मण्डल व शासक दल और विरोधी दल में भी मैं काफी कटु आलोचक अपने माननीय सदस्यों का और पार्टियों का रहा है। अपनी पार्टी की नीति के नाते। लेकिन फिर भी मैं विश्वास दिलाता हूं, व्यक्ति के नाते, सभी शासक दल के महानुभाव हैं, विरोधी दल के महानुभाव बावजूद उस आलोचना के, उनके प्रति व्यक्तिगत इज्जत मेरे मन में हमेशा रही है और फिर उसके बाद जैसे ही एक दूसरे से मिलेंगे उन बातों को भूल जायेंगे।

अध्यक्ष महोदय, इस अवसर पर मुझे जो सहयोग आपसे, माननीय सदस्यों से और इसके साथ ही पूरे स्टाफ से, सारे सर्विसेज से, खास तौर से अपनी विधान सभा से, जो मिला है चाहे एक ही मेम्बर हूं मेरी पार्टी का, मेरे प्रति भी उसी प्रकार का व्यवहार सेक्रेटरी से लेकर नीचे चपरासी तक इस प्रकार का बिना किसी हिचकिचाहट के, बिना किसी शिकायत के जो मिला है उसके लिए मैं पूर्ण आभारी हूं। जैसा हमारे सेक्रेटेरियट में वातावरण है यदि वैसा वातावरण पूरे प्रशासन में हो जाय तो जनता को बहुत ही सुख और सुविधा मिल सकती है। इसलिये मैं उनका भी बहुत आभारी हूं कि उन्होंने जितना सहयोग दिया है और जिस तरह की दिक्कतों में उन्होंने हम लोगों का काम पूरा किया है

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

रात के 11-11 बजे तक उन लोगों ने काम किया है चाहे उनको घर पर 1-1 बजे जाना पड़ा हो और चाहे छुट्टी का दिन हो और चाहे कैसा भी समय हो हमें पूरा लिट्रेचर पहुंचाने में भरसक मदद की है। चाहे अखबारों में नहीं छपे किन्तु वे अवश्य बधाई के पात्र हैं। अखबारों में हम अपने भाषण देखते हैं परन्तु जो मूल सेवायें हैं वह भी सराहनीय हैं। उससे यह सारा सदन प्रभावित हुआ है और मैं पूर्ण आभारी हूं और यह आभार प्रकट करता हुआ मैं अपना स्थान ग्रहण करता हूं।

श्री मनोहर सिंह मेहता (मांडलगढ़) : अध्यक्ष महोदय, मेरे लिये विधान सभा में यह पहला अवसर था। इसके पहले मैंने विधान सभा देखी भी नहीं थी लेकिन यहां आने के बाद आपका जो स्नेह मिला उसके लिये मैं आपका अत्यन्त आभारी हूं। आपने मुझे हमेशा बर्दाश्त किया है-अधिक टाइम भी दिया और समय समय पर मैं अपने मन में यह महसूस करता हूं कि आपने मुझ पर बड़ी कृपा की है। अध्यक्ष महोदय, जिस क्षेत्र से मैं आया हूं 40 वर्ष से मैं काम कर रहा हूं, मैंने अपनी सफेदी उसी क्षेत्र के काम में करते करते हासिल की है, उस क्षेत्र का बहुत नमक खाया है इसलिये मेरे क्षेत्र में जो काम होता है उसका मैं आभारी हूं। माननीय सुखाड़िया साहब ने मेरे क्षेत्र में पांच साल काम किया है, उसके लिये भी मैं आभारी हूं। आज मैं मानता हूं, मेरी एक सदस्य के साथ कटुता हुई, अगर इस अवसर पर मैं उनसे हृदय से क्षमा मांग लूं तो मैं समझता हूं वे मुझे क्षमा प्रदान करेंगे। मैं माथुर साहब शिवचरणजी से क्षमा मांगता हूं। बहुत बात जब होती है तो कह देता हूं और कहने के बाद मैं हल्का हो जाता है। मैं समझता हूं, सभी माननीय सदस्य मुझे क्षमा करेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

अध्यक्ष महोदय, मैं सचिव महोदय से लेकर यहां के चपरासी तक जिन जिन के पास गया सबने ऐसा व्यवहार किया, यदि यही व्यवहार कोर्ट्स में मिला करे तो सचमुच बड़ा आनन्द आये। जितने सचिवालय के कर्मचारी हैं उनको बहुत बहुत धन्यवाद देता हूं। दोनों तरफ के माननीय सदस्यों ने, जिन्होंने मुझे बच्चे की तरह समझा है, मैं उनको बहुत बहुत आदर के साथ प्रणाम करता हूं और आपको एक बार और प्रणाम करते हुए मैं आपका स्नेह इस झोली में भर कर ले जा रहा हूं लेकिन कृपया आप शराब बन्दी की ओर विशेष ध्यान देंगे ऐसी मेरी आशा है।

श्री हंसराज आर्य (भादरा) : सर फरोशी की तमन्ना बाकी मेरे दिल में है खुश रहो अहले वतन हम तो सफर करते हैं।

श्री आदित्येन्द्र (डीग) : अध्यक्ष महोदय, मैं सन् 1967 के आम चुनावों में एस० एस० पी० के टिकट पर लड़कर आया। तीन वर्ष तक बाकायदा एस० एस० पी० का सदस्य रहा और मुझे इस बात का गर्व भी था। मुझे कोई शिकायत नहीं थी लेकिन जब कांग्रेस का विभाजन हुआ है मैं सभी के सामने, यह मैं सच कह रहा हूं कि, बहुत काफी चिन्तन किया, बहुत सोचा और आखिर में मैंने यह ठीक समझा कि मुझे संगठन कांग्रेस में जाना चाहिये। मैं जानता था कि रास्ता बड़ा कठिन है और इसको आगे बढ़ाना बड़ा मुश्किल है लेकिन मैं आया। मुझे चाहिये यह था कि उस समय मैं

(श्री आदित्येन्द्र)

राजस्थान विधान सभा की सदस्यता से त्यागपत्र दे देता और दुबारा चुनाव लड़ता लेकिन और लोगों ने भी सलाह दी और मेरी भी अन्तरात्मा ने कहा कि मैंने किसी ऊंचे पद के लिये कोई काम नहीं किया है, जो कुछ भी किया है वह अपनी अन्तरात्मा से किया और विरोध में हो रहा । अब जो कुछ भी आज वातावरण है, उस वातावरण से मैं बहुत प्रभावित हूं। मैं समझता हूं सभी प्रभावित होंगे । माननीय अध्यक्ष जी, आपने सबसे ज्यादा जो पहले कहा और जो भावनायें व्यक्त की, वह वास्तव में ऐसी हैं जो सभी को प्रभावित करने वाली हैं, सभी को अपने अपने वैमनस्य भुला देने वाली हैं और बाद में हमारे मुख्य मंत्रीजी और भूतपूर्व मुख्य मंत्रीजी, इसके अलावा हमारे जो विरोधी दलों के नेता गण हैं, उन्होंने जो भावनायें व्यक्त की, उनसे जो कुछ भी सन्देह या उस तमाम सन्देह का निवारण हुआ । समय समय पर मुझे कभी इस प्रकार की परेशानी हो जाती थी कि जब कि एक दूसरे पर व्यक्तिगत आरोप होते थे तो मैं सोचता था मैं यहां बेकार आया और इसलिये न मैंने अपने स्वभाव के कारण और कुछ इसलिये कि मैंने दल के काम में दिलचस्पी नहीं ली और उसके लिये मुझे इस समय दुःख भी है लेकिन आज जो बातें हुई हैं उनसे मैं सभी से, पूरे हाउस के लिये अपना आभार व्यक्त करता हूं और जो कुछ भी, अव्वल में तो ऐसी कोई बात नहीं हुई, क्योंकि मैंने कभी ज्यादा भाग नहीं लिया लेकिन मेरे व्यवहार से किसी को अगर दुःख हुआ हो तो उसके लिये मैं पूरी तरह से क्षमा-प्रार्थी हूं। आज जो कुछ भी हुआ उस घटना से थोड़ी सी परेशानी जरूर हुई लेकिन मेरे साथी मेहता साहब ने जो अन्त में भाव व्यक्त किये उनसे मुझे सन्तोष हुआ और आज मैं समझता हूं कि इसकी बहुत आवश्यकता थी। मैं इन्हीं शब्दों के साथ अपना स्थान ग्रहण करता हूं ।

श्री अध्यक्ष : अब इस सत्र का मैं यह शेर पढ़कर अन्त करता हूं ।

'उजाले अपनी यादों के मेरे साथ रहने दो ।
न जाने किस गली में जिन्दगी की शाम हो जाये ।'

(तदनन्तर सदन की कार्यवाही रात्रि 9 बजकर 12 मिनट पर अनिश्चित काल के लिए स्थगित हुई)

शुद्धि-पत्र

(मंगलवार, दिनांक 16 नवम्बर, 1971)

स्कम्भ सं० 1	पंक्ति संख्या 2	अशुद्ध 3	शुद्ध 4
3	अन्तिम से 2	की	को
5	12	एक मत	एकमत
5	20	प्रारोप	आरोप
6	शीर्षक	व्यवस्थ	व्यवस्था
,,	1	सत्यना	सत्यता
,,	7	एव	एवं
7 से 111	शीर्षक	मंत्री परिषद् में	मंत्रीमंडल के प्रति
7	19	मंत्री परिषद् में	मंत्रीमंडल के प्रति
9	अन्तिम से 13	बीधा	बीघा
10	अन्तिम से 6	ऐजेन्सी	एजेन्सी
11	4	,,	,,
,,	7	का	की
,,	12	इन्जनियर	इन्जिनियर
,,	18	ऐजेन्सी	एजेन्सी
,,	अन्तिम से 4	थो	थे
13	अन्तिम से 8	उवड़ खाबड़	ऊबड़ खाबड़
14	अन्तिम से 12	तरफ से	तरफ
14	अन्तिम	उसके	उसने
15	1	ही गए	हो गए
15	अन्तिम से 2	अचानव	अचानक
16	8	तो	जो
,,	13	का	के
18	अन्तिम से 11	कल ...	काम ।
20	12 व 13	झोर	झोल
,,	19	सेंक्सन	सेंक्शन
,,	अन्तिम से 9	मैं	में
,,	अन्तिम से 2 व 1	शि यूल कास्ट	शिड्यूल्ड कास्ट्स

1	2	3	4
21	अन्तिम से 6	आत्मवादी	आत्मावादी
23	20	का 'वाही	कार्यवाही
25	20	भा	भी
,,	अन्तिम से 6	व्ययभार	भार
31	अन्तिम से 3	बठे	बैठे
32	9	भी	भी
36	4	कर	करें
37	3	ि ितना	कितना
,,	15	आकीषि	आकर्षित
39	21	उन	उस
42	8	उनके	उनकी
,,	अन्तिम से 3	खायी	खाई
49	10	पूरा	पूरा
,,	14	गाा	गया
51	10	पब्लिक	पब्लिक प्रिवीलेज
60	8	दे देते देने	दे देते हैं
62	4	कराड़	करोड़
63	अन्तिम से 11	चल	चलें
64	6	क दी	करदी
,,	अन्तिम से 8	जमान	जमीन
68	अन्तिम से 2	गयूर अहमद	गफूर अहमद
77	12	देता	देता है
78	17	नते	नाते
79	19	कृछ	कुछ
82	12	का	की
83	6	कर	कह
87	3	में	मैं
94	अन्तिम से 13	एफीसियेन्सी	एफीशियेन्सी
96	14	होदय	महोदय
96	अन्तिम से 2	बन्गले, तगले	बंगले-तंगले
102	अन्तिम	वगैरहा	वगैरह
106	अन्तिम से 9 व 10	वारिश	बारिश
107	अन्तिम से 10	यही	यह
109	14	एक्सप्लोजिन	एक्सप्लोजन

1	2	3	4
126	अन्तिम से 2	अनी	आनी
131	18	मारत	भारत
132	अन्तिम से 5	को	की
136	1	श्री रामचम्द्र	श्री रामचन्द्र
139	8	मो	भी
,,	14	कतव्य	कर्त्तव्य
141	8	स्कल	स्कूल
145	14	श्री ıवजयासह	श्री विजयसिंह
149	अन्तिम से 6	फलाते	फैलाते
150	7	[illegible]	समस्या
151	[illegible]	[illegible]	में
154	[illegible]	[illegible]	न[illegible]जो
155	[illegible]	[illegible]	डिविजनों
156	[illegible]	[illegible]	कितने
,,	[illegible]	[illegible]	अन्याय
,,	[illegible]	[illegible]	मैं
,,	[illegible]	[illegible]	है
,,	24	मन्त्री के	मन्त्री
159	अन्तिम से 8	मालूम	मालूम था
161	10	आखोर	आखिर
162	4	आमदानी	आमदनी
,,	अन्तिम से 8	ठाक	ठीक
165	अन्तिम से 10	श्रा	श्री
168	अन्तिम से 6	रिन्इन्स्टेट	रिइन्स्टेट
170	18	(जायल)	(जायल)
,,	20	प्रधुम्नसिंह	श्री प्रद्युम्नसिंह
172	,,	बईमानी	बेईमानी
182	अन्तिम से 11	उम्मीम्द	उम्मीद
192	16	स्पाट्स	स्पाट्स
209	15	बलि	बलि का
243	अन्तिम से 8	शिकजा	शिकंजा
244	5	सी. पी. एस.	सी. पी. एम.
253	19	क्यों	क्यों नहीं
254	6	और	आर.
255	4	लंपटने	लपेटने

1	2	3	4
261	1	प्राई	प्राईम
262	18	की	कि
266	13	बढ़या	बढ़ाया
271	6	करा	कराई
274	9	के	का
277	19	कहते	कहती
279	15	हुकुमत	हुकूमत
280	17	कब्बडी	कब्बड्डी
284	अन्तिम	र प	रूप
,,	,,	अधिकारूपूर्वक	अधिकारपूर्वक
289	17	केपेसिटि	केपेसिटी
290	5	[illegible]	सर्वेक्षण
,,	18	[illegible]	माईनिंग
295	13	[illegible]	में
,,	अन्तिम से 7	अमे	एक्सेप्ट
,,	,, 5	को	की
296	अन्तिम से 7 व 8	असेप्ट	एक्सेप्ट
297	17	इक्वेटि	इक्वेटी
303	6	होना	होनी
305	18	नहीं	कोई नहीं
306	अन्तिम से 7	फाइल	फाइलें
308	अन्तिम से 4	करने	कराने
309	11	ओपेन	ओपन
314	अन्तिम से 15	झोंकने	भोंकने
315	2 व 3	अन्तर्मावादी	अन्तरात्मावादी
317	11	सत्र	सत्र
318	अन्तिम से 6	संतु	संतुष्ट
322	11	में	को में
,,	20	डमिनस्ट्रेशन	एडमिनिस्ट्रेशन
324	9	विषय	विषम
328	अन्तिम से 11	स्प्रिट	स्प्रिट
330	अन्तिम से 9	मामूला	मामूली
332	12	है	हूं
335	अन्तिम से 3	व्यक्गित	व्यक्तिगत